प्रकाशक—
आगम अनुयोग प्रकाशन
पोस्ट बॉक्स नं० ११४१
दिल्ली-७

प्रथमावृत्ति—
वीर सवत् २४९२
विक्रम सवत् २०२३
ईस्वी सन् १९६६

मूल्य—दो रुपये

मुद्रक —
उद्योग शाला प्रेस,
किंग्सवे दिल्ली-९

प्रकाशकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन का उद्देश्य आगमो के अभिनव सकलन, सपादन पद्धति से प्रस्तुत सस्करण प्रकाशित करने का है, क्योकि इस युग मे—विस्तृत विषय-सूची, शुद्ध मूल पाठ, शब्दानुलक्षी सरल सक्षिप्त हिन्दी अनुवाद और सम्यग् ज्ञानवर्धक शोधपूर्ण विशिष्ट परिशिष्टो से युक्त आगम ही उपादेय एव रुचिवर्धक हो सकते है।

प० मुनि श्री कन्हैयालाल 'कमल' द्वारा सकलित सम्पादित 'समवायाग' हमारे उद्देश्य के अनुरूप है अत इसका सर्वप्रथम प्रकाशन किया गया है।

इस प्रकाशन के हेतु श्रीमती आशादेवी जैन का उदार आर्थिक सहयोग हमे प्राप्त हुआ है इसके लिए हम उनके चिरकृतज्ञ हैं। आशा है हमारे सकल्पो के अनुरूप यह प्रकाशन श्रद्धालु जिज्ञासुओ की ज्ञानवृद्धि मे सहायक सिद्ध हुआ और उनके सतुष्टि की पुष्टि के प्रेरक सदेश हमे प्राप्त हुए तो हम निकट भविष्य मे 'स्थानाग' का ऐसा ही सस्करण प्रकाशित करने के इच्छुक हैं।

श्री शान्तिभाई वनमाली सेठ के सक्रिय सहयोग एव प्रयत्न से यह सस्करण इस रूप मे प्रकाशित हो सका है अतः शुद्ध, सुन्दर मुद्रण सम्बन्धी सारा श्रेय उन्हे ही है।

— मत्री

जीवन रेखा

श्री आशादेवी जी मण्डीमंडी श्राविका समाज की एक प्रमुख श्राविका है। आपकी अविचल धर्मश्रद्धा, निर्ग्रंथ प्रवचन की भक्ति, चतुर्विध सघ के प्रति पूज्य भाव प्रसशनीय एव आदरणीय है। आपने धर्म परायण पतिदेव के सहयोग से प्रिय पुत्र-पुत्री को भी धार्मिक एव विवेकी बनाया है, प्रस्तुत सस्करण के प्रकाशन मे आपकी स्वाध्याय रुचि ही प्रवल निमित्त रही है। नैतिक जीवन का धरातल उन्नत करने के लिए प्रशस्त धर्माचरण एव आगम स्वाध्याय का प्रचार प्रसार आपके जीवन का शुभ सकल्प है।

आगम-अनुरक्ता धर्मशीला



श्रीमती आशादेवी जैन
धर्मपत्नी बाबू श्री शिखरचन्द जैन
मातेश्वरी श्री अरिदमन कुमार जैन
एग्जिक्युटिव इंजीनियर सिंचाई विभाग, मेरठ, (उ० प्र०)

संकलन-संकेत

प्रास्ताविक

समवायाङ्ग का महत्त्व

द्वादशाग गणिपिटक मे समवायाग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। चतुर्विध सघ के धर्मशास्ता आचार्य उपाध्याय एव गणावच्छेदक जैसे महामहिम पदो की योग्यता का मानदण्ड इस अग के स्वाध्याय मे सन्निहित है। इस सम्वन्ध मे व्यवहार सूत्र का विधान इस प्रकार है—**अट्ठवासपरियाए समणे निग्गथे आयारकुसले सयमकुसले पवयण-कुसले पण्णत्तिकुसले संगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खयायारे अभिन्नायारे असवलायारे असंकिलिट्ठायारचित्ते वहुस्सुए वह्वागमे जहण्णेणं ठाण-समवायधरे कप्पइ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्ताए।** —व्यवहार सूत्र उद्देशक ३।

जो आचार पालन, सयम साधना, अर्हत् प्रवचन, धर्म प्रज्ञप्ति, धर्मोपकरण सग्रह और समस्त प्राणियो पर अनुग्रह करने मे कुशल हो, जिसका अखण्ड अछिन्न एव निर्दोप चारित्र हो, जो चारित्र की आराधना मे दत्त-चित्त हो, वहुश्रुत हो, अनेक आगमो का ज्ञाता हो, यदि वह वहुश्रुत या अनेक आगमो का ज्ञाता न हो तो कम से कम स्थानाग समवायाग का ज्ञाता अवश्य हो ऐसे आठ वर्प के दीक्षित श्रमण निर्ग्रन्थ को आचार्य उपाध्याय या गणावच्छेदक का पद देना उचित है।

समवायाङ्ग के स्वाध्याय से सवल स्मरणशक्ति

मानव की एक महती शक्ति स्मरणशक्ति है। मानव का विकास और ह्रास, उन्नति और अवनति तथा असाधारण प्रतिष्ठा की

आधारशिला यह स्मरणशक्ति ही है। स्मरण-शक्ति की वृद्धि के लिए अतिचिरन्तन काल से सर्वत्र सख्या-प्रधान सकलनो के स्वाध्याय का प्रयोग होता रहा है। भारतीय साहित्य मे स्मरणशक्ति के व्यायाम के लिए समय समय पर सख्या प्रधान सकलनो के नये-नये निर्माण हुए है। समवायाग भी सख्याप्रधान अग आगम है। इसमे द्वादशाग के पल्लवो का सचय है। इसके सतत् स्वाध्याय से स्मरणशक्ति का सबल होना सुनिश्चित है। बहुश्रुतो की परम्परागत यह धारणा रही है कि शिथिल स्मरणशक्ति वाले अभिनव साधक-साधिकाये यदि सात वर्ष तक उपधान-तपपूर्वक समवायाग का सतत स्वाध्याय करे तो उनकी स्मरण शक्ति जीवन पर्यन्त सुदृढ रहती है। 'समवायाग का श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करने वाले सभी सज्जन स्वकीय सत्कार्यो मे असाधारण सफलता प्राप्त करते है' यह अनुभव सिद्ध है।

समवायाङ्ग मे चार अनुयोग

द्वादशागो मे एक चरणकरणानुयोग ही है। यह उल्लेख गणि-पिटक वर्णन मे अङ्कित प्रत्येक अगपरिचय के पाठ से स्पष्ट है किन्तु यह सापेक्ष कथन है। "चरणपडिवत्तिहेउ जेणियरे तिन्नि अणुओगा" अर्थात् तीनो अनुयोग [द्रव्यानुयोग गणितानुयोग और धर्मकथानुयोग] चरणानुयोग के साधन हैं। अत. समवायाग मे चारो अनुयोग विद्यमान हैं, यह मानने मे किसी प्रकार की विप्रतिपत्ति नही है। किस समवाय मे कितने अनुयोग है यह जानने के लिए प्रस्तुत सस्करण के प्रथम परिशिष्ट "समवायाग का अनुयोग वर्गीकरण" देखें।

समवायाङ्ग परिचय का संक्षिप्त और विस्तृत पाठ

गणिपिटक का वर्णन भगवती और अनुयोगद्वार मे सक्षिप्त समवायाग और नन्दीसूत्र मे विस्तृत है। नन्दीसूत्र के गणिपिटक-वर्णन मे समवायाग का परिचय देते हुए कहा है कि—इस अग मे एक

सख्या से आगे एक-एक बढाते हुए सो स्थान [सख्या] पर्यन्त समवायो का कथन है किन्तु समवायाग सूत्र के गणिपिटक वर्णन मे एक-एक सख्या बढाते हुए एक से सो पर्यन्त समवायो के पश्चात् एक छोटी सी विषय-सूची अधिक उपलब्ध है।

विषय-सूचियो का तुलनात्मक अध्ययन

समवायाग के गणिपिटक वर्णन मे समवायाग की विपय-सूची—

(१) एक से सो स्थान पर्यन्त का कथन।

(२) द्वादशाग का वर्णन।

(३) भगवान् महावीर के समवसरण का वर्णन

(४) जीव-अजीव राशि का विस्तृत वर्णन।

(५) नरक, तिर्यच, मनुप्य और देवो के आहार स्वासोच्छ्वास, लेश्या, आवास सख्या, आवासो की लम्बाई का प्रमाण, उत्पत्ति, च्यवन, अवगाहना [शरीर की लम्बाई], अवधिज्ञान, वेदना भेद, उपयोग, योग, इन्द्रियाँ, कषाय।

(६) जीवो की विविध योनियाँ।

(७) मेरु आदि पर्वतो का विष्कम्भ उत्सेध और परिधि का प्रमाण।

(८) कुलकर, तीर्थकर, गणधर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेवो का परिचय।

(९) भरत आदि क्षेत्रो का वर्णन।

(१०) कुछ अन्य पदार्थो का वर्णन [टीकाकार के मत मे— घनवात-तनवात आदि का वर्णन]।

उपलब्ध समवायाग की प्रतियो मे प्राप्त विषयो की विस्तृत सूची प्रस्तुत सस्करण के प्रारम्भ मे दी है। दोनो विषय-सूचियो का पाठक तुलनात्मक अध्ययन करें।

(क) इस विषय-सूची मे सो के पश्चात् एक कोटा कोटी पर्यन्त सख्या सूचक सूत्रो का उल्लेख क्यो नही हुआ ? अत सहसा मन मे आशङ्का हो जाती है कि—क्या यह अश परिवर्धित है ? किन्तु टीकाकार के सामने यह अश था। टीकाकार ने तो इस अश को **"अनेकोत्तरिका वृद्धि"** की सज्ञा भी दी है। सभव है विषय-सूची को सक्षिप्त बनाने के लिए इस अश का उल्लेख नही किया है।

(ख) समवायाग-परिचय पाठ मे दी हुई विषय-सूची और उपलब्ध समवायाग की प्रतियो के विषय क्रमश नही मिलते है। यह व्युत्क्रम क्यो और कब हुआ यह शोध का विषय है।

(ग) समवायाग परिचय पाठ मे दी हुई विपय-सूची मे **"विक्खभुस्सेह-परिरयप्पमाण विहि विसेसा य मंदरादीणं महीधराणं"** यह कथन है किन्तु उपलब्ध समवायाग की किसी भी प्रति मे कुलकर वर्णन से पूर्व मेरु आदि पर्वतो का वर्णन नही है। पर्वतो का वर्णन केवल एक से शत स्थान के मध्य मे ही है।

(घ) **"एए अण्णे य एवमाइ एत्थ वित्थरेणं अत्था समाहिज्जंति"** इस कथन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि—प्रारम्भ मे ये विपय और इस विपय-सूची मे अनुक्त अनेक विषय विस्तृत रूप मे सकलित किये गये थे किन्तु सक्षिप्त वाचनाकार आचार्यों ने इन सब विपयो को अति सक्षिप्त बना दिया है।

नन्दीसूत्र और समवायाग के गणिपिटक वर्णन मे समवायाग का एक अध्ययन एक श्रुतस्कन्ध एक उद्देशनकाल एक समुद्देशन काल और एक लाख चौवालीस हजार पदो का समान रूप से उल्लेख है। इस प्रकार दोनो आगमो के गणिपिटक वर्णन मे समवायाग का परिचय सक्षिप्त और विस्तृत रूप मे विद्यमान् है।

नन्दी सूत्र के सकलनकर्ता ने समवायाग के गणिपिटक वर्णन मे

विद्यमान समवायाग के विस्तृत परिचय पाठ को नन्दीसूत्र मे स्थान न देकर समवायाग परिचय के सक्षिप्त पाठ को स्थान दे दिया था। यदि नन्दीसूत्रान्तर्गत समवायाग परिचय पाठ मे **"ठाणग सयस्स"** के आगे **-जाव-** और जोडकर **"समवायस्स णं परित्ता वायणा"** पढा जावे तो विस्तृत परिचय पाठ का सक्षिप्त रूप स्पष्ट परिलक्षित हो जाता है। सभव है किसी समय प्रतिलिपिकार से **-जाव-** शब्द छूट गया और उस प्रतिलिपि की प्रतिलिपियो का पाठ उपलब्ध नन्दी-सूत्र तक चला आया।

आधुनिक शोध-विद्वान् नन्दी और समवायाग के गणिपिटक वर्णन मे आये हुए समवायाग के परिचय पाठो से इस निर्णय पर पहुचे है कि वर्तमान मे उपलब्ध समवायाग का शत स्थान से आगे का अश समवायाग के परिवर्द्धित सस्करण की सक्षिप्त वाचना है।

मूल समवायाग एक से सो स्थान पर्यन्त ही था जैसा कि नन्दी सूत्र मे उल्लेख है। यह परिवर्धन किस युग मे और किसके द्वारा सपन्न हुआ यह अभी तक शोध का विषय बना हुआ है।

भारतीय साहित्य के ग्रन्थरत्न महाभारत आदि का मूल और परिवर्धित विभाग इस युग मे शोध की कसोटी पर कसा जा चुका है। भगीरथ प्रयत्न के पश्चात् शोध विद्वान् विश्लेषण के मूल भूत आधारो को अङ्कित करने मे सफल हुये है। हमारे बहुश्रुत भी यदि ऐसा ही प्रयत्न करे तो शोध-कार्य सद्य सभव हो सकेगा।

समवायाङ्ग की सूत्र संख्या

वर्तमान मे उपलब्ध हस्तलिखित एव मुद्रित आगम प्रतियो की सूत्र सख्या समान नही है। विभिन्न लेखको की विभिन्न हस्त-लिखित प्रतियो मे तथा मुद्रित विभिन्न सस्करणो मे सूत्र सख्या की असमानता हमारी आदर्श आगम भक्ति एव श्रुतिसेवा का तथ्यपूर्ण

प्रतिविम्ब है। सूत्र सख्या का निर्णय करने के लिए समवायाग के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दो विभाग यदि मान ले तो एक से सो स्थान पर्यन्त सो सूत्र होते हैं किन्तु टीकाकार प्रत्येक समवाय के अन्तर्गत विषयानुसार वर्गीकृत सूत्र स्वीकार करते है। प्रस्तुत सस्करण के प्रारम्भ मे दी हुई विपय-सूची टीकाकार सम्मत सूत्रो की विपय-सूची है। उत्तरार्ध के सूत्रो की सही सख्या जानने के लिए ऐसी कोई सुनिश्चित विभाजक रेखा नही है जिसके आधार पर अन्तिम निर्णय तक पहुचा जा सके। इस समय मेरे सामने समवायाग की जितनी प्रतियाँ हैं उन सबकी सूत्र सख्या भिन्न-भिन्न है। श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर से प्रकाशित वीर सवत् २४६५ के सस्करण मे सो स्थान के पश्चात् उपसहार पर्यन्त सूत्र सख्या ६० दी गई है अर्थात् सम्पूर्ण समवायाग के सूत्रो की सख्या इस प्रति मे १६० है।

समवायाङ्ग की सकलन-शैली

समवायाग के प्रारम्भ मे दो आदि वाक्य [उत्थानिका] है। प्रथम आदि वाक्य से प्रस्तुत समवायाग भगवान् महावीर द्वारा प्रज्ञप्त है—यह सूचित होता है। द्वितीय आदि वाक्य से प्रस्तुत समवायाग श्रीसुधर्मागणधर सकलित सिद्ध होता है। प्रस्तुत सस्करण मे दोनो आदि-वाक्य अकित है। वास्तव मे दोनो आदिवाक्य यथार्थ है। अर्थागम की अपेक्षा प्रथम और सूत्र-सकलन की अपेक्षा द्वितीय सगत है।

एक समवायसे सो समवाय तक क्रमवद्ध सख्या है। समवायाग परिचय के मूल पाठ मे इस क्रम को **एकोत्तरिकावृद्धि** कहा है।

सो से पाँचसो तक ५०-५० वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे है।

पाच सो से इग्यारहसो तक सो-सो की वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे है।

नो सो की वृद्धि करके दो हजार की सख्या वाला एक सूत्र है।

दस हजार पर्यन्त एक-एक हजार की वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे है।

एक लाख से नो लाख तक एक-एक लाख की वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे है।

नो लाख की सख्या वाले सूत्र के पश्चात् सहसा एक सूत्र नो हजार की सख्या वाला है जो टीकाकार के युग से लेकर अबतक अखरता चला आ रहा है। क्योकि चोरानवें समवाय मे भगवान् अजितनाथ के चोरानवें सो अवधिज्ञानी कहे जा चुके थे फिर यहाँ कुछ अधिक नो हजार अवधिज्ञानी कहने का विशेष प्रयोजन क्या है, यह जिज्ञाशा बनी हुई है।

दस लाख के पश्चात् एक करोड और एक करोड के पश्चात् एक कोटा-कोटी का सूत्र है। टीकाकार ने इस वृद्धि को **"अनेकोत्तरिका वृद्धि"** कहा है।

द्वादशाग वर्णक से उपसहार पर्यत जितने विपयो का सकलन है उनका उल्लेख पूर्व किया जा चुका है किन्तु समवायाग के सख्या प्रधान सकलन मे इन विपयो का सकलन सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है।

सख्या-प्रधान इस सकलन मे सख्या सकलन की एक स्वतन्त्र पद्धति है। उदाहरण रूप मे कतिपय सकेत यहाँ अकित किये हैं। एक-एक सहस्त्र, एक लक्ष, एक कोटि, एक पल्य और एक सागर तक एक की सख्या मे ही सकलित है।

एक पूर्ण सख्या से दूसरी पूर्ण सख्या के बीच मे जितनी सयुक्त सख्या है वह पूर्व कथित पूर्ण सख्या का ही अग माना गया है। यथा—

(क) इग्यारहवें समवाय मे इग्यारह सो इग्यारह को तथा इग्यारह सो इकवीस को इग्यारह की सीमा मे ही स्वीकार किया है।

(ख) सतरहवें समवाय मे सतरह सो इकवीस को सतरह की सीमा मे स्वीकार किया है।

(ग) इकतीसवें समवाय मे इकतीस हजार छ सो तेईस को तथा इकतीस हजार आठ सो इकतीस को इकतीस की सीमा मे स्वीकार किया है। ऐसे अनेक उदाहरण इस सकलन मे है। वास्तव मे उस युग मे यह एक प्रशस्त पद्धति रही है।

पुनरुक्ति

यदि उपयोगिता हो तो पुनरुक्ति कोई दोष नही है किन्तु यहाँ एक समवाय मे जबूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ कहा और एक लाखवें समवायमे भी जबूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ कहा। इस पुनरावृत्ति की क्या उपयोगिता है यह ज्ञातव्य है।

प्रस्तुत सस्करण की उपादेयता

अन्य प्रान्तो की अपेक्षा आगमस्वाध्याय की अभिरुचि गुजरात के श्रमणी वर्ग तथा श्राविका वर्ग मे अधिक है। यही कारण है कि मूल आगमो के स्वाध्याय के लिए "जैन सिद्धान्त पाठमाला" आदि नामो के अनेक सस्करण गुजरात से ही सर्वप्रथम प्रकाशित हुए है। स्वाध्याय के लिए गद्य पाठ की अपेक्षा पद्य पाठ अधिक रुचिकर होता है। इसलिए दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि के अधिक प्रकाशन हुए हैं। गद्य पाठ वाले आगमो मे केवल नन्दीसूत्र सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है।

समवायाग का अधिकाधिक स्वाध्याय हो इस भावना से प्रेरित होकर मैंने प्रस्तुत सकरण की प्रतिलिपि तैयार की किन्तु आवश्यक उपयुक्त साधनो के अभाव मे हार्दिक भावना के अनुरूप सकलन नही हो सका। आशा है शरीर स्वस्थ रहा और उपयोगी साहित्य सामग्री का सान्निध्य रहा तो स्वाध्याय प्रेमियो के समक्ष द्वितीय

सस्करण और अधिक व्यवस्थित रूप मे प्रस्तुत किया जा सकेगा।

इस सस्करण की जो विशेषताएँ है वे पाठको के सामने है। शोध-रुचि और स्वाध्याय प्रेमी इस प्रकाशन की उपादेयता किस रूप मे स्वीकार करते है, यह अभी जिज्ञासा है।

संक्षिप्त वाचना की देन—

समवायाग मे यत्र-तत्र अन्य आगमो को देखने के लिए जितने निर्देश दिये गये है वे सव सक्षिप्त वाचना की देन है। यहाँ उदाहरण रूप मे कुछ निर्देश अकित किये है यथा—

जहा नदीए समवाय ८८।
कप्पस्स समोसरण णेयव्वं सूत्र १५७।
एयं सव्वं ओहिपयं भाणियव्वं
एयं सव्वं वेयणापयं भाणियव्वं
एवं सव्वं लेसापयं भाणियव्वं
एवं सव्वं आहारपयं भाणियव्व सूत्र १५४।

इमी प्रकार-जाव-का प्रयोग भी प्राय सक्षिप्त वाचनाकारो द्वारा किया गया है।

नन्दीसूत्र, प्रज्ञापना और कल्पसूत्र आदि के सकलन के पश्चात् समवायाग का सकलन हुआ है, यह मान्यता नितान्त भ्रम भरी है। वास्तव मे ये सव निर्देश सक्षिप्त वाचनाकारो के द्वारा हुए है।

एवं का अर्थ समानता—

समवाय ८८ तथा कुछ अन्य समवायो मे **"एवं चउसुदिसासु वि णेयव्वं"** यह वाक्य है। इस वाक्य मे **'एव'** का प्रयोग **'समानता'** का सूचक है। एक दिशा का चरमान्त कहने के पश्चात् शेष तीन दिशाएँ रहती है किन्तु उपर्युक्त वाक्य मे चारो दिशाओ के कहने

का तात्पर्य यह है कि—चारो दिशाओं के चरमान्तो का अन्तर समान है।

सूत्र सकलन मे वैविध्य

समवायाग की सूत्र सकलना मे जिस वैविध्य का दर्शन होता है उसकी सहेतुकता यदि युक्तिपूर्वक सिद्ध की जावे तो जिज्ञासु जगत पर महान् उपकार होगा। वैविध्य का एक उदाहरण—दो समान सख्याओ के आधार पर अड़सठ चक्रवर्ती विजय और अडसठ विजयो की राजधानियो के दो सूत्र हो सकते है किन्तु यहाँ एक सूत्र है। अडसठ तीर्थंकरो का एक सूत्र कहने के पश्चात् चकवर्ती बलदेव और वासुदेवो का एक भिन्न सूत्र है, जबकि पुष्करार्ध द्वीप के अरिहत चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेवो का एक ही सूत्र है। सभव है सक्षिप्त वाचनाकारो का यह उपक्रम परिष्कार की प्रतीक्षा मे इस युग तक आ पहुँचा है।

समवायाग के स्वतन्त्र चिन्तन मे मैंने अनेक ज्ञातव्य विषयो की चर्चा की है किन्तु यहाँ स्थानाभाव से सकेत ही दिये हैं।

— मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

समवायाङ्ग विषय-सूची

समवाय १ सूत्र ४३

१८	युग्म सूत्र	
४	आयाम-विष्कम्भ सूत्र	
३	नक्षत्र सख्या	,,
१५	स्थिति	,,
३	उच्छ्वासादि	,,
योग ४३		

१८ युग्म सूत्र

१	आत्म सूत्र		१	अनात्म सूत्र	
१	दण्ड	,,	१	अदण्ड	,,
१	क्रिया	,,	१	अक्रिया	,,
१	लोक	,,	१	अलोक	,,
१	धर्म	,,	१	अधर्म	,,
१	पुण्य	,,	१	पाप	,,
१	वध	,,	१	माक्ष	,,
१	आश्रव	,,	१	सवर	,,
१	वेदना	,,	१	निर्जरा	,,

योग १८

४ आयाम-विष्कम्भ सूत्र

१ जम्बूद्वीप आयाम-विष्कम्भ

१ अप्रतिष्ठान नरकावास आयाम-विष्कम्भ
१ पालकविमान आयाम-विष्कम्भ
१ सर्वार्थसिद्धविमान आयाम-विष्कम्भ

योग ४

३ नक्षत्र संख्यासूत्र
१५ स्थितिसूत्र
३ नरकस्थिति सूत्र
३ असुरकुमार स्थितिसूत्र
१ तिर्यंच ,,
१ मनुष्य ,,
१ व्यतरदेव ,,
१ ज्योतिपीदेव ,,
५ विमानवासीदेव,,

योग १५

३ उच्छ्वासादिसूत्र
१ उच्छ्वास सूत्र
१ आहार सूत्र
१ सिद्धि सूत्र

योग ३

सर्वयोग ४३

समवाय २ सूत्र २३

३ युग्म सूत्र
४ नक्षत्र सख्या सूत्र

१३ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग २३

३ युग्म सूत्र
१ अर्थदण्ड सूत्र
१ राशि ,,
१ वघन ,,

योग ३

४ नक्षत्र संख्या सूत्र
१३ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
२ असुरकुमार ,,
१ तिर्यंच ,,
१ मनुष्य ,,
७ विमानवासीदेव ,,

योग १३

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २३

समवाय ३ सूत्र २४

५ प्रकीर्णक सूत्र
७ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग २४

५ प्रकीर्णक सूत्र
१ दड ,,
१ गुप्ति ,,
१ शल्य ,,
१ गर्व ,,
१ विराधना ,,

योग ५

७ नक्षत्रसख्या सूत्र
९ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार ,,
१ तिर्यंच ,,
१ मनुष्य ,,
३ विमानवासीदेव ,,

योग ९

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २४

समवाय ४ सूत्र १८

६ प्रकीर्णक सूत्र
३ नक्षत्र सख्या ,,
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १८

६	प्रकीर्णक	सूत्र
१	कषाय	,,
१	ध्यान	,,
१	विकथा	,,
१	सज्ञा	,,
१	वध	,,
१	योजन	,,
योग ६		

३	नक्षत्रसंख्या सूत्र	
६	स्थिति सूत्र	
२	नरक स्थिति सूत्र	
१	असुरकुमार	स्थिति सूत्र
३	विमानवासीदेव	,,
योग ६		

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय ५ सूत्र २२

८	प्रकीर्णक	सूत्र
५	नक्षत्र सख्या	,,
६	स्थिति	,,
३	उच्छ्वासादि	,,
योग २२		

८ प्रकीर्णक सूत्र
१ क्रिया सूत्र
१ महाव्रत ,,
१ कामगुण ,,
१ आश्रव ,,
१ सवर ,,
१ निर्जरास्थान सूत्र
१ समिति ,,
१ अस्तिकाय ,,

योग ८

५ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति ,,
१ असुरकुमारस्थिति ,,
३ विमानवासीदेवस्थिति ,,

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयाग २२

समवाय ६ सूत्र १७

६ प्रकीर्णक सूत्र
२ नक्षत्रसख्या ,,
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १७

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ लेश्या ,,
१ जीवनिकाय ,,
१ बाह्यतप ,,
१ आभ्यंतरतप ,,
१ समुद्घात ,,
१ अवग्रह ,,

योग ६

२ नक्षत्रसंख्या सूत्र
६ स्थिति ,,
२ नरकस्थिति ,,
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार ,,

योग ६

उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय ७ सूत्र २३

६ प्रकीर्णक सूत्र
५ नक्षत्रसंख्या ,,
९ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग २३

६ प्रकीर्णक सूत्र

१ भय सूत्र
१ समुद्घात ,,
१ भगवान् महावीर के शरीर की ऊचाई
१ जवूद्वीप के वर्षधर पर्वत
१ ,, वर्ष (क्षेत्र)
१ क्षीणमोह गुणस्थान मे वेदने योग्य कर्म प्रकृतियां।

योग ६

५ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार स्थितिसूत्र
५ विमानवासीदेव स्थितिसूत्र

योग ९

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २३

समवाय ८ सूत्र १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
१ मदस्थान सूत्र
१ प्रवचनमाता सूत्र

१ व्यतरदेवो के चैत्यवृक्षो की ऊचाई
१ जवूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊचाई
१ गरुडावास के कूटशाल्मली वृक्ष की ऊचाई
१ जम्बूद्वीप को जगती की ऊचाई
१ केवली समुद्घात के आठ समयो का वर्णन
१ भगवान् पार्श्वनाथ के गण और गणधर
१ चन्द्र के साथ योग करनेवाले नक्षत्र

योग ९

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार स्थितिसूत्र
३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय ९ सूत्र २०

४ प्रकीर्णक सूत्र
३ ज्योतिषोदेव सूत्र
४ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थितिसूत्र
३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग २०

४ प्रकीर्णक सूत्र

१ ब्रह्मगुप्तिया

१ अब्रह्मगुप्तिया

१ ब्रह्मचर्य अध्ययन

१ भगवान् पार्श्वनाथ के शरीर की ऊचाई

योग ४

४ ज्योतिषी देव सूत्र

१ चन्द्र के साथ अभिजित् का योग काल

१ चन्द्र के साथ अभिजित् आदि का उत्तर दिशा मे योग

१ तारा चार—(ऊचाई)

योग ३

४ प्रकीर्णक सूत्र

१ जम्बूद्वीप मे मत्स्य का प्रमाण

१ विजयद्वार की प्रत्येक बाहा मे भौम नगर

१ व्यतरदेवो की सुधर्मा सभा की ऊचाई

१ दर्शनावरण की उत्तर प्रकृतिया

योग ४

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरकुमार स्थितिसूत्र

३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २०

समवाय १० सूत्र २५

८ प्रकीर्णक सूत्र
१४ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग २५

८ प्रकीर्णक सूत्र

१ श्रमणधर्म सूत्र
१ चित्तसमाधिस्थान सूत्र
१ मेरुपर्वत के मूल का विष्कम्भ
१ भगवान् अरिष्टनेमि की ऊचाई
१ कृष्ण वासुदेव की ऊचाई
१ राम बलदेव की ऊचाई
१ ज्ञानवृद्धि के नक्षत्र
१ कल्पवृक्ष

योग ८

१४ स्थिति सूत्र

५ नरक स्थिति सूत्र
३ असुरकुमार स्थितिसूत्र
१ बादर वनस्पति काय की उत्कृष्ट स्थिति
१ व्यतरदेव की ,,
४ विमानवासीदेव की ,,

योग १४

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २५

समवाय ११ सूत्र १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्‌वासादिक ,,

योग १६

७ प्रकीर्णक सूत्र

१ श्रावक-प्रतिमा
१ लोकान्त से ज्योतिषचक्र का अन्तर
१ जबूद्वीप मे मेरु से ज्योतिषचक्र का अन्तर
१ भगवान् महावीर के गणधर
१ नक्षत्र सख्या सूत्र
१ नीचे के तीन ग्रैवेयको के विमान
१ मेरुपर्वत के शिखर का विष्कम्भ

योग ७

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्‌वासादि सूत्र

सर्वयोग १६

समवाय १२ सूत्र २०

११ प्रकीर्णक सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग २०

समवाय १३ सूत्र १७

८ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १७

८ प्रकीर्णक सूत्र

१ क्रियास्थानो के नाम

१ सौधर्म और ईशान देवलोक के विमान प्रस्तर

१ सौधर्मावतसक विमान का आयाम-विष्कम्भ

१ ईशानावतसक ,, ,, ,

१ जलचर तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय की कुल कोटि

१ प्राणायु पूर्व की वस्तु

१ गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय के योग

१ सूर्यमण्डल का परिमाण

योग ८

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरकुमार स्थितिसूत्र

३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय १४ सूत्र १८

८ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १८

८ प्रकीर्णक सूत्र
१ भूतग्राम सूत्र
१ पूर्वों का सूत्र
१ आग्रायणी पूर्व की वस्तु
१ भगवान् महावीर की श्रमण सपदा
१ गुणस्थान सूत्र
१ भरत और एरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
१ चक्रवर्ती के रत्न
१ जबूद्वीप की मोटी नदिया

योग ८

७ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
४ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय १५ सूत्र १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
१ परमाधार्मिक देव सू०—दो गाथा
१ भगवान् नमिनाथ की ऊचाई
१ कृष्णपक्ष मे ध्रुव राहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्र कला का आवरण*
१ शुक्लपक्ष मे ,, ,, ,, अनावरण*
१ शतभिषादि ६ नक्षत्रो का चन्द्र के साथ योगकाल
१ चैत्र तथा आश्विन मे दिन के मुहूर्त*
१ चैत्र तथा ,, रात्री के ,,
१ विद्यानुप्रवादपूर्व के वस्तु
१ मनुष्य के योग

योग ७

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र

---

*मूल मे दो सूत्र माने हैं।
*टीका मे एक सूत्र माना है।
*चैत्र तथा आश्विन के दिन और रात्रि के मुहूर्तो का एक सूत्र है।

३ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग १६

समवाय १६ सूत्र १६

७ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १६

७ सात प्रकीर्णक सूत्र

१ सूत्रकृताग के अध्ययन

१ कषाय सूत्र

१ मेरु पर्वत के नाम

१ भगवान् पार्श्वनाथ की श्रमण सम्पदा

१ आत्मप्रवाद पूर्व की वस्तु

१ चमरेन्द्र और बलेन्द्र के लयनो का आयाम-विष्कम्भ

१ लवण समुद्र के लहरो की ऊचाई

योग ७

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरकुमार स्थिति सूत्र

३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १६

समवाय १७ सूत्र २१

१० प्रकीर्णक सूत्र
८ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग २१

१० प्रकीर्णक सूत्र

१ असयम सूत्र
१ सयम ,,
१ मानुषोत्तर पर्वत की ऊचाई
१ वेलधर और अनुवेलधर आदि नागराज के सर्व आवास पर्वतो की ऊचाई
१ लवण समुद्र के पैदे से ऊपर की ऊचाई
१ जघाचारण और विद्याचारण मुनियो की तिरछी गति
१ चमरेन्द्र के तिगिच्छ कूट उत्पातपर्वतो की ऊचाई
१ वलेन्द्र और रुचकेन्द्र ,, ,,
१ मरण के प्रकार
१ दशवें गुणस्थानवर्ती आत्मा की कर्म प्रकृतियाँ

योग १०

८ स्थिति सूत्र

३ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार देव स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ८

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २१

समवाय १८ सूत्र १८

८ प्रकीर्णक सूत्र

७ स्थिति ,,

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १८

८ प्रकीर्णक सूत्र

१ ब्रह्मचर्य सूत्र

१ भगवान् नेमनाथ की श्रमण सम्पदा

१ सर्व साधुओ के आचार स्थान

१ चूलिका सहित आचाराग के पद

१ लिपि सूत्र

१ अस्तिनास्ति प्रवाद की वस्तु

१ धूमप्रभा का बाहल्य (चौडाई)

१ पौष और आषाढ मास के दिन और रात का उत्कृष्ट परिमाण

योग ८

७ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय १६ सूत्र १५

५ प्रकीर्णक सूत्र

७ स्थिति ,,

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १५

५ प्रकीर्णक सूत्र

१ ज्ञाता के अध्ययन

१ सूर्य का तापक्षेत्र

१ शुक्र महाग्रह का उदयास्त

१ कला परिमाण

१ विवाहित होने के पश्चात् दीक्षित होनेवाले तीर्थंकर

योग ५

७ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव स्थिति सूत्र

४ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १५

समवाय २० सूत्र १७

७ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति „
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १७

७ प्रकीर्णक सूत्र
१ असमाधिस्थान सूत्र
१ भगवान् मुनिसुव्रत की ऊचाई
१ सर्व घनोदधि का बाहल्य (चौडाई)
१ प्राणत देवेन्द्र के सामान्य देव
१ नपुसक वेदनीय की वध स्थिति
१ प्रत्याख्यान पूर्व की वस्तु
१ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी का काल परिमाण

योग ७

७ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थिति सूत्र
४ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय २१ सूत्र १४

४ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति „

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १४

४ प्रकीर्णक सूत्र

१ सवलदोप

१ अष्टम गुणस्थानवर्ती आत्मा की कर्म प्रकृतिया

१ अवसर्पिणी के पञ्चम-षष्ठ आरे का परिमाण

१ उत्सर्पिणी के प्रथम-द्वितीय ,, ,,

योग ४

७ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय २२ सूत्र १७

६ प्रकीर्णक सूत्र

८ स्थिति मूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १७

६ प्रकीर्णक सूत्र

१ परीषह सूत्र

४ दृष्टिवाद के ,,

१ पुद्गल सूत्र

योग ६

८ स्थिति सूत्र

३ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ८

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय २३ सूत्र १३

४ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १३

४ प्रकीर्णक सूत्र

१ सूत्रकृताग के अध्ययन

१ तीर्थङ्कर केवलज्ञानोत्पत्ति सूत्र

१ तीर्थङ्करो का पूर्वभव मे आगमज्ञान सूत्र

१ ,, ,, मडलीकराजा ,,

योग ४

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव स्थिति सूत्र

३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १३

समवाय २४ सूत्र १५

६ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १५

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ देवाधिदेव
१ चुल्लहिमवत और शिखरी पर्वत की जीवा का परिमाण
१ इन्द्र
१ पौरुषीप्रमाण
१ गगा-सिन्धु प्रवाह विस्तार
१ रक्ता-रक्तवती ,,

योग ६

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थिति सूत्र
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १५

समवाय २५ सूत्र १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
१ पञ्चमहाव्रत भावना
१ भगवान् मल्लीनाथ की ऊचाई
१ वैताढ्य पर्वतो की ऊँचाई तथा गहराई
१ नरकावास
१ आचाराग के अध्ययन
१ अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय के कर्म की प्रकृतियो का वध
१ गगा सिन्धु का प्रपात
१ रक्ता रक्तवती का प्रपात
१ लोकबिन्दुसार पूर्व की वस्तु

योग ९

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थिति सूत्र
३ विमानवासीदेव ,,

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय २६ सूत्र ११

२ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग ११

२ प्रकीर्णक सूत्र

१ दशाश्रुतस्कध, वृहत्कल्प और व्यवहार के उद्देशन काल
१ अभवसिद्धिक जीव के कर्म प्रकृतियो की सत्ता

योग २

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थितिसूत्र
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग ११

समवाय २७ सूत्र १५

६ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १५

६ प्रकीर्णक सूत्र

१ अणगार सूत्र

१ नक्षत्र सूत्र

१ नक्षत्रमास सूत्र

१ सौधर्म और ईशान देवलोक के विमानो की चौडाई

१ वेदक सम्यक्त्व बध विरत के कर्म प्रकृतियो की सत्ता

१ पौरुषी सूत्र

योग ६

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरदेव स्थितिसूत्र

३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १५

समवाय २८ सूत्र १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

१ आचार प्रकल्प

१ भवसिद्धिक जीव की कर्म प्रकृतियाँ

१ आभिनिवोधिक ज्ञान के भेद

१ ईशानकल्प मे विमान

१ वध्यमान देवगति मे कर्म प्रकृतियाँ
वध्यमान नरकगति मे कर्म प्रकृतियाँ

योग ५

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव ,,
३ विमानवासीदेव ,,

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय २९ सूत्र १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
१ पापश्रुत
१ आषाढ के दिनो का परिमाण
१ भाद्रपद ,,
१ कार्तिक ,,
१ पौष ,,
१ फाल्गुन ,,
१ वैसाख ,,

१ चन्द्रदिन
१ सम्यक्दृष्टि के बध्यमान कर्म प्रकृतिया

योग ९

६ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति ,,
१ असुरदेवस्थिति ,,
३ विमानवासीदेवस्थिति ,,

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय ३० सूत्र १६

८ प्रकीर्णक सूत्र
५ स्थिति ,,
३ उच्छ्वासादि ,,

योग १६

८ प्रकीर्णक सूत्र
१ मोहनीयस्थान
१ मण्डितपुत्र गणधर का श्रमण पर्याय
१ अहोरात्र प्रमाण और अहोरात्र के नाम
१ भगवान् अरहनाथ की ऊचाई
१ सहस्रार देवेन्द्र के सामानिक देव
१ भगवान् पार्श्वनाथ का गृहवास काल
१ भगवान् महावीर का गृहवास काल

१ रत्नप्रभा के नरकावास

योग ८

५ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरदेव ,,

२ विमानवासीदेव ,,

योग ५

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १६

समवाय ३१ सूत्र १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

१ सिद्ध गुण सूत्र

१ मेरु पर्वत परिधि सूत्र

१ सूर्य दर्शन अवधि सूत्र

१ अधिकमास परिमाण सूत्र

१ आदित्यमास परिमाण सूत्र

योग ५

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरदेव स्थितिसूत्र
३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय ३२ सूत्र १४

६ प्रकीर्णक सूत्र
५ स्थितिसूत्र
३ उच्छ्वासादिक सूत्र

योग १४

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ योग सग्रह
१ देवेन्द्र
१ भगवान् कुन्थुनाथ की केवली सपदा
१ सौधर्म कल्प के विमान
१ रेवति नक्षत्र के तारे
१ नाटय

योग ६

५ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति सूत्र
१ असुर देव स्थिति सूत्र
२ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ५

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय ३३ सूत्र १४

४ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १४

४ प्रकीर्णक सूत्र
१ आशातना
१ चमरचचा के भौमनगर
१ महाविदेह-विष्कम्भ
१ सूर्य-दर्शन

योग ४

७ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थिति सूत्र
३ ज्योतिषीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय ३४ सूत्र ६

१ अतिशय

१ जम्बूद्वीप मे चक्रवर्ती विजय
१ ,, दीर्घ वैताढ्य
१ ,, तीर्थङ्कर
१ चमरेन्द्र के भवनावास
१ नरकावास

योग ६

समवाय ३५ सूत्र ६

१ वचनातिशय
१ भगवान् कुन्थुनाथ की ऊचाई
१ दत्त वासुदेव की ऊचाई
१ नदन वलदेव की ऊचाई
१ जिन दाढा
१ नरकावास

योग ६

समवाय ३६ सूत्र ४

१ उत्तराध्ययन के अध्ययन
१ चमरेन्द्र सभा की ऊचाई
१ भगवान् महावीर की श्रमणी सम्पदा
१ पौरुषी प्रमाण

योग ४

समवाय ३७ सूत्र ५

१ भगवान् कुन्थुनाथ के गणधर

१ हेमवय हैरण्यवय की जीवा का आयाम
१ विजयादि राजधानियो के प्राकारो की ऊचाई
१ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
१ पौरुपी प्रमाण

योग ५

समवाय ३८ सूत्र ४

१ भगवान् पार्श्वनाथ की श्रमणी सम्पदा
१ हेमवय हैरण्यवय की जीवा, धनुपृष्ठ और परिधि
१ मेरुपर्वत के द्वितीय काण्ड की ऊचाई
१ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ४

समवाय ३९ सूत्र ४

१ भगवान् नमिनाथ के अवधि ज्ञानी मुनि
१ कुल पर्वत
१ नरकावास
१ कर्म प्रकृतियाँ

योग ४

समवाय ४० सूत्र ८

१ भगवान् अरिष्टनेमि की श्रमणी सम्पदा
१ मेरु चूलिका की ऊचाई
१ भगवान् शातिनाथ की ऊचाई

१ भूतानद नागकुमार भवनावास
१ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
२ पौरुषी प्रमाण
१ महाशुक्र कल्प के विमानावास

योग ८

समवाय ४१ सूत्र ३

१ भगवान् नमिनाथ की श्रमणी सम्पदा
१ नरकावास
१ महालिया विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ३

समवाय ४२ सूत्र १०

१ भगवान् महावीर का श्रमण पर्याय
१ जम्बूद्वीप के चरमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिम चरमान्त का अन्तर
१ शेष तीन दिशाओ के अतर का सूचक सूत्र
१ कालोद समुद्र के चन्द्र, सूर्य
१ समूछिम भुजपरिसर्प की स्थिति
१ नामकर्म की प्रकृतियाँ
१ लवण समुद्र वेला
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
१ पञ्चम, षष्ठ, आरा परिमाण
१ प्रथम द्वितीय ,,

योग १०

समवाय ४३ सूत्र ५

१ कर्मविपाक के अध्ययन
१ नरकावास
२ जबूद्वीप चरमात से गोस्तूभ चरमान्त का अन्तर
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशनकाल

योग ५

समवाय ४४ सूत्र ४

१ ऋषि भाषित के अध्ययन
१ भगवान् विमलनाथ की युगान्तकृत् भूमि
१ धरणेन्द्र के भवनावास
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ४

समवाय ४५ सूत्र ८

१ समयक्षेत्र का आयाम-विष्कम्भ
१ सीमत नरकावास का आयाम-विष्कम्भ
१ उडु विमान का आयाम-विष्कम्भ
१ ईषत्प्राग्भारा का आयाम-विष्कम्भ
१ भगवान् धर्मनाथ की ऊचाई
१ मेरु पर्वत से चारो दिशाओ का अन्तर
१ नक्षत्र-चन्द्रयोग
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

समवाय ४६ सूत्र ३

१ दृष्टीवाद के मातृका पद
१ ब्राह्मी लिपि के मातृकाक्षर
१ प्रभजन के भवनावास

योग ३

समवाय ४७ सूत्र २

१ सूर्यदर्शन
१ अग्निभूति का गृहवास

योग २

समवाय ४८ सूत्र ३

१ चक्रवर्ती के पट्टण
१ भगवान् धर्मनाथ के गणधर
१ सूर्यमडल का विष्कम्भ

योग ३

समवाय ४९ सूत्र ३

१ सप्त सप्तमिका भिक्षु पडिमा
१ देवकुरु-उत्तरकुरु के युगलिको का यौवन
१ इन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति

योग ३

समवाय ५० सूत्र ७

१ भगवान् मुनिसुव्रत की श्रमणी सम्पदा
१ भगवान् अनतनाथ की ऊचाई
१ पुरुषोत्तम वासुदेव की ऊचाई
१ सर्व दीर्घ वैताढयो का विष्कम्भ
१ लातक कल्प के विमानावास
१ सर्व तमिस्र गुफा और खड प्रपात गुफा का आयाम
१ सर्व कचनग पर्वतो की चूलिका का विष्कम्भ

योग ७

समवाय ५१ सूत्र ५

१ ब्रह्मचर्य अध्ययन के उद्देशन काल
१ चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा का स्तम्भ
१ बलेन्द्र की सभा का स्तम्भ
१ सुप्रभ बलदेव का आयु
१ दर्शनावरण और नाम कर्म की उत्तर कर्म प्रकृतियाँ

योग ५

समवाय ५२ सूत्र ५

१ मोहनीय कर्म के नाम
१ गोथूभ आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त का और वलयामुख पाताल-कलश के पर्वत के पश्चिम चरमान्त का अतर
१ शेष तीन दिशाओ का सूचक सूत्र
१ कर्म प्रकृतियाँ

१ विमानावास

योग ५

समवाय ५३ सूत्र ४

१ देवकुरु-उत्तरकुरु की जीवा का आयाम
१ महाहिमवत-रुक्मी वर्षधर की जीवा का आयाम
१ भगवान् महावीर के एक वर्ष पर्याय वाले श्रमणो की सम्पदा
१ सम्मूछिम उरपरिसर्प की स्थिति

योग ४

समवाय ५४ सूत्र ४

१ भरत ऐरवत मे उत्तम पुरुष
१ भगवान् अरिष्टनेमि का छद्मस्थ पर्याय
१ भगवान् महावीर के एक दिवसीय प्रश्नोत्तर
१ भगवान् अनतनाथ के गणधर

योग ४

समवाय ५५ सूत्र ६

१ भगवान् मल्लिनाथ की परमायु
१ मदर पर्वत के पश्चिम चरमान्त से विजय द्वार के पश्चिम चरमान्त का अन्तर
१ शेप तीन दिशाओ का सूचक सूत्र
१ भगवान् महावीर उपदिष्ट पुण्य पाप फल विपाक के अध्ययन

१ नरकावास
१ कर्म प्रकृतिया

योग ६

समवाय ५६ सूत्र २

१ नक्षत्र चन्द्र योग
१ भगवान् विमलनाथ के गण और गणधर

योग २

समवाय ५७ सूत्र ५

१ आचाराग, सूत्रकृताग और स्थानाग के अध्ययन
१ गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर सूचक सूत्र
१ शेष तीन दिशाओ का सूचक सूत्र
१ भगवान् मल्लिनाथ की मन. पर्यवज्ञानी मुनि सपदा
१ महाहिमवत और रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि का सूत्र

योग ५

समवाय ५८ सूत्र ६

१ नरकावास
१ कर्मप्रकृतियाँ
१ गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिम चरमान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर

१ शेष तीन दिशाओ का सूचक सूत्र

योग ६

समवाय ५९ सूत्र ३

१ चन्द्र सवत्सर के ऋतु

१ भगवान् सभवनाथ की छद्मस्थ पर्याय

१ भगवान् मल्लिनाथ के अवधिज्ञानी मुनियो की सम्पदा

योग ३

समवाय ६० सूत्र ६

१ सूर्य मण्डल

१ लवण समुद्र अग्रोदक

१ भगवान् विमलनाथ की ऊचाई

१ वैरोचनेन्द्र के सामानिक देव

१ ब्रह्मेन्द्र के सामानिक देव

१ विमानावास

योग ६

समवाय ६१ सूत्र ४

१ पचसवत्सरीय युग के ऋतुमास

१ मदर पर्वत के प्रथम काण्ड की ऊचाई

१ चन्द्र मण्डल का समाश

१ सूर्य मण्डल का समाश

योग ४

समवाय ६२ सूत्र ५

१ पचसवत्सरीय युग की पूर्णिमा और अमावस्या
१ भगवान् वासुपूज्य के गणधर
१ शुक्ल और कृष्ण पक्ष मे चन्द्र की वृद्धि हानि
१ सौधर्म और ईशान मे प्रथम प्रस्तर के विमान
१ सर्व विमान प्रस्तर

योग ५

समवाय ६३ सूत्र ४

१ भगवान् ऋषभदेव का राज्यकाल
१ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष के युगलिक जनो का यौवन काल
१ निषध पर्वत पर सूर्य मण्डल
१ नीलवत पर्वत पर सूर्य मण्डल

योग ४

समवाय ६४ सूत्र ६

१ अष्ट अष्टमिका भिक्षु पडिमा
१ असुर कुमारावास
१ चमरेन्द्र के सामानिक देव
१ सर्व दधिमुख पर्वतो का सस्थान (आकार) विष्कम्भ और ऊचाई
१ विमानावास
१ चक्रवर्ती के हार का परिमाण

योग ६

समवाय ६५ सूत्र ३

१ सूर्य मण्डल
१ मौर्यपुत्र गणधर का गृहवास काल
१ सौधर्मावतसक के भौम नगर

योग ३

समवाय ६६ सूत्र ६

१ दक्षिणार्ध के चन्द्र
१ दक्षिणार्ध के सूर्य
१ उत्तरार्ध के चन्द्र
१ उत्तरार्ध के सूर्य
१ भगवान् श्रेयासनाथ के गणधर
१ आभिनिबोधिक ज्ञान की स्थिति

योग ६

समवाय ६७ सूत्र ४

१ पचसवत्सरीय युग के नक्षत्रमास
१ हैमवय और हैरण्यवय की बाहाओ का आयाम
१ मदर पर्वत के पूर्व चरमान्त से गोतम द्वीप के पूर्व चरमान्त का अन्तर
१ सर्व नक्षत्रो के सीमा विष्कम्भ का समाश

योग ४

सम्वाय ६८ सूत्र ५

१ धातकी खड के चक्रवर्ती विजय और राजधानिया
१ धातकी खण्ड के उत्कृष्ट अरिहत
१ ,, चक्रवर्ती
,, वलदेव
,, वासुदेव
१ इसी प्रकार पुष्करार्ध द्वीप के अर्हत
,, ,, चक्रवर्ती
,, ,, वलदेव
,, ,, वासुदेव
१ भगवान् विमलनाथ की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा

योग ५

समवाय ६९ सूत्र ३

१ समयक्षेत्र के वर्ष और वर्षधर पर्वत
१ मदर पर्वत के पश्चिम चरमान्त से गोतमद्वीप के पश्चिम चरमान्त का अन्तर
१ कर्म प्रकृतिया

योग ३

समवाय ७० सूत्र ५

१ भगवान् महावीर क पर्युपण
१ भगवान् पार्श्वनाथ का श्रामण्य पर्याय
१ भगवान् वासुपूज्य की ऊचाई

१ मोहनीय कर्म की स्थिति
१ महेन्द्र के सामानिक देव

योग ५

समवाय ७१ सूत्र ४

१ चतुर्थ चन्द्र सवत्सर मे सूर्य की आवृत्ति
१ वीर्यप्रवाद पूर्व के प्राभृत
१ भगवान् अजितनाथ का गृहवास काल
१ सगर चक्रवर्ती का गृहवास काल

योग ४

समवाय ७२ सूत्र ८

१ सुवर्ण कुमारावास
१ लवण समुद्र की वाह्य वेला
१ भगवान् महावीर का पूर्णायु
१ अचल भ्राता गणधर का सर्वायु
१ पुष्करार्ध मे चन्द्र
,, सूर्य
१ चक्रवर्ती के नगर
१ कला
१ सर्मूछिम खेचर की स्थिति

योग ८

समवाय ७३ सूत्र २

१ हरिवर्ष और रम्यक् वर्ष की जीवा का आयाम
१ विजय बलदेव का सर्वायु

योग २

समवाय ७४ सूत्र ४

१ अग्निभूती गणधर का सर्वायु
१ सीतोदा महानदी का उत्तराभिमुख प्रवाह
१ सीता ,, दक्षिणाभिमुख प्रवाह
१ नरकावास

योग ४

समवाय ७५ सूत्र ३

१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदत) की केवली मुनि सपदा
१ भगवान् शीतलनाथ का गृहवास काल
१ भगवान् शातिनाथ का ,,

योग ३

समवाय ७६ सूत्र २

१ विद्युत् कुमारावास
१ दीप कुमार आदि ६ के भवनावास

योग २

समवाय ७७ सूत्र ४

१ भरत चक्रवर्ती का कौमार्य काल

१ अग वश के दीक्षित होने वाले राजा
१ गर्दतोय और तुषित देवो का देव परिवार
१ मुहूर्त प्रमाण

योग ४

समवाय ७८ सूत्र ४

१ वैश्रमण के आधिपत्य मे भवनावास
१ अकपित गणधर का सर्वायु
१ उत्तरायन मे सूर्य की गति
१ दक्षिणायन मे ,,

योग ४

समवाय ७९ सूत्र ४

१ वडवामुख पाताल कलश और रत्नप्रभा का अतर
१ केतु, यूप, ईश्वर, पाताल कलश और रत्न प्रभा का अतर
१ तम प्रभा और घनोदधि का अन्तर
१ जबूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर

योग ४

समवाय ८० सूत्र ७

१ भगवान् श्रेयासनाथ की ऊचाई
१ त्रिपिष्ठ वासुदेव की ,,
१ अचल बलदेव की ,,
१ त्रिपिष्ठ वासुदेव का राज्यकाल

१ अप् बहुल काण्ड का बाहल्य
१ ईशानेन्द्र के सामानिक देव
१ सूर्योदय

योग ७

समवाय ८१ सूत्र ३

१ नव नवमिका भिक्षु पडिमा
१ भगवान् कुन्थुनाथ के मन पर्यवज्ञानियो की सपदा
१ विवाह प्रज्ञप्ति के महायुग्म शतक

योग ३

समवाय ८२ सूत्र ४

१ जवुद्वीप के सूर्य मडलो मे सूर्य का निष्क्रमण-प्रवेश
१ भगवान् महावीर का गर्भ साहरण काल
१ महाहिमवत वर्षधर पर्वत के उपरि चरमात से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमात का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मी पर्वत का अन्तर

योग ४

समवाय ८३ सूत्र ५

१ भगवान् महावीर का साहरण काल
१ भगवान् शीतलनाथ के गणधर
१ मडितपुत्र का सर्वायु
१ भगवान् ऋषभदेव का गृहवास काल

१ भरत चक्रवर्ती का गृहवास काल

योग ५

समवाय ८४ सूत्र १७

१ नरकावास
१ भगवान् ऋषभदेव का सर्वायु
१ भरत, बाहुबली, ब्राह्मी, सुन्दरी का सर्वायु
१ भगवान् श्रेयासनाथ का सर्वायु
१ त्रिपृष्ठ वासुदेव का सर्वायु
१ शक्रेन्द्र के सामानिक देव
१ अढाई द्वीप के बाहर के सर्व मदर पर्वतो की ऊचाई
१ सर्व अजनग पर्वतो की ऊचाई
१ हरिवर्ष और रम्यक् वर्ष की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम
१ पकबहुल काड के उपरी चरमात से नीचे के चरमान्त का अन्तर
१ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) के पद
१ नागकुमारावास
१ प्रकीर्णक
१ जीव योनिया
१ पूर्व से शीर्ष प्रहेलिका पर्यन्त गुणाकार
१ भगवान् ऋषभदेव की श्रमण सपदा
१ सर्व विमान

योग १७

समवाय ८५ सूत्र ४

१ आचाराग के उद्देशन काल
१ धातकी खण्ड के मदर पर्वतो की ऊचाई
१ रुचक माडलिक पर्वतो की ऊचाई
१ नदन वन के नीचे के चरमान्त से सौगँधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अन्तर

योग ४

समवाय ८६ सूत्र ३

१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदत) के गण और गणधर
१ भगवान् सुपार्श्वनाथ की वादी मुनि सपदा
१ शर्कराप्रभा और घनोदधि का अन्तर

योग ३

समवाय ८७ सूत्र ७

१ मदर पर्वत के पूर्वी चरमात से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर
१ मदर पर्वत के दक्षिणी चरमात से दकभास आवास पर्वत्त के उत्तरी चरमात का अन्तर
१ मदर पर्वत के पश्चिमी चरमात से शख आवास पर्वत के पूर्वी चरमात का अन्तर
१ मदर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास पर्वत के दक्षिणी चरमात का अन्तर
१ कर्म प्रकृतिया

१ महाहिमवत कूट के उपरि भाग से सौगधिक काण्ड के नीचे के भाग का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मी पर्वत का अन्तर

योग ७

समवाय ८८ सूत्र ६

१ चन्द्र सूर्य का ग्रह परिवार
१ दृष्टिवाद के सूत्र
१ मदर पर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर
१ शेष तीन दिशाओ का अन्तर
१ उत्तरायण मे सूर्य की गति
१ दक्षिणायन मे ,,

योग ६

समवाय ८९ सूत्र ४

१ भगवान् ऋषभदेव का निर्वाण काल
१ भगवान् महावीर का ,,
१ हरिसेण चक्रवर्ती का राज्यकाल
१ भगवान् शातिनाथ की श्रमणी सम्पदा

योग ४

समवाय ९० सूत्र ५

१ भगवान् शीतलनाथ की ऊचाई

१ भगवान् अजितनाथ के गण और गणधर
१ भगवान् शांतिनाथ के ,,
१ स्वयभू वासुदेव का दिग्विजयकाल
१ सर्ववृत्त वैताढ्य पर्वतो के शिखर से सौगधि काण्ड के तलिये का अन्तर

योग ५

समवाय ६१ सूत्र ४

१ वैयावृत्य पडिमा
१ कालोद समुद्र की परिधि
१ भगवान् कुन्थुनाथ की अवधि ज्ञानी मुनि सम्पदा
१ कर्म प्रकृतिया

योग ४

समवाय ६२ सूत्र ४

१ सर्व पडिमा
१ इन्द्रभूति गणधर का सर्वायु
१ मदर पर्वत के मध्यभाग से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर
१ इसी प्रकार शेष आवास पर्वतो का अन्तर

योग ४

समवाय ६३ सूत्र ३

१ भगवान् चन्द्रप्रभ के गण और गणधर

१ भगवान् शातिनाथ के चौदहपूर्वी मुनियो की सम्पदा
१ दिनरात की विषमता

योग ३

समवाय ६४ सूत्र २

१ निषध और नीलवत पर्वत की जीवा का आयाम
१ भगवान् अजितनाथ की अवधिज्ञानी मुनि सम्पदा

योग २

समवाय ६५ सूत्र ५

१ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गण और गणधर
१ पाताल कलश
१ लवण समुद्र की गहराई और ऊचाई
१ भगवान् कुन्थुनाथ की सर्वायु
१ मोर्यपुत्र गणधर का सर्वायु

योग ५

समवाय ६६ सूत्र ५

१ चक्रवर्ती के ग्राम
१ वायुकुमार के भवनावास
१ दण्ड परिमाण
१ धनु, नालिका, युग, अक्ष, और मूसल का परिमाण
१ मुहूर्त छाया परिमाण

योग ५

समवाय ९७ सूत्र ४

१ मदर पर्वत के पश्चिमी चरमांत से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अतर
१ इसी प्रकार शेष तीन दिशाओ का अन्तर सूचक सूत्र
१ कर्म प्रकृति सूत्र
१ हरिषेण चक्रवर्ती का गृहवास काल

योग ४

समवाय ९८ सूत्र ७

१ नदन वन से पडुक वन का अन्तर
१ मदर पर्वत के पश्चिमी चरमात से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर
१ इसी प्रकार शेप तीन दिशाओ के अन्तर का सूचक सूत्र
१ दक्षिणार्ध भरत के धनुपृष्ठ का आयाम
१ उत्तरायण मे सूर्य की गति
१ दक्षिणायन मे ,,
१ नक्षत्र तारा परिमाण

योग ७

समवाय ९९ सूत्र ७

१ मदर पर्वत की ऊचाई
१ नदन वन के पूर्वी चरमात से पश्चिमी चरमांत का अन्तर
१ , दक्षिणी ,, उत्तरी ,,
३ उत्तर के तीन सूर्य मडलो का आयाम-विष्कम्भ

१ रत्नप्रभा के अजन कांड के तलिये के चरमांत से वाणव्यन्तरो के भौमेय विहारो का अन्तर

योग ७

समवाय १०० सूत्र ८

१ दश दशमिका भिक्षु पडिमा
१ नक्षत्र तारा
१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदत) की ऊचाई
१ भगवान् पार्श्वनाथ की सर्वायु
१ आर्य सुधर्मा की ,,
१ सर्व दीर्घ वैताढ्य पर्वतो की ऊचाई
१ सर्व चुल्लहिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वतो की ऊचाई
१ सर्व काचनग पर्वतो की ऊचाई, ऊडाई और विष्कम्भ

योग ८

समवाय १५० सूत्र ३

१ भगवान् चन्द्रप्रभ की ऊचाई
२ विमानावास

योग ३

समवाय २०० सूत्र ३

१ भगवान् सुपार्श्वनाथ की ऊचाई
१ सर्व महा हिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वतो की ऊचाई और ऊडाई

१ सर्व वक्षस्कार पर्वतो की ऊचाई और ऊडाई
१ विमानावास
१ भगवान् महावीर के वादी मुनियो की सम्पदा

योग ५

समवाय ४५० सूत्र २

१ भगवान् अजितनाथ की ऊचाई
१ सगर चक्रवर्ती की ,,

योग २

समवाय ५०० सूत्र ८

१ सीता, सीतोदा के पास सर्व वक्षस्कार पर्वतो की तथा मेरु पर्वत के पास गजदतो की ऊचाई और ऊडाई
१ सर्व वर्षधर पर्वतो की ऊचाई तथा सर्व वर्षधर पर्वतो के मूल का विष्कम्भ
१ भगवान् ऋषभदेव की ऊचाई
१ भरत चक्रवर्ती की ,,
१ मदर पर्वत के समीप सौमनस, गधमादन, विद्युत्प्रभ, माल्यवत वक्षस्कार पर्वतो की ऊचाई और ऊडाई
१ हरि-हरिस्सहकूट पर्वत को छोडकर सर्व वक्षस्कार कूट-पर्वतो की ऊचाई और सर्ववक्षस्कार पर्वतो के मूल का विष्कम्भ
१ वलकूट पर्वत को छोडकर सर्व नदन कूटपर्वतो की ऊचाई और उन पर्वतो के मूल का आयाम **विष्कम्भ**

१ सौधर्म और ईशान कल्प के विमानो की ऊचाई

योग ८

समवाय ६०० सूत्र ६

१ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के विमानो की ऊचाई
१ चुल्लहिमवत कूट के उपरि भाग के चरमात से चुल्लहिम-वत पर्वत की उपत्यका का अन्तर
१ इसी प्रकार शिखरी कूट पर्वत के उपरी चरमान्त से शिखरी वर्षधर पर्वत की उपत्यका का अन्तर
१ भगवान् पार्श्वनाथ की वादी मुनियो की सम्पदा
१ अभिचद कुलकर की ऊचाई
१ भगवान् वासुपूज्य के साथ दीक्षित होनेवाले

योग ६

समवाय ७०० सूत्र ६

१ ब्रह्म और लातक कल्प के विमानो की ऊंचाई
१ भगवान् महावीर की केवली मुनियो की सम्पदा
१ भगवान् महावीर की वैक्रियलब्धि वाले मुनियो की सपदा
१ भगवान् नेमनाथ का केवली पर्याय
१ महाहिमवत कूटपर्वत के उपरि चरमान्त से महाहिमवत वर्षधर की उपत्यका का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मीकूट पर्वत के उपरि चरमान्त से रुक्मी वर्षधर पर्वत के उपत्यका का अन्तर

योग ६

समवाय ८०० सूत्र ५

१ महाशुक्र और सहस्रार कल्प के विमानो की ऊचाई
१ व्यतरो के भौमेय विहारो का स्थान
१ भगवान् महावीर की अनुत्तर विमानो में उत्पन्न होनेवाले मुनियो की सम्पदा
१ रत्नप्रभा और सूर्य का अन्तर
१ भगवान् नेमिनाथ की वादी मुनियो की सम्पदा

योग ५

समवाय ९०० सूत्र ७

१ आरणादि चार कल्पो के विमानो की ऊचाई
१ निपधकूट पर्वत के शिखर से निषध वर्षधर पर्वत की उपत्यका का अन्तर
१ इसी प्रकार नीलवत कूट पर्वत के शिखर से नीलवत वर्ष-धर पर्वत की उपत्यका का अन्तर
१ विमलवाहन कुलकर की ऊचाई
१ रत्नप्रभा और सर्व तारो का अन्तर
१ निषध पर्वत के शिखर से रत्नप्रभा प्रथम काण्ड के मध्य भाग का अन्तर
१ नीलवत पर्वत के शिखर से रत्नप्रभा प्रथम काण्ड के मध्य भाग का अन्तर

योग ७

समवाय १००० सूत्र १०

१ सर्व ग्रैवेयक विमानो की ऊचाई

१ सर्व यमक पर्वतो की ऊचाई ऊडाई और मूल का आयाम-विष्कम्भ

१ इसी प्रकार सर्व चित्र-विचित्र कूटपर्वतो की ऊचाई ऊडाई और आयाम विष्कम्भ

१ सर्व वृत्त वैताढ्य पर्वतो की ऊचाई ऊडाई और मूल का विष्कम्भ

१ सर्व हरिकूट और हरिस्सहकूटो की ऊँचाई तथा मूल का विष्कम्भ

१ इसी प्रकार नदन कूट पर्वत को छोडकर सर्व वलकूट पर्वतो की ऊचाई ऊडाई और उनके मूल का विष्कम्भ

१ भगवान् अरिष्टनेमीनाथ का सर्वायु

१ भगवान् पार्श्वनाथ की केवली मुनियो की सम्पदा

१ ,, ,, के सिद्ध होने वाले शिष्य

१ पद्मद्रह और पुडरीकद्रह का आयाम

योग १०

समवाय ११०० सूत्र २

१ अनुत्तर विमानो की ऊचाई

१ भ० पार्श्वनाथ की वैक्रियलब्धि सम्पन्न मुनियो की सम्पदा

योग २

समवाय २००० सूत्र १

१ महापद्म और महापुडरीक द्रहो का आयाम

समवाय ३००० सूत्र १

१ रत्नप्रभा के वज्रकाण्ड के उपरि भाग से लोहिताक्ष काण्ड के अधोभाग का अन्तर

समवाय ४००० सूत्र १

१ तिगिच्छ और केसरीद्रह का आयाम

समवाय ५००० सूत्र १

१ मेरु के मध्य भाग से मेरु के अन्तिम भाग का अन्तर

समवाय ६००० सूत्र १

१ विमानावास

समवाय ७००० सूत्र १

१ रत्नकाण्ड के उपरि भाग से पुलग काण्ड का अन्तर

समवाय ८००० सूत्र १

१ हरिवर्ष और रम्यकवर्ष का विस्तार

समवाय ९००० सूत्र १

१ दक्षिणार्ध भरत की जीवा का आयाम

समवाय १०००० सूत्र १

१ मदरपर्वत के मूल का विष्कम्भ

समवाय १ लाख सूत्र १

१ जबूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ

समवाय २ लाख सूत्र १

१ लवण समुद्र का विष्कम्भ

समवाय ३ लाख सूत्र १

१ भगवान् पार्श्वनाथ की वादी मुनियो की सपदा

समवाय ४ लाख सूत्र १

१ धातकी खण्ड का विष्कम्भ

समवाय ५ लाख सूत्र १

१ लवण समुद्र के पूर्व भाग से पश्चिम भाग का अतर

समवाय ६ लाख सूत्र १

१ भरत चक्रवर्ती का राज्यकाल

समवाय ७ लाख सूत्र १

१ जम्बूद्वीप के पूर्वी भाग से धात की खण्ड के पश्चिमी भाग का अन्तर

समवाय ८ लाख सूत्र १

१ विमानावास सूत्र

समवाय ९ हजार सूत्र १

१ भगवान् अजितनाथ की अवधिज्ञानी मुनियो की सम्पदा

समवाय १० लाख सूत्र १

१ पुरुपसिंह वासुदेव का सर्वायु

समवाय १ करोड़ सूत्र १

१ भगवान् महावीर के पूर्वभव मे पोटिल के भव का श्रामण्य पर्याय

समवाय १ करोड़ा करोड़ सूत्र १

१ भगवान् ऋषभदेव और भगवान् महावीर का अन्तर

सूत्र १३६ से १४८ तक द्वादशाङ्गी का परिचय।

सूत्र १४९-१५०

१ राशि
१ चौवीस दण्डको मे पर्याप्त और अपर्याप्त
१ चौबीस दण्डको के आवास

सूत्र १५१

१ चौबीस दण्डको की स्थिति

सूत्र १५२

१ चौबीस दण्डको के शरीर और शरीरो की अवगाहना प्रमाण

सूत्र १५३

१ अवधी ज्ञान का वर्णन
१ चौवीस दण्डको मे वेदना
१ ,, ,, लेश्या
१ ,, ,, आहार

सूत्र १५४

१ चौवीस दण्डको मे आयुष्यबन्ध
१ ,, ,, उपपात विरह
१ ,, ,, उद्‌वर्तन विरह
१ ,, ,, आयुष्य के आकर्ष

सूत्र १५५

१ चौवीस दण्डको मे सघयण
१ ,, ,, सठाण

सूत्र १५६

१ चौवीस दण्डको मे वेद

सूत्र १५७

१ समवसरण वर्णन
१ अतीत उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के कुलकरो के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के ,,
१ वर्तमान अवसर्पिणो के कुलकरो की भार्याओ के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थंकरो के पिताओ के नाम
१ ,, ,, ,, की माताओ के नाम
१ ,, ,, ,, के पूर्वभव के नाम
१ ,, ,, ,, की शिविकाओ के नाम
१ ,, ,, ,, के दीक्षास्थल
१ ,, ,, ,, का देवदुष्य
१ ,, ,, ,, के साथ मे दीक्षित होने-
वाले

१ वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थंकरो का दीक्षाकाल का तप
१ ,, ,, ,, के प्रथम भिक्षा दाता
१ ,, ,, ,, के प्रथम भिक्षा काल
१ ,, ,, ,, के प्रथम भिक्षा मे प्राप्त पदार्थ
१ ,, ,, ,, के प्रथम भिक्षा के समय मे हुई दिव्य वृष्टि
१ ,, ,, ,, के चैत्य वृक्ष
१ ,, ,, ,, के प्रथम शिष्य
१ ,, ,, ,, की प्रथम शिष्या

सूत्र १५८

१ वर्तमान अवसर्पिणी के वारह चक्रवर्तियो के पिताओ के नाम
१ ,, ,, ,, ,, की माताओ के नाम
१ ,, ,, ,, ,, के नाम
१ ,, ,, ,, ,, के स्त्री रत्न
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव वलदेव और नव वासुदेव के पिताओ के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेवो की माताओ के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव वलदेव और नव वासुदेव के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नववलदेव और नववासुदेव के पूर्व-भव के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव के पूर्वभव के धर्माचार्य

१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव वासुदेव की पूर्वभव की निदान भूमिया और निदान के कारण
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव वलदेव और नव वासुदेव तथा नव वासुदेव के प्रति-शत्रुओ के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव वलदेव और नव वासुदेव की गति

सूत्र १५९

१ वर्तमान अवसर्पिणी मे एरवत क्षेत्र के चौवीस तीर्थकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले कुलकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी मे एरवत क्षेत्र मे होने वाले कुलकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो के पूर्वभव के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थकरो के पिता होगे
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो की माताए होगी
१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो के प्रथम शिष्य होंगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो की प्रथम शिष्याए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जवूद्वीप मे होने वाले तीर्थंकरो को प्रथम भिक्षा देने वाले होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले वारह चक्रवर्तियो के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले वारह चक्रवर्तियो के पिता

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले वारह चक्रवर्तियो की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जवूद्वीप मे होने वाले वारह चक्रवर्तियो के स्त्री रत्न

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जवूद्वीप मे होने वाले नव वलदेव वासुदेवो के पिता

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले नव-वलदेवो की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले नव वासुदेवो की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले नव वलदेव तथा नव वासुदेवो के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले नव वलदेव और नव वासुदेवो के पूर्वभव के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्वूद्वीप मे होने वाले नव वलदेव नव वासुदेवो के धर्माचार्य

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्बूद्वीप मे होने वाले नव वासुदेवो की निदान भूमिया

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्बूद्वीप मे होने वाले नव वासुदेवो के निदान कारण

१ आगामी उत्सर्पिणी मे इस जम्बूद्वीप मे होने वाले नव वासुदेवो के प्रतिशत्रु

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे चौवीस तीर्थकर होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे वारह चक्रवर्ती होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे वारह चक्रवर्तियो के पिता होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे वारह चक्रवर्तियो की माताएँ होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे वारह चक्रवर्तियो के स्त्रीरत्न होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वलदेव और वासुदेव के पिता होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वासुदेवो की माताए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वलदेवो की माताए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वासुदेव होगे, नव प्रतिवासुदेव होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वलदेव वासुदेवो के पूर्वभव के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वलदेव और वासुदेवो के धर्माचार्य होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वासुदेवो की निदान भूमिया

१ आगामी उत्सर्पिणी मे जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र मे नव वासुदेवो के निदान कारण

सूत्र १६०

१ इस अग मे वर्णित विपयो का सूचक सूत्र

*

नन्दीसूत्र में वर्णित समवायांग-परिचय

से किं त समवाए ?

समवाए ण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति, जीवा-जीवा समासिज्जंति,

ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ,

लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ।

समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाण-सय-विवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ, दुवालस विहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गो समासिज्जइ ।

समवाए णं परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तिओ, सखिज्जाओ संगहणिओ, सखिज्जाओ पडिवत्तिओ ।

से णं अगट्ठयाए चउत्थे अगे एगे सुयक्खधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सय-सहस्से पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जंति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति ।

से एव आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एव चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ । सेत्त समवाए ।

समवायांग में वर्णित समवायांग-परिचय

से किं तं समवाए ?

समवाए णं ससमया सूइज्जंति, परसमया-सूइज्जंति, ससमय-परसमया सूइज्जति, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जति, जीवा-जीवा

सूइज्जति, लोगा सूइज्जति, अलोगा सूइज्जति, लोगालोगा सूइज्जंति।

समवाए णं एकाइयाण एगट्ठाणं एगुत्तरिय परिवुड्ढीय, दुवालसंगस्स गणिपिड़गस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ठाणगसयस्स, वारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेण समोयारे आहिज्जति।

तत्थ य णाणा विहप्पगारा जीवा-जीवा य वण्णिया वित्थरेण,

अवरे वि अ बहुविहा विसेसा नरग-तिरिय-मणुअ-सुरगणाणं, आहारुस्सास-लेसा-आवास-संख-आययप्पमाण-उववाय-चवण-ओगाहणोहि-वेयण-विहाण-उवओग-जोग-इंदिय-कसाय विविहा य जीवजोणी। विक्खभुस्सेह-परिरयप्पमाणं, विहि-विसेसा य मंदरादीण महीधराण।

कुलगर-तित्थगर-गणहराणं, समत्त-भरहाहिवाणं चक्कीण चेव, चक्कहर-हलधराण य वासाण य निगमा य समाए।

एए अण्णे य एवमाइ एत्थ वित्थरेण अत्था समाहिज्जति।

समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जाओ पड़िवत्तिओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे, एगे सुयक्खंधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चउयाले पद-सय-सहस्से पदग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाणि अक्खराणि, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया, कडा, णिवद्धा, निकाइया, जिण-पन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जंति, परुविज्जति, दंसिज्जति, निदंसिज्जंति, निवदंसिज्जति।

से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परुवणया आघविज्जति। सेत्तं समवाए।

समवाअंग-माहप्पं

अट्ठवासपरियाए समणे निग्गंथे-आयारकुसले, संजमकुसले, पवयणकुसले, पण्णत्तिकुसले, संगह-कुसले, उवग्गहकुसले, अक्खयायारे, अभिन्नायारे, असबलायारे असंकिलिट्ठायारचित्ते बहुस्सुए बह्वागमे जहण्णेणं "ठाण-समवाय धरे" कप्पइ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए।

—व्यवहार सूत्र उद्दे० ३ सू० ६८।

णमो सिद्धाण

चउत्थं समवायंगं

पढमो समवाओ

इह खलु समणेण भगवया महावीरेणं आइगरेणं, तित्थगरेणं, सय संबुद्धेण-

पुरिसुत्तमेण, पुरिस-सीहेणं, पुरिसवर-पुंडरीएण, पुरिसवर गंधहत्थिणा-

लोगुत्तमेणं, लोग-नाहेणं, लोग-हिएण, लोग-पईवेणं, लोग-पज्जोयगरेण-

अभय-दएणं, चक्खु-दएण, मग्ग-दएणं, सरण-दएण, जीव-दएणं, बोहि-दएणं-

धम्म-दएण, धम्म-देसएणं, धम्म-नायगेणं, धम्म-सारहिणा, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टिणा-

अप्पडिहय-वरनाण-दसणधरेणं, वियट्टछउमेणं-

जिणेण जावएण, तिन्नेण तारएण, बुद्धेण बोहएणं, मुत्तेणं मोयगेणं, सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा-

सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेय ठाण सपाविउकामेण-

इमे दुवालसंगे गणि-पिडगे पण्णत्ते तंजहा-
आयारे १, सूयगडे २, ठाणे ३, समवाए ४, विवाहपन्नत्ति ५, नायाधम्मकहाओ ६, उवासग-दसाओ ७, अंतगड-दसाओ ८, अणुत्तरोववाइअ-दसाओ ९, पण्हावागरण १०, विवागसुए ११, दिट्ठिवाए १२। तत्थणं जे से चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते, तंजहा-

सुयं मे आउसं तेण भगवया एवमक्खाय :—

१ एगे आया। २ एगे अणाया।
३ एगे दंडे। ४ एगे अदंडे।
५ एगा किरिआ। ६ एगा अकिरिआ।
७ एगे लोए। ८ एगे अलोए।
९ एगे धम्मे। १० एगे अधम्मे।
११ एगे पुण्णे। १२ एगे पावे।
१३ एगे बंधे। १४ एगे मोक्खे।
१५ एगे आसवे। १६ एगे संवरे।
१७ एगा वेयणा। १८ एगा णिज्जरा।

१९ जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयण-सय-सहस्स आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।
२० अप्पइट्ठाणे नरए एगं जोयण-सय-सहस्स आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।
२१ पालए जाणविमाणे एगं जोयण-सय-सहस्सं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।
२२ सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एगं जोयण-सय-सहस्सं आयाम-विक्खंभेण पण्णत्ते।
२३ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते।

२४ चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२५ सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२६ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

२७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

२८ दोच्चाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

२९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एग साहियं सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

३१ असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाण देवाण अत्थेगइयाणं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३२ असंखिज्ज-वासाउय-सन्नि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं अत्थेगइयाणं एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३३ असंखिज्ज-वासाउय-गब्भवक्कंतिय-सन्नि-मणुयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३४ वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३५ जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेण एगं पलिओवम वास-सय-सहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता ।

३६ सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३७ सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

३८ ईसाणे कप्पे देवाण जहन्नेण साइरेगं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३९ ईसाणे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४० जे देवा सागर सुसागर सागरकंत भवं मणु माणुसोत्तर लोगहिय विमाण देवत्ताए उववन्ना, तेसि ण देवाणं उक्कोसेणं एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४१ ते ण देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमति वा, पाणमति वा, उस्ससति वा, नीससंति वा ।

४२ तेसि ण देवाणं एगस्स वास-सहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

४३ सतेगइया भविसिद्धिया जे जीवा ते एगेण भवग्गहणेण सिज्झस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ।

बीओ समवाओ

१ दो दडा पण्णत्ता, तजहा—अट्ठादडे चेव, अणट्ठादडे चेव ।

२ दुवे रासी पण्णत्ता, तजहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ।

३ दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तजहा—रागबंधणे चेव, दोसबंधणे चेव ।

४ पुव्वाफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

५ उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

६ पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

७ उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाण उक्कोसेण देसूणाइं दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ असंखिज्ज-वासाउय-सन्नि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिआण अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ असंखिज्ज-वासाउय-गब्भवकंतिय-सन्नि-पंचिंदिय-मणुस्साण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ ईसाणे कप्पे देवाण उक्कोसेणं साहियाइ दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८ सणंकुमारे कप्पे देवाण जहण्णेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ माहिंदे कप्पे देवाण जहण्णेण साहियाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२० जे देवा सुभं सुभकंत सुभवण्णं सुभगंध सुभलेस सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२१ ते णं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससति वा, नीससति वा ।

२२ तेसि ण देवाणं दोहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२३ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे दोहिं भवगहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्सति ।

ततिओ समवाओ

१ तओ दंडा पण्णत्ता, तजहा—मणदडे, वयदडे, कायदडे ।

२ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा—मणगुत्ती, वयगुत्ती, कायगुत्ती ।

३ तओ सल्ला पण्णत्ता, तजहा—मायासल्ले ण, नियाणसल्ले ण, मिच्छादसणसल्ले ण ।

४ तओ गारवा पण्णत्ता, तजहा—इड्ढीगारवे ण, रसगारवे ण, सायागारवे णं ।

५ तओ विराहणा पण्णत्ता, तंजहा—नाणविराहणा, दसणविराहणा, चरित्तविराहणा ।

६ मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

७ पुस्सनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

८ जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

९ अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१० सवणनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

११ अस्सिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१२ भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१३ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ असंखिज्ज-वासाउय-सन्नि-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ असखिज्ज-वासाउय-सन्नि-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२१ जे देवा आभंकरं पभंकरं आभकर-पभंकर चंदं चंदावत्तं चंदप्पभ चदकंतं चदवण्णं चदलेस चंदज्झयं चंदसिग चंदसिट्ठं चंदकूड-चंदुत्तरवडिसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा—
तेसि ण देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२२ ते णं देवा तिण्ह अद्धमासाण आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

२३ तेसिं ण देवाणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति ।

चउत्थो समवाओ

१ चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तंजहा-
कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए ।

२ चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तंजहा-
अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, धम्मज्झाणे, सुक्कज्झाणे ।

३ चत्तारि विगहाओ पण्णत्ता, तंजहा-
इत्थिकहा, भत्तकहा, रायकहा, देसकहा ।

४ चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तंजहा-
आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ।

५ चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तंजहा-
पगडबंधे, ठिइबंधे, अणुभावबंधे, पएसबंधे ।

६ चउगाउए जोयणे पण्णत्ते ।

७ अणुराहानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते ।

८ पुव्वासाढानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते ।

९ उत्तरासाढानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते ।

१० इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा किट्टिं सुकिट्टिं किट्टियावत्तं किट्टिप्पभं किट्टिजुत्तं किट्टि-वण्णं किट्टिलेस किट्टिज्झयं किट्टिसिंगं किट्टिसिट्ठं किट्टिकूडं किट्टुत्तरवडिंसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा--
तेसि णं देवाण उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते ण देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१७ तेसि देवाणं चउहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

पंचमो समवाओ

१ पंच किरिया पण्णत्ता, तंजहा-काइया, अहिगरणिया, पाउसिया, पारितावणिया, पाणाइवायकिरिया ।

२ पंच महव्वया पण्णत्ता, तंजहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

३ पंच कामगुणा पण्णत्ता, तंजहा-सद्दा, रूवा, रसा, गंधा, फासा ।

४ पंच आसवदारा पण्णत्ता, तंजहा-मिच्छत्तं, अविरई, पमाया, कसाया, जोगा ।

५ पंच संवरदारा पण्णत्ता, तंजहा- सम्मत्तं, विरई, अप्पमत्तया, अकसाया, अजोगया ।

६ पंच निज्जरट्ठाणा पण्णत्ता तंजहा-

पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमण, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमण, परिग्गहाओ वेरमणं ।

७ पच समिईओ पण्णत्ताओ, तंजहा- ईरियासमिई, भासासमिई, एसणासमिई, आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई, उच्चार-पास वण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई ।

८ पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तंजहा- धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।

९ रोहिणीनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

१० पुणव्वसुनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।

११ हत्थनक्खत्ते पंचयारे पण्णत्ते ।

१२ विसाहानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते ।

१३ धणिट्ठानक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

१४ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाणं पच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ जे देवा वाय सुवाय वायावत्त वायप्पभ वायकंत वायवण्णं वायलेस वायज्झय वायसिगं वायसिट्ठ वायकूडं वाउत्तरवडिसग सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिगं

सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा-
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० ते ण देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा,
ऊससंति वा, नीससंति वा ।

२१ तेसि णं देवाणं पर्चाहं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२२ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पंचहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-
स्संति-जाव-सव्व दुक्खाणमंतकरिस्संति ।

छट्ठो समवाओ

१ छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तजहा- कण्हलेसा, नीललेसा, काऊ-
लेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ।

२ छ जीव-नीकाया पण्णत्ता, तजहा- पुढवीकाए, आऊकाए,
तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए, तसकाए ।

३ छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तजहा-अणसणे, ऊणो-
यरिया, वित्तीसखेवो, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, संलीणया ।

४ छव्विहे अब्भितरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तजहा- पायच्छित्तं,
विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, उस्सग्गो ।

५ छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा- वेयणासमुग्घाए,
कसायसमुग्घाए, मारणांतिअसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए,
तेयसमुग्घाए, आहारसमुग्घाए ।

६ छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तंजहा-
सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खुइंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे,
जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ।

७ कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।

८ असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते ।

९ ईमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण छ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० तच्चाएणं पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सणकुमार-माहिंदेसु अत्थेगइयाण देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ जे देवा सयभु सयभूरमणं घोस सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीर सुवीर वीरगत वीरसेणिय वीरावत्त वीरप्पभ वीरकंतं वीरवण्ण वीरलेस वीरज्झय वीरसिगं वीअसिट्ठं वीरकूड वीरुत्तरवडिसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा-

१५ ते णं देवा छण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ।

१६ तेसि णं देवाण छहि वास-सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्संति ।

सत्तमो समवाओ

१ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तजहा- इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए: अकम्हाए, आजीवभए, मरणभए, असिलोगभए।

२ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तजहा- वेयणा-समुग्घाए, कसाय-समुग्घाए, मारणंतिय-समुग्घाए, वेउव्विय-समुग्घाए, तेय-समुग्घाए, आहार-समुग्घाए, केवलि-समुग्घाए।

३ समणे भगव महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।

४ इहेव जबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, तजहा- चुल्लहिमवते, महाहिमवंते, निसढे, नीलवते, रुप्पी, सिहरी, मंदरे।

५ इहेव जम्बुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तजहा—भरहे, हेमवते, हरिवासे, महाविदेहे, रम्मए, एरण्णवए, एरवए।

६ खीणमोहेण भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेएई।

७ महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते।

८ कत्तिआइआ सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता।

९ महाइआ सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पण्णत्ता।

१० अणुराहाइआ सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता।

११ धणिट्ठाइआ सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता।

१२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं सत्त-पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ चउत्थीए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं सत्त-पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण सत्त-पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ सणंकुमारे कप्पे देवाण उक्कोसेण सत्त-सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ माहिंदे कप्पे देवाण उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९ वभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त-साहिय-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भामुरं विमल कचणकूडं सणकुमार-वडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा-तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२१ ते ण देवा सत्तण्ह अद्धमासाण चाणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससति वा ।

२२ तेसि ण देवाणं सत्तहि वास-सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२३ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे ण सत्तहि भवग्गहणेहि सिज्झस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ।

अट्ठमो समवाओ

१ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तजहा- जातिमए, कुलमए, वलमए, रूवमए, तवमए, सुयमए, लाभमए, इस्सरियमए ।

२ अट्ठ पवणमायाओ पण्णत्ताओ, तजहा- ईरियासमिई, भासासमिई,

एसणासमिई, आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई, उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिघाण-पारिट्ठावणियासमिई, मणगुत्ती, वयगुत्ती, कायगुत्ती ।

३ वाणमंतराणं देवाणं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४ जंबूणं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

५ कूडस,मली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता।

६ जंबुद्दीवस्स ण जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

७ अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ता तजहा–पढमे समए दंडं करेई, बीए समए कवाड़ करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए यथंतराइ पूरेइ, पंचमे सगए मंथंतराई पडिसाहरइ, छट्ठे समए दड पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ, ततो पच्छा सरीरत्थे भवइ ।

८ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा, अट्ठ गणहरा होत्था तजहा- गाहा

सुभे य सुमघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य ।
सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इ य ॥१॥

९ अट्ठ नक्खत्ता चदेण सद्धि पमद्द जोग जोएंति, तजहा-
कत्तिया १, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, महा ४,
चित्ता ५, विसाहा, ५, अणुराहा ७, जेट्ठा ८ ।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरयाणं अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा अच्चि अच्चिमालि वइरोयणं पभंकर चंदाभं सूराभं सुपइट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अरुणुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा—
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१७ तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।

१८ संते गइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

नवमो समवाओ

१ नव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

१ नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।

२ नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ ।

३ नो इत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ ।

४ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।

५ नो पणीयरसभोई ।

६ नो पाण-भोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता भवइ ।

७ नो इत्थीणं पुव्वरयाइ पुव्वकीलिआइं समरइत्ता भवइ ।

८ नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नो गंधाणुवाई, नो रसाणुवाई, नो फासाणुवाई, नो सिलोगाणुवाई ।

९ नो सायासुक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

२ नव बंभचेर-अगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–
इत्थी-पसु-पडग-ससत्ताण सिज्जासणाण सेवणया-जाव-साया-सुक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

३ नव बंभचेरा पण्णत्ता तंजहा–
सत्थपरिण्णा, लोगविजओ, सीओसणिज्ज, सम्मत्त ।
आवंति-धुत-विमोहा, उवहाणसुयं, महपरिण्णा ।।

४ पासे ण अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५ अभीजि नक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ ।

६ अभीजि आइया नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेण जोग जोएंति तजहा–अभीजि सवणो-जाव-भरणी ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चार चरइ ।

८ जंबूद्दीवे ण दीवे नवजोयणिआ मच्छा पविसिसु वा, पविसंति वा, पविसिस्सति वा ।

९ विजयस्स ण दारस्स एगमेगाए बाहाए नव नव भोमा पण्णत्ता ।

१० वाणमतराण देवाण सभाओ सुहम्माओ नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

११ दसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा- निद्दा, पयला, निद्दानिद्दा, पयला-पयला, थीणद्धी

चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदसणावरणे ।

१२ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ बभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ जे देवा पम्ह सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेस पम्हज्झय पम्हसिंग पम्हसिट्ठं पम्हकूड पम्हुत्तरवडिंसग-सुज्जं सुसुज्जं सुज्जवित्तं सुज्जपभं सुज्जकंत सुज्जवण्ण सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्झसिगं सुज्झसिट्ठ सुज्झकूडं सुज्जुत्तवरवडिंसग-रुइल्लं रुइल्लावत्त रुइल्लप्पभ रुइल्लकतं रुइल्लवण्णं रुइल्ल-लेस रुइल्लज्झय रुइल्लसिगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लु-त्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा- तेसि ण देवाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ।

१९ तेसि ण देवाण नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।

२० संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्संति ।

दसमो समवाओ

१ दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तंजहा-
खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४, लाघवे ५,
सच्चे ६, सजमे ७, तवे ८, चियाए, ६, बमचेरवासे १० ।

२ दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा-
धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्म जाणित्तए १ ।
सुमिणदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २ ।
सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवे सुमरित्तए ३ ।
देवदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुई दिव्व देवाणुभाव पासित्तए ४ ।
ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोग जाणित्तए ५ ।
ओहिदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोग पासित्तए ६ ।
मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा जाव मणोगए भावे जाणित्तए ७ ।
केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए ८ ।
केवलदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोग पासित्तए ६ ।
केवलिमरणं वा मरज्जिा सव्वदुक्खप्पहीणाए १० ।

३ मंदरे ण पव्वए मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेण पण्णत्ते।
४ अरिहा ण अरिट्ठनेमी दस धणूइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।
५ कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।
६ रामे ण बलदेवे दस धणूइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
७ दस नक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा पण्णत्ता, तंजहा-
मिगसिर अद्दा पुस्सो, तिण्णि अ पुव्वा य मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्तो य तहा, दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥१॥
८ अकम्मभूमियाण मणुआण दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, तजहा-
मत्तंगया य भिगा, तुडिअगा दीव जोई चित्तगा।
चित्तरसा मणिअगा, गेहागारा अनिगिणा य ॥१॥
९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता।
१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।
११ चउत्थीए पुढवीए दस निरयावास-सय-सहस्साइ पण्णत्ताइ।
१२ चउत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।
१३ पचमीए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।
१४ असुरकुमाराण देवाण जहण्णेणं दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता।
१५ असुरिदवज्जाण भोमिज्जाण देवाणं जहण्णेण दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता।

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ वायरवणस्सइकाइए ण उक्कोसेणं दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेण दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० बमलोए कप्पे देवाण उक्कोसेणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

२१ लंतए कप्पे देवाण जहण्णेणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२२ जे देवा घोस सुघोस महाघोस नदिघोसं सुसर मणोरम रम्म रम्मग रमणिज्ज मगलावत्त बभलोगवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा-

तेसि णं देवाण उक्कोसेणं दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२३ ते ण देवा दसण्हं अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ।

२४ तेसि ण देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

एक्कारसमो समवाओ

१ एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ता तजहा-

दंसणसावए १, कयव्वयकम्मे २, सामाइअक्कडे ३, पोसहोव-

वासनिरए ४, दिया बंभयारी, रत्ति परिमाणकडे ५, दिआ वि राओवि वभयारी, असिणाई विअड़भोई मोलिकड़े ६, सचित्त-परिण्णाए ७, आरंभपरिण्णाए ८, पेसपरिण्णाए ९, उद्दिट्ठ-भत्तपरिण्णाए १०, समणभूए ११, आवि भवई समणाउसो !

२ लोगताओ इक्कार-सएहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए-जोइसते पण्णत्ते ।

३ जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे चार चरइ ।

४ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, तजहा—

इदभूई, अग्गिभूई, वायुभूई, विअत्ते, सोहम्मे, मडिए, मोरिय-पुत्ते, अकपिए, अयलभाए, मेअज्जे, पभासे ।

५ मूले नक्खत्ते एक्कारस तारे पण्णत्ते ।

६ हेट्ठिम गेविज्जयाण देवाण एक्कारसयमुत्तर गेविज्जविमाणसतं भवइत्तिमक्खायं ।

७ मदरे ण पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारस-भागपरि-हीणे उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्का-रस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कारस सागरोव-माइ ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाण देवाण अत्थेगइयाणं एक्कारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कारस पलिओ-वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ लंतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ जे देवा बभ सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभ बभकतं बभवण्णं बंभलेसं बंभज्झय बंभसिग बंभसिट्ठं बंभकूडं बभुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा–
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ ते ण देवा एकारसण्ह अद्धमासाण आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससति वा।

१५ तेसि णं देवाण एक्कारसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कारसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति।

दुवालसमो समवाओ

१ बारस भिक्खुपड़िमाओ पण्णत्ताओ, तजहा–
मासिआ भिक्खुपड़िमा, दोमासिआ भिक्खुपड़िमा, तिमासिआ भिक्खुपडिमा, चउमासिआ भिक्खुपड़िमा, पंचमासिआ भिक्खुपडिमा, छमासिआ भिक्खुपड़िमा, सत्तमासिआ भिक्खुपड़िमा, पढमा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपड़िमा, तच्चा सत्तराइदिआ भिक्खुपड़िमा, अहोराइआ भिक्खुपड़िमा, एगराइया भिक्खुपडिमा।

२ दुवालसविहे सभोगे पण्णत्ते, तजहा–
उवही-सुअ-भत्त-पाणे, अजलीपग्गहेत्ति य।
दायणे य निकाए अ, अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे ॥१॥

किइकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इ अ ।
समोसरण संनिसिज्जा य, कहाए अ पबंधणे ॥२॥

३ दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्ते, तंजहा—
दुओणय जहाजायं, कितिकम्म वारसावयं ।
चउसिरं तिगुत्त च, दुपवेस एगनिक्खमणं ॥१॥

४ विजया णं रायहाणी दुवालस जोयण-सय-सहस्साइं आयाम-विक्खभेण पण्णत्ता ।

५ रामे ण वलदेवे दुवालस वास-सयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्त गए ।

६ मंदरस्स ण पव्वयस्स चूलिया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।

७ जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेण पण्णत्ता ।

८ सव्वजहण्णिआ राई दुवालस-मुहुत्तिआ पण्णत्ता ।

९ एवं दिवसोऽवि नायव्वो ।

१० सव्वट्ठसिद्धस्स णं महा विमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइ उड्ढ उप्पइआ ईसिपब्भारा नाम पुढवीए पण्णत्ता ।

११ ईसिपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-ईसित्ति वा, ईसिपब्भाराति वा, तणूइ वा, तणूयतत्ति वा, सिद्धित्ति वा, सिद्धालएत्ति वा, मुत्तिति वा, मुत्तालएत्ति वा, बंभेत्ति वा, बंभवडिंसएत्ति वा, लोकपरिपूरणे त्ति वा, लोगग्गचूलियाइ वा ।

१२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ लंतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण बारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ जे देवा माहिंद माहिंदज्झय कबुं कबुग्गीव पुखं सुपुखं महापुख पुंडं सुपुंड महापुंडं नरिंदं नरिंदकतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा-

तेसि णं देवाण उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ ते ण देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमति वा, पाणमंति वा, उस्ससति वा, नीससति वा ।

१९ तेसि णं देवाण बारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२० सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे बारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति ।

तेरसमो समवाओ

१ तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता, तंजहा–

अट्ठादडे, अणट्ठादडे, हिंसादडे, अकम्हादडे, दिट्ठिविपरिआसिआदडे, मुसावायवत्तिए, अदिन्नादाणवत्तिए, अज्झत्थिए, मानवत्तिए, मित्तदोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरियावहिए नाम तेरसमे ।

२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थड़ा पण्णत्ता ।

३ सोहम्मवडिसगे णं विमाणे ण अद्धतेरस-जोयण-सय-सहस्साइं आयाम-विक्खभेण पण्णत्ते ।

४ एव ईसाणवडिसगे वि ।

५ जलयर-पचिदिय-तिरिक्ख-जोणिआणं अद्धतेरस जाइ-कुल-कोडी-जोणी-पमुह-सय-सहस्साइ पण्णत्ता ।

६ पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ।

७ गब्भ-वक्कंतिअ-पचेंदिअ-तिरिक्ख-जोणिआणं तेरसविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा—

सच्च-मणपओगे मोस-मणपओगे सच्चामोस-मणपओगे असच्चामोस-मणपओगे—

सच्च-वइपओगे मोस-वइपओगे सच्चामोस-वइपओगे असच्चामोस-वइपओगे—

ओरालिअ-सरीर-कायपओगे ओरालिअ-मीस-सरीर-कायपओगे-वेउव्विअ-सरीर-कायपओगे वेउव्विअ-मीस-सरीर-कायपओगे कम्म-सरीर-कायपओगे ।

८ सूरमडल जोयणेणं तेरसेहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणं पण्णत्त ।

९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ लंतए कप्पे अत्थेगइआणं देवाण तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्त वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूव वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तर-वडिंसग ।

वइर वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंत वइरवण्णं वइरलेस वइर-रूवं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं ।

लोग लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंत लोगवण्ण लोगलेसं लोगरूवं लोगसिंगं लोगसिट्ठं लोगकूड़ लोगुत्तरवडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा–

तेसि णं देवाणं उक्कोसेण तेरस-सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ ते णं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१६ तेसि णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

चउद्दसमो समवाओ

१ चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता तंजहा–

सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया,

बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया,

बेइंदिआ अपज्जत्तया, बेइंदिआ पज्जत्तया,

तेंदिआ अपज्जत्तया, तेंदिआ पज्जत्तया,

चउरिंदिआ अपज्जत्तया, चउरिंदिआ पज्जत्तया,

पंचिंदिआ असण्णि अपज्जत्तया, पंचिंदिआ असण्णि पज्जत्तया,

पचिंदिआ सन्नि अपज्जत्तया, पचेंदिआ सन्नि पज्जत्तया ।

२ चउदस पुव्वा पण्णत्ता तंजहा–

गाहाओ :–

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च, तइयं च वीरीयं पुव्वं ।
अत्थीनत्थिपवाय, तत्तो नाणप्पवायं च ॥१॥
सच्चप्पवायपुव्वं, तत्तो आयप्पवायपुव्वं च ।
कम्मप्पवायपुव्व, पच्चक्खाण भवे नवमं ॥२॥
विज्जाअणुप्पवायं, अवझ-पाणाउ बारसं पुव्व ।
तत्तो किरियविसालं, पुव्वं तह बिंदुसार च ॥३॥

३ अग्गेणीअस्स ण पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता ।

४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसपया होत्था ।

५ कम्मविसोहिमग्गण पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा-मिच्छदिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, अविरय-सम्मद्दिट्ठी, विरयाविरए, पमत्तसजए, अप्पमत्तसजए, निअट्टि-बायरे, अनिअट्टिबायरे, सुहुमसपराए, उवसामए वा, खवए वा, उवसतमोहे, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी केवली ।

६ भरहेरवयाओ ण जीवाओ चउद्दस चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि अ एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ता ।

७ एगमेगस्स ण रन्नो चाउरतचक्कवट्टिस्स चउद्दस्स रयणा पण्णत्ता तजहा–

इत्थीरयणे, सेणावइरयणे, गाहावइरयणे, पुरोहियरयणे, वड्ढइरयणे, आसरयणे, हत्थिरयणे ।

असिरयणे, दंडरयणे, चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे,

मणिरयणे, कागिणीरयणे ।

८ जंबुद्दीवे ण दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्दं समप्पति, तजहा–

गंगा सिधू रोहिआ रोहिअसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता अत्तवई ।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० पचमीए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण चउद्दस सगरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ लतए कप्पे देवाण उक्कोसेण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ महासुक्के कप्पे देवाण जहण्णेण चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा सिरिकत सिरिमहिअ सिरिसोमनस लंतय काविट्ठ-महिंद महिंदकत महिंदुत्तरवडिसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा–

तेसि ण देवाण उक्कोसेण चउद्दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते ण देवा चउद्दसहि अद्धमासेहि आणमति वा, पाणमंति वा, उस्ससति वा, नीससंति वा ।

१७ तेसि ण देवाण चउद्दसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउद्दसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

पन्नरसमो समवाओ

१ पन्नरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता तंजहा–

अबे अंबरिसी चेव, सामे सबलेत्ति आवरे ।
रुद्दवरुद्दोकाले अ, महाकालेत्ति आवरे ।।१।।
असिपत्ते धणु कुम्भे, वालुए वेअरणी ति अ ।
खरस्सरे महाघोसे, एते पन्नरसाहिआ ।।२।।

२ णमी णं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३ धुवराहू णं बहुल-पक्खस्स-पडिवए पन्नरसभाग पन्नरसभागेणं चदस्स लेस आवरेत्ताणं चिट्ठति तंजहा–
पढमाए पढमं भाग, बीआए दुभाग, तइआए तिभागं, चउत्थीए चउभागं, पचमीए पंचभागं, छट्ठीए छभागं, सत्तमीए सत्तभागं, अट्ठमीए अट्ठभाग, नवमीए नवभागं, दसमीए दसभागं, एक्कारसीए एक्कारभागं, बारसीए बारसभाग, तेरसीए तेरसभाग, चउद्दसीए चउद्दसभाग, पन्नरसेसु पन्नरसभागं ।
तं चेव सुक्कपक्खस्स य उवदंसेमाणे उवदसेमाणे चिट्ठंति, तजहा-
पढमाए पढम भाग-जाव-पन्नरसेसु पन्नरसभागं ।

४ छ णक्खत्ता पन्नरस-मुहुत्त-सजुत्ता पण्णत्ता तजहा–

सतभिसय भरणि, अद्दा असलेसा साई तहा जेट्ठा ।
एते छ णक्खत्ता, पन्नरस-मुहुत्त-सजुत्ता ।।१।।

५ चेत्तासोएसु ण मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति, एव चेत्तासोएसु मासेसु पन्नरसमुहुत्ता राई भवति ।

६ विज्जाणुप्पवायस्स ण पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता ।

७ मणूसाणं पन्नरसविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा–

सच्च-मण-पओगे, मोस-मण-पओगे, सच्च-मोस-मण-पओगे, असच्चा-मोस-मण-पओगे–

सच्च-वइ-पओगे, मोस-वइ-पओगे, सच्च-मोस-वइ-पओगे, असच्चा-मोस-वइ-पओगे,

ओरालिअ-सरीर-काय-पओगे, ओरालिअ-मीस-सरीर-काय-पओगे, वेउव्विय-सरीर-काय-पओगे, वेउव्विय-मीस-सरीर-काय-पओगे, आहारय-सरीर-काय-पओगे, आहारय-मीस-सरीर-काय-पओगे, कम्मय-सरीर-काय-पओगे।

८ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

९ पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ जे देवा णदं सुणद णदावत्तं णंदप्पभ णदकत णदवण्ण णदलेसं णंदज्झय णदसिंग णंदसिट्ठं णंदकूडं णदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा–

तेसि ण देवाण उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ ते णं देवा पण्णरसण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा, उस्ससति वा, नीससति वा।

१५ तेसि ण देवाण पन्नरसहि वास-सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

सोलसमो समवाओ

१ सोलस य गाहा सोलसगा पण्णत्ता तंजहा–
समए, वेयालिए, उवसग्गपरिण्णा, इत्थीपरिण्णा, निरयविभत्ती, महावीरथुई, कुसीलपरिभासिए, वीरिए, धम्मे, समाही, मग्गे, समोसरणे, आहत्तहिए, गंथे, जमईए, गाहासोलसमे सोलसगे ।

२ सोलस कसाया पण्णत्ता तंजहा–
अणंताणुबंधी कोहे, अणंताणुबंधी माणे,
अणंताणुबंधी माया, अणंताणुबंधी लोभे,
अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे,
अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे,
पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे माणे,
पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे,
संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणे माया, संजलणे लोभे ।

३ मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता तंजहा–
मंदर मेरु मणोरम, सुदंसण सयंपभे य गिरिराया ।
रयणुच्चय पियदंसण, मज्झे लोगस्स नाभी य ॥१॥
अत्थे अ सूरिआवत्ते, सूरिआवरणेत्ति अ ।
उत्तरे अ दिसाई अ, वडिंसे इ अ सोलसमे ॥२॥

४ पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था ।

५ आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

६ चमर-वलीणं उवारियालेणे सोलस जोयण-सहस्साइं आयाम-विक्खभेणं पण्णत्ते ।

७ लवणे ण समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते ।

८ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाण सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ जे देवा आवत्त विआवत्त नंदिआवत्तं महाणंदिआवत्तं अंकुसं अंकुसपलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा—

तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ ते ण देवा सोलसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१५ तेसि णं देवाण सोलस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१६ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।

सत्तरसमो समवाओ

१ सत्तरसविहे असजमे पण्णत्ते तजहा–
पुढवीकाय असंजमे आउकाय असंजमे तेउकाय असजमे वाउकाय असंजमे वणस्सइकाय असंजमे।
बेइंदिय असंजमे तेइदिय असंजमे चउरिंदिय असंजमे पंचिंदिय असंजमे।
अजीवकाय असंजमे पेहा असंजमे उवेहा असंजमे अवहट्टु असंजमे अप्पमज्जणा असंजमे।
मण असंजमे वइ असजमे काय असंजमे।

२ सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते तंजहा–
पुढवीकायसजमे आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसजमे वणस्सइकायसंजमे।
बेइदिअ संजमे तेइंदिअ संजमे चउरिंदिअ संजमे पंचिंदिअ सजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उवेहासंजमे अवहट्टु संजमे पमज्जणासंजमे।
मणसंजमे वइसंजमे कायसंजमे।

३ माणुसुत्तरे णं पव्वए सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

४ सव्वेसिं पि ण वेलधर-अणुवेलंधर-णागराईणं आवासपव्वया-सत्तरस-एकवीसाइ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

५ लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

६ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सातिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाण तिरिआ गती पवत्तति।

७ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

८ बलिस्स णं असुरिंदस्स रुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

९ सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा—
आवीई-मरणे ओहि-मरणे आयंतिय-मरणे वलाय-मरणे वसट्ट-मरणे अंतोसल्ल-मरणे तब्भव-मरणे बाल-मरणे पंडित-मरणे बाल-पंडित-मरणे छउमत्थ-मरणे केवलि-मरणे वेहाणस-मरणे गिद्धपिट्ठ-मरणे भत्त-पच्चक्खाण-मरणे इंगिणि-मरणे पाओवगमण-मरणे।

१० सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति तंजहा—
आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे।
चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहीदंसणावरणे केवलदंसणावरणे।
सायावेयणिज्जं जसोकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअंतरायं।

११ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ पंचमीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई

५ बभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ता तंजहा–
बभी, जवणी लिवी, दोसाऊरिआ, खरोट्ठिआ, खरसाविआ, पहाराइया, उच्चत्तरिआ, अक्खरपुट्ठिया, भोगवयता, वेणतिया, णिण्हइया।
अंकलिवी, गणिअलिवी गंधव्वलिवी [भूयलिवी] आदंसलिवी माहेसरीलिवी दामिलिवी वोलिंदिलिवी।

६ अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता।

७ धूमप्पहाए ण पुढवीए अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते।

८ पोसाऽऽसाढेसु ण मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ उक्कोसेण अट्ठारस मुहुत्ता राइ भवइ।

९ ईमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० छट्ठिए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ जे देवा कालं सुकालं महाकालं अजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसाल पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुसुदगुम्मं

नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं
विमाणं देवत्ताए उववण्णा-
तेसि ण देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१६ ते णं देवा णं अट्ठारसेहिं अद्धमासेणं आणमंति वा, पाणमंति
वा, ऊससति वा, नीससंति वा।
१७ तेसिं णं देवाण अट्ठारस-वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।
१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं
सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति।

एगूणवीसइमो समवाओ

१ एगूणवीस णायज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-
उक्खित्तणाए सघाडे, अडे कुम्मे अ सेलए।
तुबे य रोहिणी मल्ली, मागंदी कंदिमाति अ ।।१।।
दावद्दवे उदगणाए, मडुक्के तेतली इअ।
नंदिफले अवरकका, आइण्णे सुंसमा इअ ।।२।।
अवरे अ पोडरीए, णाए एगूणवीसमे।
२ जबूद्दीवे णं दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगूणवीस जोयणसयाइं
उड्ढमहो तवयंति।
३ सुक्केण महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं
समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमण उवागच्छइ।
४ जंबूद्दीवस्स ण दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेअणाओ पण्णत्ता।
५ एगूणवीस तित्थयरा अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता
णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ।
६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एगूण-

वीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीस-पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीस-पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ पाणए कप्पे देवाण जहण्णेणं एगूणवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा-
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते ण देवा एगूणवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमति वा, पाणमंति वा, ऊससति वा, नीससंति वा ।

१४ तेसिं णं देवाणं एगूणवीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

वीसइमो समवाओ

१ वीसं असमाहिठाणा पण्णत्ता, तंजहा-

दवदवचारि यावि भवइ, अपमज्जियचारि यावि भवई, दुप्पमज्जियचारि यावि भवई, अतिरित्तसिज्जासणिए, रातिणिअपरिभासी, थेरोवघाइए, भूओवघाइए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमसिए, अभिक्खणं अभिक्खणं ओहारइत्ता भवई,
णवाणं अधिकरणाण अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ,
पोराणाणं अधिकराणं खामिअ-विउसविआणं पुणोदिरेत्ता भवइ,
ससरक्ख-पाणि-पाए, अकाल-सज्झायकारए यावि भवइ, कलहकरे, सद्दकरे, झंझकरे, सूरप्पमाणभोई, एसणाऽसमित्ते यावि भवइ।

२ मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३ सव्वेवि अ णं घणोदही वीसं जोयण-सहस्साइं बाहल्लेणं। पण्णत्ता।

४ पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीस सामाणिअ-साहस्सीओ पण्णत्ताओ।

५ णपुंसय-वेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवम-कोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पण्णत्ता।

६ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता।

७ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमंडले वीसं सागरोवमकोडाकोड़ीओ कालो पण्णत्तो।

८ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई

पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाई ठिई पण्णत्ता ।

१२ पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ जे देवा सायं विसायं सुविसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसासोवत्थिय पलंबं रुइलं ।
पुप्फ सुपुप्फं पुप्फावत्त पुप्फपभ पुप्फकत पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा–
तेसि णं देवाण उक्कोसेणं वीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ ते ण देवा वीसेहिं अद्धमासेहिं आणमति वा, पाणमंति वा, उस्ससति वा, नीससति वा ।

१६ तेसि णं देवाणं वीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्व दुक्खाणमत करिस्सति ।

एकवीसइमो समवाओ

१ एक्कवीस सबला पण्णत्ता तंजहा-
हत्थकम्मं करेमाणे सबले,
मेहुणं पड़िसेवमाणे सबले,

राइभोअणं भुंजमाणे सबले,
आहाकम्मं भुंजमाणे सबले,
सागारियं पिंडं भुंजमाणे सबले,
उद्देसियं कीयं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले,
अभिक्खणं अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ता णं भुंजमाणे सबले,
अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले,
अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले,
अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले,
रायपिंडं भुंजमाणे सबले
आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले,
आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले,
आउट्टिआए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले,
आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले,
एवं आउट्टिआ चित्तमत्ताए पुढवीए,
एवं आउट्टिआ चित्तमत्ताए सिलाए,
कोलावासंसि वा, दारुए ठाणं वा, सिज्जं वा, निसीहियं वा चेतेमाणे सबले,
जीवपइट्ठिए सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिंगे पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणाए तहप्पगारे ठाणं वा, सिज्जं वा, निसीहियं वा, चेतेमाणे सबले।
आउट्टिआए मूलभोयणं वा, कंदभोयणं वा, तयाभोयणं वा, पवालभोयणं वा, पुप्फभोयणं वा, फलभोयणं वा, हरियभोयणं वा भुंजमाणे सबले,
अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले,

अतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं सेवमाणे सवले,
अभिक्खणं अभिक्खणं सीतोदय-वियड-वग्घारियापाणिणा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पड़िगाहित्ता भुजमाणे सवले ।

२ णिअट्टिवादरस्स ण खवित्तसत्तयस्स मोहणीज्जस्स कम्मस्स एक्कवीस कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता तंजहा-
अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणकसाए कोहे, पच्चक्खाणावरणकसाए माणे, पच्चक्खाणावरणकसाए माया, पच्चक्खाणावरणकसाए लोभे, संजलणकसाए कोहे, सजलणकसाए माणे,
संजलणकसाए माया, संजलणकसाए लोभे ।
इत्थिवेदे पुवेदे णपुवेदे हासे अरति रति भय सोग दुगुंछा ।

३ एकमेक्काए णं ओसप्पिणीए पचम-छट्ठाओ समाओ एक्कवीसं एक्कवीसं वास-सहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तंजहा-
दूसमा, दूसमदूसमा य ।

४ एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-बितिआओ समाओ एकवीसं एकवीसं वास-सहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तजहा-
दूसमदूसमा, दूसमा य ।

५ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एगवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ,

७ असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण एगवीस-पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओ-
वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं-सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता ।

१० अच्चुते कप्पे देवाणं जहण्णेणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता ।

११ जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकतं मल्ल किट्टं चावोण्णतं
अरण्णवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा--
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता ।

१२ ते णं देवा एक्कवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति
वा, ऊससंति वा, नीससति वा ।

१३ तेसि णं देवाणं एक्कवीसेहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे सम्मु-
पज्जइ ।

१४ संतेगइया भविसिद्धिया जीवा जे एक्कवीसेहिं भवग्गहणेणं
सिज्झस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

बावीसइमो समवाओ

१ बावीस परीसहा पण्णत्ता तजहा-
दिगिछा-परीसहे पिवासा-परीसहे सीत-परीसहे उसिण-परीसहे
दसमसग-परीसहे अचेल-परीसहे अरइ-परीसहे इत्थी-परीसहे
चरिआ-परीसहे निसीहिया-परीसहे सिज्जा-परीसहे
अक्कोस-परीसहे वह परीसहे जायणा-परीसहे अलाभ-परीसहे
रोग-परीसहे तणफास-परीसहे जल्ल-परीसहे सक्कारपुरक्कार-

परीसहे पण्णा-परीसहे अण्णाण-परीसहे दंसण-परीसहे ।

२ दिट्ठिवायस्स ण :—
बावीस सुत्ताइं छिन्नछेय-णइयाइं ससमय-सुत्तपरिवाडीए

३ बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेय-णइयाइं आजीविय-सुत्तपरिवाडीए

४ बावीसं सुत्ताइ तिक-णइयाइं तेरासिअ-सुत्तपरिवाडीए

५ बावीस सुत्ताइं चउक्क-णइयाइं ससमय-सुत्तपरिवाडीए ।

६ बावीसविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते तंजहा-
काल-वण्ण-परिणामे नील-वण्ण-परिणामे लोहिय-वण्ण-परिणामे
हालिद्दवण्ण-परिणामे सुक्किल्ल-वण्ण-परिणामे
सुब्भिगंध-परिणामे दुब्भिगंध-परिणामे
तित्त-रस-परिणामे कडुय-रस-परिणामे कसाय-रस-परिणामे
अंबिल-रस-परिणामे महुर-रस-परिणामे
कक्खड़-फास-परिणामे मउय-फास-परिणामे गुरु-फास-परिणामे
लहु-फास-परिणामे सीत-फास-परिणामे उसिण-फास-परिणामे
णिद्ध-फास-परिणामे लुक्ख-फास-परिणामे अगुरुलहु-फास-परिणामे गुरुलहु-फास-परिणामे ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण बावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ छट्ठीए पुढवीए नेरइआणं उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाणं बावीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण बावीस पलिओव-

माइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ अच्चुते कप्पे देवाण वावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाणं देवाण जहण्णेण वावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ जे देवा महियं विसूहिय विमल पभास वणमालं अच्चुतवडिं-सग विमाण देवत्ताए उववण्णा—तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ ते णं देवाणं वावीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमति वा, ऊससंति वा, नीससति वा ।

१६ तेसि णं देवाण वावीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वावीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ।

तेवीसइमो समवाओ

१ तेवीस सुयगड़ज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-

समए वेतालिए उवसग्गपरिण्णा थीपरिण्णा नरयविभत्ती महा-वीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समो-सरणे आहत्तहिए गथे जमईए गाथा ।

पुडरीए किरियाठाणा आहारपरिण्णा अपच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुयं अद्दइज्ज णालदइज्ज ।

२ जबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ण ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तसि केवलवरनाण-दसणे समुप्पण्णे ।

३ जबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ण ओसप्पिणीए तेवीस तित्थयरा पुव्वभवे एक्कारसगिणो होत्था तंजहा-

अजित संभव अभिणंदण-जाव-पासो वद्धमाणो य ।
उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ।

४ जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थयरा पुव्व-भवे मंडलीअरायाणो होत्था तंजहा-
अजित सभव अभिणदण-जाव-पासो वद्धमाणो य ।
उसभे णं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्या ।

५ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

६ अहेसत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरो-वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरो-वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० जे देवा हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा-- तेसि णं देवाण उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ ते ण देवा तेवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससति वा ।

१२ तेसि णं देवाणं तेवीसेहि वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।

१३ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।

चउवीसइमो समवाओ

१ चउव्वीसं देवाहिदेवा पण्णत्ता तंजहा—
उसभ-अजित-संभव-अभिणंदण-सुमइ-पउमप्पह-सुपास-चंदप्पह-सुविधि-सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणंत-धम्म-संति-कुंथ अर-मल्ली-मुणिसुव्वय-नमि-नेमी-पास-वद्धमाणा ।

२ चुल्लहिमवंत-सिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णव वत्तीसे जोयणसए एगं अट्ठत्तीसइ भागं जोयणस्स किंचि विसेसाहिआओ आयामेणं पण्णत्ता ।

३ चउवीसं देवठाणा सइंदया पण्णत्ता, सेसा अहमिंदा अनिंदा अपुरोहिआ ।

४ उत्तरायणगते णं सूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायं णिव्वत्तइत्ता ण णिअट्टति ।

५ गंगा-सिंधूओ णं महाणदीओ पवाहे सातिरेगे णं चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ता ।

६ रत्ता-रत्तवतीओ णं महाणदीओ पवाहे सातिरेगे णं चउवीसं कोसे वित्थारेण पण्णत्ता ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० सोहम्मीसाणे ण देवाण अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाण उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते ण देवा चउवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१४ तेसि णं देवाणं चउवीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

पणवीसइमो समवाओ

१ पुरिम-पच्छिमगाणं तित्थगराणं पंच-जामस्स पणवीस भावणाओ पण्णत्ता तंजहा—

ईरिआसमिई, मणगुत्ती, वयगुत्ती, आलोय-भायण-भोयणं, आदाण-भड-मत्त-निक्खेवणा-समिई ।५

अणुवीतिभासणया, कोहविवेगे, लोभविवेगे, भयविवेगे, हासविवेगे ।५

उग्गह अणुण्णवणया, उग्गह सीम-जाणणया, सयमेव उग्गहं अणुगिण्हणया, साहम्मिय उग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणया, साहारणभत्तपाणं अणुण्णविय पडिभुंजणया ।५

इत्थी-पसु-पंडग-ससत्तग-सयणासण-वज्जणया, इत्थीकहविव-

ज्जणया, इत्थीणं इंदियाणमालोयणवज्जणया, पुव्वरय-पुव्व कीलिआणं अणणुसरणया,पणीताहारविवज्जणया ।५

सोइंदिय-रागोवरई, चक्खिदिय-रागोवरई, घाणिंदिय-रागोवरई, जिब्भिदिय-रागोवरई, फासिंदिय-रागोवरई ।५

२ मल्ली णं अरहा पणवीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३ सव्वे वि दीह-वेयड्ढ-पव्वया पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

पणवीसं पणवीसं गाऊआणि उव्विद्धेणं पण्णत्ता ।

४ दोच्चाए णं पुढवीए पणवीस णिरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

५ आयारस्स ण भगवओ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा–

सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणीअ सम्मत्तं ।
आवंति धुअविमोह उवहाणसुयं महापरिण्णा ।।१।।
पिंडेसण सिज्ज रिआ भासज्झयणा य वत्थ पाएसा ।
उग्गहपडिमा सत्तिक्कसत्तया भावण विमुत्ती ।।२।।
निसीहज्झयणं पणवीसइमं ।

६ मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्जत्तए ण संकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणवीस उत्तरपयडीओ णिबंधति–

तिरियगतिनामं विगलिंदियजातिनाम ओरालिअसरीरनामं तेअगसरीरणामं कम्मणसरीरनामं हुंडगसंठाणनामं ओरालिअ-सरीरंगोवंगनामं छेवट्ठसंघयणनामं वण्णनाम गंधनामं रस-नाम फासनाम तिरिआणुपुव्विनामं अगुरुलहुनाम उवघाय-नाम तसनामं बादरनामं अपज्जत्तयणामं पत्तेयसरीरणामं अथिरणामं असुभणाम दुभगनाम अणादेज्जनाम अजसोकित्ति-

नामं निम्माणनामं २५ ।

७ गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पणवीसं गाऊयाणि पुहुत्तेणं दुहओ घडमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएण पवातेण पडंति ।

८ रत्तारत्तवईओ णं महाणदीओ पणवीसं गाऊयाणि पुहुत्तेण मुहपवित्तिएण मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेण पडंति ।

९ लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता ।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणे ण देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जाण देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जय-विमाणेसु उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेण पणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते ण देवा पणवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उससति वा, नीस्ससति वा ।

१७ तेसि ण देवाण पणवीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ संतेगइयाण भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति ।

छव्वीसइमो समवाओ

१ छव्वीसं दसा-कप्प-ववहाराण उद्देसणकाला पण्णत्ता, तंजहा--
दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स ।

२ अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तंजहा-
मिच्छत्तमोहणिज्ज सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसगवेदे हासं अरति रति भयं सोग दुगुंछा ।

३ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण छव्वीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

४ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

५ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

६ सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जयाणं देवाण जहण्णेण छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ जे देवा मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा--
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ ते ण देवा छव्वीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१० तेसि णं देवाणं छव्वीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

११ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं

सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

सत्तवीसइमो समवाओ

१ सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता तंजहा-
पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमण अदिन्नादाणाओ
वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं
सोइंदियनिग्गहे चक्खिंदियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे
जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे
कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लोभविवेगे
भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमा विरागया
मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
णाणसपण्णया दंसणसपण्णया चरित्तसंपण्णया
वेयण अहियासणया मारणंतिय अहियासणया ।

२ जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति ।

३ एगमेगे ण णक्खत्तमासे सत्तावीसाहिं राइंदियाहिं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेग पण्णत्ता ।

५ वेयग-सम्मत्तबंधोवरयस्स ण मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपयडीओ संतकम्मंसा पण्णत्ताओ ।

६ सावणसुद्धसत्तमीसु णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता ण दिवसखेत्तं नियट्टेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवट्टमाणे चारं चरई ।

७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं सत्ता-
वीसं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं
सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण सत्तावीसं पलिओवमाइं
ठिई पण्णत्ता ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओ-
वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरो-
वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा मज्झिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि
णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीस सागरोमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते ण देवा सत्तावीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति
वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१४ तेसि णं देवाणं सत्तावीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसेहिं भवग्गहणेहिं
सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

अट्ठवीसइमो समवाओ

१ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते तंजहा-
मासिआ आरोवणा, सपंचराई-मासिआ आरोवणा, सदसराइ-
मासिआ आरोवणा, सपण्णरसराइ-मासिआ आरोवणा, सविसइ-
राइ-मासिआ आरोवणा, सपंचवीसराइ-मासिआ आरोवणा ।
एवं चेव दोमासिआ आरोवणा

एव तिमासिआ आरोवणा, चउमासिआ आरोवणा, उवघाइया आरोवणा, अणुवघाइया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा ।

एतावता आयारपकप्पे एताव ताव आयरियव्वे ।

२ भवसिद्धियाण जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीस कम्मंसा सतकम्मा पण्णत्ता, तंजहा-

सम्मत्तवेअणिज्ज, मिच्छत्तवेयणिज्जं, सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं, सोलस कसाया, णव णोकसाया ।

३ आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते तंजहा-

सोइंदिय-अत्थावग्गहे चक्खिंदिय-अत्थावग्गहे घाणिंदिय-अत्थावग्गहे जिब्भिंदिय-अत्थावग्गहे फासिंदिय-अत्थावग्गहे णोइंदिय-अत्थावग्गहे

सोइंदिय-वंजणोवग्गहे घाणिंदिय-वंजणोवग्गहे जिब्भिंदिय-वंजणोवग्गहे फासिंदिय-वंजणोवग्गहे

सोइंदिय-ईहा चक्खिंदिय-ईहा घाणिंदिय-ईहा जिब्भिंदिय-ईहा फासिंदिय-ईहा णोइंदिय-ईहा

सोइंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए णोइंदियावाए

सोइंदिय-धारणा चक्खिंदिअ-धारणा घाणिंदिय-धारणा जिब्भिंदिय धारणा फासिंदिअ-धारणा णोइंदिअ-धारणा ।

४ ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीस विमाणस-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

५ जीवे णं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीस उत्तरपगड़ीओ णिबंधति, तंजहा–

देवगतिनामं, पंचिंदियजातिनामं, वेउव्वियसरीरनामं, तेयगसरीरनामं, कम्मणसरीरनामं, समचउरंससठाणनाम, वेउ-

व्वियसरीरंगोवंगनामं, वण्णनामं, गंधनामं, रसनामं, फासनामं, देवाणुपुव्विनामं, अगुरुलहुनाम, उवघायनामं, पराघायनामं, उस्सासनामं, पसत्थविहायोगइनामं, तसनामं, बायरनामं, पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं, सुभगनामं, सुस्सरनामं, थिराथिराण सुभासुभाण आएज्जाणाएज्जाण दोण्ह अण्णयर एग नाम णिवधइ--जसोकित्तिनामं, निम्माणनामं।

एव चेव नेरइआ वि--

णाणत्त---अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीनामं निम्माणनामं।

६ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

७ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेण अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ ते णं देवा अट्ठावीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमति वा, ऊससंति वा, नीससति वा।

१३ तेसि णं देवाणं अट्ठावीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४ संतेगइयाणं भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

एगूणतीसइमो समवाओ

१ एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पण्णत्ते, तंजहा—
भोमे उप्पाए सुमिणे अंतरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे।
भोमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सुत्ते वित्ती वत्तिए।
एवं एक्केक्कं तिविहं,
विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे।

२ आसाढे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ताइं।
एव चेव—

३ भद्दवए णं मासे, ४ कत्तिए णं मासे, ५ पोसे णं मासे,

६ फग्गुए णं मासे, ७ वइसाहे णं मासे,

८ चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते।

९ जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहिआओ णामस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ।

१० इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओ-वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५ जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा--तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते णं देवा एगूणतीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१७ तेसि ण देवाणं एगूणतीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ संतेगइयाणं भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीस-भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

तीसइमो समवाओ

१ तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता तंजहा-

१. जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिआ ।
उदएण कम्मा मारेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥१॥

२. सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं ।
तिव्वासुभसमायारे, महामोहं पकुव्वइ ॥२॥

३. पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं ।
अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥३॥

४. जायतेयं समारब्भ, बहुं ओरुंभिया जणं ।
अतोधूमेण मारेई महामोहं पकुव्वइ ॥४॥
५. सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमंगम्मि चेयसा ।
विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ॥५॥
६. पुणो पुणो पणिधिए, हरित्ता उवहसे जणं ।
फलेणं अदुवा दंडेणं, महामोहं पकुव्वइ ॥६॥
७. गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए ।
असच्चवाई णिण्हाई, महामोहं पकुव्वइ ॥७॥
८. धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा ।
अदुवा तुम कासित्ति, महामोहं पकुव्वइ ॥८॥
९. जाणमाणो परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ ।
अक्खीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ ॥९॥
१०. अणायगस्स नयवं, दारे तस्सेव धंसेया ।
विउलं विक्खोभइत्ता णं, किच्चा णं पडिबाहिरं ॥१०॥
उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं ।
भोगभोगे वियारेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥११॥
११. अकुमारभूए जे केई, कुमारभूएत्ति हं वए ।
इत्थीहिं गिद्धे वसए, महामोहं पकुव्वइ ॥१२॥
१२. अबंभयारी जे केई, बंभयारीत्ति हं वए ।
गद्दहे व्व गवां मज्झे, विस्सरं नयई नदं ॥१३॥
अप्पणो अहिए बाले, मायामोसं बहुं भसे ।
इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुव्वइ ॥१४॥
१३ जं निस्सए उव्वहइ, जससाहिगमेण वा ।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि, महामोहं पकुव्वइ ॥१५॥
१४ ईसरेण अदुवा गामेण, अणिसरे ईसरीए ।

तस्स संपयहीणस्स, सिरी अतुलमागया ॥१६॥
ईसादोसेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे ।
जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ ॥१७॥
१५. सप्पी जहा अंडउडं, भत्तारं जो विहिंसइ ।
सेणावइं पसत्थारं, महामोहं पकुव्वइ ॥१८॥
१६. जे नायगं व रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा ।
सेट्ठि बहुरवं हंता, महामोहं पकुव्वइ ॥१९॥
१७. बहुजणस्स णेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं ।
एयारिसं नर हंता, महामोहं पकुव्वइ ॥२०॥
१८. उवट्ठियं पडिविरयं, सजयं सुतवस्सियं ।
वुक्कम्म धम्माओ भसेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥२१॥
१९. तहेवाणंतणाणीणं, जिणाण वरदंसिणं ।
तेसिं अवण्णव वाले, महामोह पकुव्वइ ॥२२॥
२० नेयाइअस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवयरई बहुं ।
त तिप्पयंतो भावेइ, महामोह पकुव्वइ ॥२३॥
२१. आयरिय-उवज्झाएहिं, सुय विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले, महामोह पकुव्वइ ॥२४॥
२२. आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, महामोह पकुव्वइ ॥२५॥
२३ अबहुस्सुए य जे केई, सुएणं पविकत्थई ।
सज्झायवाय वयइ, महामोहं पकुव्वइ ॥२६॥
२४. अतवस्सीए य जे केई, तवेण पविकत्थइ ।
सव्वलोयपरे तेणे, महामोहं पकुव्वइ ॥२७॥
२५. साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए ।
पभू ण कुणई किच्चं, मज्झपि से न कुव्वइ ॥२८॥

खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, खीणे सुयणाणावरणे,
खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे,
खीणे केवलणाणावरणे ५
खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे अचक्खुदंसणावरणे,
खीणे ओहिदंसणावरणे, खीणे केवलदंसणावरणे ४।
खीणे निद्दा, खीणे णिद्दा-णिद्दा, खीणे पयला,
खीणे पयला-पयला, खीणे थीणद्धी ५।
खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे,
खीणे दंसणमोहणिज्जे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे ४।
खीणे नेरइआउए, खीणे तिरिआउए, खीणे मणुस्साउए,
खीणे देवाउए ४।
खीणे उच्चागोए, खीणे निच्चागोए, खीणे सुभनामे,
खीणे असुभनामे ४।
खीणे दाणंतराए, खीणे लाभंतराए, खीणे भोगतराए,
खीणे उवभोगतराए, खीणे वीरिअअतराए ५।३१

२ मंदरे पव्वए धरणितले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्चेव तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।

३ जया णं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तयाण इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

४ अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाइं राइंदियाइ राइदियग्गेणं पण्णत्ता ।

५ आइच्चे ण मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइदियग्गेणं पण्णत्ता ।

६ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिआणं देवाणं जहण्णेणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेण एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते णं देवा एक्कतीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१३ तेसि ण देवाणं एक्कतीसेहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।

सेहस्स ।

। सेहस्स ।

.णा सेहस्स ।

बत्तीसइमो समवाओ

१ बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता तंजहा–

आलोयण १ निरवलावे २, आवईसु दढधम्मया ३।
अणिस्सिओवहाणे ४ य, सिक्खा ५ निप्पडिकम्मया ६॥१॥
अण्णायया ७ अलोभे ८ य, तितिक्खा ९ अज्जवे १० सुई ११।
सम्मदिट्ठी १२ समाही १३ य, आयारे १४ विणओवए १५॥२॥
धिईमई १६ य संवेगे १७, पणिही १८ सुविहि १९ संवरे २०।
अत्तदोसोवसहारे २१, सव्वकामविरत्तया २२॥३॥
पच्चक्खाणे २३-२४ विउस्सग्गे २५, अप्पमादे २६ लवालवे २७।
झाणसंवरजोगे २८ य, उदए मारणंतिए २९॥४॥
संगाणं च परिण्णाया ३०, पायच्छित्तकरणे वि य ३१।
आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा ॥५॥

२ बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता तंजहा–

चमरे बली धरणे भूआणंदे-जाव-घोसे।
चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे-जाव-पाणए अच्चुए।

३ कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था।

४ सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससहस्सा णं पण्णत्ता।

५ रेवइ णक्खत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते।

६ बत्तीसइविहे णट्टे पण्णत्ते।

७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

८ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण बत्तीसं सागरो-

५ आइच्च

राइदिय्मगुणपच्चक्खाणे, उत्तरगुणपच्चखाणे।

वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा विजय-वेजयत-जयंत-अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा–
तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते ण देवा बत्तीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१३ तेसि णं देवाणं बत्तीस-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमतं करिस्संति ।

तेत्तीसइमो समवाओ

१ तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ता तंजहा–

१. सेहे रायणियस्स पुरओ गता भवइ आसायणा सेहस्स ।
२. सेहे रायणियस्स सपक्खं गंता भवइ आसायणा सेहस्स ।
३. सेहे रायणियस्स आसन्न गता भवइ आसायणा सेहस्स ।
४. सेहे राइणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।
५. सेहे रायणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।
६ सेहे रायणियस्स आसन्नं चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

७. सेहे रायणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

८. सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

९. सेहे रायणियस्स आसन्न निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

१०. सेहे रायणियस्स सद्धि बहिया वियार-भूमि वा निक्खंते समाणे तत्थ सेहे पुव्वतरागं आयमइ, पच्छा रायणिए, भवइ आसायणा सेहस्स।

११. सेहे रायणिएण सद्धि बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा निक्खते समाणे तत्थ सेहे पुव्वतरागं आलोएइ पच्छा रायणीए भवइ आसायणा सेहस्स।

१२. केइ रायणियस्स पुव्व-संलवित्तए सिया, तं सेहे पुव्वतरागं आलवइ पच्छा रायणिए भवइ आसायणा सेहस्स।

१३. सेहे रायणिअस्स राओ वा, वियाले वा, वाहरमाणस्स अज्जो ! के सुत्ता ? के जागरा ? तत्थ सेहे जागरमाणे रायणियस्स अपड़िसुणेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

१४. सेहे असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पड़िगाहित्ता त पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा रायणियस्स भवइ आसायणा सेहस्स।

१५. सेहे असणं वा-जाव-साइमं वा पड़िगाहित्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स उवदसेह पच्छा रायणियस्स भवइ आसायणा सेहस्स।

१६. सेहे असणं वा-जाव-साइमं वा पड़िगाहित्ता तं पुव्वमेव सेह-तरागं उवणिमतेइ पच्छा रायणिए भवइ आसायणा सेहस्स।

१७. सेहे रायणिएण सद्धि असणं वा-जाव-साइमं वा पड़िगा-हित्ता तं रायणियं अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्ध दलयति भवइ आसायणा सेहस्स।

१८. सेहे असणं वा-जाव-साइम वा-पड़िगाहित्ता रायणिएणं सद्धि भुंजमाणे तत्थ सेहे खद्धं खद्धं, डागं डागं, उसढं उसढं, रसियं रसियं, मणुन्नं मणुन्नं, मणामं मणामं, निद्धं निद्धं, लुक्खं लुक्खं, आहारित्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

१९. सेहे रायणियस्स वाहरमाणस्स अपड़िसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२०. सेहे रायणियस्स वाहरमाणस्स तत्थ गए चेव पड़िसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२१ सेहे रायणियस्स किं ति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२२. सेहे रायणियं तुमं ति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२३. सेहे रायणियं खद्धं खद्धं वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२४. सेहे रायणियं तज्जाएण तज्जाएणं पड़िहणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२५. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२६. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमरसीति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२७. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमणसे भवइ आसायणा सेहस्स।

२८. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

२९. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अच्छिंदित्ता भवइ आसायणा सेहस्स।

३०. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिन्नाए अवुच्छिन्नाए अवोगड़ाए दोच्चंपि तच्चंपि तमेव

कहं कहित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

३१. सेहे रायणियस्स सिज्जा-संथारगं पाएणं संघट्टित्ता हत्थेण अणणुतावित्ता (अणणुवित्ता) गच्छइ भवइ आसायणा सेहस्स ।

३२. सेहे रायणियस्स सिज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा, निसीइत्ता वा, तुयट्टित्ता वा भवइ आसायणा सेहस्स ।

३३. सेहे रायणियस्स उच्चासणंसि वा, समासणंसि वा, चिट्ठित्ता वा, निसीइत्ता वा, तुयट्टित्ता वा भवइ आसायणा सेहस्स ।

२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्काबाराए तेत्तीसं तेत्तीस भोमा पण्णत्ता ।

३ महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेण पण्णत्ता ।

४ जया ण सूरिए बाहिरागंतरं तच्चं मंडल उवसंकमित्ता णं चार चरइ तया ण इह गयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचि विसेसूणेहिं चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

५ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेत्तीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

६ अहे सत्तमाए पुढवीए काल-महाकाल-रोरुय-महारोरुएसु नेरइयाण उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराण अत्थेगइयाण देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाण तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई

पण्णत्ता ।

१० विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णा—
तेसि णं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते णं देवा तेत्तीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, निस्ससंति वा ।

१३ तेसि णं देवाणं तेत्तीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

चोत्तीसइमो समवाओ

१ चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पण्णत्ता तंजहा—

१. अवट्ठिए केस-मंसु-रोम-नहे,
२. निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी,
३. गोक्खीरपंडुरे मंस-सोणिए,
४. पउमुप्पलगंधिए उस्सास-निस्सासे,
५. पच्छन्ने आहार-नीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा,
६. आगासगयं चक्कं,
७. आगासगयं छत्तं,
८. आगासगयाओ सेयवरचामराओ,
९. आगासफालिआमयं सपायपीढं सीहासणं,

१०. आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ,

११. जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा, निसीयंति वा, तत्थ तत्थवि य णं जक्खा देवा संछन्न-पत्त-पुप्फ-पल्लव-समाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपड़ागो असोगवर-पायओ अभिसंजायइ,

१२. ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेय मंडलं अभिसंजायइ अंधकारेवि य णं दस दिसाओ पभासेइ,

१३. बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे,

१४. अहोसिरा कंटया जायंति,

१५. उऊविवरीया सुहफासा भवंति,

१६. सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ,

१७. जुत्तफुसिएणं मेहेण य निहयरयरेणूयं किज्जइ,

१८. जल-थलयभासुरपभूतेणं विंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ,

१९. अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रुव-गंधाण अवकरिसो भवइ,

२०. मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रुव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ,

२१. पच्चाहरओवि य णं हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो,

२२. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ,

२३. सावि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरी-सिवाणं अप्पणो हिय-सिव-सुहयभासत्ताए परिणामइ,

२४. पुव्वबद्धवेरावि य णं देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले

पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति,
२५. अण्णउत्थियपावयणिया वि य णं मागया वंदंति,
२६. आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पलिवयणा हवंति,
२७. जओ जओ वि य ण अरहंतो भगवंतो विहरंति
तओ तओ वि य णं जोयण-पणवीसाए ण ईती न भवइ,
२८. मारी न भवइ,
२९. सचक्कं न भवइ,
३०. परचक्क न भवइ,
३१. अइवुट्ठी न भवइ,
३२. अणावुट्ठी न भवइ,
३३. दुब्भिक्खं न भवइ,
३४. पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पाइया वाही खिप्पमिव उवसमंति।
२ जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीस चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तंजहा–
बत्तीसं महाविदेहे, दो भरहे, एरवए।
३ जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीस दीहवेयड्ढा पण्णत्ता।
४ जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थंकरा समुप्पज्जंति।
५ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो चोत्तीस भवणावाससहस्सा पण्णत्ता।
६ पढम-पंचम-छट्ठी-सत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता।

पणतीसइमो समवाओ

१ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता।
२ कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३ दत्ते णं वासुदेवे पणतीस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
४ नदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
५ सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवए चेइयक्खभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पण्णत्ता ।
६ बितिय-चउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीस निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

छत्तीसइमो समवाओ

१ छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—
विणयसुय १, परीसहो २, चाउरंगिज्जं ३, असखयं ४, अकाममरणिज्जं ५, पुरिसविज्जा ६, उरब्भिज्जं ७, काविलियं ८, नमिपव्वज्जा ९, दुमपत्तयं १०, बहुसुयपूया ११, हरिएसिज्जं १२, चित्तसभूय १३, उसुयारिज्जं १४, सभिक्खूग १५, समाहिठाणाइ १६, पावसमणिज्जं १७, संजइज्जं १८, मियचारिया १९, अणाहपव्वज्जा २०, समुद्दपालिज्जं २१, रहनेमिज्जं २२, गोयमकेसिज्जं २३, समितीओ २४, जन्नतिज्ज २५, सामायारी २६, खलुंकिज्जं २७, मोक्खमग्गगई २८, अप्पमाओ २९, तवोमग्गो ३०, चरणविही ३१, पमायठाणाइं ३२, कम्मपयडी ३३, लेसज्झयण ३४, अणगारमग्गे ३५, जीवाजीवविभत्ती य ३६ ।
२ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था ।

४ चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ ।

सत्ततीसइमो समवाओ

१ कुंथुस्स ण अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था ।

२ हेमवय-हेरण्णवयाओ ण जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चउसत्तरे जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचि विसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ता ।

३ सव्वासु ण विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीस सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसण-काला पण्णत्ता ।

५ कत्तिय-बहुल-सत्तमीए ण सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ।

अट्ठतीसइमो समवाओ

१ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जिआसाह-स्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ।

२ हेमवए-एरण्णवईयाणं जीवाणं धणुपिट्ठे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयण-सए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स

किंचि विसेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।

३ अत्थस्स ण पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था ।

२ समयखेत्ते एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता तंजहा–
तीसं वासहरा, पंच मंदरा, चत्तारि उसुकारा ।

३ दोच्च-चउत्थ-पचम-छट्ठ-सत्तमासु ण पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

४ नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगड़ीओ पण्णत्ता ।

चत्तालीसइमो समवाओ

१ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।

२ मंदरचूलियाणं चत्तालीस-जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

३ संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ भूयाणंदस्स णं नागकुमारस्स नागरन्नो चत्तालीसं भवणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

५ खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीसं उद्देसण-
काला पण्णत्ता ।

६ फग्गुणपुण्णिमासिणीए णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं
निव्वट्टइत्ता णं चार चरइ ।

७ एवं कत्तियाए वि पुण्णिमाए ।

८ महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावास-सहस्सा पण्णत्ता ।

एगचत्तालीस समवाओ

१ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।

२ चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता
तंजहा—
रयणप्पहाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए ।

३ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एकचत्तालीसं
उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

बायालीसइमो समवाओ

१ समणे भगव महावीरे बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउ-
णित्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ जंबुद्दीवस्स ण दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ गोथूभस्स
णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस णं बायालीसं
जोयणसहस्साइं अबाहातो अतर पण्णत्तं ।

३ एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे य ।

४ कालोए णं समुद्दे वायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा, जोइस्संति वा, वायालीसं सूरिया पभासिसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ।

५ संमुच्छिम-भुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं वायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।

६ नामकम्मे वायालीसविहे पण्णत्ता तंजहा–

गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरंगोवंगनामे
सरीरबंधणनामे सरीरसघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे
वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे
अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे
उस्सासनामे आयवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे
तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे
पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे
थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे
सुभगनामे दुब्भगनामे सुसरनामे दुस्सरनामे
आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे
निम्माणनामे तित्थकरनामे ।

७ लवणे णं समुद्दे वायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भिंतरियं वेलं धारंति ।

८ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए वितिए वग्गे वायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

९ एगमेगाए ओसप्पिणीए पचम-छट्ठीओ समाओ वायालीस वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ता ।

१० एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढम-वीयाओ समाओ वायालीस वाससहस्साइं कालेण पण्णत्ता ।

तेयालीसइमो समवाओ

१ तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ।

२ पढम-चउत्थ-पचमासु तेयालीस निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

३ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते,

४ एवं चउद्दिसिं पि दगभागे संखे दयसीमे य ।

५ महालिए ण विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे तेयालीसं उद्देसण-काला पण्णत्ता ।

चोयालीसइमो समवाओ

१ चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता ।

२ विमलस्स णं अरहओ णं चउआलीसं पुरिसजुगाइं अणुपिट्ठि सिद्धाइं-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणाइं ।

३ धरणस्स णं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

४ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

पणयालीसइमो समवाओ

१ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयण-सय-सहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता।

२ सीमतए णं नरए पणयालीसं जोयण-सय-सहस्साइं आयाम-विक्खंभेण पण्णत्ता।

३ एवं उडुविमाणे वि।

४ ईसिपब्भारा णं पुढवी एवं चेव।

५ धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।

६ मदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं पि पणयालीसं २ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

७ सव्वेवि ण दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोइसु वा, जोइति वा, जोइस्संति वा।
तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य।
एए छ नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥१॥

८ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

छायालीसइमो समवाओ

१ दिट्ठिवायस्स ण छायालीस माउयापया।

२ बंभिए ण लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पण्णत्ता।

३ पभंजणस्स ण वाउकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता।

सत्तचत्तालीसइमो समवाओ

१ जया णं सूरिए सव्वब्भितरमंडलं उवसकमित्ता णं चार चरइ तया णं इह गयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीस जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयण-सएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ।

२ थेरे णं अग्गिभूई सत्तचत्तालीस वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

अड़यालीसइमो समवाओ

१ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अड़यालीसं पट्टण-सहस्सा पण्णत्ता ।

२ धम्मस्स णं अरहओ अड़यालीस गणा, अडयालीस गणहरा होत्था ।

३ सूरमंडले ण अडयालीस एकसट्ठि भागे जोयणस्स विक्खभेणं पण्णत्ता ।

एगूणपन्नासइमो समवाओ

१ सत्त सत्तमियाए णं भिक्खुपडिमाए राइदिएहिं छन्नउइ भिक्खा-सएणं अहासुत्तं-जाव-आराहिया भवइ ।

२ देवकुरु-उत्तरकुरुएसु ण मणुया एगूणपन्ना राइंदिएहिं सपन्न-जोव्वणा भवंति ।

३ तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्ना राइंदिया ठिई पण्णत्ता ।

पण्णासइमो समवाओ

१ मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पण्णासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।

२ अणंते णं अरहा पन्नासं धणूई उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३ पुरिसुत्तमे णं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ सव्वेवि णं दीहवेयड्ढा मूले पन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

५ लंतए कप्पे पन्नास विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।

६ सव्वाओ ण तिमिस्सगुहा-खडगप्पवायगुहाओ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं पण्णत्ता ।

७ सण्वेवि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं २ जोयणाइं विक्खंभेण पण्णत्ते ।

एगपण्णाइसमो समवाओ

१ नवण्हं वंभचेराण एकावन्नं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

२ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररन्नो समा सुधम्मा एकावन्न-खंभ-सय-सन्निविट्ठा पण्णत्ता ।

३ एवं चेव वलिस्स वि ।

४ सुप्पभे ण वलदेवे एकावन्न वास-सय-सहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ दसणावरण-नामाण दोण्ह कम्माणं एकावन्नं उत्तरकम्म-पगड़ीओ पण्णत्ता ।

बावन्नइमो समवाओ

१ मोहणिज्जस्स ण कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा पण्णत्ता तजहा—
कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा सजलणे कलहे चडिक्के भडणे विवाए ।१०
माणे मदे दप्पे थभे अत्तुक्कोसे गव्वे परपरिवाए अक्कोसे अवक्कोसे [परिभवे] उन्नए ।२०
उन्नामे माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे ।३०
कूडे जिम्हे किव्विसे अणायरणया गूहणया वचणया पलिकुं-चणया सातिजोगे लोभे इच्छा ।४०
मुच्छा कखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा ।५० नदी रागे ।५२ ।

२ गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस णं बावन्न जोयणसहस्साइं अबाहाउ अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं दगभासस्स केउगस्स, संखस्स जूयगस्स, दगसीमस्स ईसरस्स ।

४ नाणावरणिज्जस्स, नामस्स, अतरायस्स एतेसि ण तिण्ह कम्म-पगडीण बावन्नं उत्तरपयडीओ पण्णत्ता ।

५ सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावास-सयसहस्सा पण्णत्ता ।

तेवन्नइमो समवाओ

१ देवकुरु-उत्तरकुरुयाओ ण जीवाओ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ ।

२ महाहिमवत-रुप्पीण वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयण-सए छच्च एगूणवीसइ-भाए जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ ।

३ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छर-परियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ।

४ संमुच्छिम-उरपरिसप्पाण उक्कोसेण तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता ।

चउवन्नइमो समवाओ

१ भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पजिस्सति वा, तजहा—

चउवीस तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।

२ अरहा ण अट्ठिनेमी चउवन्नं राइदियाइं छउमत्थपरियाय पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी ।

३ समणे भगव महावीरे एगदिवसेण एगनिसिज्जाए चउप्पन्नाइं वागरणाइ वागरित्था ।

४ अणंतस्स णं अरहओ चउपन्नं गणहरा होत्था ।

पणवन्नइमो समवाओ

१ मल्लिस्स णं अरहओ पणवन्न-वास-सहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

२ मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ विजय-दारस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस ण पणपन्न–जोयण-सहस्साइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं चउद्दिसिंपि वेजयत-जयंत-अपराजियं ति ।

४ समणे भगवं महावीरे अंतिमराइयंसि पणपन्न अज्झयणाइ कल्लाणफलविवागाइ पणपन्नं अज्झयणाइ पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ पढम-विइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

६ दसणावरणिज्ज-नामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तर-पगडीओ पण्णत्ताओ।

छप्पन्नइमो समवाओ

१ जवुद्दीवे ण दीवे छप्पन्न नक्खत्ता चदेण सद्धि जोग जोइसु वा, जोइति वा, जोइस्सति वा ।

२ विमलस्स णं अरहओ छप्पन्नं गणा, छप्पन्नं गणहरा होत्था ।

सत्तावन्नइमो समवाओ

१ तिण्ह गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाण सत्तावन्नं अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—आयारे, सूयगडे, ठाणे ।

२ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावन्नं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं दगभासस्स केउयस्स य, संखस्स जूयस्स य, दयसीमस्स ईसरस्स य ।

४ मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था ।

५ महाहिमवंत-रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्नं २ जोयण-सहस्साइं दोन्नि य तेणउए जोयण-सए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।

अट्ठावन्नइमो समवाओ

१ पढम-दोच्च-पंचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२ नाणावरणिज्जस्स वेयणिय-आउय-नाम-अंतराइयस्स एएसि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावन्नं उत्तरपगडीओ पण्णत्ता ।

३ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं अट्ठावन्नं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४-६ एवं चउदिसिं पि नेयव्वं ।

एगूणसट्ठिइमो समवाओ

१ चंदस्स ण संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ता ।

२ संभवे णं अरहा एगूणसट्ठि पुव्व-सय-सहस्साइं आगारमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।

३ मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठि ओहिनाणि-सया होत्था ।

सट्ठिइमो समवाओ

१ एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाइए ।

२ लवणस्स ण समुद्दस्स सट्ठि नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति ।

३ विमले ण अरहा सट्ठि धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठि सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ता ।

५ बंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठि सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ता ।

६ सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठि विमाणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

इगसट्ठिइमो समवाओ

१ पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इगसट्ठि उऊमासा पण्णत्ता ।

२ मंदरस्स ण पव्वयस्स पढमे कडे एगसट्ठि-जोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ते ।
३ चंदमडलेणं एगसट्ठि-विभाग-विभाइए समंसे पण्णत्ता ।
४ एव सूरस्सवि ।

बावट्ठिइमो समवाओ

१ पंचसंवच्छरिए ण जुगे बासट्ठिं पुन्निमाओ, बासट्ठि अमावसाओ पण्णत्ताओ ।
२ वासुपुज्जस्स णं अरहओ बासट्ठि गणा, बासट्ठि गणहरा होत्था ।
३ सुक्कपक्खस्स णं चदे बासट्ठि भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ ।
४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थड़े पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठि विमाणा पण्णत्ता ।
५ सव्वे वेमाणियाण बासट्ठि विमाणपत्थडा पत्थड़ग्गेणं पण्णत्ता ।

तेसट्ठिइमो समवाओ

१ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठि पुव्व-सय-सहस्साइ महाराय-मज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।
२ हरिवास-रम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिएहिं राइदिएहिं संपत्त-जोव्वणा भवति ।
३ निसढे ण पव्वए तेवट्ठि सूरोदया पण्णत्ता ।
४ एवं नीलवते वि ।

चउसट्ठिइमो समवाओ

१ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खा-सएहिं अहासुत्तं-जाव-भवइ ।
२ चउसट्ठि असुरकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।
३ चमरस्स णं रन्नो चउसट्ठिं सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।
४ सव्वेवि णं दधिमुहा पव्वया पल्ला-संठाण-संठिया सव्वत्थ समा विक्खभुस्सेहेणं चउसट्ठिं जोयण-सहस्साइं पण्णत्ता ।
५ सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।
६ सव्वस्स वि य णं रन्नो चाउरन्त-चक्कवट्टिस्स चउसट्ठि-लट्ठीए महग्घे मुत्ता-मणिहारे पण्णत्ता ।

पणसट्ठिइमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पण्णत्ता ।
२ थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठि-वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।
३ सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं-पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता ।

छावट्ठिइमो समवाओ

१ दाहिणड्ढ-माणुस्स-खेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा ३,

२ छावट्ठि सूरिया तविंसु वा ३।

३ उत्तरड्ढ-माणुस्स-खेत्ताण छावट्ठि चंदा पभासिंसु वा ३,

४ छावट्ठि सूरिया तविंसु वा ३।

५ सेज्जसस्स ण अरहओ छावट्ठि गणहरा होत्था।

६ आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सत्तसट्ठिइमो समवाओ

१ पंचसवच्छरियस्स णं युगस्स नक्खत्तमासेण मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठि नक्खत्तमासा पण्णत्ता।

२ हेमवयए-रन्नवयाओ णं बाहाओ सत्तट्ठि सत्तट्ठि जोयण-सयाइं पणपन्नाइ तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ता।

३ मंदरस्स ण पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोयम दीवस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस ण सत्तसट्ठि जोयण-सहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

४ सव्वेसिं पि ण नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठि भागं भइए समंसे पण्णत्ते।

अड़सट्ठिइमो समवाओ

१ धायइसडे ण दीवे अड़सट्ठि चक्कवट्टिविजया, अड़सट्ठि राय-हाणीओ पण्णत्ताओ।

२ उक्कोसपए अड़सट्ठि अरहंता समुप्पज्जिसु वा ३।

३ एव चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा ।
४ पुक्खरवरदीवड्ढे णं अड़सट्ठि विजया, एवं चेव बलदेवा वासुदेवा ।
५ विमलस्स णं अरहओ अडसट्ठि समण-साहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।

एगूणसत्तरिइमो समवाओ

१ समयखित्ते ण मदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वया पण्णत्ता तजहा–
पणतीस वासा, तीस वासहरा, चत्तारि उसुयारा ।
२ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमद्दीवस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस ण एगूणसत्तरिं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।
३ मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तर-पगडीओ पण्णत्ता ।

सत्तरिइमो समवाओ

१ समणे भगव महावीरे वासाण सवीसइराए मासे वइक्कते सत्तरिएहिं राइदिएहिं सेसेहिं वासावास पज्जोसवेइ ।
२ पासे ण अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियाग पाउणित्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।
३ वासुपुज्जे ण अरहा सत्तरिं धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

४ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोड़ाकोड़ीओ अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेगे पण्णत्ता ।

५ माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिं सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

एगसत्तरिइमो समवाओ

१ चउत्थस्स ण चदसंवच्छरस्स हेमंताण एक्कसत्तरीए राइदिएहिं वीइक्कतेहिं सव्वबाहिराओ मडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ ।

२ वीरियप्पवायस्स ण पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता ।

३ अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्व-सय-सहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता-जाव-पव्वइएत्ति ।

४ एव सगरो वि राया चाउरत-चक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व-सय-सहस्साइ आगारमज्झे वसित्ता मुडे-जाव-पव्वइएत्ति ।

बावत्तरिइमो समवाओ

१ बावत्तरिं सुवन्नकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२ लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरिय वेलं धारंति ।

३ समणे भगव महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४ थेरे ण अयलभाया बावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ अब्भितरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चंदा पभासिसु वा ३, बावत्तरिं सूरिया तविसु वा ३ ।

६ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स बावत्तरि पुरवरसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

७ बावत्तरि कलाओ पण्णत्ता तजहा—

लेहं १, गणिय २, रुव ३, नट्टं ४, गीय ५, वाइय ६, सरगयं ७, पुक्खरगयं ८, समताल, ९, जूयं १०, जणवाय ११, पोक्खच्चं १२, अट्ठावय १३, दगमट्टिय १४, अन्नविहीं १५, पाणविही १६, वत्थविहीं १७, सयणविही १८, अज्जं १९, पहेलिय २०, मागहिय २१, गाह २२, सिलोगं २३, गधजुत्ति २४, मधुसित्थं २५, आभरणविहीं २६, तरुणीपडिकम्मं २७, इत्थीलक्खणं २८, पुरिसलक्खण २९ हयलक्खण ३०, गयलक्खणं ३१, गोणलक्खणं ३२, कुक्कुडलक्खण ३३, मिढयलक्खणं ३४, चक्कलक्खण ३५ छत्तलक्खणं ३६, दडलक्खण ३७, असिलक्खण ३८, मणिलक्खण ३९, कागणिलक्खण ४०, चम्मलक्खण ४१, चंदलक्खणं ४२, सूरचरिय ४३, राहुचरिय ४४, गहचरियं ४५, सोभागकर ४६, दोभागकरं ४७, विज्जागयं ४८, मतगय ४९, रहस्सगय ५०, सभास ५१, चारं ५२, पडिचार ५३, वूहं ५४, पडिवूह ५५, खधावारमाण ५६, नगरमाण ५७, वत्थुमाण ५८, खंधावारनिवेसं ५९, वत्थुनिवेस ६०, नगरनिवेसं ६१, ईसत्थ ६२, छरुप्पवाय ६३, आससिक्ख ६४, हत्थिसिक्ख ६५, धणुव्वेय ६६, हिरण्णपाग सुवन्नपाग मणिपाग धातुपाग ६७, बाहुजुद्ध दडजुद्ध मुट्ठिजुद्ध अट्ठिजुद्धं जुद्ध निजुद्ध जुद्धाइं जुद्ध ६८, सुत्तखेड नालियाखेड वट्टखेड धम्मखेड चम्मखेड ६९,

पत्तछेज्जं कड़गच्छेज्जं ७०, सजीवं निज्जीवं ७१, सउणरुयं ७२।

८ संमुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं उक्कोसेण बावत्तरिं वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता।

तेवत्तरिइमो समवाओ

१ हरिवास-रम्मयवासयाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं २ जोयण-सहस्साइं नव य एगुत्तरे जोयण-सए सत्तरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ता।

२ विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वास-सय-सहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

चोवत्तरिइमो समवाओ

१ थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

२ निसहाओ णं वासहर-पव्वयाओ तिगिच्छओ णं दहाओ सीतोया-महानदीओ चोवत्तरिं जोयण-सयाइ साहियाइ उत्तराहिमुही पवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्नास-जोयण-विक्खंभाए वइरतले कुंडे महया घड़मुहपवत्तिएण मुत्ता-वलिहारसंठिएण पवाएण महया-महया सद्देणं पवड़इ।

३ एवं सीतावि दक्खिणाहिमुही भाणियव्वा।

४ चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता।

पण्णहत्तरिइमो समवाओ

१ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नहत्तरि जिणसया होत्था ।
२ सीतले णं अरहा पन्नहत्तरि पुव्व-सहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।
३ सती ण अरहा पन्नत्तरि-वास-सहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुडे-जाव-पव्वइए ।

छावत्तरिइमो समवाओ

१ छावत्तरि विज्जुकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।
२ एवं-दीव-दिसा-उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं छण्हंपि जुगलयाणं छावत्तरि सय-सहस्साइं ।

सत्तहत्तरिइमो समवाओ

१ भरहे राया चाउरत-चक्कवट्टी सत्तहत्तरि पुव्व-सय-सहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता महारायाभिसेय सपत्ते ।
२ अंगवसाओ ण सत्तहत्तरि रायाणो मुडे-जाव-पव्वइया ।
३ गद्दतोय-तुसियाणं देवाण सत्तहत्तरिं देव-सहस्स-परिवारा पण्णत्ता ।
४ एगमेगे ण मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवे लवग्गेण पण्णत्ते ।

अट्ठहत्तरिइमो समवाओ

१ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमार-दीव-कुमारा-वास-सय-सहस्साण आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।

२ थेरे णं अकपिए अट्ठहत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

३ उत्तरायणनियट्टे ण सूरिए पढमाओ मडलाओ एगूणचत्तालीस-इमे मडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण चार चरइ,

४ एवं दक्खिणायणनियट्टेवि।

एगूणासिइमो समवाओ

१ वलयामुहस्स ण पायालस्स हिट्ठिलाओ चरमंताओ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमते एस ण एगूणासिं जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते,

२ एव केउस्सवि, जूयस्सवि, ईसरस्सवि।

३ छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण एगूणासीति जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

४ जंबुद्दीवस्स ण दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस ण एगूणा-सीइ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

असीइमो समवाओ

१ सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
२ तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।
३ अयले णं बलदेवे असीइ धणूइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
४ तिविट्ठे ण वासुदेवे असीइ-वास-सय-सहस्साइं महाराया होत्था ।
५ आउबहुले णं कडे असीइ-जोयण-सहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।
६ ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो असीई सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।
७ जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तर जोयण-सयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेइ ।

एक्कासीइमो समवाओ

१ नव-नवमिया ण भिक्खुपड़िमा एक्कासीइ राइदिएहिं चउहि य पचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं-जाव-आराहिया ।
२ कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणि-सया होत्था ।
३ विवाहपन्नत्तीए एकासीतिं महाजुम्म-सया पण्णत्ता ।

बासीइमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे दीवे बासीय मंडलसय ज सूरिए दुक्खुत्तो सकमित्ता ण चार चरइ, तंजहा–
निक्खममाणे य, पविसमाणे य ।

२ समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए ।

३ महाहिमवयस्स ण वासहर-पव्वयस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं बासीइं जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४ एवं रुप्पिस्सवि ।

तेआसीइमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे बासीइ-राइदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीइमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए ।

२ सीयलस्स ण अरहओ तेसीई गणा, तेसीई गणहरा होत्था ।

३ थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्व-सय-सहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।

५ भरहे णं राया चाउरतचक्कवट्टी तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभाव-दरिसी ।

चउरासीइमो समवाओ

१ चउरासीइ निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२ उसभे ण अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्व-सय-सहस्साइं

सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे,
एवं भरहो, बाहुबली, बंभी, सुंदरी ।

३ सिज्जंसे णं अरहा चउरासीइ वास-सय-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४ तिविट्ठे णं वासुदेवे चउरासीइं वास-सय-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्नो ।

५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीई सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

६ सव्वेवि णं बाहिरया मंदरा चउरासीइं चउरासीइं जोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

७ सव्वेवि णं अजंणगपव्वया चउरासीइ चउरासीइ जोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण पन्नत्ता ।

८ हरिवास-रम्मयवासियाणं जीवाणं धणुपिट्ठा चउरासीं जोयण-सहस्साइं सोलस जोयणाइ चत्तारि य भागा जोयणस्स परि-क्खेवेणं पण्णत्ता ।

९ पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं चोरासीइ जोयणसय-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

१० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइ पय-सहस्सा पदग्गेण पण्णत्ता ।

११ चोरासीइ नागकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

१२ चोरासीइ पइन्नग-सहस्साइ पण्णत्ताइ ।

१३ चोरासीइं जोणिप्पमुह-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

१४ पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाण सट्ठाण-ट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पण्णत्ते ।

१५ उसभस्स ण अरहओ कोसलियस्स चउरासीइ गणा, चउरासीइ गणहरा होत्था।

१६ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण-पामोक्खाओ चउरासीइ समण-साहस्सीओ होत्था।

१७ सव्वेवि चउरासीइ विमाणावास-सय-सहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवतीति मक्खायं।

पंचासीइमो समवाओ

१ आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पचासीइ उद्देसणकाला पण्णत्ता।

२ धायइसडस्स णं मदरा पंचासीइ जोयण-सहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ता।

३ रुयए ण मडलियपव्वए पचासीइ जोयण-सहस्साइ सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

४ नदणवणस्स ण हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं पचासीइ जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

छलसीइमो समवाओ

१ सुविहिस्स ण पुप्फदतस्स अरहओ छलसीइ गणा, छलसीइ गणहरा होत्था।

२ सुपासस्स ण अरहओ छलसीई वाइ-सया होत्था।

३ दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं छलसीइ जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

सत्तासीइमो समवाओ

१ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुमस्स आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

२ मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीई जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं मंदरस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ संखस्स आवास-पव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते, एस णं सत्तासीई जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४ एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ दगसीमस्स आवा-सपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीई जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

५ छण्हं कम्मपगडीणं आइम-उवरिल्लवज्जाणं सत्तासीई उत्तर-पगडीओ पण्णत्ताओ ।

६ महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

७ एवं रुप्पिकूडस्सवि ।

अट्ठासीइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण चंदिम-सूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ।

२ दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइ सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तजहा—उज्जुसुयं परिणया-परिणयं

३ एव अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि—जहा नदिए ।

४ मंदरस्स ण पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमते एस णं अट्ठासीइं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते,

५ एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं ।

६ बाहिराओ उत्तराओ ण कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मास अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ,

दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्च छम्मासं अयमाणे चोयालीस-तिमे मंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता ण सूरिए चारं चरइ ।

एगूणणउइइमो समवाओ

१ उसभे ण अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसम-दूसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्प-हीणे ।

२ समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थाए दूसमसुसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ हरिसेणे ण राया चाउरंत-चक्कवट्टी एगूणनउइं वास-सयाइं महाराया होत्था ।

४ संतिस्स णं अरहओ एगूणनउई अज्ज-साहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ।

णउइइमो समवाओ

१ सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।

२ अजियस्स णं अरहओ नउई गणा, नउई गणहरा होत्था ।

३ एव सतिस्सवि ।

४ सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था ।

५ सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण नउइजोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

एकाणउइइमो समवाओ

१ एकाणउई परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ ।

२ कालोए ण समुद्दे एकाणउई जोयण-सय-सहस्साइं सहियाइं परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

३ कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउई आहोहिय-सया होत्था ।

४ आउय-गोयवज्जाण छण्हं कम्मपगडीण एकाणउई उत्तर-पगड़ीओ पण्णत्ताओ।

बाणउइइमो समवाओ

१ बाणउई पड़िमाओ पण्णत्ताओ।

२ थेरे ण इंदभूती बाणउइ वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

३ मदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवास-पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस णं बाणउइं जोयण-सहस्साइ अबाहाए अंतरे पण्णत्ते,

४ एवं चउण्हपि आवासपव्वयाण।

तेणउइइमो समवाओ

१ चदप्पहस्स णं अरहओ तेणउई गणा, तेणउई गणहरा होत्या।

२ सतिस्स णं अरहओ तेणउई चउद्दसपुव्वि-सया होत्था।

३ तेणउईमंडलगते णं सूरिए अतिवट्टमाणे वा, निवट्टमाणे वा समं अहोरत्त विसमं करेइ।

चउणउइइमो समवाओ

१ निसह-नीलवतियाओ णं जीवाओ चउणउइ जोयण-सहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्नि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स

आयामेणं पण्णत्ता ।

२ अजियस्स णं अरहओ चउणउइ ओहिनाणि-सया होत्था ।

पंचाणउइमो समवाओ

१ सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइ गणा, पचाणउइ गणहरा होत्था ।

२ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्द पंचाणउइ पंचाणउइ जोयण-सहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायालकलसा पण्णत्ता तंजहा—
वलयामुहे, केऊए, जूयए, ईसरे ।

३ लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पचाणउय २ पदेसाओ उव्वेहुस्सेह-परिहाणीए पण्णत्ता ।

४ कुंथू ण अरहा पंचाणउइ वास-सहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ थेरे णं मोरियपुत्ते पचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

छण्णउइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रन्नो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स छण्णउइ २ गाम-कोडीओ होत्था ।

२ वायुकुमाराण छण्णउइ भवणावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

३ ववहारिए ण दडे छण्णउइ अंगुलाइं अंगुलमाणेणं,

४ एवं धणू, नालिया, जुगे, अक्खे, मुसलेवि हु ।
५ अब्भितरओ आइमुहुत्ते छण्णउइ अंगुलछाए पण्णत्ते ।

सत्ताणउइमो समवाओ

१ मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्ताणउइ जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।
२ एवं चउ दिसि पि ।
३ अट्ठण्हं कम्मपगड़ीणं सत्ताणउइ उत्तरपयड़ीओ पण्णत्ताओ ।
४ हरिसेणे ण राया चाउरंत-चक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइ वास-सयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।

अट्ठाणउइमो समवाओ

१ नदणवणस्स ण उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडुयवणस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण अट्ठाणउइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।
२ मंदरस्स ण पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमते एस णं अट्ठाणउइ जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।
३ एवं चउदिसिपि ।
४ दाहिणभरहड्ढस्स धणुप्पिट्ठे जोयण-सयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते ।

५ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नास-तिमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता ण सूरिए चार चरइ।

६ दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूण-पन्नासइमे मडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणि-खित्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता ण सूरिए चार चरइ।

७ रेवई-पढम-जेट्ठा-पज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाण-उइ ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ।

णवणउइमो समवाओ

१ मंदरे णं पव्वए णवणउइ जोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ते।

२ नंदणवणस्स णं पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस णं नवनउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

३ एव दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमते एस णं णवणउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

४ उत्तरे पढमे सूरियमंडले नवनउइ-जोयण-सहस्साइ साइरेगाइं आयाम-विक्खभेण पण्णत्ते।

५ दोच्चे सूरियमडले नवनउइ-जोयण-सहस्साइ साहियाइ आयाम-विक्खभेण पण्णत्ते।

६ तइए सूरियमंडले नवनउइ-जोयण-सहस्साइ साहियाइं आयाम-

विक्खभेणं पण्णत्ते ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अजणस्स कंडस्स हेट्ठिलाओ चरमंताओ वाणमतर-भोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एस ण नवनउइ-जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

सययमो समवाओ

१ दस-दसमिया णं भिक्खुपड़िमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं-जाव-आराहियावि भवइ ।

२ सतभिसया नक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते ।

३ सुविही पुप्फदते ण अरहा एग धणूसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ पासे ण अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वास-सय सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे ।

६ सव्वेवि ण दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउय-सयं उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

७ सव्वेवि ण चुल्लहिमवत-सिहरीवासहरपव्वया एगमेगं जोयण-सयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।

८ सव्वेवि णं कंचणगपव्वया—

एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

एगमेग गाउय-सयं उव्वेहेण पण्णत्ता ।

एगमेग जोयण-सयं मूले विक्खभेणं पण्णत्ता ।

दिवड्ढसययमो समवाओ

१ चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणु-सयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
२ आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावास-सय पण्णत्त ।
३ एवं अच्चुए वि । सूत्र १०१ ।

बि-सययमो समवाओ

१ सुपासे णं अरहा दो धणुसया उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।
२ सव्वेवि ण महाहिमवंत-रुप्पीवासहरपव्वया—
दो दो जोयण-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
दो दो गाउय-सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।
३ जम्बुद्दीवे ण दीवे दो कंचणपव्वय-सया पण्णत्ता । सूत्र १०२ ।

बिअड्ढसययमो समवाओ

१ पउमप्पभे ण अरहा अड्ढाइज्जाइं धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।
२ असुरकुमाराण देवाण पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयण-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता । सूत्र १०३ ।

ति-सययमो समवाओ

१ सुमई ण अरहा तिण्णि धणु-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
२ अरिट्ठनेमी ण अरहा तिण्णि वास-सयाइ कुमारवासमज्झे

वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए ।

३ वेमाणियाण देवाणं विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयण-सयाइं उड्डं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४ समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था ।

५ पचधणु-सइयस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरे-गाणि तिण्णि धणु-सयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता । सूत्र १०४ ।

अध्दुट्ठसययमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दस-पुव्वीणं संपया होत्था ।

२ अभिनंदणे णं अरहा अधुट्ठाइ धणु-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । सूत्र १०५ ।

चउ-सययमो समवाओ

१ संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।

२ सव्वेवि णं णिसढ-नीलवंता वासहरपव्वया—
चत्तारि चत्तारि जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
चत्तारि चत्तारि गाउय-सयाइं उव्वेहेण पण्णत्ता ।

३ सव्वेवि णं वक्खारपव्वया णिसढ-नीलवंत-वासहरपव्वयए ण
चत्तारि चत्तारि जोयण-सयाइं

चत्तारि चत्तारि गाउय-सयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।

४ आणय-पाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाण-सया पण्णत्ता ।

५ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेव-मणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाण उक्कोसिअ वाइसंपया होत्था । सूत्र १०६ ।

अद्धपचमसययमो समवाओ

१ अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।

२ सगरे ण राया चाउरत-चक्कट्टी अद्धपंचमाइं धणु-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सूत्र १०७ ।

पंच-सययमो समवाओ

१ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया सीआ सीओआओ महानईओ मदर-पव्वयंतेणं पंच पंच जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच पंच गाउय-सयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

२ सव्वेवि ण वासहरकूडा पच पंच जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, मूले पच पंच जोयण-सयाइं विक्खभेण पण्णत्ता ।

३ उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ भरहे ण राया चाउरत-चक्कवट्टी पंच धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

५ सोमणस-गंधमादण-विज्जुप्पभ-मालवताणं वक्खारपव्वयाणं मदरपव्वयतेण–
पच पंच जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।
पच पच गाउ-सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता।

६ सव्वेवि ण वक्खारपव्वयकूड़ा हरिहरिस्सहकूड़वज्जा–
पच पच जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता।
मूले पच पच जोयण-सयाईं आयाम-विक्खभेणं पण्णत्ता।

७ सव्वेवि णं नदणकूड़ा बलकूडवज्जा–
पच पच जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण
मूले पच पंच जोयण-सयाइ आयाम-विक्खभेणं पण्णत्ता।

८ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच पच जोयण-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता। सूत्र १०८।

छ-सययमो समवाओ

१ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ जोयण-सयाइ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता।

२ चुल्लहिमवतकूडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं छ जोयण-सयाइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते,

३ एवं सिहरीकूडस्स वि।

४ पासस्स ण अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसपया होत्था।

५ अभिचदे णं कुलगरे छ धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
६ वासुपुज्जे ण अरहा छहिं पुरिस-सएहिं सद्धि मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। सूत्र १०९।

सत्त-सययमो समवाओ

१ बभ-लतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।
२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स सत्त जिण-सया होत्था।
३ समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त-वेउव्विय-सया होत्था।
४ अरिट्ठनेमी ण अरहा सत्त वास-सयाइं देसूणाइ केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।
५ महाहिमवतकूडस्स ण उवरिल्लाओ चरमंताओ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समवरणितले एस ण सत्त-जोयण-सयाइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते।
६ एव रुप्पिकूडस्स वि। सूत्र ११०।

अट्ठ-सययमो समवाओ

१ महासुक्क-सहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता।
२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए पढमे कडे अट्ठसु जोयण-सएसु वाणमतर-भोमेज्जविहारा पण्णत्ता।
३ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अट्ठ-सया अणुत्तरोववाइयाणं

देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्को-
सिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था ।

४ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि-
भागाओ अट्ठहिं जोयण-सएहिं सूरिए चारं चरइ ।

५ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ-सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि
लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाई-संपया होत्था ।
सूत्र १११ ।

नव-सययमो समवाओ

१ आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव नव जोयण-
सयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

२ निसढकूडस्स ण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वास-
हरपव्वयस्स समे धरणितले एस णं नव जोयण-सयाइं अबाहाए
अतरे पण्णत्ते ।

३ एवं नीलवंतकूडस्स वि ।

४ विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण
होत्था ।

५ इमीसे ण रयणप्पहाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं
जोयण-सएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चारं चरइ ।

६ निसढस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे
णं रयणप्पहाए पुढवीए पढमस्स कडस्स बहुमज्झदेसभाए एस
ण नव जोयण-सयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

७ एवं नीलवतस्स वि । सूत्र ११२ ।

सहस्सइमो समवाओ

१ सव्वे वि णं गेवेज्जविमाणे दस दस जोयण-सयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।

२ सव्वेवि णं जमगपव्वया–
दस दस जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
दस दस गाउय-सयाइं उव्वेहेंण पण्णत्ता ।
मूले दस दस जोयण-सयाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता ।

३ एवं चित्त-विचित्तकूड़ा वि भाणियव्वा ।

४ सव्वे वि ण वट्टवेयड्ढपव्वया–
दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
दस दस गाउयसयाइ उव्वेहेणं पण्णत्ता ।
मूले दस दस जोयणसयाइ विक्खभेणं पण्णत्ता ।
सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया पण्णत्ता ।

५ सव्वेवि णं हरि-हरिस्सहकूड़ा वक्खारकूड़वज्जा–
दस दस जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ।
मूले दस जोयणसयाइं विक्खभेणं,

६ एवं बलकूडा वि नदणकूडवज्जा ।

७ अरहा वि अरिट्ठनेमी दस-वास-सयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

८ पासस्स ण अरहओ दस-सयाइ जिणाण होत्था ।

९ पासस्स ण अरहओ दस अतेवासी-सयाइ कालगयाइं-जाव-सव्व-दुक्खप्पहीणाइ ।

१० पउमद्दह-पुडरीयद्दहा य दस दस जोयण-सयाइ आयामेणं पण्णत्ता । सूत्र ११३ ।

एक्कारस-सयइमो समवाओ

१ अणुत्तरोववाइयाण देवाणा विमाणं एक्कारस-जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

२ पासस्स णं अरहओ इक्कारस-सयाइ वेउव्वियाणं होत्था। सूत्र ११४।

बि-सहस्सइमो समवाओ

१ महापउम-महापुडरीयदहाण दो दो जोयण-सहस्साइ आयामेणं पण्णत्ता। सूत्र ११५।

ति-सहस्सइमो समवाओ

१ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए वइरकडस्स उवरिल्लाओ चरमताओ लोहियक्खकडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण तिन्नि जोयण-सहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते। सूत्र ११६।

चउ-सहस्सइमो समवाओ

१ तिगिच्छि-केसरिदहाण चत्तारि चत्तारि जोयण-सहस्साइ आयामेण पण्णत्ताइ। सूत्र ११७।

पंच-सहस्सइमो समवाओ

१ धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीओ चउदिसिं पंच पंच जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे मंदर-पव्वए पण्णत्ते । सूत्र ११८ ।

छ-सहस्सइमो समवाओ

१ सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावास-सहस्सा पण्णत्ता । सूत्र ११९ ।

सत्त-सहस्सइमो समवाओ

१ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्त जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । सूत्र १२० ।

अट्ठ-सहस्सइमो समवाओ

१ हरिवास-रम्मयाणं वासा अट्ठ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं पण्णत्ता । सूत्र १२१ ।

नव-सहस्सइमो समवाओ

१ दाहिणड्ढ-भरहस्स णं जीवा पाईण-पडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयण-सहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता । सूत्र १२२ ।

दस-सहस्सइमो समवाओ

१ मदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेणं पण्णत्ते । सूत्र १२३ ।

एग-सयसहस्सइमो समवाओ

१ जबुद्दीवेण दीवे एगं जोयण-सय-सहस्स आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता सूत्र १२४ ।

बि-सयसहस्सइमो समवाओ

१ लवणे णं समुद्दे दो जोयण-सय-सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते । सूत्र १२५ ।

ति-सयसहस्सइमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ तिन्नि सय-साहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया सावियासपया होत्था । सूत्र १२६ ।

चउ-सयसहस्सइमो समवाओ

१ धायइखडे णं दीवे चत्तारि जोयण-सय-सहस्साइं चक्कवाल-विक्खभेण पण्णत्ते । सूत्र १२७ ।

पंच-सयसहस्सइमो समवाओ

१ लवणस्स ण समुद्दस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छि-

मिल्ले चरमंते एस णं पंच-जोयण-सय-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। सूत्र १२८।

छ-सयसहस्सइमो समवाओ

१ भरहे णं राया चाउरंत-चक्कवट्टी छ पुव्व-सय-सहस्साइं रायमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव-पव्वइए। सूत्र १२९।

सत्त-सयसहस्सइमो समवाओ

१ जंबुदीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ वेइयंताओ धायइखंड-चक्कवालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एसणं सत्त-जोयण-सय-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। सूत्र १३०।

अट्ठ-सयसहस्सइमो समवाओ

१ माहिंदे णं कप्पे अट्ठ-विमाणावास-सय-सहस्साइं पण्णत्ताइं। सूत्र १३१।

नव-सहस्सइमो समवाओ

१ अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव-ओहिनाणि-सहस्साइं होत्था। सूत्र १३२।

दस-सयसहस्सइमो समवाओ

१ पुरिससीहे ण वासुदेवे दस-वास-सय-सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। सूत्र १३३।

एग-कोड़िइमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिल-भवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियाग पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठविमाणे देवत्ताए उववन्ने । सूत्र १३४ ।

एग-कोड़ाकोड़िइमो समवाओ

१ उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोड़ाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । सूत्र १३५ ।

दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते, तंजहा–
आयारे, सूयगडे, ठाणे, समवाए, विवाहपन्नत्ती, णायाधम्म-कहाओ, उवासगदसाओ, अन्तगडदसाओ, अणुत्तरोववाइय-दसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुए, दिट्ठिवाए ।

प्र० से किं त आयारे ?

उ० आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-ट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण-जोग-जुंजण-भासासमिति-गुत्ती-सेज्जोवहि-भत्त-पाण-उग्गम-उप्पायण-एसणा-विसोहि-सुद्धा-सुद्धग्गहण-वय-णियम-तवोवहाण-सुप्पसत्थमाहिज्जइ ।
से समासओ पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–
णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, विरियारे ।
आयारस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पढमे अगे दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइं उद्देसणकाला, पंचासीइं समुद्देसणकाला, अट्ठारस पदसहस्साइ पदग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा निबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं णाया, एवं विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति। से त्तं आयारे। सूत्र १३६।

प्र० से किं त सूअगडे ?

उ० सूअगडे ण ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति, ससमय-परसमया सूइज्जति।

जीवासूइज्जति, अजीवा सूइज्जति, जीवाजीवा सूइज्जति। लोगा सूइज्जति, अलोगा सूइज्जति, लोगालोगा सूइज्जंति। सूअगडे णं जीवाजीव-पुण्ण-पावासव-सवर-निज्जरण-बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति। समणाण अचिरकालपव्व-इयाण, कुसमय-मोहमइ-मोहियाण, सदेह-जाय-सहज-बुद्धि-परिणामससइयाण पावकर-मलिन-मइगुणविसोहणत्थ अस्सी-अस्स किरियावाइयसयस्स, चउरासीए अकिरियवाईण, सत्त-ट्ठीए अण्णाणियवाईण, बत्तीसाए वेणइयवाईण, तिण्ह तेवट्ठीणं अण्णदिट्ठियसयाण वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति, णाणदि-ट्ठ त-वयण-णिस्सार सुट्ठु दरिसयता, विविहवित्थराणुगम-परमसब्भावगुणविसिट्ठा, मोक्खपहोयारगा उदारा, अण्णाण-तमधकारदुग्गेसु दीवभूआ सोवाणा चेव सिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था।

सुयगडस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

से ण अंगट्ठयाए दोच्चे अगे, दो सुयक्खंधा, तेवीस अज्झयणा, तेत्तीस उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीस पद-सहस्साइ पयग्गेणं पन्नत्ताइ, सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया, कड़ा, णिबद्धा, णिकाइया, जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदसिज्जंति।

से एव आया एव णाया एवं विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिविज्जंति, उवदसिविज्जति। सेत्त सूअगडे। सूत्र १३७।

प्र० से किं तं ठाणे ?

उ० ठाणे ण ससमया ठाविज्जति, परसमया ठाविज्जति, ससमय-परसमया ठाविज्जति।

जीवा ठाविज्जति, अजीवा ठाविज्जति, जीवाजीवा ठाविज्जति।

लोगा ठाविज्जति, अलोगा ठाविज्जति, लोगालोगा ठाविज्जति।

ठाणेण दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जवपयत्थाणं गाहा—

सेला सलिला य समुद्दा, सूर-भवण-विमाण-आगर-णदीओ।
णिहिओ पुरिसज्जाया, सरा य गोत्ता य जोइसचाला॥

एक्कविहवत्तव्वय दुविह वत्तव्वय-जाव-दसविहवत्तव्वय, जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइं च ण परूवणया आघविज्जति।

ठाणस्स णं परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, सखेज्जासि लोगा, सखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए तइए अगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, एक्कवीस उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तीर पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं।

सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति।

से एवं आया, एव णाया, एव विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति। से त्तं ठाणे। सूत्र १३८।

प्र० से किं तं समवाए ?

उ० समवाए णं, ससमया सूइज्जति, परसमया सूइज्जति, ससमय-परसमया सूइज्जति-जाव-लोगालोगा सूइज्जति।

समवाए णं एकाइयाण एगट्ठाण एगुत्तरियपरिवुड्ढीए, दुवालसगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ठाणग-सयस्स, बारसविह-वित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीव-हियस्स भगवओ समासेणं समोयारे आहिज्जति।

तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया वित्थरेग, अवरे वि अ बहुविहा विसेसा नरग-तिरिय-मणुअ-सुरगणाणं आहारुस्सास-लेसा-आवास-सख-आययप्पमाण-उववाय-चवण-ओगाहणोहि-वेयण-विहाण-उवओग-जोग-इदिय-कसाय विविहा य जीवजोणी, विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदरादीण महीधराणं, गाहा—

कुलगर-तित्थगर-गणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाण चक्कीण चेव।
चक्कहर-हलहराण य, वासाण य निगमा य समाए ।।
एए अण्णे य एवमाइ एत्थ वित्थरेणं अत्था समाहिज्जति ।
समवायस्स ण परित्ता वायणा-जाव-से ण अगट्ठयाए चउत्थे अगे एगे अज्झयणे, एगे सुयक्खधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चउयाले पदसयसहस्से पदग्गेणं पण्णत्ते ।
सखेज्जाणि अक्खराणि -जाव-चरण-करण-परूवणया आघविज्जति । से त्त समवाए । सूत्र १३९ ।

प्र० से किं त वियाहे ?

उ० वियाहेण ससमया विआहिज्जंति परसमया विआहिज्जंति ससमय-परसमया विआहिज्जंति ।
जीवा विआहिज्जति, अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति ।
लोगे विआहिज्जइ, अलोगे विआहिज्जइ, लोगालोगे विआहिज्जइ ।
वियाहेणं नाणाविह-सुर-नरिंद-रायरिसि-विविह-संसइअपुच्छियाण, जिणेण वित्थरेण भासियाण दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पदेस -परिणाम-जहच्छिय-भाव-अणुगम - निक्खेव-णयप्पमाण-सुनिउणोवक्कम-विविहप्पकार-पगड-पयासियाण, लोगालोग-पयासियाण ससारसमुद्द-रुंद-उत्तरण-समत्थाणं, सुरवइ-सपूजियाण भविय-जण-पयहिययाभिनंदियाण, तमरय-विद्धसणाण, सुदिट्ठ-दीवभूय-ईहा-मति-बुद्धि-वद्धणाणं, छत्तीस-सहस्स-मणूणयाण, वागरणाण दंसणाओ सुयत्थ-बहुविहप्पगारा सीसहियत्था य गुणमहत्था ।
वियाहस्स ण परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा

सखेज्जाओ पडिवत्तीओ, सखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए पचमे अगे एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसग-सहस्साइ, दस समुद्देसग-सहस्साइं, छत्तीस वागरण-सहस्साइ, चउरासीई पय-सहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं।

सखेज्जाइं अक्खराइं, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासया कडा णिबद्धा, णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदंसिज्जंति, उवदसिज्जति।

से एव आया, से एवं णाया, से एव विण्णाया, एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति। से त्त वियाहे। सूत्र १४०।

प्र० से किं त णायाधम्मकहाओ?

उ० णायाधम्मकहासु ण णायाण णगराइं, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणखडा रायाणो अम्मा-पियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय-इड्ढीविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा सलेहणाओ भत्त-पच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चाइयाइं, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जति-जाव-नाया-धम्मकहासु ण पव्वइयाणं विणय-करण-जिण-सामि-सासणवरे सजम-पइण्ण-पालण-धिइ-मइ-ववसाय-दुब्बलाणं, तव-नियम-तवोवहाण-रण-दुद्धर-भर-भग्गय-णिस्सहय-णिसिट्ठाण घोर-परीसह-पराजियसहपारद्ध-रुद्ध-सिद्धालय-मग्ग-निग्गयाण, विसय-सुहतुच्छ-आसावस-दोस-मुच्छियाण, विराहिय-चरित्त-नाण-दसण-जइ-गुण- विविहप्पयार-निस्सार-

सुन्नयाणं संसार-अपारदुक्ख-दुग्गइ-भवविविहपरंपरापवंचा। धीराण य जिय-परिसह-कसाय-सेण्ण-धिय-धणिय-संजम-उच्छाह-निच्छियाणं, आराहिय-नाण-दंसण-चरित्त-जोग-सुक्खाइ अणोवमाइं निस्सल्ल-सुद्ध-सिद्धालय-मग्गमभिमुहाणं, सुर-भवण-विमाण-भुत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य कालक्कमचुयाण जह य पुणो लद्ध सिद्धि-मग्गाण अंतकिरिया। चलियाण य सदेव-माणुस्स-धीर-करण-कारणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस-दरिसणाणि दिट्ठंते पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जहट्ठिय-सासणम्मि जर-मरण-नासणकरे आराहिअ-संजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेंति जह सासयं सिवं सव्वदुक्खमोक्खं। एए अण्णे य एवमाइ-यत्था वित्थरेण य।

णायाधम्मकहासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा-जाव-संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुअक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—

चरित्ता य, कप्पिया य, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइया-सयाइं,

एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइया-सयाइं,

एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय-उवक्खाइया-सयाइं,

एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओ भवंतीति मक्खायाओ,

एगूणतीसं उद्देसणकाला, एगूणतीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता,

सखेज्जा अक्खरा-जाव-चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति ।
से त्तं णायाधम्मकहाओ । सूत्र १४१ ।

प्र० से किं त उवासगदसाओ ?

उ० उवासगदसासु ण उवासयाण णगराइ उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइय-इड्डिविसेसा, उवासयाणं सीलव्वय-वेरमण-गुण- पच्चक्खाण-पोसहोववास - पड़िवज्जण-याओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणा पड़िमाओ उवसग्गा सलेहणाओ भत्त-पच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोग-गमणाइ सुकुल-पच्चायायाइं पुण वोहिलाभा अतकिरियाओ आघविज्जति । उवासगदसासु ण उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर-धम्म-सवणाणि वोहिलाभ-अभिगम-सम्मत्तं-विसुद्धया, थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा, ठिईविसेसा य वहुविसेसा, पड़िमा-भिग्गहग्गहणपालणा, उवसग्गाहियासणा, णिरुवसग्गा य तवा य विचित्ता सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाणपोसहोववासा, अपच्छिममारणंतिया य संलेहणाझोसणाहिं अप्पाण जह य भावइत्ता वहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेअइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवति सुरवर-विमाणवर-पोड रीएसु सोक्खाइ अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइ तओ आउक्खएणं चुया समाणा जह जिणमयमि वोहिं लद्धूण य सजमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का उवेंति जह अक्खय सव्वदुक्ख-मोक्ख । एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण य । उवासयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा -जाव-सखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइ पय-सय-सहस्साइ पयग्गेण पण्णत्ता ।

से त्त उवासगदसाओ । सूत्र १४२ ।

प्र० से किं त अंतगडदसाओ ?

उ० अंतगडदसासु ण अंतगडाण णगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणाइ राया अम्मापियरो, समोसरणा, धम्मायरिया, धम्मकहा, इहलोइय-परलोइय-इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ पडिमाओ बहुविहाओ खमा अज्जव मद्दव च सोअ च सच्चसहिय सत्तरसविहो य संजमो उत्तम च बभ अकिंचणया तवो चियाओ समिइगुत्तीओ चेव तह अप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेण य उत्तमाण दोण्ह पि लक्खणाइ पत्ताण य, सजमुत्तम जियपरीसहाण चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लभो परियाओ जत्तिओ य, जह पालिओ मुणिहिं पायोवगओ य, जो जहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता अंतगडो मुनिवरो तमरयोघविप्पमुक्को मोक्खसुहमणुत्तरं च पत्ता । एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थारेण परूवेई ।

अंतगडदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा-जाव-सखेज्जाओ सगहणीओ-जाव-से ण अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइ पयसयसहस्साइ पयग्गेणं पण्णत्ता सखेज्जा अक्खरा-जाव-एव चरण-करण-परूवणया आघ-विज्जति । से त्त अंतगडदसाओ । सूत्र १४३ ।

प्र० से किं त अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

उ० अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मसहाओ इहलोग-परलोग-इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पड़िमाओ सलेहणाओ भत्त-पाण-पच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाओ सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जति ।

अणुत्तोरोववाइयदसासु णं तित्थकरसमोसरणाइ परमगल्लजगहियाणि जिणातिसेसा य, बहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगधहत्थीण थिरजसाणं परिसहसेण्णेरिउबलपमद्दणाणं तव-दित्त-चरित्त-णाण-सम्मत्त-सार-विविहप्पगार-वित्थर-पसत्थगुणसजुयाण अणगारमहरिसीण अणगारगुणाण-वण्णओ-उत्तम-वर-तव-विसिट्ठ-णाण-जोगजुत्ताण जह य जगहिय भगवओ जारिसा इड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं जह य उवासति, जिणवर जह य परिकहति धम्म लोगगुरू, अमर-नर-सुर-गणाणं सोऊण य, तस्स भासिय अवसेस-कम्म-विसय-विरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुराल सजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाणदसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगय-महियभासिया जिणवराण हिययेणमणुण्णेत्ता जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावति, जह अणुत्तर तत्थ विसयसोक्ख तओ य चुआ कमेण काहिंति सजया जहा य अतकिरिय एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण ।

अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओग-दारा, सखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, तिन्नि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेण पण्णत्ता ।

सखेज्जाणि अक्खराणि-जाव-एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति । से त्त अणुत्तरोववाइयदसाओ । सूत्र १४४ ।

प्र० से किं तं पण्हावागरणाणि ?

उ० पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तर पसिणसय, अट्ठुत्तर पसिणापसिण-सय, विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघ-विज्जति ।

पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमय-पण्णवय-पत्तेअबुद्ध-विविहत्थभासा-भासियाण, अइसय-गुण-उवसम-णाणप्पगार-आयरियभासियाण वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविहवित्थरभासि-याण च जगहियाणं, अद्दागगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोमआइच्च-माइयाण, विविह-महापसिण-विज्जा-मणपसिणविज्जा-देव-यपयोग-पहाणगुणप्पगासियाणं, सब्भूय-दुगुणप्पभाव-नरगण-मइविम्हयकराण, अईसयमईयकाल-समय-दम-सम-तित्थकरुत्त-मस्स ठिइकरणकारणाण, दुरहिगम-दुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नु-सम्मअस्स अबुहजणविबोहणकरस्स पच्चक्खयपच्चयकराणं पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति ।

पण्हावागरणेसु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा-जाव-सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से ण अगट्ठयाए दसमे अगे, एगे सुयक्खधे, पणयालीसं उद्दे-सणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखेज्जाणि पयसय-

सहस्साणि पयग्गेणं पण्णत्ता ।

संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा-जाव-चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति । से त्तं पण्हावागरणाइं । सूत्र १४५ ।

प्र० से किं तं विवागसुयं ?

उ० विवागसुए णं सुक्कड़-दुक्कड़ाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति, से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—

दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव ।

तत्थ णं दस दुहविवागाणि, दस सुहविवागाणि ।

प्र० से किं तं दुहविवागाणि ?

उ० दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ नगरगमणाइं, संसारपबंधे, दुहपरंपराओ य आघविज्जंति । से त्तं दुहविवागाणि ।

प्र० से किं तं सुहविवागाइं ?

उ० सुहविवागेसु सुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं वणखंडा, रायाणो, अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइय-इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, परियागा, पडिमाओ संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाया, पुण बोहिलाहा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

दुहविवागेसु णं पाणाइवाय-अलियवयण-चोरिक्ककरण-परदार-मेहुणससगयाए महतिव्वकसाय-इंदिय-प्पमाय-पावप्पओय-असुहज्झवसाण-संचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभाग-फलविवागा णिरय-गति-तिरिक्खजोणिबहुविह-वसण-सय-

परपरापवद्धाण, मणुयत्ते वि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा, वह-वसण-विणास-नासा-कन्नुट्ठंगुट्ठ-कर-चरण-नहच्छेयण-जिब्भच्छेयण-अजण-कड़ग्गिदाह-गय-चलण-मलण-फालण-उल्लवण-सूल-लया-लउड-लट्ठि-भंजण-तउ-सीसग-तत्त-तेल्ल-कलकल-अहिसिचण-कुभिपाग-कपण-थिरवधण-वेह-वज्झ-कत्तण-पतिभय-करकरपल्लीवणादिदारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि ।

बहुविविहपरपराणुबद्धा ण मुच्चति पावकम्मवल्लीए,
अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइधणियबद्धकच्छेण सोहण तस्स वावि हुज्जा ।

एत्तो य सुहविवागेसु ण सील-संजम-णियम-गुण-तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओगतिकालमइ-विसुद्ध-भत्त-पाणाइ पययमणसा हिय-सुह-नीसेस-तिव्व-परिणाम-निच्छयमई पयच्छिऊण पयोगसुद्धाइ जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं जह य परित्तीकरेंति । नर-नरय-तिरिय-सुर-गमण-विपुल-परियट्ट-अरति-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेल-सकडं, अन्नाण-तमंधकार चिक्खिल्लसुदुत्तार जर-मरण-जोणि-सखुभिय-चक्कवालं सोलसकसाय-सावयपयंडचडं अणाइअं अणवदग्गं ससार-सागरमिण । जह य णिवधति आउगं सुरगणेसु,
जह य अणुभवति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि ततो य कालतरे चुआण, इहेव नरलोगमागयाणं, आउ-वपु-पुण्ण-रूव-जाति-कुल-जम्म-आरोग्ग-बुद्धि-मेहा-विसेसा, मित्त-जण-सयण-धण-धण्ण-विभव-समिद्ध-सार-समुदय-विसेसा बहुविह-काम-भोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ बहुविहा

विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकारणत्था अन्ने वि य एवमाइया चउविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति ।

विवाअसुअस्स ण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा-जाव-सखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अगे, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं सयग्गेणं पण्णत्ता । सखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा, अणंता पज्जवा-जाव-एव चरग-करण-परूवणया आघविज्जंति ।

से त्त विवागसुए । सूत्र १४६ ।

प्र० से किं त दिट्ठिवाए ?

उ० दिट्ठिवाए ण सव्वभावपरूवणया आघविज्जति ।

से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तंजहा—

परिकम्मं, सुत्ताइ, पुव्वगय, अणुओगो, चूलिया ।

प्र० से किं त परिकम्मे ?

उ० परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तजहा—

सिद्धसेणियापरिकम्मे, मणुस्ससेणियापरिकम्मे, पुट्ठसेणियापरिकम्मे, ओगाहणसेणियापरिकम्मे, उवसपज्जसेणियापरिकम्मे, विप्पजहसेणियापरिकम्मे, चुआचुअसेणियापरिकम्मे ।

प्र० से किं त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

उ० सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—

माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, पादोट्ठपयाणि, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुण, केउभूयं, पडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, सिद्धबद्धं ।

से त्तं सिद्ध-सेणियापरिकम्मे ।

प्र० से किं त मणुस्ससेणियापरिकम्मे ?

उ० मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा–
ताइ चेव माउयापयाणि-जाव-नदावत्तं मणुस्सबद्ध ।
से त्त मणुस्ससेणियापरिकम्मे ।
अवसेसा परिकम्माइ पुट्ठाइयाइ एक्कारसविहाइ पण्णत्ताइं ।
इच्चेयाइ सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइ, सत्त आजीवियाइं, छ चउक्कणइयाइ, सत्त तेरासियाइं,
एवामेव सपुव्वावरेण सत्त परिकम्माइ तेसीति भवंतीति मक्खायाइ । से त्त परिकम्माइ । १ ।

प्र० से किं तं सुत्ताइ ?

उ० सुत्ताइ अट्ठासीति भवतीतिमक्खायाइं, तंजहा–
उजुग परिणयापरिणय वहुभगियं विप्पच्चइय विनयच्चरियं अणतर परपरं समाण संजूहं सभिन्नं अहाच्चयं सोवत्थि य णदावत्तं वहुल पुट्ठापुट्ठ वियावत्तं एवंभूय दुआवत्तं वत्तमाणुपय समभिरूढं सव्वओभद्दं पणामं दुपडिग्गह ।
इच्चेयाइं वावीसं सुत्ताइं छिण्णछेअणइआइ ससमयसुत्तपरिवाड़ीए ।
इच्चेयाइ वावीसं सुत्ताइ अछिन्नछेअणइआइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेआइ वावीस सुत्ताइं तिकणइयाइ तेरासियसुत्तपरिवड़ीए ।
इच्चेआइ वावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए । एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइ । से त्तं सुत्ताइ । २ ।

प्र० से किं तं पुव्वगयं ?

उ० पुव्वगयं चउद्दसविहं पण्णत्तं, तंजहा—
उप्पायपुव्वं, अग्गेणीयं, वीरियं, अत्थि-णत्थिप्पवाय, नाणप्पवायं, सच्चप्पवाय, आयप्पवायं, कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणप्पवायं, विज्जाणुप्पवायं, अवंझं, पाणाऊ, किरियाविसालं, लोगबिंदुसार।

१ उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू पण्णत्ता,
चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता।

२ अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दसवत्थू पण्णत्ता,
बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता।

३ वीरियप्पवायस्स ण पुव्वस्स अट्ठ वत्थू पण्णत्ता,
अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता।

४ अत्थि-णत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता,
दस चूलियावत्थू पण्णत्ता।

५ नाणप्पवायस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता।

६ सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता।

७ आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता।

८ कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता।

९ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता।

१० विज्जाणुप्पवायस्स ण पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता।

११ अवझस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता।

१२ पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता।

१३ किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता।

१४ लोगबिंदुसारस्स ण पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता॥

गाहाओ–

दस चोद्दस अट्ठट्ठारसे व बारस दुवे य वत्थूणि ।
सोलस तीसा वीसा, पन्नरस अणुप्पवायम्मि ।।
बारस एक्कारसमे, बारसमे तेरसेवे वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे, चउदसमे पन्नवीसाओ ।।
चत्तारि दुवालस अट्ठ, चेव दस चेव चूलवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया णत्थि ।।

से त्त पुव्वगय । ३ ।

प्र० से किं त अणुओगे ?

उ० अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा--
मूलपढमाणुओगे य, गंडियाणुओगे य ।

प्र० से किं तं मूलपढमाणुओगे ?

उ० एत्थ णं अरहंताणं भगवताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउं, चवणाणि, जम्मणाणि अ अभिसेया रायवरसिरीओ सीयाओ पव्वज्जाओ तवा य भत्ता केवलणाणुप्पाया अ तित्थपवत्तणाणि अ । संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउं, वन्न-विभागो सीसा गणा गणहरा य अज्जा पवत्तणीओ संघस्स चउव्विहस्स ज वावि परिमाणं जिणमणपज्जवओहिनाण-सम्मत्तसुयनाणिणो य । वाई, अणुत्तरगई य जत्तिया सिद्धा पाओवगया य, जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइं छेअइत्ता, अंतगड़ा, मुणिवरुत्तमा, तमरओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं च पत्ता । एए अन्ने य एवमाइया भावा मूलपढमाणुओगे कहिआ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति ।

से त्तं मूलपढमाणुओगे ।

प्र० से किं तं गंड़ियाणुओगे ?

उ० गंडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा--
कुलगरगंडियाओ, तित्थगरगंडियाओ, गणहरगंडियाओ, चक्कहरगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, हरिवसगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, चित्ततर-गंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, अमर-नर-तिरिय-निरयगइ-गमण-विविहपरियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गडियाओ, आघ-विज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जंति ।

से त्तं गडियाणुओगे । ४ ।

प्र० से किं त चूलियाओ ?

उ० जण्णं आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाण चूलियाओ सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं । से त्तं चूलियाओ । ५ ।

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अगट्ठयाए बारसमे अगे, एगे सुयक्खधे, चउद्दस पुव्वाइ, सखेज्जा वत्थू, सखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, सखेज्जा पाहुडपाहुडा, सखेज्जाओ पाहुडियाओ, सखेज्जाओ पाहुड-पाहुडियाओ, सखेज्जाणि पय-सय-सहस्साणि पयग्गेण पण्णत्ता, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासया, कडा, णिबद्धा, णिकाइया, जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति । एव णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति,

से त्तं दिट्ठिवाए । से त्तं दुवालसगे गणिपिडगे । सूत्र १४७ ।

इच्चेइयं दुवालसगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता-जीवा-आणाए विराहित्ता चाउरंत-संसार-कतारं अणुपरियट्टिंसु।
इच्चेइयं दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता-जीवा-आणाए विराहित्ता चाउरतससारकंतार अणुपरियट्टंति।
इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडगं अणागए काले अणता-जीवा-आणाए विराहित्ता चाउरंत-ससार-कतारं अणुपरियट्टिस्सति।
इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अतीतकाले अणता-जीवा-आणाए आराहित्ता चाउरत-ससार-कंतारं वीईवइसु।
एव पडुप्पण्णेऽवि, एव अणागएऽवि।

दुवालसगे णं गणिपिडगे ण कयावि णत्थि, ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भविस्सइ।
भुविं च भवति य भविस्सति य अयले घुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे।
से जहा णामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सति।
भुविं च भवति य भविस्सति य, अयला घुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा।
एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ।
भुविं च भवति य भविस्सइ य, अयले घुवे-जाव-अवट्ठिए णिच्चे।
एत्थ णं दुवालसगे गणिपिडगे अणंता भावा, अणंता अभावा, अणता हेऊ, अणता अहेऊ, अणंता कारणा, अणता अकारणा, अणंता जीवा, अणता अजीवा, अणता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणता सिद्धा, अणता असिद्धा, आघविज्जति,

पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जति । एवं दुवालसगं गणिपिडगं इति । सूत्र १४८ ।

१ दुवे रासी, पण्णत्ता तंजहा–जीवरासी, अजीवरासी य ।
एय सव्व पन्नवणा-पढमपयाणुसारेण भाणियव्व ।

२ दुविहा णेरइया पण्णत्ता तजहा–पज्जत्ता य, अपज्जत्ता य ।
एव दडओ भाणियव्वो-जाव-वेमाणियत्ति । सूत्र १४६ ।

१ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए केवइयं खेत्तं ओगाहेत्ता केवइया णिरयावासा पण्णत्ता ? एव सव्व ठाणपथाणुसारेण भाणियव्व । सूत्र १५० ।

१ प्र० नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । एव सव्व ठिइपय भाणियव्व । सूत्र १५१ ।

१ प्र० कइ ण भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता तंजहा–ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । एव सव्व ओगाहणापय भाणियव्व । सूत्र १५२ ।

भेय-विसय-सठाणे, अब्भितर-बाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वुड्ढि-हाणी, पड़िवाई चेव अपड़िवाई ।।

१ प्र० कहविहे ण भते ! ओही पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता– भवपच्चइए य, खओवसमिए य । एव सव्व ओहिपद भाणियव्व ।

सीया य दव्व सारीर, साता तह वेयणा भवे दुक्खा ।
अब्भुवगमुवक्कमिया, णीयाए चेव अणियाए ।।

२ प्र० नेरइया ण भते ! किं सीतं वेयणं वेयंति, उसिणं वेयणं वेयंति, सीतोसिणं वेयण वेयंति ?

उ० गोयमा ! नेरइया सिय पि वेयण वेयंति, उसिणं पि वेयण वेयंति, नो सिओसिणं वेयण वेयति । एव सव्व वेयणापय भाणियव्व ।

३ प्र० कइ णं भते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?

उ० गोयमा ! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तजहा—किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का । एव सव्व लेसापय भाणियव्व ।

अणतरा य आहारे, आहाराभोगणा इ य ।
पोग्गला ने व जाणंति, अज्झवसाणे य सम्मत्ते ।।

४ प्र० नेरइया ण भते ! अणतराहारा तओ निव्वत्तणया, तओ परियाइणया, तओ परिणामणया, तओ परियारणया, तओ पच्छा विकुव्वणया ?

उ० हता गोयमा ! एव सव्व आहारपय भाणियव्व। सूत्र १५३ ।

५ प्र० कइविहे णं भते ! आउगबधे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे आउगबधे पण्णत्ते, तजहा—
जाइनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठिइनामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए ।

प्र० नेरइयाणं भते ! कइविहे आउगबधे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तजहा—
जातिनामनिहत्ताउए, गइनामनिहत्ताउए, ठिइनामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए । एव-जाव-वेमाणियाणं ।

६ प्र० निरयगई ण भते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ते, एवं तिरियगई, मणुस्सगई, देवगई ।

प्र० सिद्धगई ण भते ! केवइयं काल विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता !

उ० गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासे ।

७ एवं सिद्धिवज्जा उवट्टणा ।

८ प्र० इमीसे ण भते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया केवइय काल विरहिया उववाएण ?

उ० एव उववायदडओ भाणियव्वो, उवट्टणादंडओ य ।

९ प्र० नेरइया णं भते ! जातिनामनिहत्ताउय कति आगरिसेहिं पगरति ?

उ० गोयमा सिय १ सिय २।३।४।५।६।७। सिय अट्ठहिं नो चेव ण नवहिं ।

एवं सेसाण वि आउगाणि-जाव-वेमाणियत्ति । सूत्र १५४ ।

१ प्र० कइविहे ण भते ! संघयणे पण्णत्ते ?

उ० छव्विहे सघयणे पण्णत्ते तजहा—

वइरोसभनारायसघयणे रिसभनारायसघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवट्टसंघयणे ।

प्र० नेरइया ण भते ! कि संघयणी ?

उ० गोयमा ! छण्ह संघयणाणं असघयणी । णेव अट्ठि, णेव छिरा, णेव ण्हारु । जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुण्णा अमणामा अमणाभिरामा । ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमति ।

प्र० असुरकुमारा ण भते ! किं सघयणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी । णेवट्ठी, णेव छिरा, णेव ण्हारु । जे पोग्गला इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा मणाभिरामा । ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमति । एव-जाव-थणियकुमाराणं

प्र० पुढवीकाइया णं भते ! किं संघयणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! छेवट्टसघयणा पण्णत्ता । एवं-जाव-संमुच्छिम-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणियत्ति ।

गब्भवक्कतिया छव्विहसघयणा, समुच्छिम-मणुस्सा छेवट्टसघयणा, गब्भवक्कतियमणुस्सा छव्विहे संघयणा पण्णत्ता ।

जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियया य ।

२ प्र० कइविहे ण भंते ! सठाणे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे सठाणे पण्णत्ते, तजहा—समचउरसे १ णिग्गोहपरिमण्डले २ साइए ३ वामणे ४ खुज्जे ५ हुडे ६।

प्र० णेरइया ण भते ! किं सठाणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! हुडसठाणा पण्णत्ता ।

प्र० असुरकुमारा ण भते ! किं सठाणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! समचउरससठाणसठिया पण्णत्ता ।

एव-जाव-थणियकुमारा,

पुढवी मसूरसठाणा पण्णत्ता,

आऊ थिबुयसठाणा पण्णत्ता,

तेऊ सूइकलावसठाणा पण्णत्ता,

वाऊ पडागासठाणा पण्णत्ता,

वत्तव्वे णाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता,

बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-संमुच्छिम-पंचेंदिय-तिरिक्खा हुंडसंठाणा पण्णत्ता,

गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा पण्णत्ता,

समुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाणसंठिया पण्णत्ता,

गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पण्णत्ता,

जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया वि। सूत्र १५५।

१ प्र० कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तंजहा—
इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसवेए ।

प्र० नेरइया णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! णो इत्थीवेए, णो पुंवेए, णपुंसगवेया पण्णत्ता।

प्र० असुरकुमारा णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ?

उ० गोयमा ! इत्थीवेया, पुरिसवेया। णो णपुंसगवेया -जाव- थणियकुमारा,

पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई बि -ति- चउरिंदिय-समुच्छिम-पंचिंदिय-तिरिक्ख-समुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया,

गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया।

जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिय-वेमाणिया वि। सूत्र १५६ ।

१ ते णं काले णं ते णं समए णं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं,
-जाव- गणहरा सावच्चा निरवच्चा वोच्छिण्णा।

२ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीआए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तंजहा गाहा–

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥

३ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, तंजहा गाहा–

सयजले सयाऊ य, अजियसेणे अणंतसेणे य ।
कज्जसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ॥
दढरहे दसरहे सयरहे ॥

४ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए सत्त कुलगरा होत्था, तंजहा गाहा–

पढमेत्थ विमलवाहण, चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे ।
तत्तो य पसेणई़ए, मरुदेवे चेव नाभी य ॥

एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारिया होत्था, तंजहा गाहा–

चंदजसा चंदकंता, सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य ।
सिरिकंता मरुदेवी, कुलगरपत्तीण णामाइं ॥

५ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तंजहा गाहाओ–

णाभी य जियसत्तू य, जियारी संवरे इय ।
मेहे धरे पइट्ठे य, महसेणे य खत्तिए ॥
सुग्गीवे दढरहे विण्हू, वसुपुज्जे य खत्तिए ।
कयवम्मा सीहसेणे, भाणू विस्ससेणे इय ॥
सूरे सुदंसणे कुंभे, सुमित्तविजए समुद्दविजए य ।
राया य आससेणे य, सिद्धत्थेच्चिय खत्तिए ॥

उदितोदियकुलवंसा, विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं, एए पियरो जिणवराणं ।।

६ जंबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तजहा गाहाओ—

मरुदेवी विजया सेणा, सिद्धत्था मगला सुसीमा य ।
पुहवी लखणा रामा, नंदा विण्हू जया सामा ।।
सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिया देवी पभावई पउमा ।
वप्पा सिवा य वामा, तिसला देवी य जिणमाया ।।

७ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तजहा—उसभ-अजिय-सभव-अभिनदण-सुमइ-पउमप्पह-सुपास-चदप्पभ-सुविही-पुप्फदत-सीयल-सिज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणत-धम्म-सति-कुथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-णमि-णेमि-पास-वड्ढमाणो य ।

८ एएसि चउवीसाए तित्थगराण चउव्वीस पुव्वभवया णामधेया होत्था, तजहा गाहाओ—

पढमेत्थ वइरणाभे, विमले तह विमलवाहणे चेव ।
तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्त तह धम्ममित्ते य ।।
सुंदरबाहु तह दीहबाहु, जुगबाहू लट्ठबाहू य ।
दिण्णे य इददत्ते, सुदर माहिंदरे चेव ।।
सीहरहे मेहरहे, रुप्पी अ सुदंसणे य बोद्धव्वे ।
तत्तो य नदणे खलु, सीहगिरी चेव वीसइमे ।।
अदीणसत्तु सखे, सुदसणे नदणे य बोद्धव्वे ।
ओसप्पणीए एए, तित्थकराण तु पुव्वभवा ।।

९ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं सीयाओ होत्था, तजहा गाहाओ—

सीया सुदंसणा सुप्पभा, य सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयंती जयंती, अपराजिया चेव ॥
अरुणप्पभ चंदप्पभ, सूरप्पह अग्गि सुप्पभा चेव ।
विमला य पचवण्णा, सागरदत्ता य णागदत्ता य ॥
अभयकर निव्वुइकरा, मणोरमा तह मणोहरा चेव ।
देवकुरूत्तरकुरा, विसाल चंदप्पभा सीया ॥
एआओ सीआओ, सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाण ।
सव्वजगवच्छलाणं, सव्वोउगसुभाए छायाए ॥
पुव्विं ओक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्टु रोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीअं, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥
चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवंदिआण, वहंति सीअं जिणंदाण ॥
पुरओ वहंति देवा, नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि ।
पच्चच्छिमेण असुरा, गरुला पुण उत्तरे पासे ॥

१० दीक्षा-नगर

उसभो अ विणीयाए, बारवईए अरिट्ठवरणेमी ।
अवसेसा तित्थयरा, निक्खंता जम्मभूमीसु ॥

११ देवदूष्य-वस्त्र

सव्वे वि एगदूसेण, णिग्गया जिणवरा चउव्वीस ।

१२ दीक्षा समय की वेश-भूषा

ण य णाम अण्णलिंगे, ण य गिहिलिंगे कुलिंगे य ॥

१३ दीक्षा-परिवार

एक्को भगवं वीरो, पासो मल्ली य तिहि तिहि सएहिं ।
भगवं पि वासुपुज्जो, छहिं पुरिससएहिं निक्खन्तो ॥

उग्गाण भोगाणं, राइण्णाणं च खत्तियाणं च ।
चउहिं सहस्सेहिं, उसभो सेसा उ सहस्सपरिवारा ।।

१४ दीक्षा-तप

सुमइत्थ णिच्चभत्तेण, णिग्गओ वासुपुज्ज चोत्थेण ।
पासो मल्ली य अट्ठमेण, सेसा उ छट्ठेणं ।।

१५ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराण चउव्वीसं पढमभिक्खादायारो होत्था, तजहा गाहाओ–

सिज्जंस बभदत्ते, सुरिंददत्ते य इददत्ते य ।
पउमे य सोमदेवे, साहिंदे तह सोमदत्ते य ।
पुस्से पुणव्वसू पुण्णणंद सुणदे जये य विजये य ।
तत्तो य धम्मसीहे, सुमित्त तह वग्गसीहे अ ।।
अपराजिय विस्ससेणे, वीसइमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्ते धणे, बहुले य आणुपुव्वीए ।।
एए विसुद्धलेसा, जिणवरभत्तीइ पजलिउडा उ ।
तं कालं त समयं, पडिलाभेई जिणवरिंदे ।।

१६ प्रथम भिक्षा-काल

सवच्छरेण भिक्खा, लद्धा उसभेण लोय-णाहेण ।
सेसेहि वीयदिवसे, लद्धाओ पढमभिक्खाओ ।।

१७ प्रथम भिक्षा-द्रव्य

उसभस्स पढमभिक्खा, खोयरसो आसि लोगणाहस्स ।
सेसाणं परमण्णं, अमियरसरसोवमं आसि ।।
सव्वेसि पि जिणाणं, जहिय लद्धाउ पढमभिक्खाउ ।

१८ वसुधारा की वृष्टि

तहिय वसुधाराओ, सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ।।

१६ एएसि चउव्वीसाए तित्थराणं चउवीस चेइयरुक्खा वद्धपीढ-

रुक्खा जेहिं अहे केवलाइ उप्पण्णाइं ति होत्था, तंजहा गाहाओ—

णग्गोह सत्तिवण्णे, साले पियए पियगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे, माली य पिलक्खुरुक्खे य ।।
तिदुग पाडल जबू, आसत्थे खलु तहेव दहिवण्णे ।
णदीरुक्खे तिलए, अबयरुक्खे असोगे य ।।
चपय बउले य तहा, वेडसरुक्खे य धायईरुक्खे ।
साले य वड्ढमाणस्स, चेइयरुक्खा जिणवराण ।।
बत्तीस धणुयाइ, चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो, ओच्छण्णो सालरुक्खेण ।।
तिण्णेव गाउआइ, चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स ।
सेसाण पुण रुक्खा, सरीरओ बारसगुणा उ ।।
सच्छत्ता सपड़ागा, सवेइया तोरणेहिं उववेया ।
सुरअसुरगरुलमहिया, चेइयरुक्खा जिणवराण ।।

२० एएसि चउवीसाए तित्थगराण चउव्वीस पढमसीसा होत्था, तजहा गाहाओ—

पढमेत्थ उसभसेणे, बीइए पुण होइ सीहसेणे य ।
चारू य वज्जणाभे, चमरे तह सुव्वय विदब्भे ।।
दिण्णे य वराहे पुण, आणदे गोथुभे सुहम्मे य ।
मंदर जसे अरिट्ठे, चक्काह सयभु कुंभे य ।।
इदे कुभे य सुभे, वरदत्ते दिण्ण इदभूई य ।
उदितोदितकुलवसा, विसुद्धवसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाण, पढमा सिस्सा जिणवराण ।।

२१ एएसि ण चउवीसाए तित्थगराणं चउवीस पढमसिस्सिणी होत्था, तजहा गाहाओ—

वभी य फग्गु सामा, अजिया कासवीरई सोमा ।
सुमणा वारुणि सुलसा, धारणि धरणी य धरणिधरा ।।
पउमा सिवा सुयी तह, अंजुया भावियप्पा य रक्खी य ।
वधुवती पुप्फवती, अज्जा अमिला य अहिया य ।।
जक्खिणी पुप्फचूला य, चंदणऽज्जा य आहियाउ ।
उदितोदितकुलवंसा, विसुद्धवसा गुणेहिं उववेया ।।
तित्थप्पवत्तयाण, पढमा सिस्सी जिणवराण ।।
सूत्र १५७ ।।

१ जवुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टिपियरो होत्था, तंजहा गाहाओ–
उसभे सुमित्ते विजए समुद्दविजए य आससेणे य ।
विस्ससेणे य सूरे सुदसणे कत्तवीरिए चेव ।।
पउमुत्तरे महाहरी विजए राया तहेव य ।
वभे वारसमे उत्ते पिउनामा चक्कवट्टीण ।।

२ जवुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तंजहा गाहाओ–
सुमगला जसवती भद्दा, सहदेवी अइरा सिरिदेवी ।
तारा जाला मेरा, वप्पा चुल्लणि अपच्छिमा ।।

३ जवुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टी होत्था, तंजहा गाहाओ–
भरहो सगरो मघव, सणकुमारो य रायसद्दूलो ।
संती कुंथू य अरो, हवइ सुभूमो य कोरव्वो ।।
नवमो य महापउमो, हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ।
जयनामो य नरवई, वारसमो वभदत्तो य ।।

४ एएसिं बारसण्हं चक्कवट्टीण बारस इत्थिरयणा होत्था, तंजहा गाहाओ–

पढमा होइ सुभद्दा, भद्द सुणंदा जया य विजया य ।
किण्हसिरी सूरसिरी, पउमसिरी वसुधरा देवी ।।
लच्छिमई कुरुमई, इत्थिरयणाण नामाइ ।।

५ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नवबलदेव-नववासुदेवपियरो होत्था, तजहा गाहाओ–

पयावई य बभो, सोमो रुद्दो सिवो महसिवो य ।
अग्गिसिहो य दसरहो, नवमो भणिओ य वसुदेवो ।।

६ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव-वासुदेवमायरो होत्था, तजहा गाहा–

मियावई उमा चेव, पुहवी सीया य अम्मया ।
लच्छिमई सेसमई, केकई देवई तहा ।।

७ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव-बलदेव-मायरो होत्था, तंजहा गाहाओ–

भद्दा तह सुभद्दा य, सुप्पभा य सुदसणा ।
विजया वेजयती य, जयंती अपराजिया ।।
णवमीया रोहिणी य, बलदेवाण मायरो ।।

८ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव दसार-मडला होत्था, तजहा–उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाण-पुरिसा ओयसी तेयंसी वच्चसी जसंसी छायसी कता सोमा सुभगा पियदसणा सुरूआ सुह-सील-सुहाभिगम-सव्व-जण-णयण-कता, ओहबला अतिबला महाबला अनिहिता अपराइणा सत्तुमद्दणा रिपु-सहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचंडा, मिय-मजुल-पलाव-हसिय-गभीर-मधुर-पडि-

पुण्ण-सच्च-वयणा, अब्भुवगय-वच्छला, सरण्णा, लक्खण-वंजण-गुणोववेआ, माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुदरंगा, ससि-सोमागार-कत-पिय-दसणा, अमरिसणा, पयंड-दडप्पयारागंभीर-दर सणिज्जा, तालद्ध-ओव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणुविट्टया, महासत्त-साअरा, दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा, विउल-कुल-समुब्भवा महारयणविहाडगा अद्धभरहसामी सोमा, रायकुल-वंसतिलया, अजिया अजियरहा, हल-मुसल-कणक-पाणी, सख-चक्क-गय-सत्ति-नंदग-धरा, पव-रुज्जल-सुक्कंत-विमल-गोत्थुम-तिरीड-धारी, कुंडल-उज्जोइया-णणा, पुंडरीय-णयणा, एकावलि-कठ-लइय-वच्छा, सिरिवच्छ-सुलछणा, वरजसा, सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-रचित-पलंब-सोभंत-कत-विकसत- विचित्त-वरमाल-रइय-वच्छा, अट्ठसय-विभत्त-लक्खण-पसत्थ-सुंदर-विरइयगमंगा, मत्त-गयवरिंद-ललिय-विक्कम-विलसिय-गई, सारय-नव-थणिय-महुर-गभीर-कुंच-निग्घोस-दुंदुभि-सरा, कडिसुत्तग-नील-पीय-कोसेज्ज-वाससा, पवर-दित्त-तेया, नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसहा, मरुय-वसभ-कप्पा, अब्भहिय-राय-तेय-लच्छीए दिप्पमाणा, नीलग-पीयग-वसणा, दुवे दुवे राम-केसवा भायरो होत्था, तजहा—

तिविट्ठे य दुविट्ठे य, सयभू पुरिसुत्तमे पुरिससीहे य ।
तह पुरिसपुडरीए, दत्ते नारायणे कण्हे ।।
अयले विजये भद्दे, सुप्पभे य सुदसणे ।
आणदे नंदणे पउमे, रामे यावि अपच्छिमे ।।

९ एएसि ण णवण्ह बलदेव-वासुदेवाण पुव्वभविया नव नामधेज्जा होत्था, तजहा गाहाओ—

विस्सभूई पव्वयए, धणदत्त समुद्ददत्त इसिवाले ।
पियमित्त ललियमित्ते, पुणव्वसू गगदत्ते य ।।
एयाइ नामाइ, पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं ।
एत्तो बलदेवाण, जहक्कमं कित्तइस्सामि ।।
विसनदी य सुबधू, सागरदत्ते असोगललिए य ।
वाराह धम्मसेणे, अपराइय रायललिए य ।।

१० एएसिं नवण्ह बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, तजहा गाहाओ–

सभूय सुमद्द सुदसणे य सेयस कण्ह गगदत्ते अ ।
सागरसमुद्दनामे, दुमसेणे य णवमेए ।।
एए धम्मायरिया, कित्तीपुरिस्साण वासुदेवाणं ।
पुव्वभवे एआसि, जत्थ नियाणाइं कासी य ।।

११ एएसिं नवण्ह वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमिओ होत्था, तजहा–

महुरा य कणवत्थू, सावत्थी पोयण च रायगिहं ।
कायदि कोसंवि, मिहिलपुरी हत्थिणापुरं च ।।

१२ एएसि ण नवण्ह वासुदेवाण नव नियाणकारणा होत्था, तजहा–

गावी जुए सगामे, तह इत्थी पराइओ रगे ।
भज्जाणुराग गोट्ठी, परइड्ढी माउआ इ य ।।

१३ एएसिं नवण्ह वासुदेवाण नव पडिसत्तू होत्था, तंजहा गाहाओ–

अस्सग्गीवे तारय, मेरय महुकेटभे निसुभे य ।
वलि पहराए तह, रावणे य नवमे जरासिधु ।।
एए खलु पडिसत्तू-कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे अचक्कजोही, सव्वे य हया सचक्केहिं ।।

एक्को य सत्तमीए, पंच य छट्ठीए पंचमी एक्को ।
एक्को य चउत्थीए, कण्हो पुण तच्चपुढवीए ।।
अणिदाणकडा रामा, सव्वे वि य केसवा नियाणकडा ।
उड्ढंगामी रामा, केसव सव्वे अहोगामी ।।
अट्ठंतकड़ा रामा, एगो पुण बम्भलोयकप्पम्मि ।
एक्का से गब्भवसही, सिज्झिस्सइ आगमिस्सेण ।।

सूत्र १५८ ।।

१ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसं तित्थगरा होत्था, तंजहा गाहाओ–

चंदाणणं सुचंदं, अग्गीसेणं च नंदिसेणं च ।
इसिदिण्णं वइहारिं वंदिमो सोमचंदं च ।।
वंदामि जुत्तिसेणं, अजियसेणं तहेव सिवसेणं ।
बुद्धं च देवसम्मं, सयमं निक्खित्तसत्थं च ।।
असंजलं जिणवसहं, वंदे य अणंतयं अमियणाणिं ।
उवसंतं च धुयरयं, वंदे खलु गुत्तिसेणं च ।।
अतिपासं च सुपासं, देवेसरवंदियं च मरुदेवं ।
निव्वाणगयं च धरं, खीणदुहं सामकोट्ठं च ।।
जियरागमग्गिसेणं, वंदे खीणरायमग्गिउत्तं च ।
वोक्कसियपिज्जदोसं, वारिसेणं गयं सिद्धिं ।।

२ जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भारहे वासे सत्त कुलगरा भविस्संति, तंजहा गाहा–

मियवाहणे सुभूमे य, सुप्पभे य सयंपभे ।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमिस्साण होक्खति ।।

३ जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दस कुलगरा भविस्संति, तंजहा–

विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमकरे खेमंधरे
दढधणू दसधणू सयधणू पडिसूई सुमइ त्ति ॥

४ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थगरा भविस्संति, तंजहा गाहाओ-

महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयपभे ।
सव्वाणुभूई अरहा, देवस्सुए य होक्खई ॥
उदए पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सत्त कित्ति य ।
मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविऊ जिणे ॥
अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे ।
चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्सेण होक्खई ॥
संवरे अणियट्टी य, विजए विमलेत्ति य ।
देवोववाए अरहा, अणंतविजए इ य ॥
एए वुत्ता चउव्वीसं, भरहे वासम्मि केवली ।
आगमिस्सेण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥

५ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थयराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति, तंजहा गाहाओ-

सेणिय सुपास उदए, पोट्टिल्ल अणगार तह दढाऊ य ।
कत्तिय संखे य तहा, नंद सुनंदे य सतए य ॥
बोद्धव्वा देवई य, सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे ।
रोहिणी सुलसा चेव, तत्तो खलु रेवई चेव ॥
तत्तो हवइ सयाली, बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य ।
दीवायणे य कण्हे, तत्तो खलु नारए चेव ॥
अंबड दारुमडे य, साईबुद्धे य होइ बोद्धव्वे ।
भावीतित्थगराणं, णामाइं पुव्वभवियाइं ॥

६ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं–
चउव्वीसं पियरो भविस्सति ।
चउव्वीसं मायरो भविस्संति ।
चउव्वीस पढमसीसा भविस्सति ।
चउव्वीसं पढमसिस्सणीओ भविस्सति ।
चउव्वीस पढमभिक्खादायगा भविस्सति ।
चउव्वीसं चेइयरुक्खा भविस्सति ।

७ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टिणो भविस्सति, तजहा गाहाओ–

सरहे य दीहदते, गूढदते य सुद्धदते य ।
सिरिउत्ते सिरिभूई, सिरिसोमे य सत्तमे ।।
पउमे य महापउमे, विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव ।
वरिट्ठे बारसमे वुत्ते, आगमिसा भरहाहिवा ।।

८ एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीण–
बारस पियरो भविस्सति ।
बारस मायरो भविस्सति ।
बारस इत्थीरयणा भविस्सति ।

९ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए–
नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्सति ।
नव वासुदेवमायरो भविस्सति ।
नव बलदेवमायरो भविस्सति ।
नव दसारमडला भविस्सति, तजहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा । ओयसी तेयसी० एव सो चेव वण्णओ भाणियव्वो-जाव-नीलग-पीतगवसणा दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्सति, तजहा गाहाओ-

नंदे य नंदमित्ते, दीहबाहू तहा महाबाहू ।
अइबले महाबले, बलभद्दे य सत्तमे ।।
दुविट्ठू व तिविट्ठू य, आगमिस्साण विण्हुणो ।
जयंते विजये भद्दे, सुप्पभे य सुदसणे ।।
आणदे नंदणे पउमे, सकरिसणे य अपच्छिमे ।।

१० एएसि णं नवण्ह बलदेव-वासुदेवाण--
पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्सति ।
नव धम्मायरिया भविस्सति ।
नव नियाणभूमीओ भविस्सति ।
नव नियाणकारणा भविस्सति ।
नव पडिसत्तू भविस्सति, तजहा गाहाओ--

तिलए य लोहजघे वइरजघे, य केसरी पहराए ।
अपराइए य भीमे, महाभीमे य सुग्गीवे ।।
एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे वि चक्कजोही, हम्मिहिंति सचक्केहिं ।।

२१ जंबुद्दीवे ण दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीस तित्थगरा भविस्सति, तंजहा गाहाओ--

सुमगले अ सिद्धत्ते, निव्वाणे य महाजसे ।
धम्मज्झए य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ।।
सिरिचंदे पुप्फकेऊ, महाचंदे य केवली ।
सुयसायरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ।।
सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली ।
सच्चसेणे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ।।
सूरसेणे य अरहा, महासेणे य केवली ।
सव्वाणदे य अरहा, देवउत्ते य होक्खई ।।

सुपासे सुव्वए अरहा, अरहे य सुकोसले ।
अरहा अणतविजए, आगमिस्साण होक्खई ।।
विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महाबले ।
देवाणदे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ।।
एए वुत्ता चउव्वीसं, एरवयम्मि केवली ।
आगमिस्साण होक्खति, धम्मतित्थस्स देसगा ।।

बारस चक्कवट्टिणो भविस्सति ।
बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्सति ।
बारस चक्कवट्टिमायरो भविस्सति ।
बारस इत्थीरयणा भविस्सति ।
णव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्सति ।
णव वासुदेवमायरो भविस्सति ।
णव बलदेवमायरो भविस्सति ।
णव दसारमडला भविस्सति, तजहा--
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा-जाव-दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्सति ।
णव पडिसत्तू भविस्सति ।
णव पुव्वभवणामधेज्जा ।
णव धम्मायरिया ।
णव णियाणभूमीओ ।
णव णियाणकारणा ।
आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ।।
एव दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ।। सूत्र १५६ ।
इच्चेयं एवमाहिज्जति, तजहा-- कुलगरवसेइ य ।
एव तित्थगरवसेइ य, चक्कवट्टिवसेइ य, दसारवंसेइ य,

गणधरवंसेइ य. इसिवसेइ य, जइवसेइ य, मुणिवंसेइ य, सुएइ वा, सुअंगेइ वा, सुयसमासेइ वा, सुयक्खंधेइ वा, समवाएइ वा, सखेइ वा।

सम्मत्तमगमक्खाय अज्झयणं त्ति बेमि ॥ सूत्र १६० ।

इति समवायं चउत्थमंगं समत्तं

समवायाङ्ग-अनुवाद



अनुवादक

मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

समवायांग अनुवाद

श्रुतधर्म प्रवर्तक चतुर्विध सघ सस्थापक स्वय बुद्ध पुरुषोत्तम पुरुष-सिंह पुरुष-वर-पुडरीक पुरुष-वर-गधहस्ति लोकोत्तम लोकनाथ लोकहितकर लोकप्रदीप लोकप्रद्योतक अभयदाता ज्ञानचक्षु-दाता मोक्षमार्ग-दाता [निर्देशक] शरण दाता जीवन दाता [जीव दयावान] धर्म प्ररुपक धर्मदेशक धर्मनायक धर्मसारथि धर्म चतुर्दिक् चक्रवर्ती अप्रतिपाति सर्वश्रेष्ठ ज्ञान-दर्शन धारक माया रहित जिन और ज्ञापक [रागद्वेष विजेता और अन्य साधको के विजायक] ससार समुद्र उत्तीर्ण और तारक, नवतत्व बुद्ध और बोधक, कर्म-मुक्त और मोचक सर्वज्ञ सर्वदर्शी, सुखद अचल अरुज अनत अक्षय अव्याबाध अपुनरावर्तक सिद्ध स्थान के साधक श्रमण भगवान महावीर ने इस द्वादशाङ्ग गणि-पिटक की प्ररुपणा की यथा -

आचाराग, सूत्रकृताग, स्थानाग, समवायाग, विवाहप्रज्ञप्ति (भगवती), ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अतकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाकश्रुत और दृष्टिवाद ।

इनमे चतुर्थ अग समवायाग का यह अर्थ कहा है यथा .-

हे आयुष्मान् साधक ! जम्बु ?
मैंने उन भगवान महावीर से इस प्रकार सुना है ।

पहला समवाय

१ चैतन्य गुण की अपेक्षा से आत्मा एक है ।
२ अनुपयोग लक्षण की अपेक्षा से अनात्मा (जड पदार्थ) एक है ।

३ अप्रशस्त योगो का प्रवृत्तिरूप व्यापार (हिंसा) एक होने से दड एक है।

४ प्रशस्त योगो का प्रवृत्तिरूप व्यापार अदड (अहिंसा) एक है।

५ योगो (मन वचन काया) की प्रवृत्तिरूप क्रिया एक है।

६ योगनिरोधरूप अक्रिया एक है।

७ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का आधारभूत लोकाकाश एक है।

८ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का अभावरूप आलोकाकाश एक है।

९ पदार्थों की गति मे सहायक रूप स्वभाव से धर्मा स्तिकाय एक है।

१० पदार्थों की स्थिति मे सहायकरूप स्वभाव से अधर्मास्तिकाय एक है।

११ शुभयोगरूप प्रवृत्ति के एक होने से पुन्य एक है।

१२ अशुभयोगरूप प्रवृत्ति के एक होने से पाप एक है।

१३ कर्मबद्ध आत्माओ की सामान्य विवक्षा से बन्ध एक है।

१४ कर्ममुक्त आत्माओ की सामान्य विवक्षा से मोक्ष एक है।

१५ जीवरूप नौका मे इन्द्रियरूप छिद्रो से कर्मरूप जल का सचय आश्रव है, वह सामान्य विवक्षा से एक है।

१६ जीवरूप नौका मे इन्द्रियरूप छिद्रो से आते हुये कर्मरूप जल को रोकना सवर है, वह सामान्य विवक्षा से एक है।

१७ अशुभ कर्मोदय जन्य मानसिक कायिक पीडा वेदना है, वह सामान्य विवक्षा से एक है।

१८ कर्मक्षयरूप निर्जरा सामान्यतया एक है।

१९ जम्बुद्वीप का आयाम-विष्कम्भ (लम्बाई चौडाई) एक लाख योजन का है।

२० सातवी नरक के मध्य अप्रतिष्ठान नरकावास का आयाम

विष्कम्भ एक लाख योजन का है ।

२१ सोधर्मेन्द्र के अभियोगिक पालक देव द्वारा विकुर्वित पालक यान विमान का आयाम-विष्कम्भ एक लाख योजन का है ।

२२ सवार्थसिद्ध विमान का आयाम-विष्कम्भ एक लाख योजन का है ।

२३ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा है ।

२४ चित्रा नक्षत्र का एक तारा है ।

२५ स्वाति नक्षत्र का एक तारा है ।

२६ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के कुछ नारको की स्थिति एक पल्योपम की है ।

२७ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के नारको की उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है ।

२८ शर्कराप्रभा नामक पृथ्वी के नारको की जघन्य स्थिति एक सागरोपम की है ।

२९ असुरकुमार देवो मे से कुछ देवो की स्थिति एक पल्योपम की है ।

३० असुरकुमार देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक एक सागरोपम की है ।

३१ असुरेन्द्र को छोडकर कुछ भवनपति देवो की स्थिति एक पल्योपम की है ।

३२ असख्यवर्षो की आयुवाले कुछ गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रियो की स्थिति एक पल्योपम की है ।

३३ असख्यवर्षो की आयु वाले कुछ गर्भज मनुष्यो की स्थिति एक पल्योपम की है ।

३४ वाणव्यतर देवो की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम की है ।

३५ ज्योतिषी देवो की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम अधिक एक लाख वर्ष की है।

३६ सौधर्म कल्प के देवो की जघन्य स्थिति एक पल्योपम की है।

३७ सौधर्म कल्प के कुछ देवों की स्थिति एक सागरोपम की है।

३८ ईशान कल्प के देवो की जघन्य स्थिति कुछ अधिक एक पल्योपम की है।

३९ ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति एक सागरोपम की है।

४० सागर सुसागर सागरकान्त भव मनु मानुषोत्तर और लोकहित विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की होती है।

४१ सागर-यावत्-लोकहित विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है वे एक पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

४२ सागर-यावत्-लोकहित विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा एक हजार वर्ष से होती है।

४३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो एक भव ग्रहण करके सिद्ध बुद्ध और सर्वथा निवृत्त हो सब दुखो का अन्त करेंगे।

दूसरा समवाय

१ दड दो प्रकार का है यथा-
स्व पर हित के लिये-की जाने वाली हिंसा अर्थदड है।
स्व पर अहित के लिए की जानेवाली अथवा व्यर्थ की जानेवाली हिंसा अनर्थदड है।

२ राशि दो प्रकार की है यथा-जीव राशि, अजीव राशि।

३ बन्धन दो प्रकार है यथा-राग बन्धन, द्वेष बन्धन।

४ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के २ तारे हैं।

५ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के २ तारे है।
६ पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के २ तारे है।
७ उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के २ तारे है।
८ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के कुछ नारको की स्थिति दो पल्योपम की है।
९ शर्कराप्रभा नामक द्वितीय पृथ्वी के कुछ नारको की स्थिति दो सागरोपम की है।
१० असुरकुमार देवो मे से कुछ देवो की स्थिति दो पल्योपम की है।
११ असुरेन्द्र को छोडकर शेष भवनवासी देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ कम दो पल्योपम की है।
१२ असख्यात वर्ष की आयुवाले कुछ सज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रियो की दो पल्योपम की है।
१३ असख्यात वर्ष की आयुवाले कुछ गर्भज मनुष्यो की स्थिति स्थिति दो पल्योपम की है।
१४ सौधर्म कल्प के कुछ देवो की स्थिति दो पल्योपम की है।
१५ ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति दो पल्योपम की है।
१६ सौधर्म कल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम की है।
१७ ईशान कल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक दो सागरोपम की है।
१८ सनत्कुमार कल्प के देवो की जघन्य स्थिति दो सागरोपम की है।
१९ माहेन्द्र कल्प के देवो की जघन्य स्थिति कुछ अधिक दो सागरोपम की है।
२० शुभ शुभकान्त शुभवर्ण शुभलेश्य शुभगध शुभस्फर्श वाले सौध-

र्मावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम की होती है।

२१ शुभ-यावत्-सौधर्मावतसक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे दो पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

२२ शुभ-यावत्-सौधर्मावतसक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा दो हजार वर्ष से होती है।

२३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो दो भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अन्त करेंगे।

तीसरा समवाय

१ दड तीन (हिंसा) प्रकार के हैं, यथा-
मनदड, वचनदड, कायदड।

२ तीन गुप्तिया है यथा-मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति।

३ शल्य तीन प्रकार के है, यथा-
माया शल्य, निदान शल्य, मिथ्या दर्शन शल्य।

४ गर्व तीन प्रकार के है, यथा-ऋद्धि गर्व, रस गर्व, साता गर्व।

५ विराधना तीन प्रकार की है, यथा-
ज्ञान विरावना, दर्शन विराधना, चारित्र विराधना।

६ मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे हैं।

७ पुष्य नक्षत्र के तीन तारे हैं।

८ ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे है।

९ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे हैं।

१० श्रवण नक्षत्र के तीन तारे हैं।

११ अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे है।

१२ भरणी नक्षत्र के तीन तारे हैं।

१३ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति ३ पल्योपम की हैं।

१४ शर्कराप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम की है।

१५ वालुकाप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की जघन्य स्थिति तीन सागरोपम की हैं।

१६ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तीन पल्योपम की है।

१७ असख्य वर्ष की आयुवाले सज्ञी तिर्यच पचेन्द्रियो की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है।

१८ असख्य वर्ष की आयुवाले गर्भज मनुष्यो की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है।

१९ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति तीन पल्योपम की है।

२० सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवो की स्थिति तीन सागरोपम की है।

२१ आभकर प्रभकर आभकर प्रभकर चद्र चद्रावर्त चद्रप्रभ चद्रकान्त चद्रवर्ण चद्रलेश्य चद्रध्वज चद्रशृग चद्रश्रेष्ठ चद्रकूट चद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम की होती है।

२२ आभकर-यावत्-चद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे तीन पक्ष से श्वासोच्छवास लेते है।

२३ आभकर-यावत् चद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा तीन हजार वर्ष से होती है।

२४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो तीन भवकरके सिद्ध-यावत्

सर्व दुखो का अत करेंगे ।

चौथा समवाय

१ कषाय चार प्रकार के हैं, यथा-क्रोध, मान, माया, लोभ ।

२ ध्यान चार प्रकार के है, यथा-
आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान ।

३ विकथा चार प्रकार की हैं, यथा-
स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा, राज कथा ।

४ सज्ञा चार प्रकार की है, यथा-
आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा ।

५ वन्ध चार प्रकार का है, यथा-
प्रकृति वन्ध, स्थिति वन्ध, अनुभाग वन्ध, प्रदेश वन्ध ।

६ योजन चार गाउ का कहा गया है ।

७ अनुराधा नक्षत्र के चार तारे है ।

८ पूर्वाषाढा नक्षत्र के चार तारे है ।

९ उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे है ।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चार पल्योपम की है ।

११ वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चार सागरोपम की है ।

१२ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति चार पल्योपम की है ।

१३ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति चार पल्योपम की है ।

१४ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवो की स्थिति चार सागरोपम की है ।

१५ कृष्टि सुकृष्टि कृष्टिकावर्त कृष्टिप्रभ कृष्टियुक्त कृष्टिवर्ण कृष्टिलेश्य कृष्टिध्वज कृष्टिशृग कृष्टिश्रेष्ठ कृष्टिकूट व कृष्ट्युत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति चार सागरोपम की होती है ।

१६ कृष्टि-यावत्-कृष्ट्युत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे चार पक्ष से स्वासोच्छ्वास लेते है ।

१७ कृष्टि-यावत्-कृष्ट्युत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा चार हजार वर्ष से होती है ।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो चार भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अन्त करेंगे ।

पांचवां समवाय

१ क्रिया पाँच प्रकार की है, यथा—कायिकी, आधिकरणिकी, प्राद्वेपिकी, पारितापनिकी, प्राणातिपातिकी ।

२ महाव्रत पाँच प्रकार के है, यथा—सर्वथा प्राणतिपात विरमण, सर्वथा मृषावाद विरमण, सर्वथा अदत्तादान विरमण, सर्वथा मैथुन विरमण, सर्वथा परिग्रह विरमण ।

३ कामगुण पाँच प्रकार के है, यथा—
शब्द, रूप, रस, गध, स्पर्श ।

४ आश्रवद्वार पाँच प्रकार के हैं, यथा—
मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग।

५ सवर पाच प्रकार के हैं, यथा—
सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकपाय, अयोग ।

६ निर्जरा स्थान पाच प्रकार के हैं, यथा-प्राणातिपात विरति,

मृपावाद विरति, अदत्तादान विरति, मैथुन विरति, परिग्रह विरति ।

७ समिति पाच प्रकार की हैं, यथा--ईर्या समिति, भापा समिति, एपणा समिति, आदान भाड मात्र निक्षेपणा समिति, ऊच्चार, प्रश्रवण, श्लेष्म, नासिका मल, शरीर का मेल परिष्ठापनिका समिति ।

८ अस्तिकाय पाच प्रकार के है, यथा—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय ।

९ रोहिणी नक्षत्र के पाच तारे हैं ।

१० पुनर्वसु नक्षत्र के पाच तारे है ।

११ हस्त नक्षत्र के पाच तारे हैं ।

१२ विसाखा नक्षत्र के पाच तारे हैं ।

१३ धनिष्ठा नक्षत्र के पाच तारे हैं ।

१४ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पाच पल्योपम की है ।

१५ वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पाच सागरोपम की है ।

१६ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति पाच पल्योपम की है ।

१७ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति पाच पल्योपम की है ।

१८ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवो की स्थिति पाच सागरोपम की है ।

१९ वात सुवात वातावर्त वातप्रभ वातकात वातवर्ण वातलेश्य वातध्वज वातशृग वातश्रेष्ठ वातकूट वातोत्तरावतसक सूर सुसूर सूरावर्त सूरप्रभ सूरकान्त सूरवर्ण सूरलेश्य सूर-

ध्वज सूरशृ ग सूरश्रेष्ठ सूरकूट सूरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति पाच सागरोपम की होती है।

२० वात-यावत्-सूरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे पाच पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

२१ वात-यावत्-सूरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा पाच हजार वर्ष से होती है।

२२ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो पाच भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अन्त करेंगे।

छठा समवाय

१ लेश्या छ प्रकार की है, यथा—कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या।

२ जीवनिकाय छ प्रकार के है, यथा—पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय।

३ बाह्य तप छ प्रकार के हैं, यथा—अनशन, ऊनोदरिका, वृत्ति-सक्षेप, रसपरित्याग, कायक्लेश, सलीनता।

४ आभ्यतर तप छ प्रकार के है, यथा—प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, उत्सर्ग।

५ छाद्मस्थिक समुद्घात छ प्रकार के है, यथा—वेदना-समुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणातिकसमुद्घात, वैक्रिय-समुद्घात, तैजससमुद्घात, आहारकसमुद्घात।

६ अर्थावग्रह छ प्रकार के है, यथा—श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह, चक्षु इन्द्रिय अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह, नो इन्द्रिय अर्थावग्रह।

७ कृत्तिका नक्षत्र के छः तारे है।

८ अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे है।

६ रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति छ पल्योपम की है।

१० वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति छ सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति छ पल्योपम की है।

१२ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति छ पल्योपम की है।

१३ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवो के स्थिति छ सागरोपम की है।

१४ स्वयभू स्वयभूरमण घोष सुघोप महाघोष कृष्टिघोष वीर सुवीर वीरगति वीरश्रेणिक वीरावर्त वीरप्रभ वीरकात वीरवर्ण वीरलेश्य वीरध्वज वीरशृ ग वीरश्रेष्ट वीरकूट वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति छ सागरोपम की होती है।

१५ स्वयभू-यावत्-वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे छ पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१६ स्वयभू-यावत्-वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा छ हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो छ भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अन्त करेंगे।

सातवां समवाय

१ भयस्थान सात प्रकार के हैं, यथा—इहलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अकस्मात् भय, आजीविका भय, मरण भय, अपयश भय ।

२ समुद्घात सात प्रकार के हैं, यथा—वेदनासमुद्घात, कषाय समुद्घात, मारणांतिक समुद्घात, वैक्रिय समुद्घात, तेजस समुद्घात, आहारक समुद्घात, केवली समुद्घात ।

३ श्रमण भगवान महावीर सात हाथ के ऊँचे थे ।

४ इस जम्बूद्वीप मे सात वर्षधर पर्वत है, यथा- लघु हिमवत, महा हिमवत, निषध, नीलवत, रुक्मी, शिखरी, मदराचल ।

५ इस जम्बूद्वीप मे सात क्षेत्र हैं, यथा- भरत, हेमवत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक्वर्ष, ऐरण्यवत, ऐरवत ।

६ क्षीणमोह वीतराग मोहनीय को छोडकर सात कर्म प्रकृतियों का वेदना करते है ।

७ मघा नक्षत्र के सात तारे हैं ।

८ कृत्तिका आदि सात नक्षत्र पूर्वदिशा मे द्वारवाले हैं ।

९ मघा आदि सात नक्षत्र दक्षिण दिशा मे द्वारवाले हैं ।

१० अनुराधा आदि सात नक्षत्र पश्चिम दिशा मे द्वारवाले है ।

११ धनिष्ठा आदि सात नक्षत्र उत्तरदिशा मे द्वारवाले हैं ।

१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सात पल्योपम की है ।

१३ वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सात सागरोपम की है ।

१४ पकप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की जघन्य स्थिति सात सागरो-

पम की है।

१५ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति सात पल्योपम की है।

१६ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति सात पल्योपम की है।

१७ सनत्कुमारकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है।

१८ माहेन्द्र कल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है।

१९ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवो की स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है।

२० सम समप्रभ महाप्रभ प्रभास भासुर विमल कचनकूट और सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की होती है।

२१ सम-यावत्-सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे सात पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

२२ सम-यावत्-सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा सात हजार वर्ष से होती है।

२३ कुछ ऐसे भवसिद्धिक जीव है जो सात भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अत करेगे।

आठवां समवाय

१ मदस्थान आठ है, यथा- जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपमद, श्रुतमद, लाभमद, ऐश्वर्यमद।

२ प्रवचनमाता आठ है, यथा- ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान-भाड-मात्र-निक्षेपणा समिति,

उच्चार-प्रश्रवण-श्लेष्म-जल्ल-सिंघाण-परिष्ठापनिका समिति।
मन गुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति ।

३ व्यन्तर देवो के चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊँचे है ।

४ जबूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष आठ योजन के ऊँचे है ।

५ गरुडावास कूटशाल्मली वृक्ष आठ योजन के ऊँचे है ।

६ जबूद्वीप की जगती आठ योजन ऊँची है ।

७ केवलीसमुद्घात के आठ समय होते है, यथा-
प्रथम समय मे आत्मप्रदेशो की दण्ड रचना ।
द्वितीय समय मे आत्मप्रदेशो की कपाट रचना ।
तृतीय समय मे आत्मप्रदेशो की मथानी रचना ।
चतुर्थ समय मे मथानी के अन्तरालो की पूर्ति ।
पचम समय मे मथानी के अन्तरालो का सहरण ।
षष्ठ समय मे मथानी का सहरण ।
सप्तम समय मे कपाट का सहरण ।
अष्टम समय मे दड का सहरण ।
पश्चात् आत्मा शरीरस्थ होती है ।

८ प्रख्यातपुरुष अरहत पार्श्वनाथ के आठ गण और गणधर थे, यथा-शुभ शुभघोष वशिष्ठ ब्रह्मचारी सोम श्रीधर वीरभद्र यश।

९ चद्र के साथ प्रमर्द योग करनेवाले आठ नक्षत्र, यथा-कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा ।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति आठ पल्योपम की है।

११ पकप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति आठ सागरोपम की है।

१२ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति आठ पल्योपम की है।

१३ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति आठ पल्योपम की है।

१४ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवो की स्थिति आठ सागरोपम की है।

१५ अर्चि अर्चिमाली वैरोचन प्रभकर चद्राभ सूर्याभ सुप्रतिष्ठाभ अग्निच्चाभ रिष्टाभ अरुणाभ अरुणोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति आठ सागरोपम की होती है।

१६ अर्चि-यावत्-अरुणोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे आठ पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१७ अर्चि-यावत्-अरुणोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा आठ हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो आठ भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे ।

नौवां समवाय

१ ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ नो है, यथा-

१ स्त्री, पशु और नपुसक के ससर्ग से युक्त स्थान या आसन के उपयोग करने का निपेध।

२ स्त्रीकथा कहने का निपेध।

३ स्त्रीसमूह मे बैठने का निपेध।

४ स्त्री की मनोहर मनोरम इन्द्रियो को देखने का तथा चिंतन का निपेध।

५ प्रचुर घृतादि युक्त विकार वर्धक आहार करने का निपेध।

६ अधिक भोजन करने का निपेध।

७ स्त्री के साथ की हुई कामक्रीडा के स्मरण का निषेध ।
८ स्त्री के शब्द रूप गध रस और स्पर्श की प्रशसा करने का निषेध ।
९ कायिक सुखो मे आसक्त होने का निषेध ।

२ ब्रह्मचर्य अगुप्तियाँ नो हैं, यथा-
पूर्व कथित नो गुप्तियो से विपरीत आचरण करना ।

३ आचाराग के प्रथम ब्रह्मचर्य श्रुतस्कध के नो अध्ययन है, यथा- शस्त्र-परिज्ञा, लोकविजय, शीतोष्णीय, सम्यक्त्व, आवति, धूत, विमोहायन, उपधान-श्रुत, महापरिज्ञा ।

४ प्रख्यात पुरुष अरहत पार्श्वनाथ नो हाथ के ऊचे थे ।

५ अभिजित् नक्षत्र का चद्र के साथ योगकाल कुछ अधिक नव मुहूर्त का है ।

६ अभिजित् आदि नो नक्षत्रो का चन्द्र के साथ उत्तर दिशा से योग होता है, यथा- अभिजित् श्रवण-यावत्-भरिणी ।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से नो सो योजन की अव्यवहित ऊचाई पर तारा गति करते है ।

८ जबूद्वीप मे नो योजन प्रमाणवाले मत्स्य प्रवेश करते थे, करते हैं और करेंगे ।

९ विजयद्वार के प्रत्येक पार्श्वभाग मे नो नो भौम नगर है ।

१० व्यतर देवो की सुधर्मा सभा नो योजन की ऊची है ।

११ दर्शनावरणकर्म की नो प्रकृतिया है, यथा- निद्रा, प्रचला, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, स्त्यानर्धि, चक्षु दर्शनावरण, अचक्षु दर्शनावरण, अवधि दर्शनावरण, केवल दर्शनावरण ।

१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति नो पल्योपम की है ।

१३ पकप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति नो सागरोपम की है ।

१४ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति नो पल्योपम की है ।

१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति नो पल्योपम की है ।

१६ ब्रह्मलोककल्प के कुछ देवो की स्थिति नो सागरोपम की है ।

१७ पक्ष्म सुपक्ष्म पक्ष्मावर्त पक्ष्मप्रभ पक्ष्मकात पक्ष्मवर्ण पक्ष्मलेश्य पक्ष्मध्वज पक्ष्मशृ ग पक्ष्मश्रेष्ठ पक्ष्मकूट पक्ष्मोत्तरावतसक सूर्य सुसूर्य सुर्यावर्त सूर्यप्रभ सूर्यकात सूर्यवर्ण सूर्यलेश्य सूर्यध्वज सूर्यशृ ग सूर्यश्रेष्ठ सूर्यकूट सूर्योत्तरावतसक । रुचिर रुचिरावर्त रुचिरप्रभ रुचिरकात रुचिरवर्ण रुचिरलेश्य रुचिरध्वज रुचिरशृ ग रुचिरश्रेष्ठ रुचिरकूट रुचिरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति नो सागरोपम की होती है ।

१८ पक्ष्म-यावत्-रुचिरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे नो पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१९ पक्ष्म-यावत्-रुचिरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा नो हजार वर्ष से होती है ।

२० कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो नो भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अत करेगे ।

दसवां समवाय

१ श्रमण धर्म दस प्रकार के हैं, यथा- क्षाति, मुक्ति, आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, सयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्यवास ।

२ मन के समाधिस्थान दस है, यथा-

१ अपूर्व धर्म जिज्ञासा से ।

२ अपूर्व स्वप्न दर्शन से ।

३ पूर्वजन्म की स्मृति होने से ।

४ अपूर्व दिव्य ऋद्धि, दिव्यकान्ति और दिव्य देवानुभाव के दर्शन से ।

५ अपूर्व अवधिज्ञान के उत्पन्न होने से ।

६ अपूर्व अवधिदर्शन के उत्पन्न होने से ।

७ अपूर्व मन पर्यव ज्ञान के उत्पन्न होने से ।

८ केवल ज्ञान उत्पन्न होने से ।

९ केवल दर्शन उत्पन्न होने से ।

१० अपूर्व पडित मरण से ।

३ मेरू पर्वत के मूल का विष्कभ दस हजार योजन का हे ।

४ अर्हन्त अरिष्टनेमी दस धनुष के ऊचे थे ।

५ कृष्ण वासुदेव दस धनुप के ऊचे थे ।

६ राम वलदेव दस धनुप के ऊचे थे ।

७ ज्ञान की वृद्धि करनेवाले दस नक्षत्र हैं, यथा-मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, मूल, अश्लेषा, हस्त, चित्रा ।

८ अकर्मभूमिज मनुष्यो के उपभोग के लिए दस कल्पवृक्ष हैं, यथा-मत्तागक, भृ गागक, त्रुटिताग, दीपशिख, ज्योति, चित्राग, चित्ररस, मण्यग, गेहाकार, अनग्न ।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है ।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति दस पल्योपम

की है ।

११ पकप्रभा पृथ्वी मे दस लाख नरकावास है ।

१२ पंकप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है ।

१३ धूमप्रभा पृथ्वी के नैयिको की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है ।

१४ असुरकुमार देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है ।

१५ असुरेन्द्र को छोडकर शेप भवनपति देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है ।

१६ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति दस पल्योपम की है ।

१७ प्रत्येक वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की है ।

१८ व्यन्तर देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है ।

१९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति दस पल्योपम की है ।

२० ब्रह्मलोककल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है ।

२१ लातककल्प के देवो की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है ।

२२ घोप मुघोप महाघोष नदीघोप मुस्वर मनोरम रम्य रम्यक रमणीय मगलावर्त और ब्रह्मलोकावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की होती है ।

२३ घोष-यावत्-ब्रह्मलोकावनसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे दस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

२४ घोष-यावत्-ब्रह्मलोकावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा दस हजार वर्प से होती है ।

२५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो दस भव करके सिद्ध-

यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे ।

इग्यारहवां समवाय

१ उपासक की इग्यारह प्रतिमाए है, यथा-

१ दर्शन श्रावक ।

२ कृत व्रतकर्म ।

३ कृत सामायिक ।

४ पौषधोपवास निरत ।

५ दिन मे ब्रह्मचर्य का पालन और रात्रि मे मैथुन सेवन का परिमाण ।

६ दिन और रात्रि मे ब्रह्मचर्य का पालन, अस्नान, रात्रि भोजन विरति, कच्छ परिधान परित्याग । मुकुट त्याग ।

७ सचित्त परित्याग ।

८ आरम्भ परित्याग ।

९ प्रैष्य परित्याग ।

१० उद्दिष्ट भक्त परित्याग ।

११ श्रमणभूत ।

२ लोकान्त से अव्यवहित इग्यारह सो इग्यारह योजन दूरी पर ज्योतिष चक्र प्रारम्भ होता है ।

३ जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत से अव्यवहित इग्यारहसो इकवीस योजन दूरी पर ज्योतिष चक्र प्रारम्भ होता है ।

४ श्रमण भगवान महावीर के इग्यारह गणधर थे, यथा-
इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्मा, मडितपुत्र, मौर्यपुत्र, अकपित, अचलभ्राता, मेतार्य, प्रभास ।

५ मूल नक्षत्र के इग्यारह तारे हैं ।

६ नीचे के तीन ग्रैवेयक देवो के एकसो इग्यारह विमान हैं ।

७ मेरु पर्वत के पृथ्वीतल के विष्कम्भ से शिखरतल का विष्कम्भ ऊचाई की अपेक्षा इग्यारह भाग हीन है ।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है ।

९ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति इग्यारह सागरोपम की है ।

१० कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है ।

१२ लातककल्प के कुछ देवो की स्थिति इग्यारह सागरोपम की है ।

१३ ब्रह्म सुब्रह्म ब्रह्मावर्त ब्रह्मप्रभ ब्रह्मकात ब्रह्मवर्ण ब्रह्मलेश्य ब्रह्मध्वज ब्रह्मशृ ग ब्रह्मश्रेष्ठ ब्रह्मकूट ब्रह्मोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति इग्यारह सागरोपम की होती है।

१४ ब्रह्म-यावत्-ब्रह्मोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे इग्यारह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१५ ब्रह्म-यावत्-ब्रह्मोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा इग्यारह हजार वर्ष से होती है ।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो इग्यारह भव करके सिद्ध -यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे ।

बारहवां समवाय

१ भिक्षु प्रतिमाएँ बारह हैं, यथा-

१ एक मासिका भिक्षुप्रतिमा। २ द्विमासिका भिक्षुप्रतिमा।
३ त्रिमासिका भिक्षुप्रतिमा। ४ चतुर्मासिका भिक्षुप्रतिमा।
५ पचमासिका भिक्षुप्रतिमा। ६ छ मासिका भिक्षुप्रतिमा।
७ सप्तमासिका भिक्षुप्रतिमा।
८ प्रथमा सप्त अहोरात्रिका भिक्षुप्रतिमा।
९ द्वितीया सप्त अहोरात्रिका भिक्षुप्रतिमा।
१० तृतीया सप्त अहोरात्रिका भिक्षुप्रतिमा।
११ एक अहोरात्रिका भिक्षुप्रतिमा।
१२ एक रात्रिका भिक्षुप्रतिमा।

२ श्रमणो के बारह व्यवहार है, यथा-
उपधि, श्रुत, भक्त-पान, अजलिप्रग्रह, दान, निमत्रण, अभ्युत्थान, कृतिकर्म, वैयावृत्य, समवसरण-समिलन, सनिषद्या, कथाप्रबध।

३ द्वादशावर्त वदना, यथा-
दो वार अर्ध नमन, चार वार मस्तक नमन, त्रिगुप्त, द्विप्रवेश, एक निष्क्रमण।

४ विजया राजधानी का आयाम-विष्कम्भ बारह लाख योजन का है।

५ राम बलदेव बारह सो वर्ष का आयु पूर्ण करके देवगति को प्राप्त हुए।

६ मेरु पर्वत की चूलिका के मूल का विष्कम्भ बारह योजन का है।

७ जबूद्वीप की वेदिका के मूल का विष्कम्भ बारह योजन का है।

८ सर्व जघन्य रात्रि बारह मुहूर्त की होती है ।

९ सर्व जघन्य दिन बारह मुहूर्त का होता है ।

१० सर्वार्थसिद्ध महा विमान की ऊपर की स्तूपिका के अग्रभाग से बारह योजन ऊपर जाने पर ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी है ।

११ ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के बारह नाम हैं, यथा-
ईषत्, ईषत् प्राग्भारा, तनु, तनुतरा, सिद्धि, सिद्धालय, मुक्ति, मुक्तालय, ब्रह्म, ब्रह्मावतसक, लोकप्रतिपूरणा, लोकाग्रचूलिका ।

१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बारह पल्योपम की है ।

१३ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बारह सागरोपम की है ।

१४ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति बारह पल्योपम की है ।

१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति बारह पल्योपम की है ।

१६ लातककल्प के कुछ देवो की स्थिति बारह सागरोपम की है ।

१७ माहेन्द्र माहेन्द्र ध्वज कबु कंबुग्रीव पुख सुपुख महापुख पुड सुपुड महापुड नरेन्द्र नरेन्द्रकात नरेन्द्रावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति बारह सागरोपम की होती है ।

१८ माहेन्द्र-यावत्-नरेन्द्रावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे बारह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१९ माहेन्द्र-यावत्-नरेन्द्रावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा बारह हजार वर्ष से होती है ।

२० कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बारह भव करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे ।

तेरहवां समवाय

१ तेरह क्रिया स्थान हैं, यथा- अर्थदड, अनर्थादड, हिंसादड, अकस्मात् दड, दृष्टिविपर्यास दड, मृपावाद हेतुक दड, अदत्तादान हेतुक दड, आध्यात्मिक दड, मित्रद्वेष हेतुक दड, माया हेतुक दड, लोभ हेतुक दड, ईर्यापथ हेतुक दड।

२ सौधर्म और ईशानकल्प मे तेरह विमान प्रस्तट है।

३ सौधर्मावतसक विमान का आयाम-विष्कम्भ साढे तेरह लाख योजन का है।

४ ईशानावतसक विमान का आयाम-विष्कम्भ साढे तेरह लाख योजन का है।

५ जलचर तिर्यच पचेन्द्रिय की साढे तेरह लाख कुलकोटी है।

६ प्राणायु पूर्व के तेरह वस्तु है।

७ गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय के तेरह योग है, यथा-
सत्य मन प्रयोग, मृषा मन प्रयोग,
सत्यामृषा मन प्रयोग, असत्यामृषा मन प्रयोग।
सत्य वचन प्रयोग, मृषा वचन प्रयोग,
सत्य मृषा वचन प्रयोग, असत्यामृषा वचन प्रयोग,
औदारिक शरीर काय प्रयोग, औदारिक मिश्र शरीर काय प्रयोग, वैक्रिय शरीर काय प्रयोग, वैक्रिय मिश्र शरीर काय प्रयोग, कार्मण शरीर काय प्रयोग।

८ एक योजन के इकसठ भागो मे से तेरह भाग कम करने पर जितना रहे उतना सूर्य मडल है।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तेरह सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१३ लातककल्प के कुछ देवो की स्थिति तेरह सागरोपम की है।

१४ वज्र सुवज्र वज्रावर्त वज्रप्रभ वज्रकात वज्रवर्ण वज्रलेश्य वज्ररूप वज्रशृ ग वज्रश्रेष्ठ वज्रकूट वज्रोत्तरावतसक वइर वइरावर्त वइरकात वइरवर्ण वइरलेश्य वइररूप वइरशृ ग वइरश्रेष्ठ वइरकूट वइरोत्तरावतसक लोक लोकावर्त लोकप्रभ लोककात लोकवर्ण लोकलेश्य लोकरूप लोकशृ ग लोकश्रेष्ठ लोककूट लोकोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति तेरह सागरोपम की होती है।

१५ वज्र-यावत्-लोकोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे तेरह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१६ वज्र-यावत्-लोकोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा तेरह हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो तेरह भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे।

चौदहवां समवाय

१ चौदह भूतग्राम है, यथा-सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अपर्याप्त, बादर पर्याप्त, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असज्ञीपचेन्द्रिय अपर्याप्त, असज्ञी पचेन्द्रिय

पर्याप्त, सज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्त, सज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त ।

२ चौदह पूर्व है, यथा-उत्पाद पूर्व, अग्रायणीय पूर्व, वीर्यप्रवाद पूर्व, अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व, ज्ञान प्रवाद पूर्व, सत्य प्रवाद पूर्व, आत्म प्रवाद पूर्व, कर्म प्रवाद पूर्व, प्रत्याख्यान पूर्व, विद्यानुप्रवाद पूर्व, अवध्य पूर्व, प्राणायु पूर्व, क्रियाविशाल पूर्व, बिन्दुसार पूर्व ।

३ अग्रायणीय पूर्व के चौदह वस्तु है ।

४ श्रमण भगवान महावीर के चौदह हजार श्रमणो की सपदा है।

५ कर्मविशुद्धि मार्गणा की अपेक्षा चौदह जीवस्थान है, यथा-मिथ्यादृष्टि, सास्वादान सम्यग् दृष्टि, सम्यग् मिथ्या दृष्टि, अविरत सम्यग् दृष्टि, विरताविरत, प्रमत्त सयत, अप्रमत्तसयत, निवृत्ति बादर, अनिवृत्ति बादर, सूक्ष्म सपराय, उपशान्त मोह, क्षीण मोह, सयोगी केवली, अयोगी केवली ।

६ भरत और ऐरवत की जीवा का आयाम चौदह हजार चार सो इकहत्तर एक योजन के उन्नीस भागो मे से छ भाग का है ।

७ प्रत्येक चक्रवर्ती के चौदह रत्न है, यथा

स्त्री रत्न, सेनापति रत्न, गाथापति रत्न, पुरोहित रत्न, वार्धकी रत्न, अश्व रत्न, हस्ति रत्न ।

खड्ग रत्न, दड रत्न, चक्र रत्न, छत्र रत्न, चर्म रत्न, मणि रत्न, काकणी रत्न ।

८ जबूद्वीप मे चौदह मोटी नदिया पूर्व पश्चिम से लवण समुद्र मे मिलती है, यथा- गगा, सिन्धु, रोहिता, रोहिताशा, हरि, हरिकाता, सीता, सीतोदा, नरकाता, नारीकाता, सुवर्णकूला, रुप्यकूला, रक्ता, रक्तवती ।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चौदह पल्यो-

पम की है ।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चौदह सागरोपम की हैं ।

११ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति चौदह पल्योपम की हैं ।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति चौदह पल्योपम की हैं ।

१३ लातककल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति चौदह सागरोपम की है ।

१४ महाशुक्रकल्प के देवो की जघन्य स्थिति चौदह सागरोपम की हैं ।

१५ श्रीकात श्रीमहित श्रीसोमनस लातक कापिष्ठ महेन्द्र महेन्द्रकान्त महेन्द्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति चौदह सागरोपम की होती है ।

१६ श्रीकान्त-यावत्-महेन्द्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे चौदह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१७ श्रीकात-यावत्-महेन्द्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा चौदह हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो चौदह भव करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे ।

पंद्रहवां समवाय

१ पद्रह परमाधार्मिक देव है यथा-

अब अबरिस श्याम सबल रुद्र उपरुद्र काल महाकाल असिपत्र धनु कुभ वालुक वैतरिणी खरस्वर महाघोप ।

२ भगवान नमिनाथ पद्रह धनुप के ऊचे थे ।

३ ध्रुवराहु कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से प्रतिदिन चद्रकला के पद्रहवें भाग को आवृत करता है । यथा-
प्रतिपदा को एक पद्रहवा भाग आवृत करता है,
द्वितीया को दो पद्रहवा भाग आवृत करता है,
तृतीया को तीन पद्रहवें भाग आवृत करता है,
-यावत्-अमावास्या को पद्रह भाग आवृत करता है ।

४ ध्रुवराहु शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रतिदिन चद्रकला के पद्रहवें भाग को अनावृत करता है ।यथा-
प्रतिपदा को एक पद्रहवा भाग अनावृत करता है,
द्वितीया को दो पद्रहवे भाग अनावृत करता है,
तृतीया को तीन पद्रहवें भाग अनावृत करता है,
-यावत्-पूर्णिमा को पद्रहभागो को अनावृत करता है ।

५ छ नक्षत्र चद के साथ पद्रह मुहूर्त पर्यत योग करते हैं, यथा–
शतभिषक, भरणि, आर्द्रा, अश्लेपा, स्वाति, ज्येष्ठा ।

६ चैत्र तया आश्विन मे पद्रह मुहूर्त का दिन होता है और पद्रह मुहूर्त की रात्रि होती है ।

७ विद्यानुप्रवाद पूर्व के पद्रह वस्तु है ।

८ मनुष्य के पद्रह योग हैं । यथा-
सत्य मन प्रयोग, मृषा मन प्रयोग, सत्य-मृषा मन प्रयोग, असत्यामृषा मन प्रयोग, सत्य वचन प्रयोग, असत्य वचन प्रयोग, सत्य-मृषा वचन प्रयोग, असत्यामृषा वचन प्रयोग, औदारिक शरीर काय प्रयोग, औदारिक मिश्र शरीर काय प्रयोग, वैंक्रिय शरीर काय प्रयोग, वैंक्रिय मिश्र शरीर काय प्रयोग,
आहारक शरीर काय प्रयोग, आहार मिश्र शरीर काय प्रयोग,-

कार्मण शरीर काय प्रयोग ।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पद्रह पल्योपम की है ।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पद्रह सागरोपम की है ।

११ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति पद्रह पल्योपम की हे ।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति पद्रह पल्योपम की है ।

१३ महाशुक्रकल्प के कुछ देवो की स्थिति पद्रह सागरोपम की है ।

१४ नद सुनद नदावर्त नदप्रभ नदकात नदवर्ण नदलेश्य नदध्वज नदशृ ग नदश्रेष्ठ नदकूट नदोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति पद्रह सागरोपम की होती है ।

१५ नद-यावत्-नदोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे पद्रह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१६ नद-यावत्-नदोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा पद्रह हजार वर्ष से होती है ।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो पँद्रह भव करके सिद्ध-यावत् सर्व दुखो का अत करेंगे ।

सोलहवां समवाय

१ सूत्रकृताग के सोलहवें अध्ययन का नाम गाथा षोडशक है यथा-समय, वैतालीय, उपसर्ग-परिज्ञा, स्त्री-परिज्ञा, नरक-विभक्ति, महावीर स्तुति, कुशील परिभाषित, वीर्य, धर्म, समाधि, मार्ग, समवसरण, याथातथिक, ग्रथ, यमकीय, गाथा षोडशक ।

२ कषाय सोलह है, यथा-
अनतानुवधी क्रोध, मान, माया, लोभ।
अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ।
प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ।
सज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ।

३ मेरू पर्वत के सोलह नाम हैं, यथा- मदर, मेरु, मनोरम, सुदर्शन, स्वयप्रभ, गिरिराज, रत्नोच्चय, प्रियदर्शन, लोक मध्य, लोकनाभि, अर्थ, सूर्यावर्त, सूर्यावरण, उत्तर, दिगादि, अवतसक।

४ पुरूषो मे प्रख्यात पार्श्वनाथ अरिहत की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा सोलह हजार थी।

५ आत्मप्रवाद पूर्व के सोलह वस्तु हैं।

६ चमरेन्द्र और वलेन्द्र के अवतारिकालयनो का आयाम-विष्कम्भ सोल्ह हजार योजन का है।

७ लवण समुद्र के मध्यभाग में वेला की वृद्धि सोलह हजार योजन की है।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

९ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सोलह सागरोपम की है।

१० कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

१२ महाशुक्रकल्प के कुछ देवो की स्थिति सोलह सागरोपम की है।

१३ आवर्त व्यावर्त नदावर्त महानदावर्त अकुश अकुशप्रलब भद्र सुभद्र महाभद्र सर्वतोभद्र भद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव

उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति सोलह सागरोपम की होती है ।

१४ आवर्त-यावत्-भद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे सोलह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१५ आवर्त-यावत्-भद्रोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा सोलह हजार वर्प से होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो सोलह भव करके सिद्ध-यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे ।

सत्तरहवां समवाय

१ सत्तरह प्रकार के असयम है, यथा-
पृथ्वीकाय असयम, अप्काय असयम, तेजस्काय असयम, वायुकाय असयम, वनस्पतिकाय असयम, द्वीन्द्रिय असयम, त्रीन्द्रिय असयम, चतुरिन्द्रिय असयम, पचेन्द्रिय असयम, अजीवकाय असयम, प्रेक्षा असयम, उपेक्षा असयम, अपहृत्य असयम, अप्रमार्जना असयम, मन असयम, वचन असयम, काय असयम ।

२ सत्तरह प्रकार का सयम है, यथा-
पृथ्वीकाय सयम, अप्काय सयम, तेजस्काय सयम, वायुकाय सयम, वनस्पतिकाय सयम, द्वीन्द्रिय सयम, त्रीन्द्रिय सयम, चतुरिन्द्रिय सयम, पचेन्द्रिय सयम, अजीवकाय सयम, प्रेक्षा सयम, उपेक्षा सयम, अपहृत्य सयम, प्रमार्जना सयम, मन सयम, वचन सयम, काय सयम ।

३ मानुषोत्तर पर्वत की ऊचाई सत्तरहसो इकवीस योजन की है ।

४ सर्व वेलधर और अनुवेलधर नागराजो के आवास पर्वतो की ऊचाई सतरहसो इकवीस योजन की है।

५ लवणसमुद्र के पेंदे से ऊपर की सतह की ऊचाई सतरह हजार योजन की है।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भूभाग से कुछ अधिक सतरह हजार योजन की ऊचाई पर जघा चारण और विद्या चारण मुनियो की तिरछी गति कही है।

७ चमर असुरेन्द्र के तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत की ऊचाई सतरहसो इकवीस योजन की है।

८ वलि असुरेन्द्र के रूचकेन्द्रउत्पात पर्वत की ऊचाई सतरहसो इकवीस योजन की है।

९ मरण सतरह प्रकार का है,-यथा-आविचि मरण, अवधि मरण, आत्यन्तिक मरण, वलाय मरण, वशार्त मरण, अतशल्य मरण, तद्भव मरण, वाल मरण, पडित मरण, वाल-पडित मरण, छद्मस्थ मरण, केवली मरण, वैहायश मरण, गृद्धपृष्ठ मरण, भक्तप्रत्याख्यान मरण, इगिनी मरण, पादपोपगमन मरण।

१० सूक्ष्म सपराय भाव मे वर्तमान सूक्ष्म सापरायिक भगवान के सतरह कर्मप्रकृतियो का बन्ध होता है, यथा-

आभिनिवोधिक ज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, साता वेदनीय, यशोकीर्ति नाम, उच्च गोत्र, दानातराय, लाभातराय, भोगातराय, उपभोगातराय, वीर्यातराय।

११ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सतरह पल्योपम की है ।

१२ धूमप्रभा पृथ्वी के नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति सतरह सागरोपम की है ।

१३ तम.प्रभा पृथ्वी के नैरयिको की जघन्य स्थिति सतरह सागरोपम की है ।

१४ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति सतरह पल्योपम की है ।

१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति सतरह पल्योपम की है ।

१६ महाशुक्रकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति सतरह सागरोपम की है ।

१७ सहस्रारकल्प के देवो की जघन्य स्थिति सतरह सागरोपम की है ।

१८ सामान सुसामान महासामान पद्म महापद्म कुमुद-महाकुमुद नलिन महानलिन पौंडरीक महापौडरीक शुक्ल महाशुक्ल सिंह सिंहकात सिंहवीर्य भाविय विमान मे जो देव उत्पन्न होते है, उनकी स्थिति सतरह सागरोपम की होती है ।

१९ सामान यावत्-भाविय विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे सतरह पक्ष मे श्वासोच्छवास लेते हैं ।

२० सामान-यावत्-भाविय विमान मे जो देव उत्पन्न होते है, उनकी आहार लेने की इच्छा सतरह हजार वर्ष से होती है।

२१ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है, जो सतरह भव करके सिद्धि-यावत्-सर्व दुखो का अत करेंगे ।

६ प्रत्याख्यान पूर्व के बीस वस्तु है ।

७ उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर बीस सागरोपम कोटाकोटी का कालचक्र है ।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बीस पल्योपम की है ।

९ तमःप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बीस सागरोपम की है ।

१० कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति बीस पल्योपम की है ।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति बीस पल्योपम की है ।

१२ प्राणतकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति बीस सागरोपम की है ।

१३ आरणकल्प के देवो की जघन्य स्थिति बीस सागरोपम की है ।

१४ सात विसात सुविसात सिद्धार्थ उत्पल भित्तिल तिगिच्छ दिशासौवस्तिक प्रलव रुचिर पुष्प सुपुष्प पुष्पावर्त पुष्पप्रभ पुष्पकात पुष्पवर्ण पुष्पलेश्य पुष्पध्वज पुष्पशृ ग पुष्पश्रेष्ठ, पुष्पोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति बीस सागरोपम की होती है ।

१५ सात - यावत्- पुष्पोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे बीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१६ सात - यावत्- पुष्पोत्तरावतसक विमान में जो देव उत्पन्न होते है उनकी आहार लेने की इच्छा बीस हजार वर्ष से होती है ।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो बीस भव करके सिद्ध

-यावत्- सर्व दु खो का अत करेंगे ।

इकबीसवां समवाय

१ सवल दोष इकबीस है, यथा-
हस्तकर्म करना, मैथुन सेवन करना, रात्रिभोजन करना,
आधाकर्म आहार लेना, सागारिक पिंड खाना,
औद्देशिक एव क्रीत आहार लेना,
बार बार प्रत्याख्यान तौडकर भोजन करना,
छ मास मे एक गण से दूसरे गण मे जाना,
एक मास मे तीन बार पानी का प्रवाह लाघना,
एक मास मे तीन बार मायाचार करना,
राजपिंड खाना, जानवूझकर जीवहिंसा करना,
जानवूझकर मृषावाद वोलना,
जानबूझकर विना दी हुई वस्तु लेना,
जानवूझकर सचित्त पृथ्वी पर वैठना या शयन करना,
सचित्त शिलापर अथवा घुनवाले काष्ठ पर बैठना या शयन करना,
जीव, प्राण, हरित, उत्तिग, पनक, दग, मृत्तिका, तथा जालेवाली भूमिपर सोना या वैठना,
जानवूझकर मूल, कद, त्वचा, प्रवाल, पुष्प, फल, हरित आदि का भोजन करना ।
एक वर्ष मे दस बार पानी का प्रवाह लाघना,
एक वर्ष मे दस बार मायाचार करना,
सचित जल से गीले हाथ द्वारा अशनादि लेना ।

२ मोहनीय कर्म की सात प्रकृतिया क्षय हो गई है ऐसे निवृत्ति-

६ प्रत्याख्यान पूर्व के वीस वस्तु है।

७ उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर वीस सागरोपम कोटाकोटी का कालचक्र है।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति वीस पल्योपम की है।

९ तमःप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति वीस सागरोपम की है।

१० कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति वीस पल्योपम की है।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति वीस पल्योपम की है।

१२ प्राणतकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति वीस सागरोपम की है।

१३ आरणकल्प के देवो की जघन्य स्थिति वीस सागरोपम की है।

१४ सात विसात सुविसात सिद्धार्थ उत्पल भित्तिल तिगिच्छ दिशासौवस्तिक प्रलव रुचिर पुष्प सुपुष्प पुष्पावर्त पुष्पप्रभ पुष्पकात पुष्पवर्ण पुष्पलेश्य पुष्पध्वज पुष्पशृ ग पुष्पश्रेष्ठ, पुष्पोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति वीस सागरोपम की होती है।

१५ सात - यावत्- पुष्पोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे बीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१६ सात - यावत्- पुष्पोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा वीस हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो वीस भव करके सिद्ध

१२ श्रीवत्स - यावत्- आरणावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे इकवीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१३ श्रीवत्स - यावत्- आरणावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं, उनकी आहार लेने की इच्छा इकवीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो इकवीस भव करके सिद्ध- यावत्- सर्व दुखो का अत करेगे।

बावीसवां समवाय

१ परीपह बावीस है, यथा-
क्षुधा परीपह, पिपासा परीपह, शीत परीपह, उष्ण परीपह,
दश-मशक परीपह, अचेल परीपह, अरति परीपह,
स्त्री परीपह, चर्या परीपह, निपद्या परीपह, शय्या परीपह,
आक्रोश परीपह, वध परीपह, याचना परीपह,
अलाभ परीपह, रोग परीपह, तृणस्पर्श परीपह,
जल्ल परीपह, सत्कार-पुरस्कार परीपह, प्रज्ञा परीपह,
अज्ञान परीपह, दर्शन परीपह।

२ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र छिन्न छेद नयवाले है और वे स्वसमय के सूत्रो की परिपाटी मे है।

३ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र अछिन्न छेद नयवाले है और वे आजीविक सूत्रो की परिपाटी मे है।

४ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र तीन नयवाले है और वे त्रैराशिक सूत्रो की परिपाटी मे हैं।

५ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र चार नयवाले हैं और वे स्वसमय के सूत्रो की परिपाटी मे है।

६ पुद्गल परिणाम बाईस प्रकार का है, यथा-
कृष्ण, नील, रक्त, पीत, शुक्लवर्ण परिणाम ।
सुगध, दुगध परिणाम ।
तिक्त, कटुक, कषाय, अम्ल, मधुर रस परिणाम ।
कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, अगुरुलघु, गुरुलघु स्पर्श परिणाम ।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बाईस पल्योपम की है ।

८ तम प्रभा पृथ्वी के नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति बाईस सागरोपम की है ।

९ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम की है ।

१० कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति बाईस पल्योपम की है ।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति बाईस पल्योपम की है ।

१२ अच्युतकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति बाईस सागरोपम की है ।

१३ प्रथम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम की है ।

१४ महित विश्रुत विमल प्रभास वनमाल अच्युतावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति बाईस सागरोपम की होती है ।

१५ महित -यावत्- अच्युतावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है बाईस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१६ महित - यावत्- अच्युतावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते

हैं, उनकी आहार लेने की इच्छा वाईस हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बाईस भव करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे ।

तेईसवां समवाय

१ सूत्रकृताग के तेईस अध्ययन हैं, यथा-
समय, वैतालिक, उपसर्ग परिज्ञा, स्त्री परिज्ञा, नरक विभक्ति, महावीर स्तुति, कुशील परिभासित, वीर्य, धर्म, समाधि, मार्ग, समवसरण, आख्यातहित, ग्रथ, यमतीत, गाथा, पुडरीक, क्रियास्थान, आहार परिज्ञा, अप्रत्याख्यान क्रिया, अनगारश्रुत, आर्द्रकीय, नालदीय ।

२ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे इस अवसर्पिणी मे तेईस जिन भगवान् को सूर्योदय के समय केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुआ था ।

३ जम्बूद्वीप मे इस अवसर्पिणी मे तेईस तीर्थंकर पूर्वभव मे इग्यारह अग के ज्ञाता थे, यथा- अजित - यावत्- वर्धमान, अरहत ऋषभदेव चौदह पूर्व के ज्ञाता थे ।

४ जम्बूद्वीप मे इस अवसर्पिणी मे तेईस तीर्थंकर पूर्वभव मे माडलिक राजा थे, अरहत ऋषभ कौसलिक पूर्वभव मे चक्रवर्ती थे ।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तेईस पल्योपम की है ।

६ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तेईस सागरोपम की है ।

७ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तेईस पल्योपम की है।

८ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो कि स्थिति तेईस पल्योपम की है।

९ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति तेईस सागरोपम की है।

१० सबसे नीचे के ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति तेईस सागरोपम की होती है।

११ वे ग्रैवेयक देव तेईस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१२ उन ग्रैवेयक देवो को आहार लेने की इच्छा तेईस हजार वर्ष से होती है।

१३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो तेईस भव करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो का अन्त करेंगे।

चोवीसवां समवाय

१ देवाधिदेव चौवीस है, यथा-
ऋषभ, अजित, सभव, अभिनदन, सुमति, पद्मप्रभ,
सुपार्श्व, चदप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य,
विमल, अनत, धर्म, शाति, कुथु, अर, मल्ली,
मुनिसुव्रत, नमि, नेमी, पार्श्व, वर्धमान।

२ लघु हिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वतो की जीवा का आयाम चौवीस हजार नौ सो बत्तीस योजन तथा एक योजन के अडतीसवें भाग से कुछ अधिक है।

३ देवताओ के चौवीस स्थान इन्द्रवाले है, शेप अहमिन्द्र अर्थात् इद्र और पुरोहित रहित है।

४ उत्तरायण में रहा हुआ सूर्य चौवीस अगुल प्रमाण प्रथम प्रहर की छाया करके पीछे मुडता है।

५ महानदी गगा और सिंधु का प्रवाह कुछ अधिक चौवीस कोश का चोडा है।

६ महानदी रक्ता और रक्तवती का प्रवाह कुछ अधिक चौवीस कोश का चौडा है।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चौवीस पल्योपम की है।

८ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति चौवीस सागरोपम की है।

९ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति चौवीस पल्योपम की है।

१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति चौवीस पल्योपम की है।

११ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक देवो की स्थिति चौवीस सागरोपम की है।

१२ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति चौवीस सागरोपम की होती है।

१३ वे देव चौवीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१४ उन देवो को आहार लेने की इच्छा चौवीस हजार वर्ष से होती है।

१५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो चौवीस भव करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

पचीसवां समवाय

१ प्रथम और अतिम तीर्थंकरो के पाच महाव्रतो की पचीस

भावनाए है, यथा-
प्रथम महाव्रत की पाच भावनाए--
ईर्या समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति, प्रकाश वाले पात्र मे भोजन करना, आदान-भाड-मात्र-निक्षेपण समिति ।५।
द्वितीय महाव्रत की पाच भावनाए--
विवेकपूर्वक बोलना, क्रोध, लोभ, भय और हास्य का त्याग ।५।
तृतीय महाव्रत की पाच भावनाए
आवास की आज्ञा लेना, आवास की सीमा जानना,
आवास की आज्ञा स्वयं लेना,
सार्धमिक के आवास का परिभोग भी आज्ञा लेकर करना,
सबके लिए लाये हुए आहार का परिभोग गुरु आदि की आज्ञा लेकर करना ।५।
चतुर्थ महाव्रत की पाच भावनाए-
स्त्री, पशु या नपुसक अधिष्ठित शय्या या आसन का त्याग करना, स्त्री कथा न करना, स्त्री की इन्द्रियो को न देखना, पूर्वकृत कामक्रीडा का स्मरण न करना, विकार वर्धक आहार न करना ।५।
पचम महाव्रत की पाच भावनाए--
पाचो इन्द्रियो के विपयो पर ममत्व न करना ।५।

२ मल्लिनाथ अरिहत पच्चीस धनुप ऊचे थे ।

३ सर्व दीर्घ वैताढ्य पर्वत पचीस योजन ऊचे है,
तथा भूमि मे पच्चीस कोश ऊडे है ।

४ शर्कराप्रभा पृथ्वी मे पचीस लाख नरकावास है ।

५ चूलिका सहित आचाराग भगवत के पचीस अध्ययन है ।

यथा- शस्त्र-परिज्ञा, लोक-विजय, शीतोष्णीय, मम्यक्त्व, आवति, धूत, विमोह, उपधान-श्रुत, महा परिज्ञा ।
पिडैपणा, शय्या, ईर्या, भापा अध्ययन, वस्त्रैपणा, पात्रैपणा, अवग्रह-प्रतिमा, सप्त-सप्तैकका, भावना, विमुक्ति ।
(अतिम विमुक्ति अध्ययन निशीथ अध्ययन सहित पचीसवा है ।)

६ सक्लिष्ट परिणाम वाले अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय नामकर्म की उत्कृष्ट पचीस प्रकृतियो का वन्ध करता है । यथा—
तिर्यंचगतिनाम, विकलेन्द्रिय जातिनाम, औदारिक शरीरनाम, तैजसशरीरनाम, कार्मणशरीरनाम, हुडकसस्थान नाम, औदारिकशरीरागोपाग नाम, सेवार्तसघयणनाम, वर्णनाम, गधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, तिर्यंच आनुपूर्वीनाम, अगुरुलघुनाम, उपघातनाम, त्रसनाम, वादरनाम, अपर्याप्तनाम, प्रत्येक शरीरनाम, अस्थिरनाम, अशुभनाम, दुर्भगनाम, अनादेयनाम, अयशकीर्तिनाम, निर्माण-नामकर्म ।

७ महानदी गगा-सिधु का मुक्तावली हार की आकृतिवाला पचीस कोश का विस्तृत प्रवाह पूर्व-पश्चिम दिशा मे घटमुख से अपने अपने कुड मे पडता है ।

८ महानदी रक्ता-रक्तवती का मुक्तावली हार की आकृतिवाला पचीस कोश का विस्तृत प्रवाह पूर्व- पश्चिम दिशा मे घटमुख से अपने अपने कुड मे पडता है ।

९ लोकविंदुसार पूर्व की पचीस वस्तु हैं ।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पचीस पल्योपम की है ।

११ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति पचीस सागरोपम की है।

१२ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति पचीस पल्योपम की है।

१३ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति पचीस पल्योपम की है।

१४ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति पचीस सागरोपम की है।

१५ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति पचीस सागरोपम की होती है।

१६ वे देव पचीस पक्ष से श्वासोच्छ्‌वास लेते हैं।

१७ उन देवो की आहार लेने की इच्छा पचीस हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो पचीस भव करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

छब्बीसवां समवाय

१ दशाश्रुतस्कध, वृहत्कल्प और व्यवहार के छब्बीस उद्देशन-काल हैं।

२ अभवसिद्धिक जीवो के मोहनीय कर्म की छब्बीस प्रकृतिया सत्ता मे होती हैं, यथा-
मिथ्यात्वमोहनीय, सोलह कपाय, स्त्री वेद, पुरुप वेद,
नपुसक वेद, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा।

३ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति छब्बीस पल्योपम की है।

४ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति छब्बीस

व्यवहार होता है ।

३ नक्षत्रमास सत्तावीस अहोरात्रि का होता है ।

४ सौधर्म और ईशानकल्प के विमानो की भूमी सत्तावीस योजन की मोटी है ।

५ वेदक सम्यक्त्व के बध से विरत जीव के सत्ता मे मोहनीयकर्म की सत्तावीस उत्तर प्रकृतिया रहती है ।

६ श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सूर्य सत्तावीस अगुल प्रमाण से पौरुपी छाया करके दिन को छोटा और रात्रि को बडी करता हुआ गति करता है ।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सत्तावीस पल्योपम की है ।

८ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति सत्तावीस सागरोपम की है ।

९ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति सत्तावीस पल्योपम की है ।

१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति सत्तावीस पल्योपम की है ।

११ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति सत्तावीस सागरोपम की है ।

१२ मध्यम मध्यम ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति सत्तावीस सागरोपम की होती है ।

१३ वे देव सत्तावीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१४ उन देवो की आहार लेने की इच्छा सत्तावीस हजार वर्ष से होती है ।

१५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो सत्तावीस भव करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

अठाबीसवां समवाय

१ आचार प्रकल्प अठाबीस प्रकार का है, यथा-
एक मास की आरोपणा,
एक मास और पाच दिन की आरोपणा,
एक मास और दस दिन की आरोपणा,
एक मास और पद्रह दिन की आरोपणा,
एक मास और बीस दिन की आरोपणा,
एक मास और पचीस दिन की आरोपणा,
इसी प्रकार दो, तीन और चार मास की आरोपणा,
उपघातिका आरोपणा, अनुपघातिका आरोपणा,
कृत्स्ना आरोपणा, अकृत्स्ना आरोपणा ।

२ कुछ भवसिद्धिक जीवो के सत्ता मे मोहनीय कर्म की सत्ताबीस प्रकृतिया रहती है, यथा-
सम्यक्त्व वेदनीय, मिथ्यात्व वेदनीय, सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीय, सोलह कषाय, नव नो कषाय ।

३ आभिनिबोधिक ज्ञान अठाबीस प्रकार का है, यथा-
६—श्रोतेन्द्रिय अर्थावग्रह, चक्षु इन्द्रिय अर्थावग्रह,
घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह,
स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह, नो इन्द्रिय अर्थावग्रह ।
४—श्रोत्रेन्द्रिय व्यजनावग्रह, घ्राणेन्द्रिय व्यजनावग्रह,
रसनेन्द्रिय व्यजनावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय व्यजनावग्रह ।
६—श्रोत्रेन्द्रिय ईहा, चक्षु इन्द्रिय ईहा, घ्राणेन्द्रिय ईहा,
रसनेन्द्रिय ईहा, स्पर्शनेन्द्रिय ईहा, नो इन्द्रिय ईहा ।
६—श्रोत्रेन्द्रिय अवाय, चक्षु इन्द्रिय अवाय, घ्राणेन्द्रिय अवाय,

रसनेन्द्रिय अवाय, स्पर्शनेन्द्रिय अवाय, नो इन्द्रिय अवाय।

६--श्रोत्रेन्द्रिय धारणा, चक्षु इन्द्रिय धारणा, घ्राणेन्द्रिय धारणा, रसनेन्द्रिय धारणा, स्पर्शनेन्द्रिय धारणा, नो इन्द्रिय धारणा।

४ ईशान कल्प मे अठावीस लाख विमान हैं।

५ देवगति बाधनेवाले जीव के नामकर्म की अठावीस उत्तर-प्रकृतियो का वन्ध होता है, यथा-

देवगति, पचेन्द्रिय जाति, वैक्रिय शरीर, तेजस शरीर, कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रिय शरीरागोपाग, वर्ण, गध, रस, स्पर्श, देवानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उच्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर,(स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, आदेय, अनादेय) इनमे से एक-एक का वन्ध,

सुभग, सुस्वर, यशो-कीर्ति, निर्माण नामकर्म।

इसी प्रकार नरकगति बाधनेवाले जीव के भी नामकर्म की अठावीस उत्तर कर्मप्रकृतियो का वन्ध होता है, यथा-

अप्रशस्त विहायोगति, हुडक सस्थान, अस्थिर, दुर्भग, दुस्वर, अशुभ, अनादेय, अयश-कीर्ति। शेष पूर्वोक्त प्रकृतिया।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।

७ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति अठावीस सागरोपम की है।

८ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।

९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।

१० ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति अठावीस

सागरोपम की है।

११ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक विमानों मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति अठावीस सागरोपम की होती है।

१२ वे देव अठावीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१३ उन देवो की आहार लेने की इच्छा अठावीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो अठावीस भव करके सिद्ध-यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

उनत्तीसवां समवाय

१ पापश्रुत उनत्तीस प्रकार का है, यथा-
भूमि, उत्पात, स्वप्न, आकाश, शरीर, स्वर, व्यजन, लक्षण।
ये आठ निमित्त शास्त्र है।
भूमि शास्त्र तीन प्रकार का है, यथा-
सूत्र, वृत्ति, वार्तिक।
इस प्रकार प्रत्येक शास्त्र तीन प्रकार का है।
विकथानुयोग, विद्यानुयोग, मन्त्रानुयोग, योगानुयोग।
अन्यतीर्थिको द्वारा प्रवर्तित योग।

२ आषाढमास उनत्तीस अहोरात्रि का होता है।

३ इसी प्रकार भाद्रपद मास,

४ कार्तिक मास,

५ पौष मास,

६ फाल्गुन मास,

७ वैशाख मास।

८ चद्रमास का एक दिन उनत्तीस मुहूर्त का होता है।

९ प्रशस्त अध्यवसायवाला सम्यग् दृष्टि भव्यजीव तीर्थंकर नाम सहित नामकर्म की उनत्तीस उत्तर कर्मप्रकृतियो का बन्ध करके अवश्य वैमानिक देवो मे उत्पन्न होता है।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति उनत्तीस पल्योपम की है।

११ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति उनत्तीस सागरोपम की है।

१२ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति उनत्तीस पल्योपम की है।

१३ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति उनत्तीस पल्योपम की है।

१४ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति उनत्तीस सागरोपम की है।

१५ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति उनत्तीस सागरोपम की होती है।

१६ वे देव उनत्तीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१७ उन देवो की आहार लेने की इच्छा उनत्तीस हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो उनत्तीस भव करके सिद्ध- यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

तीसवां समवाय

१ मोहनीय स्थान तीस है, यथा-

१ जो किसी त्रस प्राणी को पानी मे डुबाकर मारता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

२ जो किसी त्रस प्राणी को तीव्र अशुभ अध्यवसाय से

मस्तक के गीला चमडा बाधकर मारता है वह महा-मोहनीय कर्म बाधता है।

३ जो किसी त्रस प्राणी को मुह बाध करके मारता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

४ जो किसी त्रस प्राणी को अग्नि के धुए से मारता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

५ जो किसी त्रस प्राणी के मस्तक का छेदन करके मारता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

६ जो किसी त्रस प्राणी को छल से मारकर हसता है वह महामोहनीयकर्म बाधता है।

७ जो मायाचार करके तथा असत्य बोलकर अपने अनाचार को छिपाता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

८ जो अपने दुराचार को छिपाकर दूसरे पर कलक देता है वह महामोहनीयकर्म बाधता है।

९ जो कलह बढाने के लिए जानता हुआ मिश्रभापा बोलता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

१० जो पति पत्नि मे मतभेद पैदा करता है, तथा उन्हे मार्मिक वचनो से झेपा देता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

११ स्त्री मे आसक्त व्यक्ति यदि अपने आपको कुवारा कहे तो महामोहनीय कर्म बाधता है।

१२ अत्यत कामुक व्यक्ति यदि अपने आपको ब्रह्मचारी कहे तो महामोहनीय कर्म बाधता है।

१३ जो चापलूसी करके अपने स्वामी को ठगता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है।

१४ जो जिनकी कृपा से समृद्ध बना है वह यदि ईर्ष्या से उनके ही कार्यों मे विघ्न डालता है तो महामोहनीय कर्म बाधता है ।

१५ जो अपने उपकारी की हत्या करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

१६ जो प्रसिद्ध पुरुष की हत्या करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

१७ जो प्रमुख पुरुष की हत्या करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

१८ जो सयमी को पथभ्रष्ट करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

१९ जो महान् पुरुषो की निन्दा करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२० जो न्यायमार्ग की निन्दा करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२१ जो आचार्य उपाध्याय एव गुरु की निन्दा करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२२ जो आचार्य उपाध्याय एव गुरु का अविनय करता है वह महामोहनीय कर्म बाँधता है ।

२३ जो अवहुश्रुत होते हुए भी अपने-आपको वहुश्रुत कहता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२४ जो तपस्वी न होते हुए भी अपने-आपको तपस्वी कहता है वह महामोहनीयकर्म वाधता है ।

२५ जो अस्वस्थ आचार्य आदि की सेवा नही करता है वह महामोहनीय कर्म वाधता है ।

२६ जो आचार्य आदि कुशास्त्र का प्ररूपण करते है वे महामोहनीय कर्म बाधते हैं ।

२७ जो आचार्य आदि अपनी प्रशसा के लिये मत्रादि का प्रयोग करते है वे महामोहनीय कर्म बाधते है ।

२८ जो इहलोक और परलोक मे भोगोपभोग पाने की अभिलाषा करता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२९ जो देवताओ की निन्दा करता है या करवाता है तो वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

३० जो असर्वज्ञ होते हुए भी अपने आपको सर्वज्ञ कहता है वह महामोहनीय कर्म बाधता है ।

२ मडितपुत्र गणधर तीस वर्ष तक श्रमण जीवन मे रहकर सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

३ एक अहोरात्र के तीस मुहूर्त होते हैं, मुहूर्तों के नाम, यथा-
रौद्र, शक्त, मित्र, वायु, सुपीत, अभिचद्र,
माहेन्द्र, प्रलब, ब्रह्म, सत्य, आनन्द, विजय,
विश्वसेन, प्राजापत्य, उपशम, ईशान, तष्ट, भावितात्मा,
वैश्रवण, वरुण, शतऋषभ, गधर्व, अग्निवैश्यायन, आतप,
आवर्त, तष्टवान, भूमहान, ऋषभ, सर्वार्थसिद्ध, राक्षस ।

४ अरहत अरनाथ तीस धनुष ऊचे थे ।

५ सहस्रार देवेन्द्र के तीस हजार सामानिक देव है ।

६ अरहत पार्श्वनाथ तीस वर्ष गृहवास मे रहकर प्रव्रजित हुए थे ।

७ श्रमण भगवान महावीर तीस वर्ष गृहवास मे रहकर प्रव्रजित हुए थे ।

८ रत्नप्रभा पृथ्वी मे तीस लाख नरकावास है ।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तीस पल्योपम की है।

१० तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तीस सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तीस पल्योपम की है।

१२ सवसे ऊपरवाले ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति तीस सागरोपम की है।

१३ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी स्थिति तीस सागरोपम की होती है।

१४ वे देव तीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१५ उन देवो की आहार लेने की इच्छा तीस हजार वर्ष से होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो तीस भव करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे।

इगतीसवां समवाय

१ सिद्धो के इगतीस गुण हैं, यथा-
आभिनिवोधक ज्ञानावरण का क्षय, श्रुतज्ञानावरण का क्षय,
अवधिज्ञानावरण का क्षय, मनपर्यवज्ञानावरण का क्षय,
केवलज्ञानावरण का क्षय, चक्षुदर्शनावरण का क्षय,
अचक्षुदर्शनावरण का क्षय, अवधिदर्शनावरण का क्षय,
केवलदर्शनावरण का क्षय, निद्रा का क्षय, गाढ निद्रा का क्षय,
प्रचला का क्षय, प्रचला-प्रचला का क्षय,
स्त्यानर्धि निद्रा का क्षय, शाता वेदनीय का क्षय,
अशाता वेदनीय का क्षय, दर्शन मोहनीय का क्षय,

चारित्र मोहनीय का क्षय, नरकायु का क्षय,
तिर्यंच आयु का क्षय, मनुष्यायु का क्षय, देवायु का क्षय,
उच्च गोत्र का क्षय, नीचगोत्र का क्षय, शुभ नाम का क्षय,
अशुभ नाम का क्षय, दानातराय का क्षय,
लाभातराय का क्षय, भोगातराय का क्षय,
उपभोगातराय का क्षय, वीर्यातराय का क्षय ।

२ पृथ्वीतल पर मेरु की परिधी कुछ कम इगतीस हजार, छ सो, तेईस योजन की है ।

३ सूर्य अतिम बाह्य मडल मे जब गति करता है तब भरतक्षेत्र मे रहे हुए मनुष्य को इगतीस हजार, आठ सो, इगतीस तथा एक योजन के साठ भागो मे से तीस भाग जितनी दूरी से सूर्य दर्शन होता है ।

४ अधिकमास कुछ अधिक इगतीस अहोरात्र का होता है ।

५ सूर्यमास कुछ न्यून इगतीस अहोरात्र का होता है ।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति इगतीस पल्योपम की है ।

७ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति इगतीस सागरोपम की है ।

८ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति इगतीस पल्योपम की है ।

९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति इगतीस पल्योपम की है ।

१० विजय, वैजयत, जयत और अपराजित विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी जघन्य स्थिति इगतीस सागरोपम की होती है ।

११ सबसे ऊपर के ग्रैवेयक विमानो मे जो देव उत्पन्न होते हैं

उनकी स्थिति इगतीस सागरोपम की होती है ।

१२ वे इगतीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है ।

१३ उनकी आहार लेने की इच्छा इगतीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो इगतीस भव करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे ।

बत्तीसवां समवाय

१ योग सग्रह वत्तीस है, यथा-
आलोचना करना, आलोचना का अन्य से कथन न करना,
आपत्ति आने पर भी धर्म मे दृढ रहना,
सहायता की अपेक्षा किए बिना निस्पृह होकर तप करना,
शिक्षा ग्रहण करना, शृ गार न करना,
किसी को अपने तप की जानकारी न देना,
तथा पूजा प्रतिष्ठा की कामना न करना, लोभ न करना,
परीपह सहन करना, सरलता रखना, पवित्र विचार रखना,
सम्यग्दृष्टि रखना, प्रसन्न रहना,
पचाचार का पालन करना, विनम्र होना, धैर्य रखना,
वैराग्यभाव रखना, छल कपट का त्याग करना,
प्रत्येक धार्मिक क्रिया विधिपूर्वक करना,
नवीन कर्मो का वन्ध न होने देना,
अपने दोषो की शुद्धि करना, सर्व कामनाओ से विरत होना,
मूलगुण विषयक प्रत्याख्यान करना,
उत्तरगुण विषयक प्रत्याख्यान करना,
द्रव्य एव भाव से व्युत्सर्ग करना, प्रमाद छोडना,
शास्त्रोक्त समाचारी का पालन करना, शुभ ध्यान करना,

मरणात कष्ट आने पर भी धर्म में दृढ रहना,
सर्व विषय वासनाओ का त्याग करना,
दोषो का प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध होना,
अतिम समय मे सलेखना करके पडित मरण से मरना ।

२ देवेन्द्र बत्तीस हैं, यथा-
भवनपति देवो के बीस, ज्योतिषी देवो के दो, वैमानिक देवों के दस ।

३ कुथुनाथ अरहत के बत्तीस सो, बत्तीस सामान्य केवली थे ।

४ सौधर्मकल्प मे बत्तीस लाख विमान हैं ।

५ रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे है ।

६ नृत्य बत्तीस प्रकार का है ।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है ।

८ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति बत्तीस सागरोपम की है ।

९ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है ।

१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है ।

११ विजय, वैजयत, जयत और अपराजित विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति बत्तीस सागरोपम की होती है ।

१२ वे देव बत्तीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१३ उन देवो की आहार लेने की इच्छा बत्तीस हजार वर्ष से होती है ।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बत्तीस भव करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो का अत करेंगे ।

ज्ञानादि गुणो मे जो अधिक हो उन्हे पूछे विना अन्य को इच्छानुसार प्रचुर आहार देना,

,, उनसे पूर्व इच्छानुसार आहार जल्दी जल्दी खाना,

,, उनके वुलाने पर न जाना,

,, उनके समक्ष मर्यादा से अधिक वोलना,

,, उनके वुलाने पर विनय रहित उत्तर देना,

,, उनके वुलाने पर अपने स्थान से ही उत्तर देना,

,, उनके प्रति असभ्य वचन कहना,

,, उनके आदेशो की अवहेलना करना,

,, उनकी धर्मकथा मे अन्यमनस्क रहना,

,, उनकी भूल निकालना,

,, उनकी कथा भग करना, या स्वय कथा कहना,

,, उनकी धर्मपरिपद् का भग करना,

,, उनकी धर्मपरिषद् मे अपना गौरव दिखलाना,

,, उनके शय्या सस्तारक को पैर

लगाना,

ज्ञानादि गुणो मे जो अधिक हो उनके शय्या सस्तारक पर खडे होना, वैठना या शयन करना,

,, उनके आसन से ऊचे आसन पर खडे होना, वैठना या शयन करना,

,, उनके वरावर आसन पर खडा होना, वैठना या शयन करना,

२ चमरेन्द्र की चमरचचा राजधानी के प्रत्येक द्वार के वाहर तेतीस-तेतीस भौम नगर हैं।

३ महाविदेह क्षेत्र का विष्कम्भ कुछ अधिक तेतीस हजार योजन का है।

४ सूर्य वाह्य अतिम मडल से जव पूर्व तृतीय मडल मे गति करता है तव जम्वूद्वीप मे रहे हुए मनुष्य को कुछ न्यून तेतीस हजार योजन दूर से सूर्य-दर्शन होता है।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिको की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

६ तमस्तमा पृथ्वी के काल, महाकाल, रौर और महारौर नरकावासो मे उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है।

७ अप्रतिष्ठान नरकावास मे नैरयिको की अजघन्योत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है।

८ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

१० विजय, वैजयत, जयत और अपराजित विमान मे जो देव

उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की होती है।

११ सर्वार्थसिद्ध महा विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी अजघन्योत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की होती है।

१२ वे देव तेतीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते है।

१३ उन देवो की आहार लेने की इच्छा तेतीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो तेतीस भव करके सिद्ध - यावत्- दुखो का अत करेंगे।

चौतीसवां समवाय

१ बुद्धातिशय चौतीस है, यथा-

१ मस्तक के केश, दाढो, मूछ, रोम और नखो का मर्यादा से अधिक न वढना,

२ शरीर का स्वस्थ एव निर्मल रहना,

३ रक्त और मास का गाय के दूध के समान श्वेत रहना,

४ पद्मगध के समान श्वासोच्छ्वास का सुगधित होना, -

५ आहार और शौच क्रिया का प्रच्छन्न होना,

६ तीर्थकर देव के आगे आकाश मे धर्मचक्र रहना,

७ उनके ऊपर तीन छत्र रहना,

८ दोनो ओर श्रेष्ठ चवर रहना,

९ आकाश के समान स्वच्छ स्फटिक मणी का वना हुआ पादपीठ वाला सिहासन होना,

१० तीर्थंकर देव के आगे आकाश मे इन्द्रध्वज का चलना,

११ जहा जहा अरहत भगवत ठहरते है या बैठते है वहा

७ अल्पशब्द और अधिक अर्थ,
८ पूर्वापर विरोध रहित,
९ शिष्ट भाषा,
१० असदिग्ध भापा,
११ स्पष्ट भापा,
१२ हृदयग्राही भापा,
१३ देश-कालानुरूप अर्थ,
१४ तत्वानुरूप व्याख्या,
१५ सम्बद्ध व्याख्या,
१६ पद और वाक्यो का सापेक्ष होना,
१७ विपय का यथार्थ प्रतिपादन,
१८ भाषा माधुर्य,
१९ मर्म का कथन न करना,
२० धर्म सम्बद्ध प्रतिपादन,
२१ विशिष्ट शब्दार्थ का प्रतिपादन,
२२ परनिन्दा और आत्मप्रशसा रहित कथन,
२३ श्लाघनीय भापा,
२४ कारक, काल, वचन, लिंग आदि के विपर्यास रहित भापा,
२५ आकर्षक भाषा,
२६ अश्रुतपूर्व व्याख्या,
२७ धाराप्रवाह कथन,
२८ विभ्रम, विक्षेप, रोप, भय, लोभ आदि दोप रहित भापा,
२९ एक ही विपय का विविध प्रकार से प्रतिपादन,
३० विशिष्टतायुक्त भापा,
३१ वर्ण-

३२ पद और वाक्यो का अलग अलग प्रतीत होना,
३३ ओजयुक्त भाषा,
३४ खेदरहित कथन,
३५ तत्वार्थ की सम्यक् सिद्धि ।

२ अरहत कुथुनाथ पेंतीस धनुष ऊचे थे ।

३ दत्त वासुदेव पेंतीस धनुष ऊचे थे ।

४ नन्दन वलदेव पेंतीस धनुप ऊचे थे ।

५ सौधर्म कल्प की सुधर्मा सभा मे माणवक चैत्यस्तम्भ के नीचे ऊपर साढे वारह साढे वारह योजन छोडकर मध्य के पेंतीस योजन मे वज्रमय वर्तुलाकार डिव्वे मे जिन भगवान की अस्थिया हैं ।

६ दूसरी और चौथी इन दो पृथ्वियो मे पेतीस लाख नरकावास है।

छत्तीसवां समवाय

१ उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन है, यथा-
विनयश्रुत, परीषह, चातुरगीय, असस्कृत, अकाम-मरणीय, पुरुष-विद्या, औरभ्रीय, कापिलीय, नमि-प्रव्रज्या, द्रुम-पत्रक, बहुश्रुत-पूजा, हरिकेशीय, चित्त-सभूत, इषुकारीय, सभिक्षुक, समाधिस्थान, पाप-श्रमणीय, सयतीय, मृगचर्या, अनाथ-प्रव्रज्या, समुद्रपालीय, रहनेमीय, गौतम-केशीय, समितीय, यज्ञीय, समाचारी, खलुकीय, मोक्षमार्गगति, अप्रमाद, तपोमार्ग, चरण-विधि, प्रमादस्थान, कर्मप्रकृति, लेश्या अध्ययन, अनगार-मार्ग, जीवाजीवविभक्ति ।

२ चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा छत्तीस योजन ऊची है ।

३ श्रमण भगवान महावीर के छत्तीस हजार आर्या थी ।

४ चैत्र तथा आश्विन मास मे एक दिन पौरुपी छाया का प्रमाण छत्तीस अगुल का होता है।

सैंतीसवां समवाय

१ अरहत कुथुनाथ के सैंतीस गणधर थे।

२ हेमवत और हेरण्यवत की जीवा का आयाम सैंतीस हजार, छ सौ, चोहत्तर योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो में से कुछ अधिक सोलह भाग का है।

३ विजय, वैजयत, जयत और अपराजिता-इन सब राजधानियो के प्राकारो की ऊचाई सैंतीम योजन की है।

४ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग मे सैंतीस उद्देशन-काल है।

५ कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन सूर्य सैंतीस अगुल प्रमाण पौरुपी छाया करके गति करता है,

अड़तीसवां समवाय

१ प्रसिद्ध पुरुष अरहत पार्श्वनाथ के उत्कृष्ट अडतीस हजार आर्या थी।

२ हेमवत और हैरण्यवत की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि अडतीस हजार, सात सौ, चालीस योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से कुछ न्यून दसभाग की है।

३ मेरुपर्वत के द्वितीय काड की ऊचाई अडतीस हजार योजन की है।

४ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग मे अडतीस उद्देशन काल हैं।

उनचालीसवां समवाय

१ अरहत नमिनाथ के उनचालीस सो अवधिज्ञानी थे ।

२ समयक्षेत्र मे उनचालीस कुलपर्वत है, यथा-
तीस वर्षधर पर्वत, पाच मेरु पर्वत, चार इषुकार पर्वत ।

३ दूसरी, चौथी, पाचवी, छठी, और सातवी—इन पाच पृथ्वियो मे उनचालीस लाख नरकावास हैं ।

४ ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयु—इन चार मूलकर्म प्रकृतियो की उनचालीस उत्तरकर्मप्रकृतिया है ।

चालीसवां समवाय

१ अरहत अरिष्ट नेमिनाथ की चालीस हजार आर्या थी ।

२ मेरु चूलिका चालीस योजन ऊची है ।

३ अरहत शातिनाथ चालीस धनुष ऊचे थे ।

४ भूतानन्द नागकुमारेन्द्र के चालीस लाख भवनावास है ।

५ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के तृतीय वर्ग मे चालीस उद्देशन-काल हैं ।

६ फाल्गुन पूर्णिमा के दिन सूर्य चालीस अगुल प्रमाण पौरुषी छाया करके गति करता है ।

७ इसी प्रकार कार्तिक पूर्णिमा के दिन भी ।

८ महाशुक्र कल्प मे चालीस हजार विमानावास है ।

इगतालीसवां समवाय

१ अरहत नमिनाथ की इगतालीस हजार आर्या थी ।

२ चार पृथ्वियो मे इगतालीस हजार नरकावास हैं, यथा-

रत्नप्रभा, पकप्रभा, तम प्रभा, तमस्तमाप्रभा ।

३ महालिकाविमानप्रविभक्ति के प्रथम वर्ग मे इगतालीस उद्देशनकाल हैं ।

बियालीसवां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर ने कुछ अधिक बियालीस वर्ष का श्रामण्य पर्याय पालकर सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से रहित हुए ।

२ जम्बूद्वीप के पूर्वी चरमान्त मे गोस्तूप आवास पर्वत के चरमान्त का अव्यवहित अतर बियालीस हजार योजन का है ।

३ इसी प्रकार दकभास, शख, और दकसीम पर्वत का अतर भी है ।

४ कालोद समुद्र मे बियालीस चद्र और बियालीस सूर्य त्रिकालवर्ती हैं ।

५ सम्मूर्छिम भुजपरिसर्प की उत्कृष्ट स्थिति बियालीस हजार वर्ष की है ।

६ नामकर्म बियालीस प्रकार का है, यथा-

गति नाम, जाति नाम, शरीर नाम, शरीरागोपाग नाम,
शरीरबधन नाम, शरीर संघातन नाम, सघयण नाम
सस्थान नाम, वर्ण नाम, गध नाम, रस नाम, स्पर्श नाम,
अगुरुलघु नाम, उपघात नाम, पराघात नाम, आनुपूर्वी नाम,
उच्छ्वास नाम, आतप नाम उद्योत नाम, विहग गति नाम,
त्रस नाम, स्थावर नाम, सूक्ष्म नाम, बादर नाम,
पर्याप्त नाम, अपर्याप्त नाम, साधारण शरीर नाम,
प्रत्येक शरीर नाम, स्थिर नाम, अस्थिर नाम, शुभ नाम,

अशुभ नाम, सुभग नाम, दुर्भग नाम, सुस्वर नाम, दुस्वर नाम, आदेय नाम, अनादेय नाम, यश-कीर्ति नाम, अयश-कीर्ति नाम, निर्माण नाम, तीर्थंकर नाम ।

७ लवण समुद्र की आभ्यतर वेला को बियालीस हजार नाग देवता धारण करते हैं ।

८ महाविमानप्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग मे बियालीस उद्देशन-काल हैं ।

९ प्रत्येक अवसर्पिणी के पाचवें छठे आरे का काल बियालीस हजार वर्ष का है ।

१० प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले दूसरे आरे का काल बियालीस हजार वर्ष का है ।

तेयालीसवां समवाय

१ कर्मविपाक के तेयालीस अध्ययन है ।

२ पहली, चौथी और पाचवी इन तीन पृथ्वियो मे तेयालीस लाख नरकावास हैं ।

३ जम्बूद्वीप के पूर्वी चरमान्त मे गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अव्यवहित अतर तेयालीस हजार योजन का है ।

४ इसी प्रकार दकभास, शख और दकसीम पर्वत के चरमान्त का अतर है ।

५ महालिकाविमानप्रविभक्ति के तृतीय वर्ग मे तेयालीस उद्देशनकाल हैं ।

चौवालीसवां समवाय

१ देवलोक च्युत ऋपियो द्वारा भासित -ऋपि- भासित आगम के चौवालीस अध्ययन है ।

२ अरहत विमलनाथ के पश्चात् चौवालीस युगपुरुप शिष्य प्रशिष्य सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से रहित हुए ।

३ धरण नागेन्द्र के चौवालीस लाख भवन है ।

४ महालिकाविमानप्रविभक्ति के चौथे वर्ग मे चौवालीम उद्देशनकाल है ।

पैंतालीसवां समवाय

१ समयक्षेत्र का आयाम-विष्कम्भ पैंतालीस लाख योजन का है ।

२ सीमतक नरकावास का आयाम-विष्कम्भ पैंतालीस लाख योजन का है ।

३ इसी प्रकार उडु विमान का आयाम-विष्कम्भ है ।

४ इपत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ भी इतना ही है ।

५ अरहत धर्मनाथ पैंतालीस धनुप ऊचे थे ।

६ मेरुपर्वत से लवणसमुद्र का अव्यहित अतर चारो दिशाओ मे पैंतालिस पैंतालिस हजार योजन का है ।

७ डेढ क्षेत्रवाले सभी नक्षत्र चद्र के साथ पैंतालिस मुहूर्त का योग करते थे, करते हैं और करेंगे । वे नक्षत्र ये है, यथा- तीन उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरापाढा, उत्तरा भाद्रपद) पुनर्वसु, रोहिणी, विशाखा ।

८ महालिकाविमानप्रविभक्ति के पाँचवे वर्ग मे पैंतालिस उद्देशनकाल हैं ।

छियालीसवां समवाय

१ दृष्टिवाद के छियालीस मातृकापद है।
२ ब्राह्मी लिपि के छियालीस मातृकाक्षर है।
३ वायुकुमारेन्द्र प्रभजन के छियालीस लाख भवनावास हैं।

सैतालीसवां समवाय

१ सूर्य सर्व प्रथम आभ्यतर मडल मे जब गति करता है तब यहा रहे मनुष्य को सैंतालीस हजार, दो सो, त्रेसठ योजन तथा एक योजन के साठ भागो मे से इकवीस भाग दूरी से सूर्य दर्शन होता है।
२ स्थविर अग्निभूति सैताली वर्ष गृहवास मे रहकर मुडित एव प्रव्रजित हुए।

अड़तालीसवां समवाय

१ प्रत्येक चक्रवर्ती के अडतालीस हजार पट्टण है।
२ अरहत धर्मनाथ के अडतालीस गण और अडतालीस गणधर थे।
३ सूर्यविमान का विष्कम्भ एक योजन के इकसठ भागो मे से अडतालीस भाग जितना है।

उनपचासवां समवाय

१ सप्त-सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा उनपचास अहोरात्रि मे एक सो छियानवे दात आहार लेकर सूत्रोक्त विधि से आराधित होती है।
२ देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्य उनपचास अहोरात्रि मे युवा हो जाते हैं।
३ त्रीन्द्रियो की उत्कृष्ट स्थिति उनपचास अहोरात्रि की होती हैं।

पचासवां समवाय

१ अरहत मुनिसुव्रत की पचास हजार आर्या थी।
२ अरहत अनतनाथ पचास धनुप ऊचे थे।
३ पुरुपोत्तम वासुदेव पचास धनुप ऊचे थे।
४ सर्व दीर्घ वैताढय पर्वतो के मूल का विष्कम्भ पचास योजन का है।
५ लातक कल्प मे पचास हजार विमान है।
६ सर्व तिमिश्र गुफा और खडप्रपात गुफाओ का आयाम पचास पचास योजन का है।
७ सर्व काचनग पर्वतो के शिखर का विष्कम्भ पचास पचास योजन का है।

इकावनवां समवाय

१ नव ब्रह्मचर्य अध्ययनो के इकावन उद्देशनकाल है।
२ चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा के इकावन सो स्तम्भ है।
३ वलेन्द्र की सुधर्मा सभा के इकावन सो स्तम्भ है।
४ सुप्रभ वलदेव इकावन लाख वर्प का आयु पूर्ण करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए।
५ दर्शनावरण और नामकर्म इन दो कर्मो की इकावन उत्तर कर्म प्रकृतिया है।

बावनवां समवाय

१ मोहनीयकर्म के वावन नाम है, यथा-
क्रोध, कोप, रोस, द्वेप, अक्षमा, सज्वलन, कल्ह, चाडिक्य, भडन, विवाद। मान, मद, दर्प, स्तम्भ, आत्मोत्कर्प, गर्व,

पर-परिवाद, आक्रोश, अपकर्ष, उन्नत, उन्नाम, माया, उपधि, निकृति, वलय, ग्रहण, नूम, कल्क, कुरुक, दभ, कूट, जिह्म, किल्विष, अनादरता, गूहनता, वचनता, परिकुचनता, सातियोग, लोभ, इच्छा, मूर्छा, काक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भिध्या, अभिध्या, कामाशा, भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, नदी, राग।

२ गोस्तूप आवासपर्वत के पूर्वी चरमान्त से वडवामुख पाताल-कलश के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर बावन हजार योजन का है।

३ इसी प्रकार दकभास और केतुक, शख और यूपक, दगसीम और ईश्वर का अतर जानना।

४ ज्ञानावरणीय, नाम और अन्तराय इन तीन मूलकर्मप्रकृतियो की बावन उत्तरकर्मप्रकृतिया हैं।

५ सौधर्म, सनत्कुमार और माहेन्द्र इन तीन देवलोको मे बावन लाख विमानावास है।

त्रेपनवां समवाय

१ देवकुरु और उत्तरकुरु की जीवा का आयाम त्रेपन हजार योजन का है।

२ महाहिमवत और रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम त्रेपन हजार, नो सौ, इगतीस योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से छ भाग जितना है।

३ श्रमण भगवान महावीर के त्रेपन साधु एक वर्ष की दीक्षा पर्यायवाले होकर अनुत्तर विमान मे देव हुए।

४ सम्मूर्छिम उरपरिसर्प की उत्कृष्ट स्थिति त्रेपन हजार वर्ष की है।

चौपनवां समवाय

१ भरत और ऐरवत क्षेत्र मे प्रत्येक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मे चोपन चोपन उत्तम पुरुप उत्पन्न होते है, हुए है, और होंगे, यथा-
चौवीस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ती, नववलदेव, और नववासुदेव ।

२ अरहत अरिष्टनेमिनाथ चौपन अहोरात्र की छद्मस्थ पर्याय के पश्चात् जिन हुए - यावत्- सर्वज्ञ सर्वदर्शी हुए ।

३ श्रमण भगवान महावीर ने एक दिन मे एक आसन से चोपन प्रश्नो के उत्तर कहे थे ।

४ अरहत अनतनाथ के चोपन गण और गणधर थे ।

पचपनवां समवाय

१ अरहत मल्लिनाथ पचपन हजार वर्प का आयु पूर्ण करके सिद्ध - यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

२ मेरुपर्वत के पश्चिमी चरमान्त से विजयद्वार के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर पचपन हजार योजन का है ।

३ इसी प्रकार वैजयत, जयत और अपराजित द्वार का अतर है ।

४ श्रमण भगवान महावीर अतिम रात्रि मे पचपन अध्ययन कल्याण-फल-विपाक के और पचपन अध्ययन पाप-फल-विपाक के कहकर सिद्ध-यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

५ प्रथम और द्वितीय इन दो पृथ्वियो मे पचपन लाख नरकावास हैं ।

६ दर्शनावरणीय, नाम और आयु इन तीन मूलकर्मप्रकृतियो की पचपन उत्तर कर्मप्रकृतिया है ।

छप्पनवाँ समवाय

१ जम्बूद्वीप मे छप्पन नक्षत्रो ने चन्द्र के साथ योग किया, करते हैं, और करेंगे ।

२ अरहत विमलनाथ के छप्पन गण और छप्पन गणधर थे ।

सत्तावनवां समवाय

१ आचाराग-चूलिका को छोडकर तीन गणिपिटको के सत्तावन अध्ययन हैं, यथा-
आचाराग, सूत्रकृताग, स्थानाग ।

२ गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्यभाग का अन्यवहित अतर सत्तावन हजार योजन का है ।

३ इसी प्रकार दकभास और केनुक, शख और यूपक, दकसीम और ईश्वर का अतर है ।

४ अरहत मल्लिनाथ के सत्तावन सो अवधिज्ञानी मुनि थे ।

५ महा हिमवत और रुक्मी वर्षधर पर्वतो की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि सत्तावन हजार, दो सो, तिरानवे योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से दस भाग जितनी है ।

अठावनवां समवाय

१ पहली, दूसरी और पाचवी इन तीन पृथ्वियो मे अठावन लाख नरकावास हैं ।

२ ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम, और अतराय इन पाच मूलकर्मप्रकृतियो की अठावन उत्तरकर्मप्रकृतिया हैं ।

३ गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त से वलयामुख पाताल

कलश के मध्यभाग का अव्यवहित अतर अठावन हजार योजन का है।

४, ५, ६, इसी प्रकार शेष तीन दिशाओ का अतर है।

उनसठवां समवाय

१ चद्र सवत्सर की प्रत्येक ऋतु उनसठ अहोरात्रि की होती है।

२ अरहत सभवनाथ उनसठ हजार पूर्व गृहवास मे रहकर मुडित - यावत्- प्रव्रजित हुए।

३ अरहत मल्लिनाथ के उनसठ सो अवधिज्ञानी मुनि थे।

साठवां समवाय

१ प्रत्येक मडल मे सूर्य साठ, साठ मुहूर्त पूरे करता है।

२ लवणसमुद्र के अग्रोदक को साठ हजार नागदेव धारण करते हैं।

३ अरहत विमलनाथ साठ धनुप ऊंचे थे।

४ वलेन्द्र के साठ हजार सामानिक देव है।

५ ब्रह्म देवेन्द्र के साठ हजार सामानिक देव है।

६ सौधर्म और ईशान इन दो कल्पो मे साठ लाख विमानावास हैं।

इकसठवां समवाय

१ पाच सवत्सरवाले युग के इकसठ ऋतुमास हैं।

२ मेरुपर्वत के प्रथम काड की ऊचाई इकसठ हजार योजन की है।

३ चद्र-मडल का समाश एक योजन के इकसठ विभाग करने

पर (४५ समाश) होता है ।

४ इसी प्रकार सूर्य-मडल के समाश भी होते है ।

वासठवां समवाय

१ पाच सवत्सरवाले युग की वासठ पूर्णिमाए और वासठ अमावास्याए होती है ।

२ अरहत वासुपूज्य के वासठ गण और वासठ गणधर थे ।

३ शुक्लपक्ष मे चन्द्र वासठ भाग प्रतिदिन वढता है ।
कृष्णपक्ष मे चन्द्र उतना ही प्रतिदिन घटता है ।

४ सौधर्म और ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तट की प्रथम आवलिका एव प्रत्येक दिशा मे वासठ, वासठ विमान हैं ।

५ सर्व वैमानिक देवो के वासठ विमान प्रस्तट हैं ।

त्रेसठवां समवाय

१ अरहत ऋषभ कौसलिक त्रेसठ लाख पूर्व राज्यपद भोगकर मुडित एव प्रव्रजित हुए ।

२ हरिवर्प और रम्यक् वर्प के मनुष्य त्रेसठ अहोरात्रि मे युवा हो जाते हैं ।

३ निषध पर्वत पर त्रेसठवा सूर्य-मडल है ।

४ इसी प्रकार नीलवत पर्वत पर भी उतने ही सूर्य-मण्डल हैं ।

चौसठवां समवाय

१ अष्ट-अष्टमिका भिक्षुप्रतिमा चौंसठ अहोरात्रि मे दो सो, अठ्यासी दात आहार की लेकर सूत्रानुसार पूर्ण की जाती है ।

२ चौसठ लाख असुरकुमारावास हैं ।

३ चमरेन्द्र के चौसठ हजार सामानिक देव हैं ।

४ सभी दधिमुख पर्वत पाला के आकार वाले है अत उनका विष्कम्भ सर्वत्र समान है, उनकी ऊचाई चौंसठ हजार योजन की है ।

५ सौधर्म, ईशान और ब्रह्मलोक इन तीन कल्पो मे चौंसठ लाख विमानावास है ।

६ सभी चक्रवर्तियो का मुक्ता-मणिमय हार महा मूल्यवान एव चौसठ लड़ियोवाला होता है ।

पैंसठवां समवाय

१ जम्बूद्वीप मे सूर्य के पैंसठ मडल है ।

२ स्थविर मौर्यपुत्र पैंसठ वर्ष गृहवास मे रहकर मुंडित- यावत्- प्रव्रजित हुए ।

३ सौधर्मावतसक विमान की प्रत्येक दिशा मे पैंसठ पैंसठ भौम नगर हैं ।

छासठवां समवाय

१ दक्षिणार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ चन्द्र प्रकाश करते थे, प्रकाश करते हैं और प्रकाश करेंगे ।

२ दक्षिणार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ सूर्य तपते थे, तपते है और तपेंगे ।

३ उत्तरार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ चन्द्र प्रकाश करते थे, प्रकाश करते है और प्रकाश करेंगे ।

४ उत्तरार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे ।

५ अरहंत श्रेयासनाथ के छासठ गण और छासठ गणधर थे ।
६ आभिनिवोधिक ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति छासठ सागरोपम की है ।

सड़सठवां समवाय

१ पाच सवत्सर वाले युग के सडसठ ऋतुमास होते हैं ।
२ हेमवत और एरण्यवत की वाहा का आयाम सडसठ सो पचावन योजन, तथा एक योजन के तीन भाग जितना है ।
३ मेरु पर्वत के चरमान्त से गौतमद्वीप के पूर्वी चरमान्त का अव्यवहित अतर सडसठ हजार योजन का है ।
४ सभी नक्षत्रो के सीमाविष्कम्भ का समाश एक योजन के सड़सठ भागो मे विभाजित करने पर होता है ।

अड़सठवां समवाय

१ धातकीखड द्वीप मे अडसठ चक्रवर्तीविजय और उनकी अडसठ राजधानिया है ।
२ उत्कृष्ट अडसठ तीर्थंकर हुए है, होते है और होगे ।
३ इसी प्रकार चक्रवर्ती, वलदेव और वासुदेव भी ।
४ पुष्करार्धद्वीप मे अडसठ चक्रवर्ती विजय, राजधानिया, तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव ऊपर के तीन सूत्रो के अनुसार हैं।
५ अरहत विमलनाथ के अडसठ हजार श्रमण उत्कृष्ट थे ।

उनहत्तरवां समवाय

१ समयक्षेत्र मे मेरु को छोडकर उनहत्तर वर्ष और वर्षधर

पर्वत है, यथा-
पैंतीस वर्ष, तीस वर्षधर पर्वत, चार इषुकार पर्वत ।

२ मेरु पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गौतमद्वीप के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर उनहत्तर हजार योजन का है ।

३ मोहनीयकर्म को छोडकर शेष सात मूलकर्मप्रकृतियो की उनहत्तर उत्तरकर्मप्रकृतिया है ।

सित्तरवां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर वर्षा ऋतु का एक मास और वीस रात्रि व्यतीत होने पर और सित्तर दिन-रात शेष रहने पर वर्षावास रहे ।

२ प्रसिद्ध पुरुष अरहत पार्श्वनाथ सित्तर वर्ष का श्रामण्य पर्याय पालकर सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

३ अरहत वासुपूज्य सित्तर धनुष ऊचे थे ।

४ मोहनीय कर्म की स्थिति अवाधा काल सात हजार वर्ष-छोडकर सित्तर कोटा-कोटी सागरोपम की है ।

५ माहेन्द्र देवेन्द्र के सित्तर हजार सामानिक देव हैं ।

इकहत्तरवां समवाय

१ चौथे चन्द्र सवत्सर की हेमन्त ऋतु के इकहत्तर अहोरात्रि व्यतीत होने पर सर्व वाह्य मण्डल से सूर्य पुनरावृत्ति करता है ।

२ वीर्यप्रवाद पूर्व के इकहत्तर प्राभृत है ।

३ अरहत अजितनाथ इकहत्तर लाख पूर्व गृहवास मे रहकर मुडित हुए - यावत्- प्रव्रजित हुए ।

४ इसीप्रकार सगर चक्रवर्ती भी इकहत्तर लाख पूर्व गृहवास मे रहकर मुडित हुए - यावत्-प्रव्रजित हुए।

बहत्तरवां समवाय

१ सुवर्णकुमारावास बहत्तर लाख हैं।

२ लवणसमुद्र की बाह्यवेला को बहत्तर हजार नागदेव धारण करते हैं।

३ श्रमण भगवान महावीर बहत्तर वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध - यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए।

४ स्थविर अचलभ्राता बहत्तर वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध - यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।

५ पुष्करार्ध द्वीप मे बहत्तर चन्द्र प्रकाश करते थे, करते है और करेंगे, तथा बहत्तर सूर्य तपते थे, तपते है और तपेंगे।

६ प्रत्येक चक्रवर्ती के बहत्तर हजार श्रेष्ठ पुर है।

७ कलाए बहत्तर है, यथा-
लेख, गणित, रूप, नाट्य, गीत, वाद्य, स्वर विज्ञान,
पुष्कर विज्ञान, ताल विज्ञान, द्यूत, वार्ता विज्ञान,
सुरक्षा विज्ञान, पासा क्रीडा, कुम्भ-कला, अन्न-विधि,
पान-विधि, वस्त्र-विधि, शयन-विधि, छन्द-रचना, प्रहेलिका,
मागधिका, गाथा-रचना, श्लोक-रचना, गधयुक्ति, मधुसिक्थ,
आभरण-विधि, तरुणी-प्रतिकर्म, स्त्री-लक्षण, पुरुष-लक्षण,
हय-लक्षण, गज-लक्षण, गोण-लक्षण, कुर्कुट-लक्षण,
मेढा-लक्षण, चक्र-लक्षण, छत्र-लक्षण, दण्ड-लक्षण,
असि-लक्षण, मणि-लक्षण, काकिणी-लक्षण, चर्म-लक्षण,
चन्द्र-लक्षण, सूर्य-चरित, राहु-चरित, ग्रह-चरित,

सौभाग्यकर, दौर्भाग्यकर, विद्या-विज्ञान, मंत्र-विज्ञान, रहस्य-विज्ञान, वस्तु-विज्ञान, सैन्य-विज्ञान, युद्धविद्या, व्यूह रचना, प्रतिव्यूह रचना, स्कधावार-विज्ञान, नगर-निर्माणकला, वस्तुप्रमाण, स्कधावार-निर्माणकला, वास्तु-विधि, नगर निवास, इषदर्थ, असि कला, अश्व-शिक्षा, हस्ती-शिक्षा, धनुर्वेद, हिरण्य-पाक, सुवर्ण-पाक, मणि-पाक, धातु-पाक, बाहुयुद्ध, दण्डयुद्ध, मुष्टियुद्ध, यष्टियुद्ध, युद्ध, नियुद्ध, युद्धातियुद्ध, सूत्रखेड, नालिकाखेड, वर्तखेड, धर्मखेड, चर्मखेड, पत्रछेदनकला, कटक-छेदनकला, सजीवनी विद्या, शकुनरुत।

८ सम्मूर्छिम खेचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति बहत्तर हजार वर्ष की है।

तिहत्तरवां समवाय

१ हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष की जीवा का आयाम तिहत्तर हजार, नो सो, एक योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से साढे सत्रह भाग जितना है।

२ विजय बलदेव तिहत्तर हजार वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए।

चौहत्तरवां समवाय

१ स्थविर अग्निभूति गणधर चौहत्तर वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए।

२ निषध पर्वत के तिगिच्छ द्रह से सीतोदा महानदी उत्तर दिशा की ओर चोहत्तर सो योजन वहकर चार योजन लवी

वज्रमय जिह्वा से पचास योजन चौडे वज्रमय तलवाले कुड मे महा घटमुख से मुक्तावली हार की आकृतिवाला प्रवाह महा शब्द करता हुआ गिरता है ।

३ इसी प्रकार सीता नदी का दक्षिण की ओर प्रवाह का वर्णन है ।

४ चौथी पृथ्वी को छोडकर शेष छ पृथ्वियो मे चोहत्तर लाख नरकावास हैं ।

पचहत्तरवां समवाय

१ अरहत सुविधिनाथ (पुष्पदत) के पचहत्तर सो सामान्य केवली थे ।

२ अरहत शीतलनाथ पचहत्तर हजार पूर्व गृहवास मे रहकर मुडित हुए - यावत्-प्रव्रजित हुए ।

३ अरहत शांतिनाथ पचहत्तर हजार वर्ष गृहवास मे रहकर मुडित हुए - यावत्-प्रव्रजित हुए ।

छिहत्तरवां समवाय

१ विद्युत्कुमारावास छिहत्तर लाख है ।

२ इसी प्रकार द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार, विद्युत्-कुमार, स्तनितकुमार, और अग्निकुमार इन छ युगल के छिहत्तर छिहत्तर लाख भवन हैं ।

सतहत्तरवां समवाय

१ भरत चक्रवर्ती सतहत्तर लाख पूर्व कुमार पद मे रहने के पश्चात् राज्यपद को प्राप्त हुए ।

२ अग वश के सतहत्तर राजा मुडित-यावत्-प्रव्रजित हुए ।
३ गर्दतोय और तुषित देवो का सतहत्तर हजार देवो का परिवार है ।
४ प्रत्येक मुहूर्त के सतहत्तर लव होते हैं ।

अठहत्तरवां समवाय

१ शक्र देवेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल सुवर्णकुमार और दीपकुमार के अठहत्तर लाख भवनावासो का आधिपत्य अग्रेसरत्व स्वामित्व भर्तृत्व महाराज्यत्व एव सेना-नायक के रूप मे रहकर आज्ञा का पालन करवा रहे हैं ।
२ स्थविर अकपित अठहत्तर वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए ।
३ उत्तरायण से लौटताहुआ सूर्य प्रथम मडल से उनचालिसवें मडल पर्यन्त एक मूहूंत के इकसठिए अठहत्तर भाग प्रमाण दिन तथा रात्रि को बढाकर गति करता है ।
४ इसी प्रकार दक्षिणायन से लौटता हुआ सूर्य भी दिन और रात्रि के प्रमाण को बढाकर गति करता है ।

उन्नासीवां समवाय

१ वडवामुख पाताकलश के नीचे के चमरान्त से रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर उन्नासी हजार योजन का है ।
२ इसी प्रकार केतुक, यूपक और ईश्वर पाताल कलशो का अतर भी है ।
३ छट्ठी पृथ्वी के मध्यभाग से छट्ठे घनोदधि के के नीचे के

चरमान्त से अव्यवहित अतर उन्नासी हजार योजत का है।

४ जम्बूद्वीप के प्रत्येक द्वार का व्यवहित अतर उन्नासी हजार योजन का है।

अस्सीवां समवाय

१ अरहत श्रेयास अस्सी धनुष ऊचे थे।

२ त्रिपिष्ठ वासुदेव अस्सी धनुष ऊचे थे।

३ अचल वलदेव अस्सी धनुप ऊँचे थे।

४ त्रिपृष्ठ वासुदेव अस्सी लाख वर्ष पर्यन्त राज्य पद पर रहे।

५ अप्वहुल काण्ड की चौडाई अस्सी हजार योजन की है।

६ ईशान देवेन्द्र के अस्सी हजार सामानिक देव हैं।

७ जम्बूद्वीप मे एक सो अस्सी योजन जाने पर (उत्तर दिशा मे) सर्व प्रथम आभ्यतर मडल मे सूर्योदय होता है।

इक्यासीवां समवाय

१ नव-नवमिका भिक्षुप्रतिमा की इक्यासी अहोरात्रि मे चार सो पाच आहार की दात लेकर सूत्रानुसार आराधना की जाती है।

२ अरहत कुथुनाथ के इक्यासी सो मन पर्यवज्ञानी मुनि थे।

३ विवाह प्रज्ञप्ति के इक्यासी महायुग्मशतक है।

बियासीवां समवाय

१ जम्बूद्वीप मे एक सो बियासीवें सूर्यमण्डल मे सूर्य दो वार गति करता है, यथा-

जम्बूद्वीप से वाहर निकलते समय तथा प्रवेश करते समय।

२ श्रमण भगवान महावीर का बियासी अहोरात्रि के पश्चात् एक गर्भ से दूसरे गर्भ मे सहरण हुआ ।

३ महा हिमवन्त वर्षधर पर्वत के ऊपर के चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर बियासी सो योजन का है ।

४ इसीप्रकार रुक्मी पर्वत के ऊपरी चरमात से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अतर है ।

तियासीवां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर बियासी अहोरात्रि बीतने पर तियासीवी रात्रि मे देवानन्दा की कुक्षी से त्रिशला की कुक्षी मे सहरण हुआ ।

२ अरहत शीतलनाथ के तियासी गण और तियासी गणधर थे ।

३ स्थविर मडितपुत्र तियासी वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

४ अरहत कौसलिक ऋषभदेव तियासी लाख पूर्व गृहवास मे रहकर मुडित यावत् प्रव्रजित हुए ।

५ भरत चक्रवर्ती तियासी लाख पूर्व गृहवास मे रहकर जिन हुए - यावत्- सर्वज्ञ सर्वदर्शी हुए ।

चौरासीवां समवाय

१ नरकावास चौरासी लाख हैं ।

२ अरहत कौसलिक ऋषभदेव चौरासी लाख पूर्व का आयु पूर्ण करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

३ इसी प्रकार भरत, बाहुबली, ब्राह्मी और सुन्दरी भी सिद्ध

-यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

४ अरहत श्रेयासनाथ चौरासी लाख वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध -यावत्- सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

५ त्रिपृष्ठ वासुदेव चौरासी लाख वर्ष का आयु पूर्ण करके अप्रतिष्ठान नाम के नरक मे नैरियकरूप मे उत्पन्न हुआ ।

६ शक्रेन्द्र के चौरासी हजार सामानिक देव है ।

७ सर्व बाह्य मन्दरपर्वतो की ऊचाई चौरासी चौरासी हजार योजन की है ।

८ सर्व अजनगपर्वतो की ऊचाई चोरासी चोरासी हजार योजन की है ।

९ हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि चोरासी हजार सोलह योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से चार भाग जितनी है ।

१० पकबहुल काण्ड के ऊपर के चरमात से नीचे के चरमात का अव्यवहित अतर चौरासी लाख योजन का है ।

११ विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) के चोरासी हजार पद है ।

१२ नागकुमारावास चोरासी लाख हैं ।

१३ प्रकीर्णक चौरासी हजार है ।

१४ प्रमुख जीवयोनिया चौरासी लाख हैं ।

१५ पूर्व से शीर्षप्रहेलिका पर्यंत पूर्व अक से उत्तर का अक चौरासी लाख से गुणित है ।

१६ अरहत ऋषभदेव के चौरासी हजार श्रमण थे ।

१७ सर्व वैमानिक देवो के विमान चौरासी लाख, सत्तानवे हजार, तेबीस हैं ।

नवासीवां समवाय

१ अरहत कौसलिक ऋषभदेव इस अवसर्पिणी के तृतीय सुषम-दुषमा काल के अतिम भाग मे नवासी पक्ष शेष रहने पर काल धर्म को प्राप्त हुए-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।
२ श्रमण भगवान महावीर इस अवसर्पिणी के चतुर्थ दुषम-सुषमा काल के अतिम भाग मे नवासी पक्ष शेष रहने पर काल धर्म को प्राप्त हुए-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।
३ हरिषेण चक्रवर्ती नवासी सो वर्ष महाराजा रहे।
४ अरहत शातिनाथ की आर्या उत्कृष्ट नवासी हजार थी।

नब्बेवां समवाय

१ अरहत शीतलनाथ की ऊँचाई नब्वे धनुष की थी।
२ अरहत अजितनाथ के नब्वे गण और नब्वे गणधर थे।
३ इसी प्रकार अरहत शातिनाथ के गण और गणधर थे।
४ स्वयभू वासुदेव का दिग्विजयकाल नब्वे वर्ष का था।
५ सर्ववृत्तवैताढ्य पर्वतो के शिखर के ऊपर से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अतर नब्वे सो योजन का है।

एक्कानबेवां समवाय

१ दूसरे की वैयावृत्य करने की प्रतिज्ञाएँ एक्कानवे है।
२ कालोदसमुद्र की परिधि कुछ अधिक एक्कानवे लाख योजन की है।
३ अरहन्त कुथुनाथ के एक्कानवे सो अवधिज्ञानी मुनि थे।
४ आयु और गोत्र को छोडकर शेष छ मूल कर्मप्रकृतियो की

एक्कानवे उत्तर कर्मप्रकृतियाँ है।

बानवेवां समवाय

१ पडिमाए वानवे हैं।

२ स्थविर इन्द्रभूती बानवे वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।

३ मेरुपर्वत के मध्यभाग से गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर बानबे हजार योजन का है।

४ इसी प्रकार चार आवासपर्वतो का अन्तर भी है।

तिरानबेवां समवाय

१ अरहन्त चन्द्रप्रभ के तिरानबे गण और तिरानबे गणधर थे।

२ अरहन्त शातिनाथ के तिरानवे सो चौदह पूर्वी मुनि थे।

३ तिरानबेवें मडल मे रहा हुआ सूर्य आभ्यन्तर मडल की ओर जाता हुआ तथा बाह्य मडल की ओर आता हुआ समान अहोरात्र को विषम करता है।

चौरानबेवां समवाय

१ निषध और नीलवत पर्वत की जीवा का आयाम चोरानवे हजार, एक सो, छप्पन योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागो मे से दो भाग जितना है।

२ अरहन्त अजितनाथ के चोरानबे सो अवधिज्ञानी मुनि थे।

पंचानबेवां समवाय

१ अरहन्त सुपार्श्व नाथ के पचानबे गण और पचानबे गणधर थे।

पंचासीवां समवाय

१ चूलिका सहित आचाराग भगवत के पचासी उद्देशनकाल है।
२ धातकी खण्ड के मेरुपर्वत पचासी हजार योजन ऊचे हैं।
३ रुचक माडलिक पर्वत पचासी हजार योजन ऊचे है।
४ नदनवन के नीचे के चरमान्त से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमात का अव्यवहित अतर पचासी सो योजन का है।

छियासीवां समवाय

१ अरहत सुविधिनाथ (पुष्पदत) के छियासी गण और छियासी गणधर थे।
२ अरहत सुपार्श्वनाथ के छियासी सो वादी मुनि थे।
३ दूसरी पृथ्वी के मध्यभाग से दूसरे घनोदधि के नीचे के चरमात का अव्यवहित अतर छियासी हजार योजन का है।

सत्तासीवां समवाय

१ मेरुपर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।
२ मेरुपर्वत के दक्षिणी चरमात से दगभास आवासपर्वत के उत्तरी चरमात का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।
३ इसीप्रकार मेरुपर्वत के पश्चिमी चरमात से शख आवास-पर्वत के पूर्वी चरमात का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।
४ इसीप्रकार मेरुपर्वत के उत्तरी चरमात से दगसीम आवास पर्वत के दक्षिणी चरमात का अव्यवहित अन्तर सत्तासी

हजार योजन का है ।

५ प्रथम और अन्तिम को छोडकर शेष छ मूल कर्मप्रकृतियो की सत्तासी उत्तरकर्मप्रकृतिया है ।

६ महा हिमवत कूट के ऊपर के चरमात से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमात का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है ।

७ इसी प्रकार रुक्मीकूट के ऊपर के चरमात से सौगधिक काण्ड के नीचे के चरमात का अन्तर है ।

अठासीवां समवाय

१ प्रत्येक चद्र सूर्य के अठासी अठासी ग्रह का परिवार है ।

२ दृष्टिवाद के अठासी सूत्र हैं, नन्दीसूत्र के अनुसार ।

३ मेरुपर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवासपर्वत के पूर्वी चरमान्त का अव्यवहित अतर अठासी हजार योजन का है ।

४ शेष तीन दिशाओ का अतर भी इसी प्रकार है ।

५ उत्तरायन से दक्षिणायन की ओर लौटता हुआ सूर्य प्रथम छ मास पूर्ण करके चोवालीसवें मंडल मे गया हुआ एक मुहूर्त के इकसठिये अठासी भाग दिन को घटाकर एव रात्रि को बढाकर गति करता है ।

६ दक्षिणायन से उत्तरायन की ओर लौटता हुआ सूर्य द्वितीय छ मास पूर्ण करके चोवालीसवें मडल मे गया हुआ एक मुहूर्त के इकसठिये अठासी भाग रात्रि को घटाकर एव दिन को बढाकर गति करता है ।

२ जम्बूद्वीप के चरमान्त से चारो दिशाओ मे लवणसमुद्र मे पचानवे पचानवे हजार योजन अन्दर जाने पर चार महा पाताल कलश है, यथा-
वडवामुख, केतुक, यूप और ईश्वर।

३ लवणसमुद्र के मध्यभाग से किनारे की ओर पचानवे पचानवे प्रदेश गहराई मे कम है, लवणसमुद्र के किनारे से मध्यभाग की ओर पचानवे पचानवे प्रदेश ऊँचाई मे कम है।

४ अरहन्त कुथुनाथ पचानवे हजार वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।

५ स्थविर मौर्यपुत्र पचानवे वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।

छानबेवां समवाय

१ प्रत्येक चक्रवर्ती के छानवे छानबे करोड ग्राम है।

२ वायुकुमार के छानवे लाख भवन हैं।

३ व्यवहार के उपयोगी दड छानवे अगुल का होता है।

४ इसी प्रकार धनुप, नालिका, युग, अक्ष और मुसल का प्रमाण है।

५ आभ्यन्तर मडल मे जब सूर्य होता है तब पहला मुहूर्त छानवे अगुल की छाया का होता है।

सत्तानबेवां समवाय

१ मेरुपर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर सत्तानबे हजार योजन है।

२ इसी प्रकार शेष तीन दिशाओ का अन्तर भी है ।
३ आठ मूल कर्मप्रकृतियो की सत्तानवे उत्तर कर्मप्रकृतियाँ हैं ।
४ हरिषेण चक्रवर्ती कुछ कम सत्तानवे सो वर्ष गृहवास मे रहकर मुडित हुए-यावत्-प्रव्रजित हुए ।

अठानबेवां समवाय

१ नंदनवन के ऊपर के चरमान्त से पाण्डुकवन के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर अठानवे हजार योजन का है ।
२ मदर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवासपर्वत के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर अठानवे हजार योजन का है ।
३ इसी प्रकार शेष तीन दिशाओ का अन्तर भी है ।
४ दक्षिणार्ध भरत के धनुपृष्ठ का आयाम कुछ न्यून अठानवे हजार योजन का है ।
५ उत्तर दिशा मे प्रथम छ मास पूर्ण करता हुआ सूर्य उन पचासवें मडल मे एक मुहूर्त के इकसठिये अठानबे भाग दिन की हानि और रात्रि की वृद्धि करता हुआ गति करता है ।
६ दक्षिण दिशा मे द्वितीय छः मास पूर्ण करता हुआ सूर्य उन पचासवें मडल मे एक मुहूर्त के इकसठिये अठानबे भाग रात्रि की हानि और दिन की वृद्धि करता हुआ गति करता है ।
७ रेवती से ज्येष्ठा पर्यंत उन्नीस नक्षत्रो के अठानवे तारे हैं ।

निनानबेवां समवाय

१ मदरपर्वत की ऊँचाई निनानवे हजार योजन की है ।
२ नदनवन के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त का अव्यव-

हित अन्तर निनानवे सो योजन का है।

३ इसीप्रकार दक्षिणी चरमान्त से उत्तरी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर निनानवे सो योजन का है।

४ उत्तरदिशा के प्रथम सूर्य मडल का आयाम-विष्कम्भ निनानवे हजार योजन का है।

५ दूसरे मूर्य मडल का आयाम-विष्कम्भ कुछ अधिक निनानवे हजार योजन का है।

६ तृतीय सूर्यमडल का आयाम-विष्कम्भ कुछ अधिक निनानवे हजार योजन का है।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अजनकाण्ड के नीचे के चरमान्त से व्यन्तरो के भोमेयविहारो के ऊपरि चरमान्त का अव्यवहित अतर निनानवे सो योजन का है।

सोवां समवाय

१ दस-दसमिका भिक्षुप्रतिमा की एक मो अहोरात्रि मे पाँच सो दात आहार लेकर सूत्रानुसार आराधना की जाती है।

२ शतभिपा नक्षत्र के एक सो तारे है।

३ अरहन्त सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) एक सो धनुष ऊँचे थे।

४ प्रसिद्ध पुरुप अरिहन्त पार्श्वनाथ एकसो वर्प का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए।

५ इसी प्रकार स्थविर सुधर्मा भी मुक्त हुए।

६ सर्व दीर्घ वैताढ्यपर्वत सो सो कोश ऊँचे है।

७ सर्व लघु हिमवत और शिखरी वर्पधर पर्वत सो सो योजन ऊंचे है तथा सो सो कोश जमीन मे गहरे हैं।

८ सर्व काचनग पर्वत सो सो योजन ऊँचे है, सो सो कोश

पृथ्वी मे गहरे हैं, और उनके मूल का विष्कम्भ सो सो योजन का है ।

डेढसोवां समवाय

१ अरहन्त चन्द्रप्रभ डेढ सो धनुष ऊचे थे ।
२ आरणकल्प मे डेढसो विमान है ।
३ इसी प्रकार अच्युतकल्प मे भी हैं ।

दोसोवां समवाय

१ अरहन्त सुपार्श्वनाथ दो सो धनुष ऊचे थे ।
२ सर्व महा हिमवत और रुक्मी वर्षधर पर्वत दो दो सो योजन ऊचे है और दो दो सो कोश जमीन मे गहरे हैं ।
३ जम्बूद्वीप मे दो सो काचनग पर्वत है ।

ढाइसोवां समवाय

१ अरहन्त पद्मप्रभ ढाईसो धनुष ऊचे थे ।
२ असुरकुमारो के प्रासाद ढाईसो योजन ऊचे है ।

तीनसोवां समवाय

१ अरहन्त सुमतिनाथ तीन सो धनुष ऊँचे थे ।
२ अरहन्त अरिष्टनेमिनाथ तीन सो वर्ष कुवरपद रहकर मुडित-हुए-यावत्-प्रव्रजित हुए ।
३ वैमानिक देवो के विमानो के प्रकार तीन तीन सो योजन ऊँचे है ।
४ श्रमण भगवान महावीर के तीन सो चौदह पूर्वी मुनि थे ।

५ सिद्धगति प्राप्त पाचसो धनुप की अवगाहनावाले चरमशरीरी जीवो के जीवप्रदेशो की अवगाहना कुछ अधिक तीन सो धनुप की है।

साढेतीनसोवां समवाय

१ प्रसिद्ध पुरुप अरहत पार्श्वनाथ के साढे तीन सो चौदह पूर्वी मुनि थे।

२ अरहत अभिनन्दन साढे तीन सो धनुप ऊँचे थे।

चारसोवां समवाय

१ अरहत सभवनाथ चारसो धनुप ऊचे थे।

२ सर्व निपध और नीलवत वर्पधर पर्वत चारसो योजन ऊचे तथा चारसो कोश भूमि मे गहरे है।

३ निपध और नीलवत वर्पधर पर्वत के समीप सभी वक्षस्कार पर्वत चारसो योजन ऊचे तथा चारसो कोश भूमि मे गहरे हैं।

४ आनत और प्रानत इन दो कल्पो मे चारसो विमान हैं।

५ देव, मनुष्य और असुरलोको से वाद मे पराजित न होनेवाले चारसो वादी मुनि श्रमण भगवान महावीर के थे।

साढेचारसोवां समवाय

१ अरहन्त अजितनाथ साढे चारसो धनुप ऊचे थे।

२ सगर चक्रवर्ती साढे चारसो धनुप ऊचे थे।

पांचसोवां समवाय

१ शीता और शीतोदा महानदी तथा मेरु पर्वत के समीप सभी

वक्षस्कार पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊचे और पाचसो पाचसो कोश भूमि मे गहरे हैं ।

२ सभी वर्षधरकूट पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊचे तथा उनके मूल का विष्कम्भ पांचसो पाचसो योजन का है ।

३ अरहन्त कौशलिक ऋषभदेव पाचसो धनुष ऊचे थे ।

४ भरत चक्रवर्ती पाचसो धनुष ऊचे थे ।

५ मेरु पर्वत के समीप सोमनस, गधमादन, विद्युत्प्रभ और माल्यवत पर्वतो की ऊचाई पाचसो पाचसो योजन की है तथा पाचसो पाचसो कोश भूमि मे गहरे है ।

६ हरि, हरिस्सहकूट को छोडकर सभी वक्षस्कार पर्वतकूट पाचसो पाचसो योजन ऊचे तथा उनके मूल का आयाम-विष्कम्भ पाचसो पाचसो योजन का है ।

७ वलकूट पर्वत को छोडकर सभी नदनकूट पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊचे तथा उनके मूल का आयाम-विष्कम्भ पाचसो पाचसो योजन का है ।

८ सौधर्म और ईशानकल्प मे सभी विमान पाचसो पाचसो योजन ऊचे है ।

छःसोवां समवाय

१ सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प मे सभी विमान छ सो योजन ऊचे है ।

२ लघु हिमवतकूट के ऊपर के चरमान्त से लघु हिमवत वर्षधर पर्वत के समभूमितल का अव्यवहित अन्तर छ सो योजन का है ।

३ इसी प्रकार शिखरीकूट से उसके समभूमितल का अन्तर है ।

४ देव, मनुष्य और असुरलोको से वाद मे पराजित न होनेवाले छ. सो वादी मुनियो की उत्कृष्ट सपदा अरहन्त पार्श्वनाथ के थी ।

५ अभिचद कुलकर छ सो धनुष ऊचे थे ।

६ अरहन्त वासुपूज्य छ सो पुरुषो के साथ मुडित - यावत्-प्रव्रजित हुए ।

सातसोवां समवाय

१ ब्रह्म और लातककल्प मे सभी विमान सात सो योजन ऊचे हैं ।

२ श्रमण भगवान महावीर के सात सो शिष्य केवली हुए थे ।

३ श्रमण भगवान महावीर के सात सो वैक्रियलब्धि सपन्न मुनि थे ।

४ अरहन्त अरिष्टनेमि कुछ कम सात सो वर्ष केवली पर्याय मे रहकर सिद्ध - यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए ।

५ महा हिमवतकूट के ऊपर के चरमान्त से महाहिमवत वर्षधर पर्वत के समभूभाग का अव्यवहित अन्तर सात सो योजन का है ।

६ इसी प्रकार रुक्मीकूट के ऊपर के चरमान्त से रुक्मी वर्षधर पर्वत के समभूभाग का अन्तर है ।

आठसोवां समवाय

१ महाशुक्र और सहस्रार इन दो कल्पो मे सभी विमान आठसो योजन ऊचे हैं ।

२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड मे आठ सो योजन मे

व्यन्तर देवो के भौमेय विहार हैं ।

३ श्रमण भगवान महावीर के अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न होनेवाले कल्याणकारी गति स्थिति वाले एव भविष्य मे निर्वाण प्राप्त करनेवाले अनुत्तरोपपातिक मुनियो की सपदा थी ।

४ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से आठ सो योजन की ऊचाई पर सूर्य गति करता है ।

५ देव, मनुष्य और असुरलोको से वाद मे पराजित न होनेवाले आठसो वादी मुनियो की उत्कृष्ट सपदा अरहन्त अरिष्टनेमि की थी ।

नोसोवां समवाय

१ आनत, प्रानत, आरण और अच्युत इन चार कल्पो मे सभी विमान नोमो नोसो योजन के ऊचे है ।

२ निपधकूट के शिखर के ऊपर से निपध वर्षधर पर्वत के सम भूभाग का अव्यवहित अन्तर नोसो योजन का है ।

३ इसी प्रकार नीलवतकूट के शिखर से नीलवत वर्षधर पर्वत के सम भूभाग का अन्तर है ।

४ विमलवाहन कुलकर नोसो धनुष ऊचे थे ।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से नोसो योजन की ऊचाई पर सर्वोच्च तारा गति करता है ।

६ निपध पर्वत के शिखर से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड के मध्यभाग का अव्यवहित अतर नोसो योजन का है।

७ इसी प्रकार नीलवत वर्षधर पर्वत के शिखर से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड के मध्यभाग का अन्तर है ।

एकहजारवां समवाय

१ सभी ग्रैवेयक विमान एक एक हजार योजन ऊंचे हैं।

२ सभी यमकपर्वत एक एक हजार योजन ऊचे, एक एक हजार कोश भूमि मे गहरे है और उनके मूल का आयाम-विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है।

३ इसी प्रकार चित्र, विचित्रकूट पर्वतो का परिमाण है।

४ वृत्तवैताढ्य पर्वत एक एक हजार योजन ऊचे, एक एक हजार कोश भूमि मे गहरे और उनके मूल का विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है तथा वे पाला के आकार मे स्थित है।

५ वक्षस्कारकूटो को छोडकर सभी हरि, हरिस्सह कूटपर्वत एक एक हजार योजन ऊचे है और उनके मूल का विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है।

६ इसी प्रकार नदनकूट को छोडकर सभी वलकूट पर्वतो का परिमाण है।

७ अरहन्त अरिष्टनेमी एक हजार वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत्-सर्व दुखो से मुक्त हुए थे।

८ अरहन्त पार्श्वनाथ के एक हजार शिष्य केवलज्ञानी हुए थे।

९ अरहन्त पर्श्वनाथ के एक हजार अतेवासी कालधर्म को प्राप्त होकर सर्व दुखो से मुक्त हुए थे।

१० पद्मद्रह और पुडरीकद्रह का आयाम एक एक हजार योजन का है।

इग्यारहसोवां समवाय

१ अनुत्तरोपपातिक देवो के विमान इग्यारहसो योजन ऊचे है।

२ अरहन्त पार्श्वनाथ के इग्यारहसो शिष्य वैक्रेयलब्धिवाले थे ।

दोहजारवां समवाय

१ महापद्म और महापुडरीकद्रह का आयाम दो दो हजार योजन का है ।

तीनहजारवां समवाय

१ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वज्रकाण्ड के ऊपर के चरमान्त से लोहिताक्षकाण्ड के नीचे चरमान्त का अव्यवहित अतर तीन हजार योजन का है ।

चारहजारवां समवाय

१ तिगिञ्छद्रह और केसरीद्रह का आयाम चार चार हजार योजन का है ।

पांचहजारवां समवाय

१ भूतल मे मेरुपर्वत के मध्यभाग मे रुचकनाभी से चारो दिशाओ मे मेरुपर्वत का अव्यवहित अन्तर पाच पाच हजार योजन का है ।

छःहजारवां समवाय

१ सहस्रार कल्प मे छ हजार विमान हैं ।

सातहजारवां समवाय

१ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकाण्ड के ऊपर के चरमान्त से पुलककाण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अतर सात हजार योजन का है

आठहजारवां समवाय

१ हरिवर्ष और रम्यक् वर्ष का विस्तार कुछअधिक आठ हजार योजन का है।

नोहजारवां समवाय

१ पूर्व और पश्चिम मे समुद्र का स्पर्श करती हुई दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र की जीवा का आयाम नो हजार योजन का है।

दसहजारवां सम्वाय

१ पृथ्वीतल मे मेरुपर्वत का विष्कम्भ दस हजार योजन का है।

एकलाखवां समवाय

१ जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ एक लाख योजन का है।

दोलाखवां समवाय

१ लवणसमुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ दो लाख योजन का है।

तीनलाखवां समवाय

१ अरहन्त पार्श्वनाथ की तीन लाख, सत्तावीस हजार उत्कृष्ट श्राविका सपदा थी।

चारलाखवां समवाय

१ धातकीखड का चक्रवाल विष्कम्भ चार लाख योजन का है।

पांचलाखवां समवाय

१ लवणसमुद्र के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर पाच लाख योजन का है।

छःलाखवां समवाय

१ भरत चक्रवर्ती छ लाख पूर्व राज्यपदपर रहकर मुडितहुए-यावत्-प्रव्रजित हुए ।

सातलाखवां समवाय

१ जम्बूद्वीप की पूर्व वेदिका के चरमान्त से धातकी खड के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अतर सात लाख योजन का है।

आठलाखवां समवाय

१ माहेन्द्रकल्प मे आठ लाख विमान है ।

नोहजारवां समवाय

१ अरहन्त अजितनाथ के कुछ अधिक नो हजार अवधिज्ञानी थे ।

दसलाखवां समवाय

१ पुरुषसिंह वासुदेव दस लाख वर्प का आयु पूर्ण करके पाचवी पृथ्वी मे नैरयिकरूप मे उत्पन्न हुए ।

एकक्रोड़वां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर तीर्थंकरभव से पूर्व छट्ठे पोट्टिल के भव मे एक क्रोड वर्ष का श्रामण्य जीवन पालकर सहस्रार कल्प मे सवार्थ विमान मे देवरूप मे उत्पन्न हुए ।

एककोटा-कोटिवां समवाय

१ भगवान ऋषभदेव और अतिम भगवान महावीर वर्धमान का अव्यवहित अन्तर एक कोटा-कोटि सगरोपम का है ।

अनुवाद के सम्बन्ध में—

(क) समवायाग का यह अनुवाद सरल सक्षिप्त एवं अधिक से अधिक मूलानुगामी है।

(ख) एकोत्तरिका वृद्धिवाले एक से सो स्थानो का तथा अनेकोत्तरिका वृद्धिवाले डेढसो से एक कोटा-कोटी पर्यन्त स्थानो का यहाँ अनुवाद दिया है, शेष अंश का अनुवाद न देने के कई कारण है, उनमे एक प्रमुख कारण यह है कि विस्तृत विषय-सूची एव विशिष्ट परिशिष्टो से पुस्तक कल्पना से अधिक पुष्ट बन गई है, अत शेष अश का अनुवाद नही दिया है, इसके लिए पाठक क्षमा करे।

मत्री—

आगम-अनुयोग प्रकाशन, दिल्ली।

परिष्कार की प्रतीक्षा में–

१ (क) इस अवसर्पिणी (जवूद्वीप के इस भरत मे) मे सात कुलकर हुए थे, यथा-विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशोमान, अभिचन्द्र, प्रसेनजित्, मरुदेव और नाभि।

-स्थानांग अ० ७ सूत्र ५५६।

-समवायांग सूत्र १५७।

(ख) इस अवसर्पिणी (जवूद्वीप के इस भरत मे) मे पन्द्रह कुलकर हुए थे। यथा-सुमति, प्रतिश्रुति, सीमकर, सीमधर, खेमकर, खेमधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशोमान, अभिचन्द्र, चद्राभ, प्रसेनजित्, मरुदेव, नाभि और ऋषभ। **-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार २, सूत्र २८।**

(ग) प्रथम और द्वितीय कुलकर की 'हकार' दण्डनीति,
तृतीय और चतुर्थ कुलकर की 'मकार' दण्डनीति,
पचम, षष्ठ और सप्तम कुलकर की 'धिक्कार' दण्डनीति।

-स्थानांग अ० ७, सूत्र ५५७ टीका।

(घ) सुमति आदि पाच कुलकरो की 'हकार' दण्डनीति,
खेमधर आदि पाच कुलकरो की 'मकार' दण्डनीति,
चद्राभ आदि पाच कुलकरो की 'धिक्कार' दण्डनीति।

-जवूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार २, सूत्र २९।

(ड) अतीत उत्सर्पिणी (जवूद्वीप के इस भरत मे) मे सात कुलकर हुए थे। यथा-मित्रदास, सुदाम, सुपार्श्व, स्वयप्रभ, विमलघोष, सुघोष, और महाघोष।

-स्थानांग अ० ७, सूत्र ५५६। -समवायाग सूत्र १५७।

(च) अतीत उत्सर्पिणी (जवूद्वीप के इस भरत मे) मे दस कुलकर हुए थे, यथा-सतजल, शतायु, अनतसेन, तर्कसेन, भीमसेन, महाभीमसेन, दृढरथ, दसरथ, शतरथ ।
एक ही अग मे नामो की विभिन्नता विचारणीय है ।

-स्थानांग अ० १०, सूत्र ७६७ ।

२ (क) पुरुपसिह वासुदेव दस लाख वर्प का आयुष्य पूर्ण करके छठी नरक मे उत्पन्न हुआ था ।

-स्थानांग अ० १०, सूत्र ७३५ ।

(ख) पुरुपसिह वासुदेव दस लाख वर्प का आयुष्य पूर्ण करके पाचवी नरक मे उत्पन्न हुआ था ।

-समवायांग सूत्र १३३ ।

स्थानाग और समवायाग दोनो अग आगम है, किन्तु एक ही व्यक्ति का दो भिन्न-भिन्न नरको मे गमन का उल्लेख इनकी प्रामाणिकता को चुनौति दे रहा है ।

३ (क) राम वलभद्र वारहसो वर्प का आयु पूर्ण करके दिव्य देवगति को प्राप्त हुए थे ।

-समवायांग १२वां सूत्र ५ ।

(ख) राम वलभद्र पन्द्रह हजार वर्प का आयु पूर्ण करके मुक्त हुए । **-त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ७, सर्ग १० ।**

हमारे वहुश्रुत श्रमण-श्रेष्ठ मुनिवर इस प्रकार की अनेक विप्रतिपत्तियो मे पूर्वापर अविरोध सिद्ध करके श्रुतसेवा का पुण्योपार्जन करें ।

समवायाङ्ग का अनुयोग-वर्गीकरण

परिशिष्ट

१



मुनि कन्हैयालाल "कमल"

चरणानुयोग-सूत्राङ्क

समवाय	१	मे	सूत्र	४ । ६ । १६ । १८
,,	३	,,	,,	२ । ३ । ४ । ५
,,	४	,,	,,	२ ।
,,	५	,,	,,	२ ।
,,	६	,,	,,	३ । ४
,,	८	,,	,,	२ ।
,,	९	,,	,,	१ । ५
,,	१०	,,	,,	१ । २
,,	११	,,	,,	१ ।
,,	१२	,,	,,	१ । २ । ३
,,	१७	,,	,,	२ ।
,,	१८	,,	,,	१ । ३
,,	२०	,,	,,	१ ।
,,	२१	,,	,,	१ ।
,,	२२	,,	,,	१ ।
,,	२५	,,	,,	१ ।
,,	२७	,,	,,	१ ।
,,	२८	,,	,,	१ ।
,,	३२	,,	,,	१ ।
,,	३३	,,	,,	१ ।
,,	४९	,,	,,	१ ।

,,	६४	,,	,,	१।
,,	८१	,,	,	१।
,,	९१	,,	,,	१।
,,	९२	,,	,,	१।
,,	१००	,,	,,	१।



चरणानुयोग-वर्गीकरण

संवर

सवर	सम०	१	सू०	१६।
सवरद्वार	सम०	५	सू०	५।
अदण्ड	सम०	१	,,	४।
अक्रिया	,,	१	,,	६।
प्रवचनमाता	सम०	८	सू०	२।
समिति	सम०	५	सू०	७।
गुप्ति	सम०	३	सू०	२।
ब्रह्मचर्य की गुप्ति	सम०	९	सू०	१।
ब्रह्मचर्य के भेद	,,	१८	सू०	१।
महाव्रत	सम०	५	सू०	२।
महाव्रतो की भावना	सम०	२५	सू०	१।
श्रमण-धर्म	सम०	१०	सू०	१।
चित्तसमाधिस्थान	सम०	१०	सू०	२।
योगसग्रह	सम०	३२	सू०	१।
सयम	,,	१७	सू०	२।

परीषह	सम० २२ सू० १।

निर्जरा

निर्जरा	सम० १ सू० १८।
निर्जरास्थान	,, ५ ,, ६।
वाह्य तप	,, ६ ,, ३।
आभ्यन्तर तप	,, ,, ,, ४।
आचार प्रकल्प (आरोपणा प्रायश्चित्त के भेद)	,, २८ ,, १।
कृतिकर्म के आवर्तन	,, १२ ,, ३।
ध्यान	,, ४ ,, २।
उपासक-पडिमा	,, ११ ,, १।
भिक्षु ,,	,, १२ ,, १।
सप्त-सप्तमिका पडिमा का आराधना काल	सम० ४९ सू० १।
अष्ट-अष्टमिका ,, ,,	,, ६४ ,, १।
नव-नवमिका ,, ,,	,, ८१ ,, १।
दस दसमिका ,, ,,	,, १०० ,, १।
वैयावृत्य ,, ,,	,, ९१ ,, १।
सर्व ,, ,,	,, ९२ ,, १।

संघ व्यवस्था

आचार स्थान	सम० १८ सू० ३।
आशातना	,, ३३ ,, १।
सभोग—श्रमणो के व्यवहार	,, १२ ,, २।

अणगार

अणगार के गुण	सम० २७ सू० १।
शवलदोष (अणगार के दोष)	,, २१ ,, १।

असमाधि स्थान	२० १।
शल्य	,, ३ ,, ३।
गर्व	,, ३ ,, ४।
विराधना	,, ३ ,, ५।
गुणस्थान	**सम० १४ सू० ५।**
मोक्ष	**सम० १ सू० १४।**
सिद्धों के गुण	**सम० ३१ सू० १।**
सिद्धो की अवगाहना	,, ३०० ,, ५।
एक भवसिद्धिक-यावत्-तेतीस भवसिद्धिक	सम० १-३३ सू० ३३

भवसिद्धिक जीव

समवाय	१	मे	सूत्र	४३
,,	२	,,	,,	२३
,,	३	,,	,,	२४
,,	४	,,	,,	१८
,,	५	,,	,,	२२
,,	६	,,	,,	१७
,,	७	,,	,,	२३
,,	८	,,	,,	१८
,,	९	,,	,,	२०
,,	१०	,,	,,	२५
,,	११	,,	,,	१६
,,	१२	,,	,,	२०.

समवाय	१३	मे	सूत्र	१७
,,	१४	,,	,,	१८
,,	१५	,,	,,	१६
,,	१६	,,	,,	१६
,,	१७	,,	,,	२१
,,	१८	,,	,,	१८
,,	१९	,,	,,	१५
,,	२०	,,	,,	१७
,,	२१	,,	,,	१४
,,	२२	,,	,,	१७
,,	२३	,,	,,	१३
,,	२४	,,	,,	१५
,,	२५	,,	,,	१८
,,	२६	,,	,,	११
,,	२७	,,	,,	१५
,,	२८	,,	,,	१४
,,	२९	,,	,,	१८
,,	३०	,,	,,	१६
,,	३१	,,	,,	१४
,,	३२	,,	,,	१४
,,	३३	,,	,,	१४

धर्म-कथानुयोग सूत्राङ्क

समवाय ७ मे सूत्र ३ ।
" ९ " " ४ ।
" ११ " " ४ ।
समवाय ८ मे सूत्र ८ ।
" १० " " ४,५,६ ।
" १२ " " ५ ।

समवाय	१४	में	सूत्र	४ । ७ ।	सम०	१५	मे	सूत्र	२ ।
,,	१६	,,	,,	४ ।	,,	१८	,,	,,	२ ।
,,	१९	,,	,,	५ ।	,,	२०	,,	,,	२ ।
,,	२३	,,	,,	२,३,४ ।	,,	२४	,,	,,	१ ।
,,	२५	,,	,,	२ ।	,,	३०	,,	,,	२।४।६,७।
,,	३२	,,	,,	३ ।	,,	३४	,,	,,	१ ।
,,	३५	,,	,,	१—४ ।	,,	३६	,,	,,	३ ।
,,	३७	,,	,,	१ ।	,,	३८	,,	,,	१ ।
,,	३९	,,	,,	१ ।	,,	४०	,,	,,	१ ।
,,	४१	,,	,,	१ ।	,,	४२	,,	,,	१ ।
,,	४४	,,	,,	२ ।	,,	४५	,,	,,	५ ।
,,	४७	,,	,,	२ ।	,,	४८	,,	,,	१,२ ।
,,	५०	,,	,,	१,२,३ ।	,,	५१	,,	,,	४ ।
,,	५३	,,	,,	३ ।	,,	५४	,,	,,	१—४ ।
,,	५५	,,	,,	१—४ ।	,,	५६	,,	,,	२ ।
,,	५७	,,	,,	४ ।	,,	५९	,,	,,	२,३ ।
,,	६०	,,	,,	३ ।	,,	६२	,,	,,	२ ।
,,	६३	,,	,,	१ ।	,,	६४	,,	,,	६ ।
,,	६५	,,	,,	२ ।	,,	६६	,,	,,	५ ।
,,	६८	,,	,,	५ ।	,,	७०	,,	,,	१,२,३ ।
,,	७१	,,	,,	३,४ ।	,,	७२	,,	,,	३,४,६ ।
,,	७३	,,	,,	२ ।	,,	७४	,,	,,	१ ।
,,	७५	,,	,,	१,२,३ ।	,,	७७	,,	,,	१,२ ।
,,	७८	,,	,,	२ ।	,,	८०	,,	,,	१—४ ।
,,	८१	,,	,,	२ ।	,,	८२	,,	,,	२ ।

सम०	८३	मे	सूत्र	१—५	सम०	८४	मे	सूत्र	२—५।१६
"	८६	"	"	१,२।,	"	८९	"	"	१—४।
"	९०	"	"	१—४।	"	९१	"	"	३।
"	९२	"	"	२।	"	९३	"	"	१,२,।
"	९४	"	"	२।	"	९५	"	"	१,४,५।
"	९६	"	"	१।	"	९७	"	"	४।
"	१००	"	"	३,४,५।	"	१५०	"	"	१।
"	२००	"	"	१।	"	२५०	"	"	१।
"	३००	"	"	१,२,४,।	"	३५०	"	"	१,२।
"	४००	"	"	१,५।	"	४५०	"	"	१,२।
"	५००	"	"	३,४।	"	६००	"	"	४,५,६।
,	७००	"	"	२,३,४,।	"	८००	"	"	३,५।
"	९००	"	"	४।	"	१०००	"	"	७,८,९।

समवाय	" ११००	मे	सूत्र	२।
	" ३ लाख	"	"	१।
	" ६ लाख	"	"	१।
	" १० लाख	"	"	१।
	" १ क्रोड०	"	"	१।
	" १ क्रोडा क्रोडी	"	"	१।
	" सूत्र १५७	"	"	१—२१।
	" सूत्र १५८	"	"	१—१५।
	" सूत्र १५९	"	"	१—३९।

धर्मकथानुयोग-वर्गीकरण

कुलकर

अतीत उत्सर्पिणी मे (भरत मे) हुये कुलकरो के नाम
समo—सूत्र १५७

,, अवसर्पिणी मे (भरत मे) हुये कुलकरो के नाम
समo—सूo १५७

वर्तमान ,, ,, ,, ,,

आगामी उत्सर्पिणी मे (भरत मे) होनेवाले कुलकरो के नाम

,, ,, (एरवत मे) ,, ,, ,,
समo सूo १५८

विमलवाहन कुलकर की ऊचाई समo ९०० सूo ४।

अभिचन्द्र ,, ,, ,, ६०० सूo ५।

महापुरुष

भरत और ऐरवत क्षेत्र मे होनेवाले महापुरुष
समo ५४ सूo १।

धातकी खड मे अधिक से अधिक होनेवाले तीर्थंकर
चक्रवर्ती, बलदेव, और वासुदेव, समo ६८ ,, सूo २।३।

पुष्करवरार्ध द्वीप मे अधिक से अधिक होनेवाले
तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव समo ६८ सूo ४।

तीर्थंकर

जम्बूद्वीप मे एक साथ अधिक से अधिक होनेवाले तीर्थंकर
समo ३४ सूo ४।

देवाधिदेव (चौवीस तीर्थंकरो के नाम) समo २४ सूo १।

वर्तमान अवसर्पिणी मे(भरत क्षेत्र मे)हुये चौबीस तीर्थंकरो के नाम
समा० सू० १५७-७-

वर्तमान अवसर्पिणी मे (एरवत क्षेत्र मे)हुये चौवीस तीर्थंकरो के नाम
समा० सू० १५६।

अतिशय —

बुद्धातिशय (तीर्थंकरो के अतिशय) सम० ३४ सू० १।
सत्यवचनातिशय (,,) ,, ३५ सू० १।

तीर्थंकरों का पूर्वभव :—

वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थंकरो का—

पूर्वभव का—राज्यपद सम० २३ सू० ४
पूर्वभव का—ज्ञान ,, ,, ,, ३
पूर्वभव के—नाम समवाय सू० १५७-८

श्रमण भगवान् महावीर के पूर्वभव
(पोट्टिलभव मे) का श्रमण पर्याय सम० एक क्रोड सू० १।

तीर्थंकरो का वर्तमान भव :—

वर्तमान अवसर्पिणी मे (भरत मे) हुए
तीर्थंकरो की माताओ के नाम सम० सूत्र १५७
,, के पिताओ के नाम

तीर्थंकरो का गृहवास काल :—

१	भगवान	ऋषभदेव का गृहवास काल	सम०	८३	सूत्र	४।
२	,,	अजितनाथ का	,,	,, ७१	,,	३।
३	,,	सभवनाथ का	,,	,, ५६	,,	२।
१०	,,	शीतलनाथ का	,,	,, ७५	,,	२।
१६	,,	शातिनाथ का	,,	,, ७५	,,	३।
२२	,,	अरिष्टनेमी का	,,	,, ३००	,,	२।

२३ भगवान पार्श्वनाथ का गृहवासकाल सम० ३० सूत्र० ६ ।
२४ ,, महावीर का ,, ,, ३० ,, ७ ।

तीर्थंकरो का राज्य काल —

१ भगवान् ऋषभदेव का राज्य काल सम० ६३ सू० १ ।

राज्यपद भोगकर दीक्षित होनेवाले तीर्थंकर सम० १६ सूत्र ५ ।

चौवीस तीर्थंकरो के साथ दीक्षित होनेवालो की सख्या
सम० सूत्र १५७—

चौवीस तीर्थंकरो के साथ प्रव्रज्या ग्रहण करने का स्थान
सम० सूत्र १५७—

चौबीस तीर्थंकरो के साथ प्रव्रज्या गहण समय का तप
सम० सूत्र १५७—

चौवीस तीर्थंकरो के प्रथम भिक्षा ग्रहण काल ,, ,, ,,
,, प्रथम भिक्षान्न
,, प्रथम भिक्षा देनेवालो के नाम ,, ,, ,,
, प्रथम भिक्षा ग्रहण काल मे हुई
सुवर्ण वृष्टि का परिमाण ,, ,, ,,
,, के प्रथम शिष्यो के नाम
,, की प्रथम शिष्याओ के नाम ,, ,, ,,
,, की पालखियो के नाम
,, के चैत्य वृक्षो के नाम ,, ,, ,,
,, के ,, की ऊँचाई
,, का देवदूष्य ,, ,, ,,

तीर्थंकरो की अवगाहना-शरीर की ऊचाई —

१ भगवान् ऋषभदेव की उचाई सम० ५०० सूत्र ३ ।
२ ,, अजितनाथ ,, ,, ४५० ,, १ ।

३	भगवान	सभवनाथ की ऊचाई	सम०		४००	सूत्र०	१ ।
४	,,	अभिनदन	,,	,,	३५०	,,	१ ।
५	,,	सुमतिनाथ	,,	,,	३००	,,	१ ।
६	,,	पद्मप्रभु	,,	,,	२५०	,,	१ ।
७	,,	सुपार्श्वनाथ	,,	,,	२००	,,	१ ।
८	,,	चन्द्रप्रभ	,,	,,	१५०	,,	१ ।
९	,	सुविधिनाथ	,,	,,	१००	,,	३ ।
१०	,,	शीतलनाथ	,,	,,	९०	,,	१ ।
११	,,	श्रेयासनाथ	,,	,,	८०	,,	१ ।
१२	,,	वासुपूज्य	,,	,,	७०	,,	३ ।
१३	,,	विमलनाथ	,,	,,	६०	,,	३ ।
१४	,,	अनन्तनाथ	,,	,,	५०	,,	२ ।
१५	,,	धर्मनाथ	,,	,,	४५	,,	५ ।
१६	,,	शातिनाथ	,,	,,	४०	,,	३ ।
१७	,,	कुन्थुनाथ	,,	,,	३५	,,	२ ।
१८	,,	अरहनाथ	,,	,	३०	,,	४ ।
१९	,,	मल्लिनाथ	,,	,,	२५	,,	२ ।
२०	,,	मुनिसुव्रत	,,	,,	२०	,,	२ ।
२१	,,	नमिनाथ	,,	,,	१५	,,	२ ।
२२	,,	अरिष्टनेमि	,,	,,	१०	,,	४ ।
२३	,,	पार्श्वनाथ	,,	,,	९	,,	४ ।
२४	,,	महावीर	,,	,,	७	,,	३ ।

तीर्थंकरों का सर्वायु :—

१	भगवान्	ऋषभदेव की सर्वायु	सम०	८४	सूत्र	२ ।
११	,,	श्रेयासनाथ की ,,	,,	,,	,,	४ ।

१७	भगवान कुन्थुनाथ की सर्वायु	सम०	९५	सूत्र०	४ ॥
१९	,, मल्लिनाथ की ,,	,,	५५	,,	१ ॥
२२	,, अरिष्टनेमिकी ,,	,,	१०००	,,	७ ॥
२३	,, पार्श्वनाथकी ,,	,,	१००	,,	४ ॥
२४	,, महावीर की ,,	,,	७२	,,	३ ॥

पर्याय —

२२	भगवान अरिष्टनेमिका (दीक्षा-पश्चात्) छद्मस्थ पर्याय	सम०	५४	सूत्र०	२ ॥
	,, ,, केवली पर्याय	,,	७००	,,	४ ।
	इस अवसर्पिणी मे (भरत मे) हुए तीर्थंकरो के केवल ज्ञान होने का समय	सम०	२३	,,	२ ॥
२३	भगवान पार्श्वनाथ का श्रमण पर्याय	सम०	७०	,,	२ ॥
२४	,, महावीर ,,	,,	४२	,,	१ ॥

निर्वाणकाल :—

१	भगवान ऋषभदेव का निर्वाणकाल	सम०	८९	सूत्र	१ ॥
२४	,, महावीर का ,,	,,		,,	२ ॥

अन्तरः—

१।२४ भगवान् ऋषभदेव और भगवान्वर्धमान का अन्तर
सम० एक कोटा० सूत्र १ ॥

भगवान महावीर

भगवान महावीर के गर्भसाहरण से पूर्व के दिन	सम०	८२	सूत्र०	२ ।
,, महावीर का गर्भ साहरण दिन	,,	८३	,,	१ ।
,, महावीर के वर्षावास के दिन	,,	७०	,,	१ ॥

,, महावीर द्वार (एक दिन में एक
आसन से) दिये गये प्रश्नो के उत्तर ,, ५४ ,, ३ ।
भग० महावीर की अन्तिम धर्म देशना ,, ५५ ,, ४ ।
,, महावीर के समवसरण का वर्णन ,, सम० सूत्र १५७

तीर्थंकरों के गण और गणधर

१	भगवान ऋषभदेव के गण और गणधर			सम०	८४	सू०	१५
२	भगवान अजितनाथ के गण और गणधर			,,	६०	,,	२ ।
७	,	सुपार्श्वनाथ के	,,	,,	६५	,,	१ ।
८	,,	चन्द्रप्रभ के	,,	,,	६३	,,	१ ।
९	,,	सुविधिनाथ के	,,	,,	८६	,,	१ ।
१०	,,	शीतलनाथ के	,,	,,	८३	,,	२ ।
११	,,	श्रेयासनाथ के	,,	,,	६६	,,	५ ।
१२	,,	वासुपूज्य के	,,	,,	६२	,,	२ ।
१३	,,	विमलनाथ के	,,	,,	५६	,,	२ ।
१४	,,	अनन्तनाथ के	,,	,,	५४	,,	४ ।
१५	,,	धर्मनाथ के	,,	,,	४८	,,	२ ।
१६	,,	शांतिनाथ के	,,	,,	९०	,,	३ ।
१७	,,	कुन्थुनाथ के	,,	,,	३७	,,	१ ।
२३	,,	पार्श्वनाथ के	,,	,,	८	,,	८ ।
२४	,,	महावीर के	गणधर	,,	११	,,	४ ।

भगवान महावीर के गणधर

१	स्थविर	इन्द्रभूति का	सर्वायु	सम०	९२	सूत्र०	२ ।
२	,,	अग्निभूति का	,,	,,	७४	,,	१ ।
५	,,	सुधर्मा का	,,	,,	१००	,,	५ ।
६	,,	मंडितपुत्र का	,,	,,	८३	,,	३ ।

७	स्थविर	मौर्यपुत्र का	सर्वायु	सम०	६५	,, ५ ।
८	,,	अकंपित का	,,	,,	७८	,, २ ।
९	,,	अचलभ्राता का	,,	,,	७२	,, ४ ।

२ स्थविर अग्निभूति का गृहवासकाल नम० ४७ सूत्र० २ ।
७ ,, मौर्यपुत्र का ,, ,, ,, ६५ ,, २ ।

स्थविर मंडितपुत्रका श्रमण पर्याय सम०३० सू० २ ।

तीर्थंकरों की सम्पदा —

१	भगवान	ऋषभदेवके	श्रमण	सम०	८४	सूत्र०	१६ ।
१३	,	विमलनाथ के	,,	,,	६८	,,	५ ।
२३	,,	पार्श्वनाथ के	,,	,,	१६	,,	४ ।
२४	,,	महावीर के	,,	,,	१४	,,	४ ।
१६	भगवान	शांतिनाथ की	श्रमणियां	सम०	८९	सूत्र०	४ ।
२०	,,	मुनिसुव्रत की	,,	,,	५०	,,	१ ।
२१	,,	नमिनाथ की	,,	,,	४१	,,	१ ।
२२	,,	अरिष्टनेमि की	,,	,,	४०	,	१ ।
२३	,,	पार्श्वनाथ की	,,	,,	३८	,,	१ ।
२४	,,	महावीर की	,,	,,	३६	,,	३ ।

२३ भगवान पार्श्वनाथ की श्राविकाए सम० तीनलाख सूत्र०१ ।

७	भगवान	सुपार्श्वनाथ के	वादी (श्रमण)	सम०	८६	सूत्र०२ ।
२२	"	अरिष्टनेमि के	"	"	८००	" ५ ।
२३	"	पार्श्वनाथ के	"	"	६००	" ४ ।

२४ " महावीर के " " ४०० " ५।

९ भगवान सुविधिनाथ के केवली सम० ७५ सूत्र० १।
१७ " कुन्थुनाथ के " " ३२ " ३।
२३ " पार्श्वनाथ के " " १००० " ८।
२४ " महावीर के " " ७०० " २।
२ भगवान अजितनाथ के अवधिज्ञानी सम० ९४ सूत्र० २।
" ९००० " १।
१७ " कुन्थुनाथ के " " ८१ " ३।
१९ " मल्लिनाथ के " " ५९ " ३।
२१ " नमिनाथ के " " ३९ " १।

१७ भगवान कुन्थुनाथ के मनःपर्यवज्ञानी सम० ८१ सूत्र० २।
१९ " मल्लिनाथ के " " ५७ " ४।
२१ " नमिनाथ के " " ३९ " १।

१६ भगवान शांतिनाथ के चतुर्दशपूर्वी सम० ९३ सूत्र० २।
२३ " पार्श्वनाथ के " " ३५० " १।
२४ " महावीर के " " ३०० " ४।

२३ भगवान पार्श्वनाथ के वैक्रियलब्धिवाले श्रमण सम० ११००
सूत्र० २।
२४ " महावीर के " " ७०० " ३।

२४ भगवान महावीर के एक वर्ष की श्रमणपर्याय वाले अनुत्तरोपपातिक श्रमण सम० ५३ सूत्र० ३।

२४ भगवान महावीर के अनुत्तरोपपातिक श्रमण सम० ८०० सूत्र३।

१३ भगवान विमलनाथ के पश्चात् होने वाले युगप्रधान पुरुष सम० ४४ सूत्र० २।

२३ भगवान पार्श्वनाथ के मोक्षगामी शिष्य सम० १००० सूत्र० ६।

भविष्य में होनेवाले तीर्थंकरों का संक्षिप्त परिचयः—

आगामी उत्सर्पिणी मे (भरत मे) होने वाले
तीर्थंकरो के नाम और उनके पूर्वभव के नाम,
तथा माता, पिता के नाम । प्रथम शिष्य, शिष्या,
प्रथम भिक्षा देने वाले और चैत्य-वृक्ष आदि सम०सूत्र १५७।

आगामी उत्सर्पिणीमे (एरवत मे) होनेवाले तीर्थंकरो के नाम सम० सूत्र० १५७।

चक्रवर्तियो का संक्षिप्त परिचयः—

वर्तमान अवसर्पिणी मै (भरतमे) हुए बारह चक्रवर्तियो के
पिताओ के नाम
" माताओ के नाम
" चक्रवर्तियोके नाम
" स्त्रीरत्नो के नाम
सम० सूत्र १५८

आगामी उत्सर्पिणी मे (भरतमे) बारह चक्रवर्ती होगे उनकेनाम
तथा उनके माता, पिता और स्त्रीरत्न होगे सम० सूत्र० १५९।

आगामी उत्सर्पिणी मे (एरवत मे) बारह चक्रवर्ती होगे
उनके माता, पिता और स्त्रीरत्न होगे सम० सूत्र० १५९।

१ भरत चक्रवर्ती की कुमार अवस्था सम० ७७ सूत्र० १।

	भरत चक्रवर्ती का राज्य काल	सम०	६लाख	सूत्र०	१।
	" का गृहवास काल	"	८३	"	१।
	" का सर्वायु	"	८४	"	३।
	" की उचाई	"	५००	"	४।
२	सगर चक्रवर्ती का राज्यकाल	सम०	७१	सूत्र०	४।
	" की ऊचाई	"	४५०	"	२।
१०	हरिषेण चक्रवर्ती का राज्यकाल	सम०	८९	सूत्र०	३।
	" का गृहवास काल	"	६७	"	४।
	चक्रवर्तियो के एकेन्द्रिय और पचेन्द्रिय रत्न	सम०	१४	सूत्र	७।
	चक्रवर्तियो के हार का परिमाण	सम०	६४	सूत्र०	६।
	प्रत्येक चक्रवर्ती के पट्टन	सम०	४८	सूत्र०	१।
	" श्रेष्ठपुर	"	७२	"	६।
	" ग्राम	"	९६	"	१।
	जम्बूद्वीप मे चक्रवर्तियो के विजय	सम०	३४	सूत्र०	२।

बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव

पूर्वभव :—

वर्तमान अवसर्पिणी मे (भरत मे) हुए

बलदेवो के पूर्वभव के नाम

" वासुदेवो के नाम

" बलदेव और वासुदेवो के पूर्वभव के धर्माचार्यों के नाम

" वासुदेवो के पूर्वभव की निदानभूमियो के नाम

" वासुदेवो के पूर्वभव मे किये गये निदानो के कारण

सम०—सूत्र१५८।

वर्तमान भव :—

वर्तमान अवसर्पिणी में (भरतमे) हुए

वलदेवो के नाम

वासुदेवो के ,,

प्रतिवासुदेवो के ,,

वलदेवो और वासुदेवो के पिताओ के नाम

वलदेवो की माताओ के नाम

वासुदेवो की माताओ के नाम समः सूत्र १५८।

नव दसार-मंडलो का वर्णन

वलदेवों का पूर्णायु :—

२ विजय वलदेव का	पूर्णायु	सम० ७३	सूत्र०	२।
४ सुप्रभ ,,	,,	,, ५१	,,	४।
८ राम ,,	,,	,, १२	,,	५।

वासुदेवों का पूर्णायु :—

१ त्रिपृष्ठ वासुदेव का	पूर्णायु	,, ८४	,,	५।
५ पुरूपसिंह ,,	,,	दसलाख	,,	१।

वलदेवों की अवगाहना :—

१ अचल वलदेव की	ऊचाई	सम० ८०	सूत्र०	३।
७ नदन ,,	,,	,, ३५	,,	४।
९ राम ,,	,,	,, १०	,,	६।

वासुदेवों की अवगाहना :—

१ त्रिपृष्ठ वासुदेव की	ऊँचाई	सम० ८०	सूत्र० २ ।
४ पुरुषोत्तम ,,	,,	,, ५०	,, ३ ।
७ दत्त ,,	,,	,, ३५	,, ३ ।
९ कृष्ण ,,	,,	,, १०	,, ५ ।

१ त्रिपृष्ठ वासुदेव का	राज्यकाल	सम० ८०	सूत्र० ४ ।
३ स्वयम्भू ,,	विजयकाल	सम० ९०	सूत्र० ४ ।

२ विजय वलदेव की	गति	सम० ७३	सूत्र० २ ।
४ सुप्रभ ,,	,,	,, ५१	,, ४ ।
९ राम ,,	,,	,, १२	,, ५ ।
१ त्रिपृष्ठ वासुदेव की	,,	,, ८४	,, ५ ।
५ पुरुषसिंह ,,	,,	दसलाख	१ ।

भविष्य में होनेवाले वलदेव और वासुदेवो का संक्षिप्त परिचय —

आगामी उत्सर्पिणी मे (भरतमे होने वाले) वलदेवो के नाम
वासुदेवो के नाम
प्रति वासुदेवो के नाम
वलदेव और वासुदेवो के पिता,
वलदेवो की माता, वासुदेवो की माता, इनके पूर्नभव, पूर्वभव के आचार्य, पूर्वभव की निदानभूमियो और निदान के कारण होगे ।

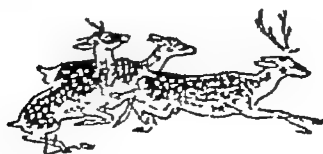
सम० सूत्र० १५८

आगामी उत्सर्पिणी में (एरवतमे) होने वाले नव वलदेव, वासुदेवो के पिता, नव वलदेवो की माता, नव वासुदेवो की माता उनके पूर्वभव, पूर्वभव के आचार्य, पूर्वभव की निदानभूमिया और निदान के कारण होगे। समं० सूत्र० १५८

द्रव्यानुयोग-सूत्राङ्क

समवाय १ मे सूत्र	१, २, ३, । ५, ७ से १५ । १७ ।	२६ से ४३
" २ " "	१, २, ३	८ से २३
" ३ " "	१, ४, ५	१३ से २४
" ४ " "	१, ३, ४, ५	१० से १८
" ५ " "	१, ३, ४, ८	१४ से २२
" ६ " "	१, २, ५, ६	९ से १७
" ७ " "	१, २, ६	१२ से २३
" ८ " "	१, ७	१० से १८
" ९ " "	२, ३	११ से २०
" १० " "		९ से २५
" ११ " "		८ से १६
" १२ " "		१२ से २०
" १३ " "	१, ५, ६, ७	९ से १७
" १४ " "	१, २, ३, ५	९ से १८
" १५ " "		६ से १६
" १६ " "	१, २, ५	८ से १६

समवाय	१७,	,,	१		६ से २१
,,	१८	,,	,,		४ से ६, ६ से १८
,,	१९	,,	,,	१	६ से १५
,,	२०	,,	,,	५, ६	८ से १७
,,	२१	,,	,,	२	५ से १४
,,	२२	,,	,,		२ से १७
,,	२३	,,	,,	१	५ से १३
,,	२४	,,	,,		७ से १५
,,	२५	,,	,,	५, ६	६ से १८
,,	२६	,,	,,		१ मे ११
,,	२७	,,	,,	५	७ से १५
,,	२८	,,	,,	२, ३	५ से १४
,,	२९	,,	,,	१	६ से १८
,,	३०	,,	,,	१	६—१६
,,	३१	,,	,,	१	६—१४
,,	३२	,,	,,		६—१४
,,	३३	,,	,,		५—१४



समवाय ३६ मे सूत्र १
„ ३८ „ ४
„ ४० „ „ ५
„ ४२ „ ५, ६, ८
„ ४४ „ „ १, ४,
„ ४६ „ „ १, २
„ ५१ „ „ १, ५
„ ५३ „ „ ४
„ ५७ „ „ १
„ ६६ „ „ ६
„ ७० „ „ ४
„ ७२ „ „ ७, ८
„ ८४ „ „ ११
„ ८७ „ „ ५
„ ९१ , „ ४
, ३०० „ ५
समवाय सूत्र १३६ से १४९
„ „ १५३— ४
„ „ १५५— २

समवाय ३७ में सूत्र ४
„ ३९ „ „ ४
„ ४१ „ „ ३
„ ४३ „ „ १, ५
„ ४५ „ „ ८
„ ४९ „ „ २, ३
„ ५२ „ „ १, ४
„ ५५ „ „ ६
„ ५८ „ „ २
„ ६९ , „ ३
„ ७१ „ „ २
„ ८१ „ „ ३
„ ८५ „ „ १
„ ८८ „ „ २
„ ९७ „ „ ३
समवाय सूत्र १५१—१५२
„ „ १५४— ४
„ „ १५६

द्रव्यानुयोग वर्गीकरण

राशि के प्रकार	सम० २ सूत्र २ ।
"	" १४९—१ ।
अस्तिकाय के प्रकार	सम० ५ सूत्र ८ ।

जीवद्रव्य :—

आत्मा (द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा से)	सम० १ सूत्र १ ।
भूतग्राम (जीव-समूह)	सम० १४ सूत्र १ ।
जीवनिकाय (जीव-समूह)	" ६ " २ ।

नारक आदि चौवीस दण्डको मे जीवो के विशेष भेद—

सम० सूत्र १४९-१

परमाधार्मिकदेव	सम० १५ सूत्र १ ।
देवेन्द्र	" ३२ " २ ।

जीव-परिणाम —

कषाय(प्रज्ञापना का चौदहवा कषाय पद देखें) सम० ४ सूत्र १ ।

लेश्या सम० ६ " १ ।

लेश्या का विस्तृतवर्णन (चौबीस दण्डक मे) प्रज्ञापना के १७ वें लेश्या पद मे देखें सम० १५३ सूत्र ३ ।

ज्ञान—उपयोग :—

मतिज्ञान

अर्थावग्रह	सम० ६ सूत्र ६ ।
अभिनिवोधिकज्ञान (मतिज्ञान के) भेद	" २८ " ३ ।

अभिनिवोधिकज्ञान (मतिज्ञान) की उत्कृष्टस्थिति

सम० ६६ सूत्र ६ ।

श्रुतज्ञान

द्वादशाङ्ग गणिपिटक (अङ्ग प्रविष्ट)	सम० आदि वाक्य		
आचाराङ्ग परिचय	सम०	सूत्र	१३६ ।
आचाराङ्ग के अध्ययन (मूलमे-ब्रह्मचर्य के अध्ययन)	सम० ९	,,	३ ।
आचाराङ्ग के चूलिका सहित अध्ययन	,, २५	,,	५ ।
आचाराङ्ग के उद्देशन (अध्ययन) काल	,, ५१	,,	१ ।
आचाराङ्ग (चूलिका सहित) के उद्देशनकाल	८५	,,	१ ।
आचाराङ्ग (चूलिका सहित) के पद	,, १८	,,	४ ।
सूत्रकृताङ्ग परिचय	सम०	सूत्र	१३७ ।
,, (प्रथम श्रुतस्कध) के अध्ययन	,, १६	,,	१ ।
,, के अध्ययन	सम० २३	,,	१ ।
स्थानाङ्ग परिचय	सम०	सूत्र	१३८ ।
समवायाग ,,	,,	,,	१३९ ।
व्याख्याप्रज्ञप्ति ,,	,,	,,	१४० ।
,, के अध्ययन (महायुग्मशतक)	,. ८१	,,	३ ।
,, पद	,, ८४	,,	११ ।
ज्ञाताधर्मकथा परिचय	सम०	,,	१४१ ।
,, के अध्ययन	,, १९	,,	१ ।
उपासकदशा परिचय	सम०	सूत्र	१४२ ।
अन्तकृद्दशा ,,	,,	,,	१४३ ।
अनुत्तरोपपातिकदशा	,,	,,	१४४ ।
प्रश्नव्याकरण ,,	,,	,,	१४५ ।
विपाकश्रुत ,,	,,	,,	१४६ ।
कर्मविपाक के अध्ययन	,, ४३	,,	१ ।

पूर्वों की वस्तु

पूर्व के प्राभृत:—

अध्ययनो की संयुक्त संख्या —

आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, और स्थानाङ्ग के अध्ययन[1]

	सम० ५७	सूत्र	१

अङ्ग बाह्यश्रुत

उत्तराध्ययन के अध्ययन	सम० ३६	सूत्र	१
दशा, कल्प और व्यवहार के उद्देशनकाल	,, २६	,,	१
ऋषिभासितो के अध्ययन	,, ४४	,,	१
क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशन काल	,, ३७	,,	४
,, द्वितीय वर्ग	,, ३८	,,	४
,, तृतीय वर्ग	,, ४०	,,	५
महाविमान प्रविभक्ति के प्रथमवर्ग के उद्देशनकाल	सम० ४१	सूत्र	३
,, द्वितीय ,,	सम० ४२	,,	८
,, तृतीय ,,	,, ४३	,,	५
,, चतुर्थ ,,	,, ४४	,,	४
,, पचम ,,	,, ४५	,,	८
प्रकीर्णक (ग्रन्थ)	,, ८४	,,	१३

पापश्रुत —

पापश्रुत	सम० २९	सूत्र	१

---

[1] आचाराङ्ग की चूलिकाए न गिने तो ५७ की सख्या होतीहै ।

अवधिज्ञान :—

अवधिज्ञान का वर्णन (चौवीस दण्डक मे प्रज्ञापना के ३३वें अवधि पद मे देखें) समः सूत्र १५३-१।

वेद और वेदक —

वेद और वेदको (चौवीस दण्डक मे) का विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना के १३ वें परिणाम पद मे देखे समः सूत्र १५६-१।

वेदना —

वेदना (द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा से) समः १ सूत्र १७

जीवो की (चौवीस दण्डको मे) वेदना-प्रज्ञापना के ३५वें वेदना पद मे देखे— समः सूत्र १५३-२।

आहार —

जीवो के आहार लेने का विस्तृत वर्णन (चौवीस दण्डक मे) प्रज्ञापना के २८वे आहारपद में और ३४वें परिचारणा पद मे देखे समः × सूत्र १५३-४१

सागर आदि विमानवासी देव		समः	१	सूत्रः	४२
शुभ	"	"	२	"	२२
आभकर	"	"	३	"	२३
कृष्टि	"	"	४	"	१७
वात	"	"	५	"	२१
स्वयम्भू	"	"	६	"	१६
सम	"	"	७	"	२२
अर्चि	"	"	८	"	१७
पद्म	"	"	९	"	१९

घोष	आदि विमानवासी देव	सम०	१०	सूत्र	२४
ब्रह्मोत्तर	"	"	११	"	१५
माहेन्द्र	"	"	१२	"	१६
वज्र	"	"	१३	"	१६
श्रीकान्त	"	"	१४	"	१७
नन्द	"	"	१५	"	१५
आवर्त	"	"	१६	"	१५
सामान	"	"	१७	"	२०
काल	"	"	१८	"	१७
आणत	"	"	१६	"	१४
सात	"	"	२०	"	१६
श्रीवत्स	"	"	२१	"	१३
महित	"	"	२२	"	१६
नीचे के ग्रैवेयिक	"	"	२३	"	१२
" मध्यम ग्रैवेयक	"	"	२४	"	१४
" ऊपर "	"	"	२५	"	१७
मध्यम के प्रथम "	"	"	२६	"	१०
मध्यम के मध्यम ग्रैवेयक		"	२७	"	१४
" ऊपर	"	"	२८	"	१४
ऊपरके प्रथम	"	"	२६	"	१७
" मध्यम	"	"	३०	"	१५
" ऊपर	"	"	३१	"	१३
जयन्त आदि	"	"	३२	"	१३
सर्वार्थसिद्ध	"	"	३३	"	१३

श्वासोच्छ्वास.—

जीवो के श्वासोच्छ्वास लेने का विस्तृत वर्णन (चौबीस-दण्डक मे) प्रज्ञापना के ७ वें उच्छ्वासपद मे देखें।

सागर—आदि	विमानवासी देव	सम०	१	सूत्र०	४२
शुभ	"	"	२	"	२१
आभकर	"	"	३	"	२२
कृष्टि	"	"	४	"	१६
वात	"	"	५	"	२०
स्वयम्भू	"	"	६	"	१५
सम	"	"	७	"	२१
अर्चि	"	"	८	"	१६
पक्ष्म	"	"	९	"	१८
घोष	"	"	१०	"	२३
ब्रह्मोत्तर	"	"	११	"	१४
माहेन्द्र	"	"	१२	"	१८
वज्र	"	"	१३	"	१५
श्रीकान्त	"	"	१४	"	१६
नन्द	"	"	१५	"	१४
आवर्त	"	"	१६	"	१४
सामान	"	"	१७	"	१९
काल	"	"	१८	"	१६
आणत	"	"	१९	"	१३
सात	"	"	२०	"	१५
श्रीवत्स	"	"	२१	"	१२

महित आदि विमानवासी देव	सम०	२२	सूत्र	१५
नीचे के ग्रैवेयक "	"	२३	"	११
मध्यम के ग्रैवयेक "	"	२४	"	११
उपर के " "	"	२५	"	१६
मध्यम के प्रथम के " "	"	२६	"	९
" मध्यम के " "	"	२७	"	१३
" उपर के " "	"	२८	"	१४
उपर के प्रथम "	"	२९	"	१६
" मध्यम "	"	३०	"	१४
" उपर "	"	३१	"	१२
जयत आदि "	"	३२	"	१२
सर्वार्थसिद्ध "	"	३३	"	१२

जीवों की स्थितिः—

नारको की स्थिति—प्रज्ञापना के चौथे स्थितिपद को देखे

रत्नप्रभाके नारको की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र० ९ ।

" कुछ नारको की स्थिति

सम० १ सूत्र २९ । मम० २ सूत्र ८ । सम० ३ सूत्र १३ ।
सम०४ सूत्र १० । सम० ५ मूत्र १४ । सम० ६ सूत्र ९ ।
सम० ७ सूत्र १२ । सम० ८ सूत्र १० । सम० ९ सूत्र १२ ।
सम० १० सूत्र ९ । सम० ११ सूत्र ८ । सम० १२ सूत्र १२
सम० १३ सूत्र ९ । सम० १४ सूत्र ९ । सम० १५ सूत्र ८ ।
सम० १७ सूत्र ११ । सम० १८ सूत्र ९ । सम० १९ सूत्र ६ ।
सम० २० सूत्र-८ । सम० २१ सूत्र ५ । सम० २२ सूत्र ७ ।
सम०२३ सूत्र ५ । सम० २४ सूत्र ७ । सम० २५ सूत्र १० ।

समo २६ सूत्र ३ । सम० २७ सूत्र ७। सम० २८ सूत्र ६ ।
सम० २६ सूत्र १० । सम० ३० सूत्र ६ । सम० ३१ सूत्र६ ।
सम० ३२ सूत्र ७ । सम० ३३ सूत्र ५ ।

" उत्कृष्टस्थिति-सम० १ सूत्र २७ ।

शर्कराप्रभा के नारको की जघन्य स्थिति सम० १ सूत्र २८ ।

" कुछ नारको की स्थिति सम० २ सूत्र ६ ।

उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सू० १४ ।

वालुकाप्रभा के नारको की जघन्यस्थिति सम०३ सूत्र १५

कुछ नारको की स्थिति-सम० ४ सूत्र ११ । स० ५ सू० १५
स० ६ सू० १०

उत्कृष्ट स्थिति-सम० ७ सूत्र १३ ।

पकप्रभा के नारको की जघन्य स्थिति सम० ७ सूत्र १४ ।

कुछ नारको की स्थिति सम०८ सूत्र ११ । सम०६ सूत्र १३ ।

उत्कृष्ट स्थिति सम० १० सूत्र १२ ।

धूमप्रभा के नारको की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १३ ।

कुछ नारको की स्थिति सम०११ । सूत्र ६। सम० १२ सू०
१३ सम० १३ सू० १०
सम० १४सूत्र १० । सम०१५ सू० ६ । सम० १६ सू० ६ ।

उत्कृष्टस्थिति-सम० १७ सूत्र १३ ।

तमप्रभा के नारको की जघन्य स्थिति सम० १७ सूत्र १३ ।

कुछ नारको की स्थिति सम० १८ सूत्र १० । सम० १६
सू० ७ । सम० २० सू० ६ । स० २१ सूत्र ६ ।

उत्कृष्टस्थिति-सम० २२ सूत्र ८ ।

तमस्तमप्रभा के नारकोकी जघन्यस्थिति-सम० २२ सूत्र ६ ।

कुछ नारको की स्थिति-सम० २३ सूत्र ६ । सम० २४

सूत्र ८ । सम० २५ सू० ११ । सम०२६ सू० ४ । सम० २७ सू० ८ । सम० २८ सू० ७ । सम० २९ सू० ११ । सम० ३० सू० १० । सम० ३१ सू० ७ । सम० ३२ सू० ८ । उत्कृष्ट स्थिति सम० ३३ सूत्र ६, ७ ।

तिर्यंचों की स्थितिः—

बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति सम० १० सूत्र १७ ।
त्रीद्रिय की „ „ ४९ „ ३ ।
सम्मूर्छिम खेचर तिर्यच पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति-
सम० ७२ सूत्र ८ ।
„ उरपरिसर्प „ „ „ ५३ सूत्र ४ ।
„ भुजपरिसर्प „ „ „ ४२ „ ५ ।
असख्यवर्षायुषी कुछ सज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रियो की स्थिति
सम० १ सूत्र ३२ । सम० २ सूत्र १२ ।
„ „ „ उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सूत्र १७

मनुष्यो की स्थिति —

असख्यवर्षायुषी कुछ गर्भज मनुष्यो की स्थिति
सम० १ सूत्र ३३ । सम० २ सूत्र १३ ।
„ „ उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सूत्र १८ ।

भवनवासी देवों की स्थिति —

असुरकुमारो की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १४ ।
कुछ असुरकुमारो की स्थिति,
सम० १ सूत्र २९ । सम० २ सूत्र १० । सम० ३ सूत्र १६ ।
सम० ४ सू० १२ । सम० ५ सू० १६ । सम० ६ सू० ११ ।

सम० ७ सू० १५ । सम० ८ सू० १२ । सम० ९ सू० १४ ।
सम० १० सू० १६ । सम० ११ सू० १० । सम० १२ सू० १४ ।
सम० १३ सू० ११ । सम० १४ सूत्र ११ । सम० १५ सू० १० ।
सम० १६ सू० १० । सम० १७ सू० १४ । सम० १८ सू० ११ ।
सम० १९ सू० ८ । सम० २० सू० १० । सम० २१ सू० ७ ।
सम० २२ सू० १० । सम० २३ सू० ७ । सम० २४ सू० ९ ।
सम० २५ सू० १२ । सम० २६ सू० ५ । सम० २७ सू० ९ ।
सम० २८ सू० ८ । सम० २९ सू० १२ । सम० ३० सू० ११ ।
सम० ३२ सू० ९ । सम० ३३ सू० ८ ।

असुरकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति सम० १ सूत्र ३० ।

नागकुमार आदि (नवनिकाय) के भवनवासी देवो की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १५ ।

" " कुछ देवोकी स्थिति सम० १ सूत्र ३१ ।

" " भवनवासी देवो की उत्कृष्ट स्थिति सम० २ सूत्र ११ ।

व्यन्तर देवों की स्थिति —

व्यन्तर देवो की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र० १८ ।

" " उत्कृष्ट स्थिति- सम० १ सूत्र ३४ ।

ज्योतिषी देवों की स्थिति —

ज्योतिषी देवो की उत्कृष्ट स्थिति सम० १ सूत्र ३५ ।

विमानवासी देवों की स्थिति —

सौधर्मकल्प के देवो की जघन्य स्थिति - सम० १ सूत्र० ३६ ।

" " कुछ देवो की स्थिति —

सम० १ सूत्र ३७ । सम० २ सू० १४ । सम० ३ सूत्र १९ ।

समम० ४ सूत्र १३। सम० ५ सूत्र १७। सम० ६ सूत्र १२।
सम० ७ सूत्र १६। सम० ८ सूत्र १३। सम० ९ सूत्र १५।
सम० १०सूत्र १९। स० ११ सूत्र ११। सम० १२ सूत्र १५।
सम० १३ सूत्र १२। स० १४ सूत्र १२। सम० १५ सूत्र ११।
सम० १६ सू० ११। म० १७ सू० १५। सम० १८ सूत्र १२।
सम० १९ सूत्र ९। स० २० सूत्र ११। सम० २१ सूत्र ८।
सम० २२ सूत्र ११। स० २३ मूत्र ८। सम० २४ सूत्र १०।
सम० २५ सूत्र १३। स० २६ सूत्र ६। सम० २७ सूत्र १०।
सम० २८सूत्र ९। सम० २९ सूत्र १३। सम० ३१ सूत्र ९।
सम० ३२सूत्र १०। सम० ३३ सूत्र ९।

सौधर्मकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति - सम० २ सूत्र १६।
ईशानकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० १ सूत्र ३८।
,, कुछ देवो की स्थिति —सम० १ सूत्र ३९।
सम० २ सूत्र १५ आगे ३-१९ से ३३ — ९ तक सौधर्म कल्प के समान समवायाङ्क और सूत्राङ्क जाने।
ईशानकल्प के देवो की उत्कृष्ट स्थिति- सम० २ सूत्र० १७।
माहेन्द्रकल्प के देवो की जघन्य स्थिति- सम० २ सूत्र १९।
,, कुछ देवो की स्थिति के समवायाङ्क और सूत्राङ्क सनत्कुमार कल्प के समान है।
,, देवो की उत्कृष्टस्थिति- सम० ७ सूत्र० १८।
ब्रह्मकल्प के कुछ देवो की स्थिति —सम० ७ सूत्र १९। सम० ८ सूत्र १४। सम० ९ सूत्र० १६।
,, देवो की उत्कृष्ट स्थिति —सम० १० सूत्र २०।

लान्तककल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० १० सूत्र २१
,, कुछ देवो की स्थिति ।—सम० ११, सू० १२ ।
सम० १२ सूत्र १६ । सम० १३ सूत्र १३ ।
,, देवों की उत्कृष्टस्थिति —सम० १४ सू० १३ ।
महाशुक्रकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० १४ सूत्र १४
,, कुछ देवो की स्थिति —सम० १५ सू० १२ । सम०
१६ सूत्र १२ ।
,, देवो की उत्कृष्ट स्थिति :—सम० १७ सूत्र १६ ।
सहस्रारकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —,, १७ सूत्र १७ ।
,, ,, उत्कृष्ट स्थिति —,, १८ ,, १३ ।
आनतकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० १८ सूत्र १४ ।
उत्कृष्ट स्थिति —,, १६ ,, १० ।
प्राणतकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० १६ सूत्र ११ ।
,, ,, उत्कृष्ट स्थिति —,, २० ,, १२ ।
आरणकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० २० सूत्र १३ ।
,, ,, उत्कृष्ट स्थिति —,, २१ ,, ६ ।
अच्युतकल्प के देवो की जघन्य स्थिति —सम० २१ सूत्र १० ।
,, ,, उत्कृष्ट स्थिति —,, २२ ,, १२ ।

ग्रैवेयक देवों की स्थिति :—

प्रथम प्रस्तट के प्रथम ग्रैवेयक देवो की जघन्यस्थिति —
सम० २२ सूत्र १३ ।

,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—सम०	२३	सूत्र०	१०।
,, मध्यम	,,	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२३	,,	९।
			उत्कृष्टस्थिति	—,,	२४	,,	१२।
,, उपरिम	,,	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२४	,,	११।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	२५	,,	१५।
द्वितीय प्रस्तटके	प्रथम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२५	,,	१४।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	२६	,,	८।
,,	मध्यम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२६	,,	७।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	२७	,,	१२।
,,	उपरिम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२७	,,	११।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	२८	,,	११।
तृतीय प्रस्तटके	प्रथम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२८	,,	१०।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	२९	,,	१५।
,,	मध्यम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	२९	,,	१४।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	३०	,,	१३।
,,	उपरिम	,,	जघन्यस्थिति	—,,	३०	,,	१२।
,,	,,	,,	उत्कृष्टस्थिति	—,,	३१	,,	१२।

अनुत्तर विमानवासी देवों की स्थिति—

विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजयन्त विमानवासी देवो की

जघन्य स्थिति—सम० ३१ सूत्र १०।

,, ,, ,, कुछ देवो की स्थिति- ,, ३२ ,, ११।

,, ,, ,, देवो की उत्कृष्ट स्थिति- ,, ३३ ,, १०।

सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवो की अजघन्योत्कृष्टस्थिति.—

,, ३३ ,, ११।

मरणः—

मरण के प्रकार सम० १७ सूत्र ९।

समुद्घातः—

समुद्घात विषयक विस्तृत वर्णन (चौवीसदण्डक मे) प्रज्ञापना का ३६वा पद देखें।

समुदुघातो के नाम	सम०	७	सूत्र०	२।
छाद्मस्थिक समुद्घात	,,	६	,,	५।
केवली समुद्घात के समय	,,	८	,,	७।

योनिः—(जीवों के उत्पत्तिस्थान)

योनि विषयक विस्तृत वर्णन (चौबीसदण्डक मे) प्रज्ञापना का ९वां योनिपद देखें

जीवो की सर्वयोनिया सम० ८४ सूत्र० १४।

कुल कोटीः—

कुलकोटी विषयक विस्तृत वर्णन—प्रज्ञापना के प्रथम पद में देखें
जलचर तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय की कुलकोटी सम० १३ सूत्र ५।

उपपात :—(उत्पन्न होना) और उद्वर्तन (मरण)

उपपात और उद्वर्तन का विषय प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्तिपद मे देखें
सम० सूत्र० १५४-२,३।

शरीर और अवगाहना —

शरीर और अवगाहना के सबध मे प्रज्ञापना के बारहवें शरीरपद और इक्कीसवें अवगाहना पद मे देखें सम० × सूत्र० १५२।

जम्बूद्वीप मे प्रवेश करने वाले मत्स्यो की लम्बाई
सम० ९ सूत्र० ८।

सघयण :—

सघयण(चोवीस दण्डकों मे) सम० × सूत्र० १५५-१

संठाण:—

सठाण (चोवीस दण्डको मे) प्रज्ञापना का इक्कीसवा अवगाहना पद देखे । सम० × सूत्र १५५-२

संज्ञा:—

विशेष जानने के लिए प्रज्ञापना का आठवा सज्ञापद देखें

सज्ञा के प्रकार	सम० ४ सूत्र ४।
भयस्थान	,, ७ ,, १।
योग :—गर्भज तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय के योग	सम० १३ ,, ७।
,, मनुष्य के ,,	,, १५ ,, ७।

पुण्य:—

पुण्य	सम० १ सूत्र० ११।

पाप:—

पाप	सम० १ सूत्र० १२।

आश्रव —

आश्रव	सम० १ सूत्र०१५।
आश्रवद्वार	सम० ५ सूत्र० ४।
दण्ड	,, १,२,३ ,, ३,१,१।
विकथा	,, ४ ,, ३।
ब्रह्मचर्य की अगुप्ति	,, ९ ,, २।
क्रिया	,, १ ,, ५।
क्रिया	,, ५ ,, १।
क्रियास्थान	,, १३ ,, १।

बन्ध :—

बन्ध समः १ सूत्र १३।

" " ४ " ५।

बन्धन " २ " ३।

कर्म :—

कर्मो की उत्तरप्रकृतिया —

दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ समः ९ सूत्रः ११।

नाम " " १२ " ६।

कर्मों की उत्तरप्रकृतियो की सयुक्त सख्या

ज्ञानावरणीय मोहनीय गोत्र और आयुकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ

" ३९ " ४।

दर्शनावरणीय और नामकर्म " " ५१ " ५।

दर्शनावरणीय नाम और आयुकर्म की " " ५५ " ६।

ज्ञानावरणीय, वेदनीय आयु नाम और अतरायकर्म की

उत्तर प्रकृतियाँ समः ५८ सूत्रः २।

मोहनीय कर्म को छोडकर शेप सात कर्मों की उत्तर प्रकृतिया

समः ६९ सूत्रः ३।

ज्ञानावरणीय और अंतराय को छोडकर शेष ६ कर्मों की

उत्तर प्रकृतियाँ समः ८७ सूत्रः ५।

आयु और गोत्र कर्म को छोडकर शेष ६ कर्मों की उत्तर

प्रकृतियाँ " ९१ " ४।

आठो कर्मों की,उत्तर प्रकृतियाँ " ९७ " ३।

कर्मप्रकृतियों का बन्ध :—

नरकगति तथा देवगति का बन्ध करते हुए जीव के नाम

कर्म की उत्तार प्रकृतियो का बन्ध। सम० २८ सूत्र ५।

प्रशस्त अध्यवसायी भव्य सम्यग् दृष्टि जीव यदि वैमानिक देवो मे उत्पन्न होनेवाले हो और तीर्थंकर नाम कर्म बाध लिया हो तो उसके नाम कर्म की उत्तार प्रकृतियो का बंध सम० २९ सूत्र ६।

सक्लिष्ट अध्यवसायी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त विकलेन्द्रिय के नाम कर्म की उत्तार प्रकृतियो का बन्ध। „ २५ „ ६।

आयुबध (२४ दण्डको मे—देखें प्रज्ञापना ६ व्युत्क्रान्तिपद) „ „ १५४-१।

आयुबध के आकर्ष (२४ दण्डको मे-देखें प्रज्ञापना ६ व्युत्क्रान्तिपद) „ „ १५४-४।

कर्म प्रकृतियों का वेदन:—

क्षीणमोह भगवान् द्वारा मोहनीय कर्म को छोडकर शेष सात कर्म प्रकृतियो का किया जानेवाला वेदन। सम० ७ सूत्र० ६।

कर्मप्रकृतियों की स्थिति :—

नपुसक वेदनीय की (बध समय से मानी गई) बन्ध स्थिति सम० २० सूत्र० ५।

मोहनीय कर्म की (अबाधाकाल बीतने पर शेष रही हुई) स्थिति सम० ७० सूत्र० ४।

कर्मप्रकृतियों की सत्ता —

कतिपय भव्यजीवो के मोहनीय कर्म की उत्तार प्रकृतियो की सत्ता सम० २८ सूत्र० २।

अभव्य जीवो के „ „ „ २६ „ २।

वेदक सम्यक्त्व के बध से विरत जीवो के „ २७ „ ५।

निवृत्त बादर गुणस्थानवर्ती जीवो के „ २१ „ २।

मोहकर्मः—	
मोह के नाम	सम० ५२ सूत्र० १ ।
मदस्थान	,, ८ ,, १ ।
कषाय के भेद	,, १६ ,, २ ।
पुद्गलः—	
पुद्गल—परिणाम —	
स्पर्श—परिणाम	सम० २२ सूत्र० ६ ।
कामगुण	सम० ५ सूत्र० ३ ।
अजीवद्रव्य :—	
अनात्मा (द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा)	सम० १ सूत्र० २ ।
अजीवराशि	,, ,, १४९-१ ।
धर्म	,, १ ,, ९ ।
अधर्म	,, १ ,, १० ।

गणितानुयोग-सूत्राङ्क

समवाय	१	मे सूत्र	१९—२५
,,	२	,,	४— ७
,,	३	,,	६—१२
,,	४	,,	६— ९
,,	५	,,	९—१३
,,	६	,,	७,८
,,	७	,,	४,५ ७—११
,,	८	,,	३, ६—९
,,	९	,,	५—१०

समवाय	१०	सूत्र	३,७,८
"	११	"	२,३,५,६,७,
"	१२	"	४ ६—११
"	१३	"	२,३,४,८ ।
"	१४	"	६,८ ।
"	१५	"	१,३,४,५ ।
"	१६	"	३,६,७
"	१७	"	३—८
"	१८	"	७,८
"	१९	"	२,३,४
"	२०	"	३,४,७
"	२१	"	३,४
"	२४	"	२—६
"	२५	"	३,४,७,८ ।
"	२७	"	२,३,४,६ ।
"	२८	"	४ ।
"	२९	"	२—८
"	३०	"	३,५,८ ।
"	३१	"	२—५
"	३२	"	२,४, ५ ।
"	३३	"	२,३, ४ ।
"	३४	"	२—६
"	३५	"	५,६ ।
"	३६	"	२,४ ।
"	३७	"	२,३,५ ।

समवाय	३८।	सूत्र	२,३।
"	३९	"	२,३।
"	४०	"	२।४।६,७,८।
"	४१	"	२।
"	४२	"	२,३,४,७।९।१०।
"	४३	"	२,३,४।
"	४४	"	३।
"	४५	"	१—४
"	४६	"	३।
"	४७	"	१।
"	४८	"	३।
"	५०	"	४—७।
"	५१	"	२,३।
"	५२	"	२,३,५।
"	५३	"	१,२।
"	५५	"	२,३,५।
"	५६	"	१।
"	५७	"	२,३,५।
"	५८	"	१, ३—६
"	५९	"	१,।
"	६०	"	१,२,। ४,५,६।
"	६१	"	१—४
"	६२	"	१।३। ४,५,
"	६३	"	२,३,४।
"	६४	"	२—५

समवाय	९४	सूत्र	१।
"	९५	"	२,३।
"	९६	"	२—५।
"	९७	"	१, २।
"	९८	"	१—७।
"	९९	"	१—७।
"	१००	"	२।६,७,८।
"	१५०	"	२,३।
"	२००	"	२,३।
"	२५०	"	२।
"	३००	"	३।
"	४००	"	२,३,४।
"	५००	"	१,२,५—८
"	६००	"	१,२,३।
"	७००	"	१,५, ६।
"	८००	"	१, २, ४।
"	९००	"	१,२,३। ५,६,७।
"	१०००	"	१—६।
"	११००	"	१।
"	२०००	"	१।
"	३०००	"	१।
"	४०००	"	१।
"	५०००	"	१।
"	६०००	"	१।
"	७०००	"	१।

समवाय	८०००	सूत्र	१।
”	९०००	”	१।
”	१००००	”	१।
”	१०००००	”	१।
”	२०००००	”	१।
”	३०००००	”	१।
”	४०००००	”	१।
”	५०००००	”	१।
”	६०००००	”	१।
”	७०००००	”	१।
”	८०००००	”	१।
”	सूत्र १४९	”	२—५।
”	सूत्र १५०	”	१—५।

गणितानुयोग-वर्गीकरण

दण्ड का प्रमाण	सम० ९६ सूत्र० ३।
घनु का ”	” ” ” ४।
नालिका का ”	” ” ” ”।
युग का ”	” ” ” ”।
अक्ष का ”	” ” ” ”।
मूसल का ”	” ” ” ”।
योजन का ”	सम० ४ सूत्र० ६।
कला (योजन का उन्नीसवा भाग)	सम० १९ सूत्र० ४।

नरक काण्ड —(स्थान)

रत्नप्रभा के वज्र काड के ऊपर के अन्तिम प्रदेश से

लोहिताक्ष काण्ड के नीचे के अन्तिम प्रदेश का अन्तर
समः ३००० सूत्र १।
रत्नप्रभा के रत्नकाण्ड के ऊपर के अन्तिम प्रदेश से पुलाककाण्ड के नीचे के अन्तिम प्रदेश का अन्तर समः ७००० सूत्र १।
पंकबहुलकाण्ड के ऊपर के अन्तिम प्रदेश से नीचे के अन्तिम प्रदेश का अन्तर समः ८४ सूत्र १०।
रत्नप्रभा के जलबहुलकाण्ड का विस्तार समः ८० सूत्र १।
रत्नप्रभा के प्रथम काण्ड का उल्लेख समः ६०० सूत्र ६।

नरकावासः—

(१) रत्नप्रभा के नरकावास	समः ३० सूत्र	८।
(२) शर्कराप्रभा के ,,	,, २५ ,,	८।
(४) पकप्रभा के ,,	,, १० ,,	११।

नरकावासों की संयुक्त संख्या

पहले और दूसरे	नरक के नरकावास		समः ५५	सूत्र	५।
,, दूसरे और पाचवें	,,	,,	,, ५८	,,	१।
,, चौथे ,,	,,	,,	,, ४३	,,	२।
,, ,, छठे और सातवें	,,	,,	,, ४१	,,	२।
,, पाचवें ,,	,,	,,	,, ३४	,,	६।
,, दूसरे तीसरे पाचवे छट्ठे और सातवें			,, ७४	,,	१।
दूसरे और चौथे	,,	,,	,, ३५	,,	६।
चौथे पाचवे छट्ठे और सातवे		,,	,, ३९	,,	३।
सातो नरक के		,,	,, ८४	,,	१।
,,	,,	,,	,, ×	,,	१४९,२५।

नरकावासों का आयाम-विष्कम्भः—

अप्रतिष्ठान नरकावास का आयाम-विष्कम्भ	सम० १ सूत्र	२० ।
सीमन्तक ,, ,,	,, ४५ ,,	२ ।

नरक का बाहल्यः—

धूम्रप्रभा का बाहल्य (चौड़ाई)	सम० १८ सूत्र	७ ।
पृथ्वीकायिक यावत् मनुष्यो के आवासस्थान	सूत्र १५०,	२ ।

देवस्थानः

सेन्द्र (इन्द्र सहित) देवस्थान	सम० २४ सूत्र	३ ।

देव-परिवारः—

चन्द्र सूर्य का ग्रह परिवार	सम० ८८ सूत्र	१ ।
नक्षत्रो के तारे	खगोल वर्णन मे देखें	
शक्र के वैश्रमण लोकपाल का भवनावासो पर आधिपत्य	,, ७८ ,,	१ ।
गर्दतोय और तुपित का देव परिवार	,, ७७ ,,	३ ।

सामानिक देव —

चमरेन्द्र के सामानिक देव	सम० ६४ सूत्र	३ ।
वैरोचनेन्द्र के ,,	,, ६० ,,	४ ।
शक्रेन्द्र के ,,	,, ८४ ,,	६ ।
ईशानेन्द्र के ,,	,, ८० ,,	६ ।
माहेन्द्र के ,,	,, ७० ,,	५ ।
ब्रह्मेन्द्र के ,,	,, ६० ,,	५ ।
सहस्रारेन्द्र के ,,	,, ३० ,,	५ ।
प्राणतेन्द्र के ,,	,, २० ,,	४ ।

भवनवासी देवों के आवास:—

१	असुरकुमारो के		भवनावास	सम०	६४	सूत्र	२।
३	सुवर्ण	,,	,,	,,	७२	,,	१।
४	विद्युत	,, युगल के	,,	,,	७६	,,	१।
५	अग्नि	,, ,,	,,	,,	,,	,,	२।
६	द्वीप	,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,।
७	उदधि	,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,।
८	दिशा	,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,।
९	वायु	,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,।
१०	स्तनित	,, ,,	,,	,,	,,	,,	,,।

सर्व भवनवासी देवो के ,, ,, १४९- ३।

,, ,, १५०-१।

भवनेन्द्रो के आवास —

१ चमरेन्द्र के आवास		सम०	३४	सूत्र	५।
२ धरणेन्द्र (नागकुमारेन्द्र के) आवास		,,	४४	,,	३।
,, भूतानन्द (,,) ,,			४०	,,	४।
९ प्रभजन (वायुकुमारेन्द्र के) ,, के		,,	४६	,,	३।

भवनपति देवों के आवासो का आयाम-विष्कम्भ —

चमरेन्द्र और वलेन्द्र के अवतारिकालयनो का आयाम-विष्कम्भ

सम० १६ सूत्र ६।

भवनपति देवों के आवासो की ऊचाई —

असुरकुमारो के प्रासादो की ऊचाई सम० २५ सूत्र २।

भवनपति देवेन्द्रो की सभा के स्तम्भ —

चमरेन्द्र और वलेन्द्र की सुधर्मा सभाओ के स्तम्भ

सम० ५१ सूत्र २, ३।

भवनपति देवेन्द्रो की सभा की ऊंचाईः—

चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा की ऊचाई सम० ३६ सूत्र २।

भवनपति देवों के भूमिगृह.—

चमरचचा राजधानी की प्रत्येक दिशा के भूमिगृह
सम० ३३ सूत्र २।

चमरेन्द्र और बलेन्द्र के उत्पात पर्वतो का वर्णन "पर्वत-विभाग" मे
सम० १७ सूत्र ७,८।

वाणव्यन्तर देवो के भौमेयविहार.

रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड में वाणव्यन्तर देवो के भौमेय विहार सम० ८०० सूत्र २।

रत्नप्रभा के अजन काण्ड के नीचे के प्रदेश से वाणव्यन्तर देवो के भौमेय विहारो का अन्तर सम० ९९ सूत्र ७।

व्यन्तरावास सम० × १५०-३।

व्यन्तर देवेन्द्रो की सभा की ऊचाई —

व्यन्तर देवेन्द्रो की सुधर्मा सभा की ऊचाई सम० ९ सूत्र १०।

ज्योतिषी देवों के आवास —

ज्योतिषी देवो के आवास सम० + सूत्र १५०-४।

अन्तर.—

लोकान्त से और मेरु से ज्योतिषचक्र का अन्तर
सम० ११ सूत्र २,३।

सूर्य का स्थान „ ८०० " ४।

सर्वोपरि ताराओ का स्थान " ९०० " ५।

विमानवासी देवो के विमानः—

१ सौधर्म कल्प के विमान सम० ३२ सूत्र ४।

२ ईशान कल्प के विमान सम० २८ सूत्र ४।
४ माहेन्द्र " " " ८ लाख " १।
६ लान्तक " " " ५० " ५।
७ महाशुक्र " " " ४० " ८।
८ सहस्रार " " " ६००० " १।
९ आरण " " " १५० " २।
१० अच्युत " " " " " ३।

विमानों की संयुक्त संख्या—

सौधर्म और ईशान कल्प के विमान सम० ६० सूत्र ६।
" ईशान और ब्रह्मकल्प के " " ६४ " ५।
आनत और प्राणत कल्प के " " ४०० " ४।
सर्व प्रथम प्रस्तर के ग्रैवेयक देवों के " " ११ " ६।
सर्व विमानवासी देवों के " " > १४९-४।
१५०-४।

विमानों का आयाम-विष्कम्भः—

सौधर्मावतंसक विमान का आयाम—विष्कम्भ सम० १३ सूत्र ३।
ईशानावतंसक " " " " " ४।
पालक " " " १ " २१।
सर्वार्थसिद्ध " " " १ " ८७।
उडु " " " ४५ " ३।

विमानों की ऊंचाई —

सौधर्म और ईशान कल्प के विमानों की ऊंचाई
सम० ५०० सूत्र ८।
सनत्कुमार और माहेन्द्र " " " ६०० " १।

ब्रह्मलोक और लान्तक कल्पके विमानो की ऊचाई	७००	"	१।
महाशुक्र " सहस्त्रार " "	" ८००	"	१।
आनत, प्रानत आरण, अच्युत "	" ६००	"	१।
सर्व ग्रैवेयक देवो के "	"१०००	"	१।
अनुत्तरोपपातिक देवो के "	"११००	"	१।

विमानों के प्राकारों की ऊंचाई —

विमानो के प्राकारो की ऊचाई सम० ३०० सूत्र ३।

विमानों के प्रस्तटः—

सौधर्म और ईशान कल्प के प्रस्तट सम० १३ सूत्र २।
विमानवासी देवो के विमानो के प्रस्तट " ६२ " ५।

प्रस्तट में विमानः—

सौधर्म और ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तट मे प्रथम आवलिकाकी प्रत्येक दिशा के विमान सम० ६२ सूत्र ४।

भूमिगृह.—

सौधर्मावतसक विमान की प्रत्येक दिशा के भूमिगृह
सम० ६५ सूत्र ३।

कल्पों का पृथ्वीपिंड —

सौधर्म और ईशान कल्प का पृथ्वी पिंड सम० २७ सूत्र ४।
ईषत् प्राग्भारा के नाम ,, १२ ,, ११।
ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ ,, ४५ ,, ४।
सर्वार्थ सिद्धविमान से ईषत् प्राग्भारा का अन्तर १२ ,, १।
अलोक सम० १ सूत्र ८।

काल परिमाण

कालः—

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी का (सयुक्त) परिमाण

सम० २० सूत्र ७।

प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे आरे का तथा प्रत्येक अवसर्पिणी के पाचवें और छट्ठे आरे का (सयुक्त) परिमाण।

सम० ४२ सूत्र ९,१०।

प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे आरे का (असयुक्त) परिमाण।

सम० २१ सूत्र ४।

प्रत्येक अवसर्पिणी के पाचवें और छट्ठे आरे का (असयुक्त) परिमाण। सम० २१ सूत्र ३।

एक मुहूर्त के लव सम० ७७ सूत्र ४।

एक दिवस और एक रात्रि के मुहूर्त (मुहूर्तो के नाम)

सम० ३० सूत्र ३।

सबसे छोटे दिन के और सबसे छोटी रात्रि के मुहूर्त

सम० १२ सूत्र ८,९।

चैत्र और आश्विन मे दिन के और रात्रि के मुहूर्त

सम० १५ सूत्र ५।

पौष मे सबसे बडी रात्रि के और आषाढ मे सबसे बडे दिन के मुहूर्त। सम० १८ सूत्र ८।

चन्द्रदिवस के मुहूर्त ,, २९ ,, ८।

आषाढ, भाद्रपद, कार्तिक, पौप, फाल्गुन और वैसाख मास के रात्रि दिवस। सम० २९ सूत्र २ से ७।

अभिवर्धित मास के रात्रि दिवस ,, ३१ ,, ४ ।

आदित्य मास के रात्रि-दिवस समः ३१ सूत्र ५।
चन्द्र सवत्सर की प्रत्येक ऋतु के रात्रि दिवस समः ५९ सूत्र १।
पाच सवत्सर (एक युग) की पूर्णिमा और अमावास्या
समः ६२ सूत्र १।
,, (,,) के नक्षत्रमास समः ६७ सूत्र १।
,, (,,) के ऋतु ,, समः ६३ सूत्र १।
पूर्व से शीर्षप्रहेलिका पर्यन्त प्रत्येक सख्या का गुणन
समः ८४ सूत्र १५।

पौरुषी छाया प्रमाण
उत्तरायण के अन्त मे (आपाढपूर्णिमा के दिन)
समः २४ सूत्र ४।
श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन समः २७ सूत्र ६।
कार्तिक कृष्णा ,, समः ३७ सूत्र ५।
चैत्र तथा आश्विन में (पूर्णिमा के दिन) समः ३६ सूत्र ४।
फाल्गुन तथा कार्तिक मे समः४० सूः ६,७।

शंकु छाया :—
आभ्यन्तर मण्डल मे सूर्य के आने पर प्रथम दिवस के प्रथम मुहूर्त मे शकुकी छाया[1] समः ९६ सूत्र ५।

१—शकु छाया माप की प्रक्रिया—

जिस दिन सर्वाभ्यन्तरमण्डल मे सूर्य प्रवेश करता है उस दिन दिन के अठारह मुहूर्त होते हैं, अत उसदिन दिन का अठारहवाँ भाग एक मुहूर्त हुआ।

वारह अगुल के शकु को अठारह गुणा करने पर २१६ होते हैं और इनके आधे १०८ मे से शकु की लवाई के १२ अगुल

भूगोल वर्णन

पर्वत —

सर्व अनुवेलंधर आवासपर्वतो की ऊचाई समम० १७ सूत्र० ४।
सर्व अजनग पर्वतो की „ „ ८४ „ ८।
इषुकार वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख) „ ३९ „ ३।
„ „ „ ६९ „ १।
सर्व कचनग पर्वतो के शिखरतल का विष्कम्भ „ ५० „ ७।
„ की ऊचाई उद्वेध (भूतल मे गहरा) और मूल का विष्कम्भ „ १०० „ ८।
जवूद्वीप मे सर्व कचनग पर्वत „ २०० „ ३।
गधमादन पर्वत की ऊचाई और उद्वेध अतर „ ५०० „ ३।
जवूद्वीप के पूर्वान्त से गौस्तूपआवासपर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर। सम० ४२ सूत्र० २।
जवूद्वीप के पूर्वान्त से गौस्तूपआवासपर्वत के पूर्वान्त का अन्तर „ ४३ „ ३।
गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त से वडवामुख पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर। सम० ५२ सूत्र २।
गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त मे वडवामुख पाताल कलश के मध्यभाग का अतर सम० ५७ सूत्र २।

निकालने पर ९६ अगुल शेष रहते है। इस प्रकार सर्वाभ्यन्तर मण्डल मे जिस दिन सूर्य प्रवेश करता है उस दिन दिनके प्रथम मुहूर्त मे शकु की छाया ९६ अगुल होती है।

सम० टीका

गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमान्त से वडवामुख पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर समः ५८ सूत्र ३ ।
चमरेन्द्र के तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत की ऊचाई।
समः १७ सूत्र ७ ।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकभास आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अतर समः ४२ सूत्र ३ ।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त का अतर समः ४३ सूत्र ४ ।
दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूप पाताल कलश के अतर।
समः ५२ सूत्र ३ ।
दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त के यूप पाताल कलश के मध्य भाग का अतर समः ५७ सूत्र १ ।
दकभास आवास पर्वत के उत्तरात से केयूप पाताल कलश के मध्यभाग का अतर समः ५८ सूत्र ४ ।
जवूद्वीप के पूर्वान्त से, दकसीम आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अतर समः ४२ सूत्र ३ ।
जवूद्वीप के पूर्वान्त से, दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त का अतर समः ४३ सूत्र ४ ।
दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पाताल कलश के पश्चिमान्त का अतर समः ५२ सूत्र ३ ।
दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पाताल कलश के मध्यभाग का अतर समः ५७ सूत्र ३ ।
दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पाताल कलश के दक्षिणान्त से उत्तरात का अतर समः ५८ सूत्र ६ ।
सर्व दधिमुख पर्वतो का आकार विष्कम्भ और ऊचाई
समः ६४ सूत्र ४ ।

निषध वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख)	सम०	७	सूत्र	४ ।
,, (,,)	,,	३६	,,	३ ।
निषध वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम	,,	९४	,,	१ ।
सर्व निषध वर्षधर पर्वत की उचाई और उद्वेध	,,	४००	,,	२ ।

नीलवत वर्षधर पर्वत के समवायाङ्क और सूत्राङ्क निषध वर्षधर पर्वत के समान है ।

मानुषोत्तर पर्वत की ऊचाई	सम०	१७	सूत्र	३ ।
माल्यवंत वर्षधर पर्वत की ऊचाई और उद्वेध	,,	५००	,,	५ ।
मेरु पर्वत (केवल नामोल्लेख)	,,	७	,,	४ ।
,, (,,)	,,	३६	,,	२ ।
,, (,,)	,,	५६	,,	१ ।
मेरु पर्वत के नाम	,,	१६	,,	३ ।
मेरु पर्वत के भूतल के विष्कम्भ से शिखरतल के विष्कम्भ की हीनता का परिमाण	सम०	११	सूत्र	७ ।
मेरु पर्वत के मूल का विष्कम्भ[1]	,,	१००००	,,	१ ।
,, के मूल का विष्कम्भ	,,	१०	,,	१ ।
,, के मूल की परिधि	,	३१	,,	३ ।
,, की चूलिका के मूल का विष्कम्भ	,,	१२	,,	६ ।
,, की चूलिका की ऊचाई	,,	४०	,,	२ ।
,, ,, भूतल से उपरकी ,,	,,	९९	,,	१ ।
,, के प्रथम काण्ड की ,,	,,	६१	,,	२ ।
धातकीखन्ड के मेरु पर्वत की ,,	,,	८५	,,	२ ।

१—समवाय दश और समवाय दश हजार में मेरु पर्वत के मूल के विष्कम्भ का निर्देश है ।

अढाई द्वीप के बाहर मेरुपर्वतो की　　　„　८४ „ ७ ।

मेरु पर्वत के पूर्वान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर　　　सम० ८७ सूत्र० १

मेरु पर्वत के दक्षिणान्त से दकभास आवास पर्वत के उत्तरान्त का अन्तर　　　सम० ८७ सूत्र २ ।

मेरु पर्वत के पश्चिमान्त से शख आवास पर्वत के पूर्वान्त का अतर　　　सम० ८७ सूत्र ३ ।

मेरु पर्वत के उत्तरान्त से दकसीक आवास पर्वत के दक्षिणान्त का अतर　　　सम० ८७ सूत्र ४ ।

मेरुपर्वत के मूल के मध्यभाग मे स्थित रुचक नाभि से चारो दिशाओ में मेरु के अन्तिम प्रदेशो का अतर सम० ५०० सूत्र १ ।

मेरु पर्वत पूर्वान्त से गौतम द्वीप के पूर्वान्त का अन्तर　　　सम० ६७ सूत्र० ३ ।

मेरु पर्वत के पश्चिमान्त से गौतम द्वीप के पश्चिमान्त का अन्तर　　　सम० ६९ सूत्र २ ।

सर्व यमक पर्वतों की ऊचाई, उद्वेध और आयाम—विष्कम्भ　　　सम० १००० सूत्र २ ।

रुक्मी वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख)　„　७ „ ४ ।
„　(„)　„　३९ „ २ ।
„　(„)　„　६९ „ १ ।
„　की जीवा का आयाम　„　५३ „ २ ।
„　के धनुपृष्ठ का „　„　५७ „ ५ ।
„　की ऊचाई और उद्वेध　„　२०० „ २ ।

बलेन्द्र के रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊचाई　„　१७ „ ८ ।

रुचक मण्डलीक पर्वत की „　„　८५ „ ३ ।

वक्षस्कार पर्वतों की ऊचाई और उद्वेध " ४०० " ३।
शीत और शीतोदा महानदियो के पास मे सर्व वक्षस्कार पर्वतो की ऊचाई और उद्वेध " ५०० " १।
विद्यु त्प्रभ वक्षस्कार पर्वत की ऊचाई और उद्वेध
समo ५०० सूत्र ५।
सर्व वेलधर आवास पर्वतो की ऊँचाई समo १७ सूत्र ४।
जबूद्वीप मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत ,, ३४ ,, ३।
अढाई द्वीप वाह्य दीर्घ वैताढ्य पर्वतो की ऊचाई और उद्वेध
समo २५ सूत्र ३
मे सर्व वैताढ्य पर्वतो की ऊचाई और उद्वेध समo १०० सूत्र ६
सर्व वृतवैताढ्य पर्वतों की ऊचाई उद्वेध, विष्कम्भ तथा उनका आकार समo १००० सूत्र ४।
शिखरी वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख) समo ७ सूत्र ४।
" (") " ३९ " २।
" (") " ६९ " १।
" की ऊचाई और उद्वेध " १०० " ७।
" की जीवा का आयाम " २४ " २।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से शखआवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर
समo ४२ सूत्र ३।
" " पूर्वान्त का अतर " ४३ " ४।
शख आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर समo ५२ सूत्र ३।
शख आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर समo ५७ सूत्र ३।
शख आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पातालकलश के मध्य भाग का अन्तर समo ५८ सूत्र ५।

समय क्षेत्र मे कुलपर्वत " ३९ " २।
" वर्षधर पर्वत " ६९ " १।
सौमनस वक्षस्कार पर्वत की ऊचाई और उद्वेध सम० ५०० सूत्र ५।
चुल्ल (छोटा) हिमवंत वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख)
सम० ७ सूत्र ४।
" (") " ३९ " २।
" (") " ६९ " १।
" की उचाई और उद्वेध " १०० " ७।
" की जीवा का आयाम " २४ " २।
महाहिमवंत वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख) सम० ७ सूत्र ४।
" (") " ३९ " २।
" (") " ६९ " १।
" की ऊचाई और उद्वेध " २०० " २।
" की जीवा का आयाम " ५३ " २।
" के धनुपृष्ठ का " " ५७ " ५।

कूट (पर्वत शिखर):—

चित्र विचित्र कूटों की ऊचाई, उद्वेध और आयाम-विष्कम्भ
सम० १००० सूत्र ३।
चुल्लहिमवान कूट के उपरि भाग से चुल्ल हिमवान् वर्षधर की समतल भूमि का अन्तर सम० ६०० सूत्र २
नन्दन वन के अन्यकूटो को छोडकर वलकूटो की ऊचाई और विष्कम्भ सम० १००० सूत्र ६।
नन्दवन के अन्य कूटो को छोडकर शेपकूटो की उचाई और आयाम विष्कम्भ मम० ५०० सूत्र ७।
निपधकूट के उपरि भाग से निपधवर्षधर की समतल भूमि का अतर सम० ९०० सूत्र २।

नीलवत कूट के उपरिभाग से नीलवत वर्षधर पर्वत की समतलभूमि
को अन्तर समा० ६०० सूत्र ३।

महाहिमवत कूट के उपरि भाग से महा हिमवन्त वर्षधर की समतल
भूमी का अन्तर समा० ७०० सूत्र ५।

" " सौगधिक काण्ड के नीचे
के भाग का अन्तर समा० ८७ सूत्र ६।

रुक्मी वर्षवर कूट के उपरी भाग से रुक्मी वर्षधर की समतल
भूमी का अन्तर समा० ७०० सूत्र ६।

रुक्मी(वर्षधर)कूटों के उपरि भाग से सौगधिक काण्ड के नीचे के
भाग का अतर समा० ८७ सूत्र० ७।

सर्व वर्षधर कूटों की ऊचाई और विष्कम्भ " ५०० " २।

सर्व वक्षस्कार कूटो (हरि-हरिस्सह कूटो को छोडकर) की ऊचाई
और आयाम-विष्कम्भ समा० ५०० सूत्र ७।

सर्व वृत्तवैताढय पर्वत शिखरो (कूटो) के उपरिभाग से सौगधिक
काण्ड के नीचे के चरमान्त प्रदेश का अन्तर।
समा० ६० सूत्र ५।

शिखरी कूट के उपरि भाग से शिखरी वर्षधर की समतल भूमि का
अन्तर समा० ६०० सूत्र ३।

हरि-हरिस्सह कूटो (वक्षस्कार कूटो को छोडकर)
की ऊचाई और मूल का विष्कम्भ समा० १००० सूत्र ५।

गुफा —

खण्ड प्रपात गुफा का आयाम समा० ५० सूत्र ६।

तमिस्रा गुफा का " " " " "

वन:—

नदनवन के उपरिभाग से पडग वन के नीचेके भाग का अतर
समा० ९८ सूत्र० १।

नन्दन वन के उपरिभाग से सौगन्धिक काण्ड के नीचे के भाग का अन्तर समा० ८५ सूत्र ४।

" पूर्वान्त मे पश्चिमान्त का अतर " ९९ " २।

" दक्षिणान्त से उत्तरान्त का अन्तर " " " ३।

वृक्ष.—

तीर्थंकरो के चैत्य वृक्षो की ऊचाई समा० सूत्र १५७-१९।

वाणव्यन्तरो के चैत्य वृक्षो की ऊचाई " " ३।

तीर्थंकरो के चैत्य वृक्षो के नाम " " १५७-१८।

चैत्य वृक्ष १५९-११।

जवूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊचाई समा० ८ सूत्र ४।

गरुडावास के कूट शाल्मली वृक्ष की ऊचाई " ८ " ५।

अकर्मभूमिज मनुष्यो की इच्छा पूरी करने वाले कल्प वृक्षो के नाम समा० १० सूत्र ८।

द्रहः—

केसरी द्रह का आयाम समा० ४००० सूत्र १।

तिगिच्छ " " " " " "।

पद्म " " " १००० " १०।

पुण्डरीक " " , " "।

महापद्म " " " २००० " १।

महापौण्डरीक " " " "।

नदियां .—

गगा आदि महानदियाँ लवण समुद्र में मिलती है। समा० १४ सूत्र ८।

गगानदि के प्रवाह का विस्तार " २४ " ५।

अपने प्रपात कुण्ड मे गिरते समय गगानदी के प्रवाह का विस्तार समा० २५ सूत्र ७।

रक्तानदी के प्रवाह का विस्तार	सम०	२४ सूत्र ६ ।
अपने प्रपात कुण्ड में गिरते समय रक्ता नदी के प्रवाह का विस्तार	,,	२५ ,, ८ ।
रक्तावती नदी के प्रवाह का विस्तार	,,	२४ ,, ६ ।
अपने प्रपात कुण्डो मे गिरते समय रक्तावती नदी के प्रवाह का विस्तार	,,	२५ ,, ८ ।
सिन्धुनदी के प्रवाह का विस्तार	,,	२४ ,, ५ ।
अपने प्रपात कुण्ड मे गिरते समय सिन्धुनदी के प्रवाह का विस्तार	,,	२५ ,, ७ ।
शीतानदी के प्रवाह की लम्बाई	,,	७४ ,, ३ ।
शीतोदानदी के प्रवाह की लम्बाई	,,	७४ ,, २ ।

देखें सम० ५०० सूत्र १ मे शीता और शीतोदा का उल्लेख है।

समुद्र

कालोद समुद्र की परिधि	सम०	९१ सूत्र २ ।
लवण समुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ	,,	दोलाख ,, १ ।
लवण समुद्र के पूर्वान्त से पश्चिमान्त का अन्तर	,,	पाचलाख सूत्र २ ।
लवण समुद्र के मध्यभाग के पानी की गहराई	,,	१७ ,, ५ ।
लवण समुद्र के पानी की ऊची चढाई का परिमाण	,,	१६ ,, ७ ।
लवण समुद्र के मध्यभाग से दोनो ओर ऊडाई कम होने का परिमाण	,,	९५ ,, ३ ।

लवणसमुद्र की बाह्यवेला को धारण करनेवाले नागराज	मस०	७२ सूत्र २।
लवणसमुद्र की आभ्यन्तरवेला को धारण करनेवाले नागराज	,,	४२ ,, ७।
लवणसमुद्र की उर्ध्ववेला को धारण करनेवाले नागराज	,,	६० ,, २।

देखे—सम० १४ सूत्र ८ मे लवणसमुद्र का उल्लेख।

द्वीप

जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ	सम०	१ सू० १९।
,, ,, ,,	,,	एकलाख ,, १।
,, की जगती की ऊचाई	,,	८ ,, ६।
,, ,, वेदिका का विष्कम्भ	,,	१२ ,, ७।
,, के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर	,,	७९ ,, ४।
जम्बूद्वीप विजयद्वार के प्रत्येक पार्श्व मे भूमिगृह	,,	९ ,, ८।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से धातकी खण्ड के पश्चिमात का अतर	,,	सातलाख ,, १।
धातकी खण्ड (द्वीप) का चक्रवाल विष्कम्भ	,,	चारलाख ,, १।

क्षेत्र

उत्तरकुरु के मनुष्यो के यौवन प्राप्ति के दिन	सम०	४९ सूत्र २।
उत्तरकुरु की जीवा का आयाम	,,	५३ ,, १।

ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम	सम०	१४ सूत्र	६।
देवकुरु के मनुष्यो के यौवन प्राप्ति के दिन	,,	४९ ,,	२।
देवकुरु की जीवा का आयाम	,,	५३ ,,	१।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्द्ध) की जीवा का आयाम	,,	९००० ,,	१।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्द्ध) के धनुपृष्ठ का आयाम	,,	९८ ,,	४।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्द्ध) की जीवा का आयाम	,,	१४ ,,	६।
महाविदेह का विष्कम्भ	,,	३३ ,,	३।
रम्यक् वर्ष के मनुष्यो के यौवन प्राप्ति के दिन	,,	६३ ,,	२।
रम्यक् की जीवा का आयाम	,,	७३ ,	१।
,, की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम	,,	८४ ,,	९।
,, का विस्तार	,,	८००० ,	१।
समयक्षेत्र का आयाम विष्कम्भ	,,	४५ ,,	१।
हरिवर्ष के मनुष्यो के यौवन प्राप्ति के दिन	,	६३ ,,	२।
हरिवर्ष की जीवा का आयाम	,,	७३ ,,	१।
,, की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम	,,	८४ ,,	९।
,, का विस्तार	,,	८००० ,,	१।
हेमवय की जीवा का आयाम	,,	३७ ,,	२।
,, की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम	,,	३८ ,,	२।

हेमवय की प्रत्येक पार्श्व (   )
का आयाम समः. ६७ सूत्र २ ॥
हेरण्णवय के हेमवय के समान समवायाक और सूत्राक है।
विजया राजधानी का आयाम-विष्कम्भ सम० १२ सूत्र ४ ॥
विजय, वैजयत, जयत और अपराजयत
राजधानियो के प्राकारो की ऊचाई „ ३७ „ ३ ॥
धातकी खण्ड मे राजधानिया „ ६८ „ १ ॥
पुष्करवर द्वीपार्ध मे राजधानिया „ ६८ „ ४ ॥

खगोल वर्णन

चन्द्र-सूर्य

मनुष्यक्षेत्र के दक्षिणार्ध भाग मे चन्द्र-सूर्य सम० ६६ सूत्र १,२ ।
„ उत्तरार्ध भाग मे „ „ ६६ „ ३,४ ।
कालोद समुद्र मे „ „ ४२ „ ४ ।
पुष्करार्ध द्वीप मे „ „ ७२ „ ५ ।
चन्द्र-सूर्य का ग्रह परिवार सम० ८८-सूत्र- १ ।

चन्द्र

शुक्ल पक्ष मे चन्द्र की वृद्धि और
कृष्णपक्ष मे चन्द्र का ह्रास सम० ६२ सूत्र ३ ।
चन्द्रमण्डल में योजन के समाश सम० ६१ सूत्र ३ ।

चन्द्र के साथ योग करनेवाले नक्षत्र

जम्बूद्वीप के दो चन्द्र के साथ-योग करने
वाले नक्षत्र सम० ५६ सूत्र १ ।

चन्द्र के साथ प्रमर्द योग करनेवाले नक्षत्र	सम०	८ सूत्र	९ ।
,, उत्तर दिशा मे योग करने वाले नक्षत्र	सम०	९ सूत्र	६ ।

चन्द्र के साथ नक्षत्रो का योगकाल

चन्द्र के साथ अभिजित् का योगकाल	सम०	९ सूत्र	५ ।
चन्द्र के साथ शतभिषा, भरणि, आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, और ज्येष्ठा इन छ नक्षत्रो का योगकाल	सम०	१५ सूत्र	४ ।
चन्द्र के साथ उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, पुनर्वसु, रोहिणी, और विशाखा, इन छ नक्षत्रो का योगकाल	सम०	४५ सूत्र	७ ।

भरतक्षेत्र के मनुष्यो को सूर्यदर्शन

सर्वाभ्यन्तर मण्डल से सूर्यदर्शन	सम०	४७ सूत्र	१ ।
सर्ववाह्य मण्डल से ,,	सम०	३१ सूत्र	३ ।
तृतीय मण्डल से ,,	सम०	३३ सूत्र	४ ।

सूर्यमण्डलों मे होनेवाली दिवस और रात्रि की हानि-वृद्धि

सर्वाभ्यन्तर मण्डल से सर्व वाह्यमण्डल मे सूर्य के जाते समय तथा सर्व वाह्यमडल से सर्वाभ्यन्तर मण्डल मे सूर्य के आते समय जिस मण्डल से दिवस और रात्री की विषमता प्रारम्भ होती है वह मडल	सम०	९३ सूत्र	३ ।
दक्षिणायन मे ४४वें मण्डल मे सूर्य के आने पर होने वाली दिवस की हानि और रात्रि की वृद्धि का परिमाण	सम०	८८ सूत्र	५ ।

उत्तरायण मे ४४वे मण्डल मे सूर्य के आने पर होनेवाली दिवस की वृद्धि रात्रि की हानि का परिमाण	सम० ८८ सूत्र ६ ॥
दक्षिणायन मे सर्व बाह्यमण्डल से ४६वें मण्डल मे सूर्य के आने पर होनेवाली दिवस की वृद्धि और रात्री की हानि का परिमाण	सम० ९८ सूत्र ६ ॥
उत्तरायण मे सर्वाभ्यन्तर मण्डल से ४९वें मण्डल मे सूर्य के आने पर होनेवाली दिवस की हानि और रात्री की वृद्धि का परिमाण	सम० ९८ सूत्र ५ ॥

सूर्यमण्डल कहां–कितने ?

जम्बूद्वीप मे सूर्यमण्डल	सम० ६५ सूत्र १ ॥
निषधपर्वत पर ,,	सम० ६३ सूत्र ३ ॥
नीलवन्तपर्वत पर ,,	सम० ६३ सूत्र ४ ॥

सूर्यमण्डलो का परिमाण

एक योजन के ६१ भागो मे से १३ भागहीन सूर्य मण्डल	सम० १३ सूत्र ६ ॥
सूर्य मण्डल मे योजन के समांश भाग	सम० ६१ सूत्र ४ ॥
सूर्य मण्डल का विष्कम्भ	सम० ४८ सूत्र ३ ॥
उत्तरदिशा मे प्रथम, द्वितीय, और तृतीय सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ	सम० ९९ सूत्र ४,५,६ ॥
सूर्य का तापक्षेत्र	सम० १९ सूत्र २ ॥
प्रत्येक मण्डल मे सूर्य के रहने के मुहूर्त	सम० ६० सूत्र १ ॥

सूर्य द्वारा दो वार अवगाहन किये जाने वाले सूर्य मण्डल	सम० ८२ सूत्र १।
सर्वाभ्यन्तर मण्डल मे सूर्योदय के समय सूर्य द्वारा अवगाहित किये जाने वाला जम्बूद्वीप का क्षेत्र	सम० ८० सूत्र ७।
सर्व बाह्यमण्डल से सूर्य के आवृत्ति (लौटने) करने का समय	सम० ७१ सूत्र १।

ग्रह

शुक्र महाग्रह के साथ नक्षत्रो का योग और उदयास्त	सम० १९ सूत्र ३।
जम्बूद्वीप मे नक्षत्रो का व्यवहार	सम० २७ सूत्र २।
ज्ञानवृद्धि करनेवाले नक्षत्र	सम० १० सूत्र ७।
नक्षत्रो का सीमा विष्कम्भ	सम० ६७ सूत्र ४।

नक्षत्रों के द्वार

पूर्व द्वारिक	नक्षत्र	सम० ७ सूत्र ८।
दक्षिण द्वारिक	,,	सम० ७ सूत्र ९।
पश्चिम द्वारिक	,,	सम० ७ सूत्र १०।
उत्तर द्वारिक	,,	सम० ७ सूत्र ११।

नक्षत्रो के नाम नक्षत्रो के तारे

अश्विनी	के तारे	सम० ३ सूत्र ११।
भरणी	,,	सम० ३ सूत्र १२।
कृत्तिका	,,	सम० ६ सूत्र ७।

रोहिणी	के तारे	सम०	५	सूत्र	९ ।
मृगशिर	,,	सम०	३	सूत्र	६ ।
आर्द्रा	,,	सम०	१	सूत्र	२३ ।
पुनर्वसु	,,	सम०	५	सूत्र	१० ।
पुष्य	,,	सम०	३	सूत्र	७ ।
अश्लेषा	,,	सम०	६	सूत्र	८ ।
मघा	,,	सम०	७	सूत्र	७ ।
पूर्वाफाल्गुनी	,,	सम०	२	सूत्र	४ ।
उत्तराफाल्गुनी	,,	सम०	२	सूत्र	५ ।
हस्त	,,	सम०	५	सूत्र	११ ।
चित्रा	,,	सम०	१	सूत्र	२४ ।
स्वाति	,,	सम०	१	सूत्र	२५ ।
विशाखा	,,	सम०	५	सूत्र	१२ ।
अनुराधा	,,	सम०	४	सूत्र	७ ।
ज्येष्ठा	,,	सम०	३	सूत्र	८ ।
मूल	,,	सम०	११	सूत्र	५ ।
पूर्वाषाढा	,,	सम०	४	सूत्र	८ ।
उत्तराषाढा	,,	सम०	४	सूत्र	९ ।
अभिजित्	,,	सम०	३	सूत्र	९ ।
श्रवण	,,	सम०	३	सूत्र	१० ।
धनिष्ठा	,,	सम०	५	सूत्र	१३ ।
शतभिषा	,,	सम०	१००	सूत्र	२ ।
पूर्वाभाद्रपद	,,	सम०	२	सूत्र	६ ।

उत्तराभाद्रपद	,,	सम०	२ सूत्र ७।
रेवती	,,	सम०	३२ सूत्र ५।
रेवती से ज्येष्ठा	,,	सम०	९८ सूत्र ७।

राहु

ध्रुवराहु का कृष्णपक्ष मे चन्द्रावरण
और शुक्लपक्ष मे चन्द्र का अनावरण सम० १५ सूत्र ३,४।



निम्नांकित समवायो में चरणानुयोग का विषयनहीं है :

समवाय २।७।१३-१६।१६।२३,२४।२६।२९-३१
३४-४८।५०-६३।६५-८०।८२-९०।९३-
९९।१५०-कोडा कोडी पर्यंत तथा सूत्र
१३६-१५९ पर्यंत ।

निम्नांकित समवायों में गणितानुयोग का विषय नहीं है :-

समवाय २२,२३।२६।४६।५४।७५।८१।८३।
८६।३५०।४५०। ३ लाख। ६०००
२ लाख। ६ लाख। १० लाख।
१ करोड। एक कोटा-कोटि।
सूत्र १३६ से १५६ पर्यंत।

निम्नांकित समवायों में धर्मकथानुयोग का विषय नहीं है :

समवाय १-६।१३।१७।२१,२२।२६-२६।३१।
३३।३५।३८।४३।४६।४६।५२।५८।
६१।६७।६६।७६।७६।८५।८७,८८।
६८,६६।२०० से २ लाख तक।
४ लाख से ८ लाख तक।
सूत्र १३६ से १५६ तक।

निम्नांकित समवायो में द्रव्यानुयोग का विषय नहीं है :

समवाय ३४,३५।४७,४८।५०।५४।५६।५९-
६५।६७,६८।७३-८०।८२,८३।८६।
८९-९०।९२-९६।९८,९९,१००।
१५०,२००,२५०।३५०-से क्रोडा क्रोडी तक ।
सूत्र १५० ।
सूत्र १५७-१५९ ।

समवायांग के सूत्रों की अन्य आगमों में शोध

परिशिष्ट

२



मुनि कन्हैयालाल "कमल"

समवायांग-समन्वय

पहला समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० १ सू० २। भगवती श० १२ उ० १० ।

सूत्र २ भगवती श० १ उ० ४।

सूत्र ३ आचाराग श्रु० १ अ० १ उ० ४।

सूत्र ४ भगवती श० ११ उ० ११ ।

सूत्र ५ स्थानाग अ० १ सूत्र ४। भगवती श० १ उ० ६।
प्रज्ञापना पद २२ ।

सूत्र ६ स्थानाग अ० ७ उ० ३ सू० ५८५। भगवती श० २५।
उ० ७। औपपातिक सूत्र २० ।

सूत्र ७ स्थानाग अ० १ सू० ५। भगवती श० १२ उ० ७।
औपपातिक सूत्र ५६।

सूत्र ८ स्थानाग अ० १ सू० ५। भगवती श० १२ उ० ७।
औपपातिक सूत्र ५६।

सूत्र ९ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० ७।
भगवती श० २० उ० २।

सूत्र १० सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० ८।
भगवती श० २० उ० २।

सूत्र ११ सूत्रकृतांग श्रु० २ अ० ५। स्थानांग अ० १ सू० ११।
औपपातिक सू० ३४।

सूत्र १२ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानांग अ० १ सू० १२।
औपपातिक सू० ३४।

सूत्र १३ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० ९ । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १४ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १० । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १५ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १३ । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १६ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १४ । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १७ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १५ । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १८ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १६ । औपपातिक सू० ३४ ।

सूत्र १९ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० ३ ।

सूत्र २० स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । प्रज्ञापना पद २ ।

सूत्र २१ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ ।

सूत्र २२ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । प्रज्ञापना पद २ ।

सूत्र २३ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र २४ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र २५ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र २६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३१ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०० ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०१ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ३९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ४० प्रज्ञापना पद ४ सू० १०३ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ४१ प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र ४२ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।

सूत्र ४३ भगवती श० ६ उ० १० । स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।
" " १२ " २ " अ० १ सू० ५१ ।

दूसरा समवाय

सूत्र १ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० २ । स्थानाग अ० २ उ० १
सू० ६९ ।

सूत्र २ स्थानाग अ० ४ उ० ४ सू० ९५ । समवायाग सू० १४९ ।
प्रज्ञापना पद १ सू० १ । जीवाभिगम प्रति० १ सू० १ ।
उत्तराध्ययन अ० ३६ ।

सूत्र ३ स्थानाग अ० २ उ० ४ सू० ९६ । प्रश्नव्याकरण ५वा
सवरद्वार । प्रज्ञापना पद २३ । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र ४ स्थानाग अ० २ उ० ४ सू० ११० सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र ५ स्थानाग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र ६ स्थानाग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्य प्रज्ञप्ति
प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र ७ स्थानाग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्य प्रज्ञप्ति
प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र ८ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ९ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। ,,
सूत्र १० प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५। ,,
सूत्र ११ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५। ,,
सूत्र १२ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८। ,,
सूत्र १३ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९। ,,
सूत्र १४ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र १५ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र १६ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र १७ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र १८ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र १९ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। ,,
सूत्र २० प्रज्ञापना पद ४ सू० १०३। ,,
सूत्र २१ प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र २२ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र २३ भगवती श० १२ उ० २। भ० श० ६ उ० १०।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

तीसरा समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ३ उ० १ सू० १२६। प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१। आवश्यक अ० ४।
सूत्र २ स्थानांग अ० ३ उ० १ सू० १२६। प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० २४। आवश्यक अ० ४।
सूत्र ३ स्थानांग अ० ३ उ० ३ सू० १८२। प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१। आवश्यक अ० ४।

सूत्र ४ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २१४। प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार।

सूत्र ५ प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार।

सूत्र ६ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ७ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ८ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ९ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १० स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ११ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १२ स्थानाग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४। अनुयोगद्वार सू० १३६-४०।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४। अनुयोगद्वार सू० १३६-४०।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४। अनुयोगद्वार सू० १३६-४०।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५। अनुयोगद्वार सू० १३६-४०।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र २० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र २१ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र २२ प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र २३ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र २४ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सू० ५१।

चौथा समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ४ उ० १ सू० २४९।
प्रज्ञापना पद १४ सूत्र १८६।
सूत्र २ स्थानाग अ० ४ उ० १ सू० २४७।
भगवती श० २५ उ० ७। औपपातिक सूत्र ३०।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ४ उ० २ सूत्र २८२।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार।
सूत्र ४ स्थानाग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३५६।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार। प्रज्ञापना पद ८।
सूत्र ५ स्थानाग अ० ४ उ० २ सूत्र २९६।

सूत्र ६ स्थानाग अ० ८ उ० १ सूत्र ६३४।

सूत्र ७ स्थानाग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२।

सूत्र ८ स्थानाग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२।

सूत्र ९ स्थानाग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १६ प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १७ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१।

सूत्र ११ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।
सूत्र १२ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।
सूत्र १३ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र २० प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र २१ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।
सूत्र २२ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१ ।

छठा समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५०४ । प्रज्ञापना पद १७ सूत्र २१४ ।

उत्तराध्ययन अ० ३४।

सूत्र २ आचारांग श्रु० १ अ० १ उ० १-७।
स्थानांग अ० ६ सूत्र ४८०। दशवैकालिक अ० ४।
जीवाभिगम प्र० ५ सूत्र २२८। प्रज्ञापना पद १ सूत्र १२॥

सूत्र ३ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५११। भगवती श० २५ उ० ७।
औपपातिक सूत्र ३०। उत्तराध्ययन अ० ३०।

सूत्र ४ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५११। भगवती श० २५ उ० ७॥
औपपातिक सूत्र ३०। उत्तराध्ययन अ० ३०।

सूत्र ५ भगवती श० १३ उ० १०। प्रज्ञापना पद ३६ सूत्र ३३१॥

सूत्र ६ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५२५।
दशाश्रुतस्कंध दशा० ६ सूत्र ६। नन्दीसूत्र सूत्र २९।

सूत्र ७ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५३९।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।

सूत्र ८ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५३९।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।

सूत्र ९ स्थानांग अ० ६ सूत्र ५३९।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४॥
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४॥
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५॥
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२॥
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पव ४ सूत्र १०३ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

सातवां समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५४९ ।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र २ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५८६ । भगवती श० २ उ० २ ।
प्रज्ञापना पद ३६ सूत्र ३३१ ।

सूत्र ३ आचाराग श्रु० २ अ० १५ उ० १ सूत्र १७६ ।
स्थानाग अ० ७ सूत्र ५६८ । भगवती श० १ उ० १ ।
औपपातिक सूत्र १० ।

सूत्र ४ स्थानाग अ-७ सूत्र ५५५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सूत्र १२५ ।

सूत्र ५ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५५५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सूत्र १२५ ।

सूत्र ६ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५६६ ।

सूत्र ७ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५८९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ९ सूत्र ४२ ।

सूत्र ८ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५८९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ९ सूत्र ४२ ।

सूत्र ९ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५८९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ९ सूत्र ४२ ।

सूत्र १० स्थानांग अ० ७ सूत्र ५८९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ९ सूत्र ४२ ।

सूत्र ११ स्थानाग अ० ७ सूत्र ५८९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ९ सूत्र ४२ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र २० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र २१ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र २२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।
सूत्र २३ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

आठवां समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६०६ ।
प्रश्न व्याकरण ५वाँ सवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६०३ । उत्तराध्ययन अ० २४ ।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६५४ ।
जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र ६ ।
सूत्र ४ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६३५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ६० ।
सूत्र ५ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६३५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०० ।
सूत्र ६ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६४२ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र ४ ।
सूत्र ७ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६५२ । औपपातिक सूत्र ४२ ।
प्रज्ञापना पद ३६ सूत्र ३३१ ।
सूत्र ८ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६१७ । कल्पसूत्र सूत्र १६० ।
सूत्र ९ स्थानाग अ० ८ सूत्र ६५६ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ११ सूत्र ४४ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४ ।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

नोवां समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ९ सूत्र ६३ । उत्तराध्ययन अ० ३६ ।
प्रश्नव्याकरण ५वां सवरद्वार ।
सूत्र २ प्रश्नव्याकरण ४ आश्रव द्वार ।
सूत्र ३ आचाराग श्रु० १ अ० १-९ ।
स्थानाग अ० ९ सूत्र ६६२ ।
सूत्र ४ स्थानाग अ० ९ सूत्र ६९० ।
कल्पसूत्र भ० पार्श्वनाथ वर्णन ।
सूत्र ५ स्थानाग अ० ९ सूत्र ६६९ ।

सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ११ सूत्र ४४ ।[1]

सूत्र ६ स्थानाग अ० ६ सूत्र ६६६ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ११ सूत्र ४४ ।

सूत्र ७ स्थानाग अ० ६ सूत्र ६७० ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सूत्र ९६ ।
जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १९५ ।

७त्र ८ स्थानाग अ० ६ सूत्र ६७१ ।

सूत्र ९ जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १३२ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र ८ ।

सूत्र १० जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १३२ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० ४ । प्रज्ञापना पद २३ ।
उत्तराध्ययन अ० ३३ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

---

१ सूर्यप्रज्ञप्ति मे अभिजित् का चन्द्र के साथ योगकाल १२ मुहूर्त का है ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४।
सूत्र २० भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१।

दशम समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ५ सूत्र ३६६।
स्थानाग अ० १० सूत्र ७१२। उत्तराध्ययन अ० ३१।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार।
सूत्र २ दशाश्रुतस्कध दशा० ५।
सूत्र ३ स्थानाग अ० १० सूत्र ७१६।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०३।
सूत्र ४ स्थानाग अ० १० सूत्र ७३५।
कल्पसूत्र भ० अरिष्टनेमि वर्णन।
सूत्र ५ स्थानाग अ० १० सूत्र ७२५।
सूत्र ६ त्रिपष्ठि शलाका पुरुप चरित्र पर्व ७ सर्ग १०।
सूत्र ७ स्थानाग अ० १० सूत्र ७८१।
सूत्र ८ स्थानाग अ० १० सूत्र ७६६।
जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १११।
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० २ सूत्र १३०।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३६।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९६ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०० । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २१ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र २३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र २४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र २५ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

इग्यारहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ मवरद्वार । दशाश्रुतस्कध दशा० ६ ।
उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १६४ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सू० ९२ ।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६४ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सू० ९२ ।
सूत्र ४ नन्दीसूत्र स्थविरावली ।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३ ।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २। स्थानाग अ० १ सू० ५१।

बारहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार। दशाश्रुतस्कध दशा० ७। उत्तराध्ययन अ० ३१।
सूत्र २ व्यवहार सूत्र उ० ५ सू० १८।
सूत्र ३ आवश्यक अ० ३।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३५। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० ८।
सूत्र ५ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ७ सर्ग १०।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०६।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १२५।
सूत्र ८ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० १ सू० ११।
सूत्र ९ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० १ सू० ११।
सूत्र १० औपपातिक सू० ४३।
सूत्र ११ औपपातिक सू० ४३।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
सूत्र १८ प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १६ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४ ।
सूत्र २० भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

तेरहवां समवाय

सूत्र १ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० २ ।
सूत्र २ स्थानाग अ० ६ सू० ५१६ टीका ।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २ सू० ४४ ।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ६६ ।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ६७ ।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ७ प्रज्ञापना पद १६ सू० २०२ ।
सूत्र ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३० ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र १६ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।

सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सू० ५१।

चौदहवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० २५ उ० १।

सूत्र २ नन्दीसूत्र सू० ५६।

सूत्र ३ नन्दीसूत्र सू० ५६।

सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १३४।

सूत्र ५ चतुर्थ कर्मग्रन्थ।

सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० १६।

सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सू० ६८।

सूत्र ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

पन्द्रहवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० ३ उ० ७।
सूत्र २ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ३ भगवती श० १२ उ० ६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० २० सू० १०५।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० ३ सू० ३५।

सूत्र ५ भगवती श० ११ उ० ११।

सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६।

सूत्र ७ प्रज्ञापना पद १६ सू० २०२। भगवती श० २५।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२। अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४।

सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २। स्थानांग अ० १ सू० ५१।

सोलहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।

सूत्र २ प्रज्ञापना पद १४ सू० १८८।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०९ ।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १६८ ।
सूत्र ५ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ६ भगवती श० ८ उ० ८ ।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १७२ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

सतरहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ आवश्यक अ० ४ ।

सूत्र ३ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १७८ ।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १५९ ।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १७३ ।
सूत्र ६ भगवती श० २० उ० ९ ।
सूत्र ७ भगवती श० २ उ० ८ ।
सूत्र ८ भगवती श० ३ उ० १ ।
सूत्र ९ भगवती श० १३ उ० ७ ।
सूत्र १० कर्मग्रन्थ
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सू० १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र २० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४।
सूत्र २१ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

अठारहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।
आवश्यक अ० ४।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १७६।
सूत्र ३ दशवैकालिक अ० ६।
सूत्र ४ नन्दीसूत्र सू० ४५।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद १ सू० ३७।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३७।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ६८।
सूत्र ८ भगवती श० ११ उ० ११।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ६ सू० १८।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

उन्नीसवां समवाय

सूत्र १ ज्ञाताधर्मकथा श्रु० १ अ० १ ।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० ८ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३९ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० ४ सू० २५ ।
सूत्र ३ ..
सूत्र ४
सूत्र ५ त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र पर्व १—सर्ग ७ ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १५ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

बीसवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कध दशा १ ।
सूत्र २ त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र पर्व ६ ।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्र० १ सू० ७३ ।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २३ सू० २९४ ।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ७ भगवती श० ६ उ० ७ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० १९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४।
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

इक्वीसवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा २।
सूत्र २ कर्मग्रन्थ
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३५-३६।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३७।

सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

बावीसवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० ८ उ० ८ । सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ३ ।
उत्तराध्ययन अ० २ ।
सूत्र २ से ५ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ६ भगवती श० ८ उ० १० ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

तेईसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र ३ " " "

सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।

सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६।

सूत्र १३ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१।

चौबीसवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० २ उ० ८।

सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७२।

सूत्र ३ स्थानाग अ० २ उ० ३ सूत्र ९४।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ५ सूत्र ११५।

सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० सू० ४३। उत्तराध्ययन अ० २६।

सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७४।

सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७४।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६।

सूत्र १५ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१।

पच्चीसवां समवाय

सूत्र १ आचाराग श्रु० २ चु० ३ सू० १७९।
प्रश्नव्याकरण सवरद्वार।

सूत्र २ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० १२।

सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ७०।

सूत्र ५ आचाराग श्रु० १ श्रु० २। नन्दीसूत्र सू० ४५।

सूत्र ६ कर्मग्रन्थ

सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष ४ सू० ७४ ।

सूत्र ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५ ।

सूत्र ९ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

छब्बीसवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कध, बृहत्कल्प, व्यवहार ।

सूत्र २ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र ३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र ११ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

सत्ताबीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १ सूत्र ३२ ।
सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२ ।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० २ सू० २१० ।
सूत्र ५ कर्मग्रन्थ
सूत्र ६ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३ ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।
सूत्र १५ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सूत्र ५१ ।

अठाईसवां समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ५ उ० २ सू० ४३३ ।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ कर्मग्रथ
सूत्र ३ स्थानाग अ० ६ सू० ५२५ । भगवती श० ८ उ० २ ।
राजप्रश्नीय सू० ६४ । नन्दीसूत्र सू० २६ ।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३ ।
सूत्र ५ कर्मग्रन्थ

सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सू० ५१।

उनत्तीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।
सूत्र २ उत्तराध्ययन अ० २६।
सूत्र ३ से ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७५।
सूत्र ८ कर्मग्रन्थ
सूत्र ९ "
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

तीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार । दशाश्रुतस्कंध दशा ६ ।
उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति ।
सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १३ सू० ४७ ।
सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३ ।
सूत्र ६ कल्पसूत्र सू० १५५ ।
सूत्र ७ आचारांग श्रु० २ चू० ३ सू० १७६ ।
भगवती श० १५ । कल्पसूत्र सू० १४६ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानाग अ० १ सू० ५१।

इगतीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वा सवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३३।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।

सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

बत्तीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र २ स्थानाग अ० २ उ० ३ । भगवती श० ३ उ० ८ ।

सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार २१ ।

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५२ ।

सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सू० ४२ ।

सूत्र ६ राजप्रश्नीय सू० ८४ । भगवती श० ३ उ० १ ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।

सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानाग अ० १ सू० ५१ ।

तेतीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ सवरद्वार । दशाश्रुतस्कध दशा ३ ।
उत्तराध्ययन अ० ३१ । आवश्यक अ० ४ ।

सूत्र २ भगवती श० ८ उ० २ ।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८५ ।

सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३३ ।

सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ॥
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

चौतीसवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० १० ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ९५ ।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५ ।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १७३ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ४६ ।
सूत्र ६ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१ ।

पेंतीसवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० १० ।
सूत्र २ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६ ।
सूत्र ३ " " " "

सूत्र ४ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ० ५।
सूत्र ६ जीवाभिगम प्रा० ३ सू० ८१।

छत्तीसवां समवाय

सूत्र १ उत्तराध्ययन अ० १-३६।
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० २।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १३४।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३।

सेंतीसवां समवाय

सूत्र १ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १३५।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३७।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३।

अड़तीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र सू० १६२।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १११।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०८।
सूत्र ४

उनचालीसवां समवाय

सूत्र १ प्रवचन सारोद्धार द्वार २०।

सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५ ।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१ ।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २३ सू० २९३ ।

चालीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र सू० १७७ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०६ ।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० १३२ ।
सूत्र ५
सूत्र ६ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३ ।
सूत्र ७ उत्तराध्ययन अ० २६ ।
सूत्र ८ प्रज्ञापना पद २ सू० १३२ ।

इगतालीसवां समवाय

सूत्र १ प्रवचनमारोद्धार द्वार १७ ।
सूत्र २ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१ ।
सूत्र ३

बियालीसवा समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र १४६ ।
सूत्र २ स्थानाग अ० ४ उ० २ सू० ३०५ ।
सूत्र ३ „ „
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १७५ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद ४ सू०

सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २३ सू० २९३ ।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १५८ ।
सूत्र ८
सूत्र ९ भगवती श० ६ उ० ७ ।
सूत्र १० भगवती श० ६ उ० ७ ।

तेयालीसवां समवाय

सूत्र १
सूत्र २ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८ ।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ४ उ० २ सू० ३०५ ।
सूत्र ४ ,, ,,

चोवालीसवां समवाय

सूत्र १ ऋषिभाषित ।
सूत्र २
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २ सू० १३२ ।
सूत्र ४

पैंतालीसवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १७७ ।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, सूत्र
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३, सूत्र
सूत्र ४ औपपातिक सूत्र ४३ ।
प्रज्ञापना पद २ सूत्र ।

सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति
प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३ ।
सूत्र ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा०, प्रा० ३, सूत्र ३५ ।
सूत्र ८ नन्दीसूत्र सू० ४३ ।

छियालीसवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र २ भगवती सूत्र शत० १, उ० १ ।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २, सू० १३२ ।

सेंतालीसवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सूत्र १३३ ।
सूत्र २ आवश्यकनिर्युक्ति-सख्या मे मतभेद है ।

अड़तालीसवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सूत्र ६९ ।
सूत्र २ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २८ ।
सूत्र ३ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सुत्र १३० ।

उनपचासवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कध दशा ७, व्यवहार उ० ९ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सूत्र २५ ।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद ४, सूत्र ९७ ।

पचासवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १७।
सूत्र २ ,, ,, ३५।
सूत्र ३ ,, ,, ३६।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सूत्र १२।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ५३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सूत्र १२।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्रति० ३, सूत्र १५०।

एकावनवां समवाय

सूत्र १ आचाराग प्रथम श्रुतस्कध।
सूत्र २ भगवतीसूत्र शत० १३, उद्दे० ६।
सूत्र ३ ,, ,, ,, ,,।
सूत्र ४ त्रिपष्ठी शलाका पुरुपचरित्र पर्व ४।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २३, सूत्र २९३।

बावनवां समवाय

सूत्र १ भगवती सूत्र शत० १२, उद्दे० ५।
सूत्र २ स्थानाग अ० ४, उद्दे० २।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ४, उद्दे० २।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २३, सूत्र २९३।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २, सू० ४३।

त्रेपनवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ८७।
सूत्र २ „ „ „ ७९।
सूत्र ३ आवश्यक निर्युक्ति,
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद ४, सू० १७।

चौपनवां समवाय

सूत्र १ आवश्यक निर्युक्ति
प्रवचनसारोद्धार द्वार २०९, २१०।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति,
सूत्र ३
सूत्र ४ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।

पचपनवां समवाय

सूत्र १ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८, सू० ७८।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० १२९।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सूत्र ८।
सूत्र ३ „ „
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १४७।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ८१।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २३, सू० २९३।

छप्पनवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १०, प्राभृ० २२, सू० ६०।
सूत्र २ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।

सत्तावनवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सू० ४५, ४६, ४७।
सूत्र २ स्थानाग अ० ४, उद्दे० २।
सूत्र ३ „ „
सूत्र ४ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ७९।

अठावनवां समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २, सू० ८१।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २३, सू० ८१।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ४ उद्दे० २।
सूत्र ४ „ „
सूत्र ५ „ „
सूत्र ६ „ „

उनसठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १२, सू० ७२।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ३ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।

साठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६, सू० १२७।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० १५८।
सूत्र ३ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ३१।
सूत्र ५ ,, ,, ५३।
सूत्र ६ ,, ,, ४३।

इगसठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १२।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १०८।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सू० १४४, १४५।
सूत्र ४ ,, ,,

बासठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १३, सू० ८०।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सू० १३४।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २, सू० ४७।
सूत्र ५ ,, ,,

त्रेसठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सू० ३०।
सूत्र २ ,, वक्ष० ४, सू० ८२।
सूत्र ३ ,, वक्ष० ७, सू० १२७।
सूत्र ४ ,, ,,

चोसठवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कध दशा० ७। व्यवहारसूत्र उद्दे० ९।

सूत्र २ प्रज्ञापना पद २, सू० ४७।
सूत्र ३ ,, सू० ४६।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० १८३।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २, सू० ५३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सू० ६८।

पेंसठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सू० १२७।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति।
सूत्र ३ राजप्रश्नीय सू० २७।

छासठवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० १७७।
सूत्र २ ,, ,,
सूत्र ३ ,, ,,
सूत्र ४ ,, ,,
सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ६ भगवती सूत्र शत० ८, उद्दे० २, सू० ११०।
प्रज्ञापना पद १८, सू० ११।

सड़सठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १२, सू० ७४।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ७६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १६१।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १०, प्रा० २२ सू० ६१।

अड़सठवां समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० ८।
सूत्र २. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७।
सूत्र ३ ,, ,,
सूत्र ४ ,, ,,
सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १६।

उनहत्तरवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, सूत्र १७७।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १०३।
सूत्र ३ उत्तराध्ययन अ० ३३।

सित्तरवां समवाय

सूत्र १ निशीथ अ० १०।
सूत्र २ कलपसूत्र सू० १६८।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।
सूत्र ४ उत्तराध्ययन अ० ३३, गाथा २१।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २, सू० ५३।

इकहत्तरवा समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० ११।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सूत्र ५६।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र ४ ,, ,,

बहत्तरवां समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ४६ ।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सूत्र १५८ ।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सूत्र १४७ ।
सूत्र ४ आवश्यक नियुक्ति ।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १९ ।
जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सूत्र १७६ ।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सूत्र ६९ ।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सूत्र ३० ।
सूत्र ८ प्रज्ञापना पद ४, सूत्र ९८ ।

तिहत्तरवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ८२ ।
सूत्र २ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४ ।

चोहत्तरवां समवाय

सूत्र १ आवश्यक नियुक्ति,
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ८४ ।
सूत्र ३ ,, ,,
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ ।

पचहत्तरवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनियुक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २१ ।
सूत्र २ ,, ,, ,, ३६ ।
सूत्र ३ ,, ,, ,, ३६ ।

छहत्तरवां समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ४६ ।
सूत्र २ ,, ,,

सतहत्तरवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सूत्र ७० ।
सूत्र २ ,, ,,
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सूत्र १८ ।
सूत्र ४ अनुयोगद्वार कालप्रमाण निरूपण ।

अठहत्तरवां समवाय

सूत्र १ भगवती सूत्र शत० ३, उद्दे० ७ ।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति,
सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १, प्राभृ० १ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सूत्र १३१ ।
सूत्र ४ ,, ,,

उनासीवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सूत्र १५६ ।
सूत्र २ ,, ,,
सूत्र ३ ,, ,, १, ,, ७६ ।
सूत्र ४ ,, ,, २, ,, १४५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सूत्र ९ ।

अस्सीवां समवाय

सूत्र १ आवश्यक निर्युक्ति,
सूत्र २ ,,
सूत्र ३ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४।
सूत्र ४ ,, ,,
सूत्र ५ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सूत्र ७२।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ५३।
सूत्र ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १, प्राभृ० ५।

इकासीवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा ७, व्यवहार सूत्र उद्दे० ६।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २२।
सूत्र ३ भगवती सूत्र सम्पूर्ण।

बियासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सूत्र १३४।
सूत्र २ आचारांग श्रुत० २, अ० २४।
कल्पसूत्र सूत्र २६।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ७६।
सूत्र ४ ,, ,,

तियासीवां समवाय

सूत्र १ आचारांग श्रुत० २, अ० २४।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ३ ,,

सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सू० ३०, ३३ ।
सूत्र ५ " वक्ष० ३, सू० ७० ।

चोरासीवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३ उ० १ सू० ८१ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३३ ।
सूत्र ३ " "
सूत्र ४ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र ५ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४ ।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ५२
सूत्र ७ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २ सूत्र ।
सूत्र ८ " " सूत्र १८३ ।
सूत्र ९ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८२ ।
सूत्र १० जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सूत्र ७९ ।
सूत्र ११ नन्दीसूत्र सूत्र ४९ मे दो लाख अठासी हजार पद है ।
सूत्र १२ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ४६ ।
सूत्र १३ नन्दीसूत्र सूत्र ४३ ।
सूत्र १४
सूत्र १५ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० २, सूत्र १८ ।
सूत्र १६ " वक्ष० ३, सूत्र ३१ ।
सूत्र १७ " "
सूत्र १८* जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सूत्र २०८ ।

---

*एक प्रति मे १७ सूत्र है, और एक प्रति मे १८ सूत्र हैं ।

पचासीवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सूत्र ४५।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० सूत्र।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र।
सूत्र ४ " वक्ष० ४ सूत्र १०४।

छियासीवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र २ " " द्वार १६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३, सूत्र ७६।

सतासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३।
सूत्र २ " "
सूत्र ३ " "
सूत्र ४ " "
सूत्र ५ उत्तराध्ययन अ० ३३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ७६।
सूत्र ७ " " "

अठासीवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्द० २, सूत्र १६४।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सूत्र १६३।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १८, सूत्र ६१।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सूत्र ५६।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३ ।
सूत्र ४ " "
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १ सूत्र ।
सूत्र ६ " "

नवासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सूत्र ३१, ३३ ।
सूत्र २ कल्पसूत्र सूत्र १४७ ।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र ४ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचसारोद्धार द्वार १७ ।

नब्बेवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचन सारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ " " द्वार १५ ।
सूत्र ३ " " "
सूत्र ४
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८२ ।

इक्कानबेवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० २० ।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सूत्र १७५ ।
सूत्र ३ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २० ।
सूत्र ४ उत्तराध्ययन अध्य० ३३ ।

बानवेवां समवाय

सूत्र　१　दशाश्रुतस्कंध दशा ७, आचरांग श्रुतस्कंध २, स्थानांग, व्यवहार उद्दे०
सूत्र　२　आवश्यकनिर्युक्ति,
सूत्र　३　जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १०३ ।
सूत्र　४　　"　　"

तिरानवेवां समवाय

सूत्र　१　आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५ ।
सूत्र　२　　"　　"　　द्वार २३ ।
सूत्र　३　जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सू० १३४ ।

चोरानवेवां समवाय

सूत्र　१　जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८३ ।
　　"　　"　　सू० ११० ।
सूत्र　२　आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २० ।

पंचानवेवां समवाय

सूत्र　१　आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार १५ ।
सूत्र　२　जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सू० १५६ ।
सूत्र　३　　"　　"　　सू० १७० ।
सूत्र　४　आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र　५　　"　　"

छियानबेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सू० ६९।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २, सू० ३७।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सू० १९।
भगवती सूत्र शत० ६, उ० ७।
सूत्र ४ ” ”
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७, सूत्र १३३।

सत्तानबेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०४।
सूत्र २ ” ”
सूत्र ३ उत्तराध्ययन अ० ३३।
सूत्र ४ त्रिपष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ७, सर्ग १२।

अठानबेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०४।
सूत्र २ ” ”
सूत्र ३ ” ”
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १,
सूत्र ५ ” ”
सूत्र ६ ” ”
सूत्र ७ ” प्रा० १०, प्रा० ६, सू० ४२।

निनानवेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३ ।
सूत्र २ " "
सूत्र ३ " "
सूत्र ४ " वक्ष० ७, सू० १३४ ।
सूत्र ५ " "
सूत्र ६ " "
सूत्र ७ प्रज्ञापना पद २, सू० २८ ।

सोवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा ७, व्यवहार उ० ६ ।
सूत्र २ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १०, प्रा० ६, सू० ४२ ।
सूत्र ३ आवश्यकनिर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १६८ ।
सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति,
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सू० १७ ।
सूत्र ७ " " ४, सू० ७२ ।
सूत्र ८ जीवाभिगम प्र० ३, उद्दे० २, सू० १५० ।

डेडसोवां समवाय सूत्र १०१

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ५३ ।
सूत्र ३ " "

दोसोवां समवाय सूत्र १०२

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ७९ ।
सूत्र ३ ,, वक्ष० ६, सू० १२५ ।

ढाईसोवां समवाय सूत्र १०३

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २, सू० २८ ।

तीनसोवां समवाय सूत्र १०४

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १७२ ।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ४३ ।
सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार २३ ।
सूत्र ५ औपपातिक सूत्र ४३, उत्तराध्ययन अ० ३६ ।

साढेतीनसोवां समवाय सूत्र १०५

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार २३ ।
सूत्र २ ” द्वार ३५ ।

चारसोवां समवाय सूत्र १०६

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र ८३ ।
” सूत्र ११० ।
सूत्र ३ ”

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २, सूत्र ५३।
सूत्र ५ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र
पर्व १०।

साढेचारसोवां समवाय सूत्र १०७

सूत्र १ आवश्यक, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र २ " "

पांचसोवां समवाय सूत्र १०८

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १२५।
सूत्र २ " "
सूत्र ३ " वक्ष० ३, सू० ३३।
सूत्र ४ " वक्ष० ३, सू० ७०।
सूत्र ५ " वक्ष० ४, सू० ८६, ९१, ९७।
सूत्र ६ " " सू० ७५।
सूत्र ७ " "
सूत्र ८ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सू० २११।

छहसोवां समवाय सूत्र १०९

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सू० २११।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० , सूत्र।
सूत्र ३ " "
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १६६।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू०।
सूत्र ६ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३१।

सातसोवां समवाय सूत्र ११०

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सू० २११ ।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १३६ ।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १४० ।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १८२ ।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू० ।
सूत्र ६ ” ”

आठसोवां समवाय सूत्र १११

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० २११ ।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २, सू० ४७ ।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १४५ ।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सूत्र १६५ ।
सूत्र ५ कल्पसूत्र सू० १८० ।

नवसोवां समवाय सूत्र ११२

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १, सू० २११ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू० ।
सूत्र ३ ” ”
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २, सू० २८ ।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० ३, उद्दे० २, सू० १६५ ।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १०१ ।
सूत्र ७ ” ”

हजारवां समवाय सूत्र ११३

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३, उद्दे० १, मू० २११।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८८।
सूत्र ३ " "
सूत्र ४ " " सू० ८२।
सूत्र ५ " " सू० ।
सूत्र ६ " " सू० ।
सूत्र ७ कल्पसूत्र सू० १८३।
सूत्र ८ " १६६।
सूत्र ९ "
सूत्र १० जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८०।

इग्यारहसोवां समवाय सूत्र ११४

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३, उद्दे० १, सू० २११।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १६६।

दोहजारवां समवाय सूत्र ११५

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८०।

तीनहजारवां समवाय सूत्र ११६

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १।

चारहजारवां समवाय सूत्र ११७

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८३ सू० ११०।

पांचहजारवां समवाय सूत्र ११८

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३।

छःहजारवां समवाय सूत्र ११९

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २, सू० ५३।

सातहजारवां समवाय सूत्र १२०

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० ।

आठहजारवां समवाय सूत्र १२१

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० ८२, १११।

नोहजारवां समवाय सूत्र १२२

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १, सू० ११।

दसहजारवां समवाय सूत्र १२३

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सू० १०३।

एकलाखवां समवाय सूत्र १२४

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १७५।

दोलाखवां समवाय सूत्र १२५

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, सू० १७३।

तीनलाखवां समवाय सूत्र १२६

सूत्र १ कल्पसूत्र सू० १६४।

चारलाखवां समवाय सूत्र १२७

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सू० १७४।

पांचलाखवां समवाय सूत्र १२८

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० २, सूत्र १५४।

छः लाखवां समवाय सूत्र १२९

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३, सू० ७०।

सातलाखवां समवाय सूत्र १३०

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३, उद्दे० १ सू० १२४।

आठलाखवां समवाय सूत्र १३१

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २, सू० ५३।

नोहजारवां समवाय सूत्र १३२

सूत्र १ त्रिपष्ठिशलाका पुरुप चरित्र पर्व २, सर्ग ६।

दसलाखवां समवाय सूत्र १३३

सूत्र १ त्रिपष्ठिशलाका पुरुप चरित्र पर्व ५, सर्ग ६।

एकक्रोड़वां समवाय सूत्र १३४

सूत्र १ त्रिशिष्ठशलाका पुरुप चरित्र पर्व १० सर्ग १।

एकक्रोड़ाक्रोड़वां समवाय सूत्र १३५

सूत्र १ कल्पसूत्र सूत्र २२८।

यहां से आगे केवल सूत्र सख्या है–

सूत्र १३६ से १४८ पर्यन्त

नन्दीसूत्र सूत्र ४४ से ५७।

सूत्र १४९

(क) प्रज्ञापना पद १, सू० ३८।
(ख) प्रज्ञापना पद २, सूत्र ।

सूत्र १५०

प्रज्ञापना पद २, सूत्र ।

सूत्र १५१

प्रज्ञापना पद ४, सूत्र ।

सूत्र १५२

(क) प्रज्ञापना पद १२, सूत्र ।
(ख) प्रज्ञापना पद २१, सूत्र ।

सूत्र १५३

(क) प्रज्ञापना पद ३३, सूत्र ।
(ख) " पद ३५, सूत्र ।
(ग) " पद १७, सूत्र ।
(घ) " पद ३४, सूत्र ।
(ङ) " पद २८, सूत्र ।

सूत्र १५४

(क) स्थानाग अ० ६, सूत्र ५३५ ।
(ख) प्रज्ञापना पद ६, सूत्र ।

सूत्र १५५

(क) प्रज्ञापना पद २३, सू० ।
स्थानाग अ० ६, सूत्र ४९४, ४९५ ।
(ख) " " "

सूत्र १५६

प्रज्ञापना पद २३, उद्दे० २, सू० ।

सूत्र १५७

(क) कल्पसूत्रान्तर्गत समवसरण वर्णन
(ख) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सूत्र ।
(ग) आवश्यक सूत्र अ०
प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५, ३६ ।

सूत्र १५८

(क)

(ख) स्थानाग अ० ६, सूत्र ।

सूत्र १५६

(क)

(ख)

(ग)

सूत्र १६० उपसंहार सूत्र

समवायांग के सूत्रों की अन्य आगमों में शोध ।

समवायाग का उद्गमस्थल द्वादशाग गणिपिटक है, किन्तु दृष्टिवाद और एकादशागो का अधिक भाग विछिन्न होने के वाद उपलब्ध एकादशागो मे सभी सूत्रो का उद्गमस्थल मिलना सभव नही था, अत अग, उपाग, मूल और छेद आगमो मे तथा स्थविरो द्वारा सकलित आगमोत्तर कालीन ग्रथो मे समवायाग के प्रत्येक सूत्र का उद्गमस्थल शोधकर प्रस्तुत परिशिष्ट मे यथाशक्य सकलन किया है ।

इस परिशिष्ट मे समवायाग के सूत्रो को तीन भागो मे विभक्त किया है ।

(क) अक्षरश मिलनेवाले सूत्र ।

(ख) सामान्य शव्दभेदवाले सूत्र ।

(ग) विवक्षाभेदवाले सूत्र ।

१ अक्षरश समान, सामान्य शव्दभेद और विवक्षाभेदवाले सूत्रो

के उद्गमस्थलो का विवरण दिया है ।

२ जिन सूत्रो का उद्गमस्थल नही मिला है उन सूत्रो के सूत्राक देकर शेप स्थान रिक्त रख दिया है । स्वाध्यायशील महानुभाव इन रिक्त स्थानो की पूर्तिया भेजकर पुस्तक की पुनरावृत्ति द्वारा होनेवाली ज्ञानवृद्धि मे सहयोगी वनें ।

३ जहा सूत्राक या अध्ययन, उद्देशाक नही दिया है वहा निम्नाकित तीन विकल्पो मे से एक की सभावना अवश्य है ।

(क) समवायाग मे और अन्य आगम मे विवक्षा भेद है ।

(ख) समवायाग मे पूर्ण विवरण है किन्तु अन्य आगम मे केवल नामोल्लेख है ।

(ग) समवायाग मे सक्षिप्त है और अन्य आगम मे विस्तृत है ।

४ अन्य आगमो मे वाचना भेद या विवक्षा भेदवाले जितने सूत्र मिलते है उनके पूरे पाठ समवायाग के सूत्रो के साथ देना तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक था किन्तु यह कार्य इस लघुकाय सस्करण के अनुरूप न होने से पूरे पाठ नही दिये है ।



समवायाङ्ग-वर्णक

(समवाय एक से एक कोड़ा-कोड़ी पर्यन्त)

परिशिष्ट

३



मुनि कन्हैयालाल "कमल"

अ अहासुत्त-जाव-आराहियाभवइ।

अहासुत्तं, अहातच्च, अहामग्ग, अहाकप्प सम्म काएण फासिया पालिया, सोहिया, तीरिया, किट्टिया, आराहिया भवइ।-सम० ४६।

क कालगए-जाव-सव्वदुक्खपहीणे।

कालगए सिद्धे, वुद्धे, मुक्के, परिणिव्वुए, सव्वदुक्खपहीणे। कालगयाइ-जाव-सव्वदुक्खपहीणाइ।

कालगयाइ, सिद्धाइ, बुद्धाइ, मुक्काइ, परिणिव्वाणाइ, सव्व-दुक्खपहीणाइ।-सम० १०००।

म मुडे भवित्ता-जाव-पव्वइए।

मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए।-सम० ४७।

व पेंतीस सत्य वचनातिशय-

वयणगुणा सग सट्ठे, अत्थे अड्वीस मिलिय पणतीसं।
तेहिं गुणेहिं मणुण्ण, जिणाण वयणं कमेण इमं॥
वयणं सक्कयगभीर-घोस-उवयारुदत्तया जुत्त।
पड़िनायकर दक्खिन्नसहियमुवणीयराग व॥
सुमहत्थ अव्वाहयमससय तत्तनिट्ठय सिट्ठ।
पत्थापुच्चियं पडिहय-परुत्तरं हियपीइकर॥
अणुण्णसामिक्खव, अभिजाय अइसिणिद्धमजर च।
ससलाहारपरनिंदावज्जियमपइन्नपसरजुयं॥
पयड्क्खरपयवक्कं, सत्तपहाण च कारगाइजुयं।
ठवियविसेसमुयारं, अणेगजाइंविचित्त च॥
परमम्मविब्भमाइं विलबवुच्छेयखेयरहिय च।
अदुय धम्मत्यजुयं, सलाहणिज्ज च चित्तकरं॥

-सत्त० ९८ द्वार

ये सत्य वचनातिशय आगमो मे नही मिलते है-
यहा ग्रथान्तर से उद्धृत किए है ।
(१) सस्कारवत्, (२) उदात्त, (३) उपचारोपेत,
(४) गम्भीरशब्द, (५) अनुनादि, (६) दक्षिण,
(७) उपनीतराग, (८) महार्थं, (९) अव्याहतपौर्वापर्यं,
(१०) शिष्ट, (११) असदिग्ध, (१२) अपहृतान्योत्तर,
(१३) हृदयग्राहि, (१४) देश-कालाव्यतीत,
(१५) तत्त्वानुरूप, (१६) अप्रकीर्णप्रसृत,
(१७) अन्योन्यप्रग्रहीत (१८) अभिजात,
(१९) अतिस्निग्धमधुर, (२०) अपरमर्मविद्ध,
(२१) अर्थधर्माभ्यासनापेत, (२२) उदार,
(२३) परनिन्दात्मोत्कर्पविप्रयुक्त, (२४) उपगतश्लाघ,
(२५) अनपनीत, (२६) उत्पादिताछिन्नकौतुहल,
(२७) अद्भूत, (२८) अनतिविलम्वित,
(२९) विभ्रम-विक्षेप-किलिकिचितादियुक्त,
(३०) अनेकजातिसश्रयाद्विचित्र, (३१) आहितविशेष,
(३२) साकार, (३३) सत्वपरिग्रह, (३४) अपरिखेदित,
(३५) अव्युच्छेद, चेति । इनका अर्थ पेंतीसवें समवाय मे दिया हुआ है ।

सिद्धे-जाव-सव्वदुक्खपहीणे ।
सिद्धे, वुद्धे, मुक्के, परिणिव्वुए, सव्वदुक्खपहीणे ।-सम० ३० ।

सिद्धाइ-जाव-सव्वदुक्खपहीणाइ ।
सिद्धाइ, वुद्धाइ, मुक्काइ, परिणिव्वाणाइ, सव्वदुक्खपहीणाइ ।
-सम० ४४ ।

न निज्जिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।
निज्जिस्संति वुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।-नम० १ ।

समवायांग में परिवर्धन ।

भगवान महावीर के तीर्थप्रवर्तनकाल मे श्री गौतम गणधर ने जिस समय द्वादशागी की सूत्ररूप मे रचना की थी उस समय समवायाग मे जितने सूत्रो का सकलन हुआ था उतने सूत्र तो इस समय उपलब्ध नही है। किन्तु जितन सूत्र इस समय उपलब्ध है उनमे अधिक से अधिक सूत्र उसी समय के सकलित है । यह मानने म कोई आपत्ति नही है । प्रारम्भ मे स्थानाग से समवायाग दुगुना बडा था और वर्तमान मे समवायाग से स्थानाग दुगुना बडा है । इसलिए समवायाग के बहुत अधिक सूत्र विच्छिन्न हो गये है इतना तो मानना ही पडेगा । समवायाग मे समवायाग परिचय के अन्तर्गत दी हुई विषयसूची से नन्दीसूत्र गत समवायाग परिचय मे दी हुई विषयसूची भिन्न है । अत समवायाग की सूत्र-सख्या मे जो उत्तरोत्तर कमी आई है वह स्पष्ट होजाती है ।

उपलब्ध समवायाग मे प्रथम समवाय से तेतीसवे समवाय पर्यंत सूत्रो के रचनाक्रम को देखते हुए ऐसा लगता है कि—समवायाग का यह भाग कालचक्र के कुप्रभाव से सर्वथा मुक्त रहा है । सूत्रो की जो कुछ कमी हुई है अन्य समवायो मे ही हुई है, इनमे नही । शेप समवायोमे से किस मे कितने सूत्रो की कमी हुई, यह जानने का कोई साधन नही है ।

द्वादशागी नित्य है, अतीत मे थी, वर्तमान मे है, और भविष्य मे भी रहेगी, यह नित्यता शाश्वत भावो की अपेक्षा से है। अर्थात् सभी तीर्थकर द्वादशागी मे शास्वत भावो का समानरूप से कथन करते है, अशास्वत भावो का समावेश सभी तीर्थंकर स्वय अपने अपने युगानुसार करते है। अनादि काल से यह मर्यादा रही है। इस मर्यादा का अतिक्रमण करके अज्ञातनामा किसी स्थविर या स्थविरो ने समवायाग मे परिवर्धन किया है। यह परिवर्धन किस युग मे हुआ इस सम्वन्ध मे निश्चितरूप मे तो कुछ कहा नही जासकता किन्तु इतना सुनिश्चित है कि यह परिवर्धन भगवान् महावीर, श्री सुधर्मा गणधर एव भगवान् भद्रवाहु के निर्वाण के पश्चात् ही हुआ है।

परिवर्धित सूत्रों की सूची।

भगवान् महावीर से सवधित सूत्र–
सम० ५४ सूत्र ३
मम० ५५ सूत्र ४
सम० ३६ सूत्र १
सम० ७२ सूत्र ३
सम० ८१ सूत्र २
भगवान् महावीर के गणधरो से सवधित सूत्र-
सम० ६२ सू० २
सम० १०० सूत्र ५
अगवाह्यश्रुत-सूत्र–
सम० २६ सूत्र १
ये सूत्र भगवान् महावीर के कहे हुए नही है और न इनका

सकलन भ० भद्रवाहु के पूर्व समवायाग मे हुआ है। क्योकि दशाश्रुतस्कध, वृहत्कल्प और व्यवहार सूत्र के सकलनकर्ता भ० भद्रवाहु हैं। सम० २६ सूत्र १ मे दशाश्रुतस्कध आदि तीनो आगमो के उद्देशनकालो की सख्या का निर्देश है। इसलिए इन तीन छेद सूत्रो की रचना के पूर्व इस सूत्र की सकलना कैसे सम्भव हो सकती थी ?

समवायाग के प्रारम्भ मे दो प्रकार की उत्थानिकाए प्रस्तुत सस्करण मे दी हुई है। प्रथम उत्थानिका मे भगवान् महावीर स्वय समवायाग का कथन करते है, और द्वितीय उत्थानिका मे श्री सुधर्मा गणधर भ० महावीर से सुने हुए समवायाग का जम्वूस्वामी से कथन करते है। इन दोनो उत्थानिकाओ की ऊपर दी हुई सूची के सूत्रो से सगति नही वैठती। सुधी स्वाध्यायी इस रहस्य को सम्यक् प्रकार से समझने का प्रयत्न करें। जिन स्थविरो ने सूत्रो का परिवर्धन करके जहा मर्यादा का अतिक्रम किया है वहा इतिहास की अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने का पुण्योपार्जन भी किया है।

